**झीसी**–सूक्ष्म जलकण ।
**झुकनी**–तन्द्राहेतुक झुकब ।
**झुकब**–क्रि० नम्र होएब ।
**झुकाह**–एक भाग झुकल, एकभगाह ।
**झुझुआएब**–क्रि० झुझु+अब–अल्पता हेतुक असन्तोष ।
**झुझुआन**–अल्प होएबाक हेतु असन्तोषास्पद (अन्नादि) ।
**झुटका** / **झुटकी** }–फूटल माटिक बासनक बहुत छोट खण्ड ।
**झुट्टी**–धानक सीसक जूटी ।
**झुड्डुर**–झखार, अतिवृद्ध ।
**झुण्ड**–प्राणीक समूह ।
**झुत्थर**–झखार, अतिवृद्ध ।
**झुनकी**–ठेँगाक वाद्य ।
**झुनखुना**–शाकविशेष ।
**झुनझुना**–झुनझुन बजनिहार नेनाक खेलओना ।
**झुनझुनी**–चिरभाराक्रान्तिप्रयुक्त शोणित-सञ्चारक अल्पतासँ क्षणिक वेदना विशेष ।
**झुनझुनी भरब**–क्रि० पूर्वोक्त वेदनासँ युक्त होएब ।
**झुमक**–झुम्मक, कानक भूषणविशेष ।
**झुमका**–ओड़हुल फूलक प्रभेद ।
**झुमकी**–छोट झुमक ।
**झुमरि**–अनेकनर्तकसम्पाद्य नृत्यविशेष १। गीतविशेष २ ।
**झुम्मक**–झुमक, कानक भूषणविशेष ।
**झुरकुटिआ**–कदलीफलक एक प्रभेद ।
**झुरमुठ** / **झुरमुठि** }–जोरसँ परस्पर पकड़ब ।

**झुलब**–क्रि० आन्दोलन ।
**झुल्ला**–स्त्रीक स्यूत वस्त्रविशेष ।
**झूकब**–क्रि० झुक्+अब–एक दिस नीच होएब १ । नम्र होएब २ ।
**झूटब**–क्रि० झुट्+अब–जोरसँ आक्रमण ।
**झूर**–कड़ा कए तरल (तरकारी आदि) ।
**झूला**–हाथीक उपरक दुहु दिस नमरल कपड़ा ।
**झूलन**–भगवानक झुलबाक शृङ्गार १ । जे हाथी सतत झुलैत रहए २। झुलबा कालक गीत ३ ।
**झूलब**–क्रि० झुल्+अब–आन्दोलन ।
**झोँक**–कोठाक बाहरक छदि १ । जोर, आघात २ ।
**झोँकब**–क्रि० अधिक विनियोग ।
**झोँका**–भूताद्यपसारणार्थ अधिक धूप ।
**झोँकारा**–अधिक विनियोग ।
**झोँकाह**–उ० हठात् क्रियाक आवेगबाला (व्यक्ति) ।
**झोँकी**–हठात् क्रियाक आवेग ।
**झोखरब**–क्रि० वार्द्धक्यप्रयुक्त देहक ह्रास।
**झोँझ**–अप्रवेश्य मध्यमे अदृश्य जङ्गल ।
**झोँट**–बढ़ल समस्त माथक केशपुञ्ज ।
**झोटकी**–झोँट ।
**झोटहा**–स्त्रीगण ।
**झोँटाझोँटी**–परस्पर झोंट पकड़ब ।
**झोर**–तीमनक एक प्रभेद १ । तीमनक जल २ ।
**झोरगर**–अधिक झोरसँ युक्त (तीमन) ।
**झोरब**–क्रि० मृगादिक वनमे अन्वेषण ।
**झोरा ( ड़ा )**–वस्तु रखबाक स्यूत वस्त्रविशेष ।



**झोराएब**–ना० झोरसँ युक्त करब ।
**झोरी**–छोट झोरा ।
**झोल**–चार आदिमे लागल धूमादिकृत विकार ।
**झोलब**–क्रि० शुष्क चूर्णकेँ वस्त्रपूत करब ।
**झोलरतू**–झोलसँ मलिन ।
**झोलराह**–नीच भेल (खाट आदि) ।
**झोली**–झोलक विकार ।
**झौआ**–वृक्षविशेष १। जम्बीरविशेष २ ।
**झौसब** / **झौँसब** –अत्यल्पतैलादिसँ धूआँ बहकाए व्यञ्जन रान्हब ।

## ञ

**ञहाँ** / **ञेहाँ** }–अहाँ, भवान् सं० ।

## ट

**टउआएब**–क्रि० टउ+अब–अनाथ भए इतस्ततः घूमब ।
**टक**–एकतान दृष्टि ।
**टकगर**–अधिक रुपैआबाला ।
**टकटक करब**–क्रि० अत्यन्त दुर्बल होएब ।
**टकटक ताकब**–क्रि० तक्+अब–एकतान दृष्टिसँ ताकब ।
**टकटकी**–एकतान दृष्टि ।
**टकटकी लागब**–क्रि० लग्+अब–दृष्टि एकतान होएब ।
**टकटोरब**–क्रि० नहि देखैत हाथसँ ताकब ।
**टकटोरिआ**–नहि देखैत भूमिमे वारंवार हाथ राखब ।

**टकटोरिआ देब**–क्रि० द्+अब–नहि देखैत भूमिमे अनेकधा हस्तारोपण।
**टकबेल**–मल्लीपुष्पक एक प्रभेद ।
**टक लागब**–क्रि० लग्+अब–एकतान दृष्टि रहब ।
**टकसाल**–रुपैआक निर्माणस्थान ।
**टकुआ**–टाकु, तर्कु ।
**टकुआ तान**–टकुआजेकाँ सोझ ।
**टकुरी**–सूत कटबाक छोट यन्त्रविशेष ।
**टकुरी काटब**–क्रि० कट्+अब–टकुरीद्वारा सूतक निर्माण करब ।
**टकोरा**–आमक बहुत बच्चा फल ।
**टक्कर**–हि० आघात ।
**टगब**–क्रि० आबल्यनिद्रादिप्रयुक्त झुकब।
**टग हानब**–क्रि० हन्+अब–आबल्यसँ झुकैत चलब ।
**टघड़ब** / **टघरब** }–क्रि० स्रवण ।
**टघाड़ (र)**–स्रवण ।
**टघाड़ (र) ब**–क्रि० स्रुत करब ।
**टङगर** / **टङ्गर** }–पैघ पाएरबाला, अधिक चलनिहार ।
**टटउ**–टाटबाला (घर) ।
**टटकबाह**–कर्षणाद्युत्तर बीजवपनादिये विरामाभाव ।
**टटका**–तात्कालिक, अपर्युषित (जल आदि) ।
**टटबन्हा**–टाट बन्हबाक (जौड़) १। टाट बन्हनिहार (जन) २ ।
**टटमजार**–वैनट्य ।
**टटहा**–कागतक एक प्रभेद ।
**टटाएब**–क्रि० टट्+अब–सोहारी आदि शुल्क भए कठोर होएब ।

**टटैनी**–शिराक वेदनाविशेष ।
**टटौ**–टाटक (घर) ।
**टट्टू**–छण्ठा घोड़ा ।
**टण्टघण्ट**–देखौआ पूजाक घड़ी-घाँटी ।
**टनक**–कान ओ माथक वेदना ।
**टनकब**–क्रि० कान वा माथ दुखाएब ।
**टनकी**–पक्षिविशेष ।
**टनटनाएब**–क्रि० टनट्न+अब-टनटन शब्द करब १ । रुग्ण अवस्थासँ किछु उत्थानावस्था पाएब २ ।
**टन दए**–अ० टन शब्द कए ।
**टप**–आवरणविशेष ।
**टपकब**–क्रि० अनवसरमे आगमन (निन्दामे) १ । स्वयं पक्क भए आम्रादिक पतन २ ।
**टपटप करब** / **टपटप बाजब** }–क्रि० अप्रस्तुत अनधिकार अनेकधा बाजब ।
**टपब**–क्रि० गहीड़ आदिक लङ्घन ।
**टप्पाटोइआ देब**–क्रि० द्+अब-अन्हारमे हाथ भूमिपर देने चलब वा कोनो वस्तुक अन्वेषण करब ।
**टप्पू**–टापू, उपद्वीप ।
**टभकब**–क्रि० पाकिकेँ फल आदिक स्वत: खसब ।
**टभका**–माछ बझएबाक वंशनिर्मित यन्त्रविशेष ।
**टभकी**–छोट टमका ।
**टमटम**–एक घोड़ाबाला एक्कासँ पैघ रथ।
**टरकारब**–क्रि० टरकार्+अब-किछु कहि टारब ।
**टरब**–व्याजपूर्वक चल जाएब ।
**टरुआएब**–क्रि० टरु+अब-आबल्यसँ झुकब ।
**टर्राएब**–क्रि० टर्र्+अब-वृथा इतस्तत: घुमब ।
**टलहा**–द्रव्यान्तरमिश्रित रूप ।
**टलिआएब**–ना० टाल + अब - टाल लगाएब।
**टहल**–परिचर्या ।
**टहल-टिकोरा**–परिचर्याप्रभृति ।
**टहलनी**–स्त्री० परिचर्याकर्त्री ।
**टहलब**–क्रि० देहस्वास्थ्य हेतुक मन्दमन्द चलब, बूलब ।
**टहलू**–पुं० परिचारक पुरुष ।
**टहुकी**–वंशरचित माछ मारबाक साधनविशेष ।
**टाँक**–सोन प्रभृतिक जोड़ करबाक हेतु निर्मित मिश्रित धातु १। टाँकब २।
**टाँकब**–क्रि० टँक्+अब-दूर दूर कए सीअब ।
**टाका**–रुपैया ।
**टाँकी**–उपदंश, रोगविशेष ।
**टाकु**–तर्कु, छिद्र करबाक साधनविशेष।
**टाँग**–पाएर ।
**टाँगब**–क्रि० टँग्+अब-उपरका आश्रयमे लटकाएब ।
**टाँघन**–पैघ घोड़ा।
**टाँघर**–चव्य, ओषधिविशेष ।
**टाङ**–टाँग, पाएर ।
**टाङब**–क्रि० टङ्+अब-टाँगब, उपरका आधारमे लटकाय संबद्ध करब।
**टाट**–तृणादिनिर्मित गृहादिक आवरण ।
**टाँट**–शुष्कताप्रयुक्त कर्षणायोग्य (क्षेत्र)।



**टाटक**–इन्द्रजाल ।
**टाटफरक**–टाटप्रभृति ।
**टाँटि**–क्षुपविशेष ।
**टाड़**–बाँहिक आभूषणविशेष ।
**टाड़ा**–तैल घृत रखबाक, माटिक पैघ घटाकार पात्र ।
**टाड़ी**–छोट टाड़ा ।
**टापि**–माछ मारबाक वंशरचित साधन-विशेष ।
**टापू**–द्वीप ।
**टाभ**–नेबोक प्रभेद ।
**टारब**–क्रि० टार्+अब-हटाएब ।
**टारमटोर**–किछु-किछु कहि कालक्षपण।
**टाल**–जलसँ बँचबाक हेतु सुसज्जित तृणपुञ्ज १ । समूह २ ।
**टाल ठोकब**–क्रि० बाँहिपर करतलध्वनि।
**टाल मारब**–क्रि० मार्+अब-वञ्चना करब।
**टिकटिकाएब**–क्रि० टिकटिक्+अब-क्षीणतावस्थासँ किछु नीक स्थिति प्राप्त करब ।
**टिकटिकिआ**–गिरगिट ।
**टिकरी**–मिष्टान्नविशेष १। छोट रोटी २ ।
**टिकुला**–बिना कोइलीक आम ।
**टिकुलिआ बीड़ी**–ताम्बूलविशेष ।
**टिकुलि( ल )हारनी**–स्त्री० टिकुली बेचनिहार जातिक स्त्री ।
**टिकुलि( ल )हारा**–पुं० टिकुली बेचनिहार जातिविशेष ।
**टिकुली**–कपारमें सटबाक नाना रूपक स्त्रीक अलङ्करण १ । चित्रपतङ्ग, कीटविशेष २ ।
**टिक्री**–टिकरी, मिष्टान्नविशेष १ । छोट रोटी २ ।
**टिङ्ङा**–क्रोड़ ।
**टिटकारब**–क्रि० टिटकार्+अब-प्रतारणा-बुध्या उत्साहक कथा कहब ।
**टिटकारी**–प्रतारणाबुध्या उत्साहक वचन ।
**टिटही** / **टिटिही** }–टिट्टिभ, पक्षिविशेष ।
**टिण्डीबोह**–शलभसमूह, क्षुद्रपक्षिगण ।
**टिपका**–क्वचित् - क्वचित् प्रवृत्त (महामार्यादि) ।
**टिपकारी**–कोठा आदिमे मसालासँ पजेबाक छिद्रपूरण ।
**टिपब**–वाचा सहायता करब ।
**टिपोट**–संक्षिप्त जन्मकालादिक लेख ।
**टिपौटी**–असम्यक् नियोग ।
**टिप्पा**–कौड़ीक एक प्रकारक खेड़ि ।
**टिप्पी**–स्मरणार्थ गणनाक रेखा ।
**टीक**–शिखा ।
**टीका**–सं० व्याख्या ।
**टीन**–वि० धातुविशेष १ । लौहरचित तेल आदिक पात्रविशेष २ ।
**टीप**–टीपब १ । बोतलमे तेल ढारबाक सच्छिद्र पात्रविशेष २ । कौड़ीक एक खेड़ि ३ ।
**टीपनि**–जन्मपत्री ।
**टीपब**–क्रि० टिप्+अब-क्रीड़ा प्रभृतिमे अनका विचार देब ।
**टुअर**–माए-बापसँ हीन (नेना) ।
**टुक**–सुपारीक खण्ड ।
**टुकड़ा**–खण्ड ।
**टुकड़ी**–छोट खण्ड ।

**टुकना**–दालि रन्हबाक पैघ पात्रविशेष।
**टुकनी**–छोट जलपानपात्र ।
**टुघड़(र)ब**–क्रि० नेनाक प्रारम्भिक अल्प-अल्प चलब ।
**टुटब**–क्रि० भग्न होएब १ । अनेकाक्रमण २ ।
**टुट्टा**–टूटल, भग्न (तण्डुलादि) ।
**टुट्टी**–क्रयविक्रयव्यापारमे हानि ।
**टुट्टी लागब**–क्रि० लग्+अब-क्रयविक्रयव्यवहारमे हानि पहुँचब।
**टुड़नी**–वृक्षादिक अग्रभाग ।
**टुनमुन**–छोट गोल (लोटा आदि) ।
**टुमटाम**–छोटछीन गहना ।
**टुसकाएब**–क्रि० टुसकब्+अब-अनुचित क्रियामे प्रवृत्ति कराएब ।
**टुस्सा**–शाखाग्रसँ चलल अङ्कुर ।
**टूअर**–टुअर, मातृपितृहीन (शिशु) ।
**टूक**–खण्ड ।
**टूट**–क्रयविक्रयव्यापारमे हानि ।
**टूटफाँट**–देहक अधिक दुखाएब ।
**टूटब**–क्रि० टुट् + अब-भग्न होएब ।
**टेक**–अवलम्बन १ । गौरव; मर्यादा २ ।
**टेकना**–अवलम्बनवस्तु ।
**टेकब**–क्रि० अवलम्बन देब १ । अदृढ़ बन्धन २ ।
**टेका**–छोट सरल रेखा ।
**टेकुना**–खाद्य कन्दविशेष ।
**टेँगार**–मत्स्यविशेष ।
**टेँगारी**–छोट कुठार ।
**टेङरा**–मत्स्यविशेष ।
**टेङारी**–छोट कुठार ।
**टेँट चलब**–क्रि० पातर दस्त होएब (निन्दामे) ।
**टेटर**–चोट लगने वा आने प्रकारेँ उत्पन्न देहक उन्नत मांसपिण्ड ।
**टेँटाह**–अप्रिय अप्रस्तुत बजनिहार ।
**टेँटिआ**–सूगाक एक प्रभेद ।
**टेढ़**–वक्र ।
**टेढ़का**–वक्रप्रभेदक (खाम्हआदि) ।
**टेढ़बकुली**–अत्यन्त टेढ़ ।
**टेढ़िआ मालभोग**–धान्यविशेष ।
**टेढ़ी**–वक्रता ।
**टेबब**–क्रि० अन्वेषण कए पसिन्द करब।
**टेम**–दीपशिखा ।
**टेमब**–क्रि० टाट आदिमे बातीकेँ सोझ रहबाक हेतु ठाढ़ बातीक सङ्ग बन्धन देब ।
**टेमी**–वर्तिका, बाती, दीपक साधनविशेष।
**टेर**–आनन्दमे मग्न ।
**टेरब**–क्रि० आनन्दपूर्वक वंशी बजाएब १ । कथा स्वीकार करब २ ।
**टेरुआ**–सुतरी बँटबाक यन्त्रविशेष ।
**टेल्ह**–छोट नेना ।
**टेल्हबाटेल्हबी**–क्रीड़ाविशेष ।
**टेसु** / **टेसू** } –फलविशेष ।
**टोइआ**–घरक सर्वोच्च उपर भाग ।
**टोइआ करब** / **टोइआ देब** } –क्रि० - बिनु देखने स्पर्शसँ वस्तुक अन्वेषण करब ।
**टोक**–टोकब ।
**टोकनि**–ढेप फोड़ब ।
**टोकब**–क्रि० मध्यहिमे प्रश्न कय देब, अकस्मात् पूछब ।
**टोँगब** / **टोङब** } –क्रि० वंशादिकेँ अनेक खण्ड कए काटब ।



**टोटल**–वि० मोट संकलन ।
**टोटा**–फोँक दण्डाकार वस्तु ।
**टोँटिआ**–जल बहबाक अन्तिम खपरा ।
**टोटी**–हथहड़प्रभृतिक सच्छिद्र जल-निःसरणाङ्ग १ । ओल ओ कड़हरक उच्च अङ्ग २ ।
**टोन**–लकड़ी वंशादिक खण्ड ।
**टोनब**–क्रि० लकड़ी वंशादिक खण्ड काटब ।
**टोना**–रोगादिक शामक वा उत्पादक मन्त्ररहित क्रिया ।
**टोनाटापर**–टोनाप्रभृति क्रिया ।
**टोनाह**–अल्प बलेँ मङ्ग होएबाक योग्य।
**टोनी**–लकड़ी आदिक खण्ड ।
**टोंप**–गोरण्डीयक शिरोभूषण ।
**टोपटहंकार**–डीलडाल, आडम्बर ।
**टोपड़** / **टोपर** } –अङ्ग गरम रखबाक हेतु मोट तूरयुक्त नूआ १ । बखारीक गोलाकार ओ बीचमे ऊँच चार २ ।
**टोपी**–माथ झपबाक स्यूत वस्त्रविशेष ।
**टोल**–गामक एकदेश ।
**टोलबैआ**–टोलक वासी ।
**टोलाटोली**–अ० गामक प्रत्येक भाग ।
**टोली**–छोट टोल ।
**टोह**–पता, अनुसन्धान ।
**टोहिआएब**–क्रि० टोहि + अब-पता लगाएब ।
**टौआएब**–क्रि० टौ + अब-अनाथ भए इतस्ततः घूमब ।

## ठ

**ठक**–वञ्चक ।
**ठकठक करब**–क्रि० जाड़ेँ दाँतक शब्द करब ।
**ठकठकाएब**–क्रि० ठकठक्+अब+अब-भूमिमे ठेँगा आदिक आघातसँ ठकठक शब्द करब ।
**ठकठकिआ**–ठकठक शब्द कए माछ मारनिहार (मलाह) ।
**ठकठेना**–ठकब, वञ्चना ।
**ठकदरुआ**–गारि पढ़बाक योग्य सम्बन्धिक (श्यालादि) ।
**ठकपन** / **ठकपना** / **ठकपनी** } –ठकक क्रिया, वञ्चना ।
**ठकबिदुरी लागब**–क्रि० लग्+अब-आत्याश्चर्य लागब, आश्चर्येँ अवाक् रहब ।
**ठकुआ**–कृतान्न पकमानविशेष ।
**ठक्कर**–टक्कर, जोरसँ परस्पर आघात ।
**ठट्ठर**–शरीर, शरीरपञ्जर ।
**ठठरी**–टाँगिकेँ पुस्तकादि रखबाक साधनविशेष ।
**ठठेर** / **ठठेरि** } –उ० बर्तनक व्यापारी जातिविशेष । स्त्री० ठठेरिनी
**ठड़र**–ठरड़, निद्रामे जायमान नासाशब्द ।
**ठड़र पारब**–क्रि० पार्+अब-निद्रामे नाकसँ शब्द करब ।
**ठढ़का**–एक प्रकारक ठाढ़ वस्तु ।
**ठढ़कानर**–अपेक्षितापेक्षया उच्च कानर ।
**ठढ़बत्ता**–टाटमे देल ठाढ़ बाती ।
**ठढ़भगबा**–भगबाजेकाँ पहिरल पैघ वस्त्र।
**ठढ़िआ**–एक प्रकारक साग ।
**ठण्ढा**–शीत ।

**ठण्ढाठण्ढी**–अ० केवल ठण्ढा समय ।
**ठनक**–शुष्क निहाल भूमि १। मेघध्वनि २।
**ठनकब**–क्रि० मेघध्वनि ।
**ठनका**–विद्युत्, वज्र ।
**ठमाएब**–ना० ठमब् + अब - अमुक-स्थानस्थित्वेन बुझब ।
**ठरड़**–ठड़र, निद्रामे नाकक शब्द ।
**ठरब**–क्रि० शीत होएब ।
**ठर ठेकान**–स्थितिस्थानादि ।
**ठस**–सुदृढ़ ।
**ठहक**–ग्रामरक्षकक किंवा अनको स्वसूचक शब्द ।
**ठहक्का**–उच्चैः शब्दपूर्वक हास्य ।
**ठहक्का मारब**–कि० मार्+अब-उच्चैः शब्दपूर्वक हँसब ।
**ठहरब**–क्रि० हि० थम्हब, स्थिति ।
**ठहराओ**–ठहरब, स्थिति ।
**ठहाका**–ठहक्का ।
**ठहाठही**–अतिप्रकाश (इजोरिया) ।
**ठही**–श्रम ।
**ठहुरी**–काटल छोट शाखा ।
**ठाइँपठाइँ**–अ० आगाँमे लगले ।
**ठाँओ**–स्थान १ । स्थानमे लेपन २ ।
**ठाकुर**–ब्राह्मण, सोनार, कमार ओ नौआक उपाधि ।
**ठाठ**–गृहाच्छादनक ठट्ठर १। आडम्बर २।
**ठाँठ**–बहिला (माल) ।
**ठाठब**–क्रि० ठठ्+अब-ठाठ बान्हब ।
**ठाठबाट**–परिच्छदादि बाह्य समग्री १। आडम्बर २ ।
**ठाढ़**–उत्थित, स्थित, खड़ा हि० ।
**ठाढ़ि लाल**–पचेसीमे पूरे दस वा पचीसमे उठल (गोटी) ।

**ठानब**–क्रि० ठन्+अब-अधिक वा पैघ कार्यक प्रारम्भ ।
**ठाम**–स्थान ।
**ठामठिम**–अ० कोनो-कोनो स्थानमे ।
**ठार**–शैत्य, ओस ।
**ठारब**–कि० ठार् + अब-शैत्ययुक्त करब ।
**ठारि**–शाखा ।
**ठाँहिपठाँहि**–अ० आगाँमे लगले ।
**ठिकादार** / **ठिकेदार** } –ठीका लेनिहार ।
**ठिकौती**–ठीका ।
**ठिठुरब**–क्रि० शैत्यसँ अङ्ग सङ्कुचित होएब ।
**ठीक**–दुरुस्त, प्रस्तुत, शुद्ध १। ठीकब २।
**ठीकब**–क्रि० ठिक्+अब-सकलन ।
**ठीका** / **ठीकापट्टा** } –नियत आदेयपर कार्यभार ।
**ठुट्ठ**–शाखाशून्य (वृक्ष) ।
**ठुट्टा**–प्रादेश, प्रसृताङ्गुष्ठतर्जनी-प्रमाण १। ठुट्ठप्रभेदक (वृक्षादि) २ ।
**ठुड़री**–अत्यन्त काँच (लताम) १। तामाक प्राचीन कञ्चा २ ।
**ठुनकब**–क्रि० क्रन्दनविशेष ।
**ठुनका**–बद्धमुष्टिक अङ्गुष्ठसँ आघात ।
**ठुनकाएब**–ना० ठुनका+अब्+अब-ठुनका मारब ।
**ठुनका मारब**–क्रि० मार् + अब-बद्धमुष्टिक अङ्गुष्टसँ आघात ।
**ठुमुक्का**–ठुनका ।
**ठुमुक्का मारब**–क्रि० ठुनका मारब ।
**ठुसब**–क्रि० बलपूर्वक अन्तःप्रवेशन ।
**ठुसुआ**–जकरा मध्यमे मसाला ठुसल हो से (मेरिचाइ) ।



**ठेक**–ठेकना, अवलम्बन (इष्टकादि) १। अवधि २ ।
**ठेकनगर**–अवगतस्थानक (वस्तु) ।
**ठेकना**–झुकबाक प्रतिबन्धक अवलम्बन, अड़ानी ।
**ठेकब**–क्रि० उपरका स्थिर वस्तुक माथमे संयोग ।
**ठेकर**–निरोधोत्तरो नहि हटनिहार १ । माथक ठेस २ ।
**ठेकान**–पता १ । अनुसन्धान २ ।
**ठेकाना**–पता ।
**ठेँगा**–यष्टिका, दण्ड ।
**ठेँगी**–लघु जलौका ।
**ठेँघुन**–जाँघ ओ छाबाक जोड़ ।
**ठेँघुनिआ**–ठेँघुनसँ गमन ।
**ठेँघुनिआ देब**–क्रि० ठेँघुनसँ चलब ।
**ठेङा**–हस्तधार्य दण्ड ।
**ठेङी**–लघु जलौका ।
**ठेँठ**–निकृष्ट १। वन्ध्या (गाए आदि) २ ।
**ठेँठपन**–निघृष्टता, नीचता ।
**ठेँठा** / **ठेँठी** } –बहुत खिआएल (कोदारि हर आदि) ।
**ठेलगाड़ी**–ठेलबसँ चलनिहार गाड़ी ।
**ठेलब**–क्रि० पाछाँसँ पकड़ि आगाँ चलाएब ।
**ठेला**–अङ्गमे घर्षण सँ दृढ़ भेल मांस, किण।
**ठेस**–पाएरमे चलबा काल स्थिर वस्तुक आघात ।
**ठेसगर**–ढीठ, निर्भीक ।
**ठेसब** / **ठेस लागब** } –क्रि० चलबा काल पाएरमे आहत होएब ।

**ठेसी**–निर्भीकता, प्रौढ़ता (निन्दामे) ।
**ठेहुन**–जाँघ ओ छाबाक जोड़ ।
**ठेहुनिआ**–ठेहुनसँ गमन ।
**ठेहुनिआ देब**–क्रि० ठेहुनसँ गमन करब।
**ठोक**–उपरसँ आघात ।
**ठोकब**–क्रि० उपरसँ आघात ।
**ठोकर**–सम्मुखसँ आघात ।
**ठोकरा**–उखरिमे अन्न उसकएबाक खोभीयुक्त दण्ड १ । तृणविशेष २ ।
**ठोँठ**–ग्रीवाक अगिला भाग १। गलरन्ध्र २ ।
**ठोँठ लागब**–क्रि० स्वरबन्ध होएब ।
**ठोँठिआएब**–ना० ठोँठिअब्+अब-ठोठँपर हाथ दए बैलाएब ।
**ठोप**–बिन्दु ।
**ठोर**–ओष्ठ ।
**ठोर बिजुकब**–क्रि० ओष्ठ विवृत होएब, कनबाक पूर्वरूप ।
**ठोरबिदुरा**–विवृत ओष्ठबाला ।
**ठोराह**–उ० उचित कथा अवश्य बाजि देनिहार । स्त्री० ठोराहि ।
**ठोस**–दृढ़ ।

## ड

**डकब**–क्रि० उत्कट गन्धप्रकाशन ।
**डकरा**–विषविशेष ।
**डकहा**–मालक सांसर्गिक रोगविशेष, मालक महामारी ।
**डकैती**–डाकूक क्रिया, जान मारि वस्तु लए लेब ।
**डगड़ (र)**–मालक जएबाक रास्ता १। एक प्रकारक ढोल २ ।
**डगडगी**–माटिक गङ्गाजली ।
**डगमग**–डोलमाल, आन्दोलित ।

**डगमगाएब**–क्रि० डगमग्+अब–नौका आदिक आन्दोलन, डोलब ।

**डगमगाह**–आन्दोलनशील (नौका प्रभृति) ।

**डगमगी**–आन्दोलन ।

**डगर (ड़)**–मालक गमनमार्ग १ । पर्वमे ढोलक प्रत्यङ्गणवादन २ ।

**डगरना**–मचानक भारसह डंटा १। अग्रभागसँ निचला ठारि २ ।

**डगरी (ड़ी)**–छोट सूप ।

**डगहर (ड़)**, **डघड़**, **डघर**–मालक चलबासँ बनल रास्ता ।

**डघड़ब**–क्रि० मालक गमन ।

**डङ्का**–युद्धक वाद्यविशेष ।

**डटकी**, **डँटकी**–डण्टी, नाल, वृन्त ।

**डँटगर**–कड़ा रान्हल (भात) १ । डाँटसँ युक्त २ ।

**डटब**–क्रि० सम्मुख सन्नद्ध होएब ।

**डँड़कट्टा**–डणकट्टा १ । डाँड़क व्रण-विशेष ।

**डँड़िआ**–डणिआ, स्त्रीक स्यूत परिधानवस्त्रविशेष ।

**डँड़ेर**–डणेर, बिचला धर ।

**डणकट्टा**–डँड़कट्टा, डाँड़कव्रणविशेष।

**डणिआ**–डँड़िआ, स्त्रीक स्यूत परिधान-वस्त्रविशेष ।

**डणेर**–डँड़ेर, बिचला धर ।

**डण्टा**–दण्ड, छोट लाठी ।

**डण्टी**–डँटकी, नाल, वृन्त ।

**डनिपन**–डानिक क्रिया ।

**डपउ**–डपौ, कदलीबल्कल ।

**डपटब**–क्रि० तर्जन, जोरसँ दबाड़ब ।

**डपोड़सङ्ख**–बहुत कहि किछुओ नहि देनिहार (निन्दामे) ।

**डपौ**–शुष्क कदलीक बल्कल ।

**डफरा**–वाद्यविशेष ।

**डबरा**–पल्बल, खत्ता ।

**डबरी**–छोट डबरा ।

**डब्बू**–तीमन परसबाक पात्रविशेष ।

**डमखोड़**–अशुत्क कदलीबल्कल ।

**डमरू**–वाद्यविशेष । सं० डमरु ।

**डमाडोल**–अति कम्पित ।

**डम्फ**, **डम्फा**–वाद्यविशेष, डफ ।

**डम्भा**, **डम्हा**–परिणामक पूर्वरूपापन्न (फल) ।

**डर**–भय, दर सं० ।

**डरपोँक**–भयशील (निन्दामे) ।

**डरबुक**–भयशील ।

**डराएब**–क्रि० डर्+अब–डेराएब, भीत होएब ।

**डल**–अनुचित आनक क्रिया, एकर केवल देख धातुक योगमे प्रयोग, 'देखू हिनक डल' ।

**डसब**–क्रि० दंशन ।

**डहकन**–गारि देबाक योग्य सम्बन्धिकक प्रति गारि १। गीबतबद्ध गारि २ ।

**डहकनुआ**–गारि देबा योग्य सम्बन्धिक ।

**डहरगेन**–अगण्य ।

**डहरा**–सुगरक बच्चा ।

**डाइनि**–स्त्री० डाकिनी, मारणादि क्रिया कएनिहारि ।



**डाक**–मारणपूर्वक धन हरण, डाकूक क्रिया ।

**डाकनि**–कान लग जोरसँ पढ़बाक सर्पविषहारक मन्त्र ।

**डाकनि देब**–क्रि० कान लग जोरसँ मन्त्र पढ़ब ।

**डाका**–दस्युकर्म, डाक, मारणादिपूर्वक बलात् धनहरण ।

**डाकू**–दस्तु, जागलक बलात् धन-हरणकर्त्ता ।

**डाकू सफिआरा**–दस्युप्रभृति ।

**डाँग**–डाङ, दण्ड, ठेँगा ।

**डाँगर**–डाङर, वाद्यविशेष, एकतारा ।

**डाङ**–डाँग, दण्ड, डण्टा, ठेँगा ।

**डाङर**–नाल १ । वाद्याविशेष २ ।

**डाँटब**–क्रि० डँट्+अब–क्रोधपूर्वक वाचा विरोध दबाड़ब, गञ्जन करब ।

**डाँटी**–डँटकी, नाल ।

**डाँड़**–कटि, शरीरक मध्यप्रदेश ।

**डाँड़ब**–क्रि० डँड्+अब–दण्डन ।

**डाँड़ि**–रेखा ।

**डाढ़ी**–दूध औँटलापर पात्रमे सक्कत भए बैसल दुग्धविकार ।

**डाण**–डाँड़, कटि ।

**डाणब**–क्रि० डण्+अब–डाँड़ब, दण्डन ।

**डाबर**–स्नानादिक अयोग्य जलाशय, पैघ पल्बल ।

**डाबा**–माटिक पात्रविशेष ।

**डाभ**–दर्भ, तृणविशेष १ । काँच नारिकेर २ ।

**डाभी**–दर्भ, तृणविशेष ।

**डामरु**–डमरू, वाद्यविशेष ।

**डाम्ह**–डम्भा, पकबाक पूर्वरूपापन्न (फल)।

**डारि**–शाखा ।

**डालना**–कदीमा प्रभृति अनेक फलसँ सिद्ध तीमन ।

**डाला**–वंशरचित वितत पात्रविशेष ।

**डाली**–छोट डाला ।

**डाँस**–दँश, माँछीसँ पैघ तत्तुल्य पतङ्गविशेष ।

**डाँसब**–क्रि० डस्+अब–दंशन, सर्पादिक काटब ।

**डाह**–दाह १ । असूया, ईर्ष्या २ ।

**डाहब**–क्रि० डाह्+अब–दहन, जराएब ।

**डिगिस**, **डिग्गिस**–काष्ठमजूषाविशेष ।

**डिठौरी**–दृष्टिदोषसँ जात व्रण ।

**डिँड़िआएब**–क्रि० डिँड़ि+अब–गाए प्रभृतिक शब्द करब ।

**डिबिआ**–बन्द कए रखबाक छोट पात्रविशेष ।

**डिमहा**, **डिम्हा**–कनीनिका, आखिक कृष्णगोलक ।

**डिहबार**–डीहक अधिपति, ग्राम-देवता।

**डिहार**–प्राचीन डीह ।

**डिहुली**–छोट डीह ।

**डीक**–अधिक अँटकल (जलादि) ।

**डीक लागब**–क्रि० लग्+अब–अधिक जलादिक अँटकब ।

**डील**–मोट देह ।

**डीलडोल**–आडम्बर ।

**डीलाडीली**–जीवनपर्यन्त ।

**डीह**–वासभूमि ।

**डीही**–डीहबाला १। ओहि डीहक प्राचीन वासी २ ।

**डुग्गी**–वाद्यविशेष ।

**डुबकुनिआ**–पानिमे निमग्न चलब ।

**डुबकुनिआ मारब**–क्रि० मार्+अब-पानिमे डूबिकेँ तरहितर हेलन करब ।

**डुबब**–क्रि० निमज्ञन ।

**डुबाब**–जलीय पक्षिविशेष ।

**डुब्बा**–पानिमे मुइल ।

**डुब्बी**–डुबब, निमज्जन ।

**डुब्बी मारब**–क्रि० मार्+अब-पानिमे डूबिकेँ हेलब ।

**डुम्मरि**–उदुम्बर, वृक्षविशेष ।

**डूब**–निमज्ञन ।

**डूबब**–क्रि० डुब्+अब-निमज्ञन ।

**डूम**–डूब, निमज्ञन ।

**डूमब**–क्रि० डुम्+अब-निमज्ञन ।

**डेउढ़ी**–धनिकक निवासालय ।

**डेओढ़**–अर्धविषम ।

**डेओढ़ा**–आधा अधिक, डेढ़ बर ।

**डेओढ़ी**–ड्योढ़ी, धनिकक निवासालय ।

**डेग**–अग्रिम भूमिमे पादारोपण, चलबामे पादन्यास ।

**डेगची**–तण्डुलपाकपात्रविशेष ।

**डेगाडेगी**–अ० क्रमशः डेग बढ़बैत ।

**डेगार**–झट-झट डेग देनिहार, तेज चलनिहार ।

**डेँगाएब**–क्रि० डेँगब्+अब-डाँगसँ मारब।

**डेँगी**–छोट नौका ।

**डेङाएब**–क्रि० डेङब्+अब-डाँगसँ मारब।

**डेङी**–छोट नौका ।

**डेढ़**–आधा अधिक (रुपैआ, सेर, मन आदि) ।

**डेढ़ बर**–कोनो वस्तुक परिमाणसँ तकर आधा अधिक परिमाण बाला (वस्तु) ।

**डेढ़बा**–मत्स्यविशेष ।

**डेढ़हत्थी**–डेढ़ हाथक (अर्थात् छोट) लाठी ।

**डेन**–मणिबन्धक उपरका अङ्ग ।

**डेँफ**–तृणशूक ।

**डेर**–वक्रवीक्षणस्वभावक (आँखि) १। तादृश अक्षियुत २ ।

**डेरा**–आवास ।

**डेराएब**–क्रि० डेर्+अब-डराएब, भीत होएब ।

**डेरादार**–मनसिआसँ आन पाकालयमे नियुक्त ।

**डेली**–माछ रखबाक पात्रविशेष ।

**डोक**–स्वरभङ्ग ।

**डोक लागब**–क्रि० स्वरभङ्ग प्राप्ति ।

**डोकहर**–पक्षिविशेष ।

**डोका**–क्षुद्र शङ्ख ।

**डोँड़ा**, **डोणा** } –अधिक लम्बा गँहीड खेत (मृत नदी पश्चात् डोँड़ा भय जाइछ) ।

**डोभ**–तृणविशेष ।

**डोम**–उ० चाण्डाल जातिविशेष । स्त्री० डोमिनि ।

**डोमउ**–डोमक बनाओल (बंशपात्र) ।

**डोमनी**–हथकल पैसएबाक केबाड़क यन्त्र १ । नृत्यविशेष २ ।

**डोमरा**–(डोम, अनादर मे) ।

**डोमिनी**–स्त्री० डोम जातिक स्त्री ।

**डोरा**–सूत्र, ताग ।



**डोरि**–अरघनी, वस्त्र टँगबाक लटकाओल डोरी वा बाँस १ । खोपा बन्हबाक डोरी २ । गमनसौकर्य ३ ।

**डोरिआ**–अनेक सरल रेखासँ युक्त (वस्त्र) ।

**डोरिआएब**–क्रि० सक्रमतासम्पादन ।

**डोरिगर**–गमनागमनमे सुकर ।

**डोरी**–साबय, सन प्रभृतिक बाँटल रज्जु ।

**डोल**–भूषणविशेष १ । पानि भरबाक पात्रविशेष २ ।

**डोलब**–क्रि० कम्पन ।

**डोलमाल**–कम्पित ।

**डोली**–दोली, शिबिका ।

**ड्योढ़**–डेओढ़ ।

**ड्योढ़ा**–आधा अधिक ।

**ड्योढ़िआ**–ड्योढ़ि क्रमक (टाट-आदि।)

**ड्यौढ़ी**–अन्तःपुर १ । नृपालय २ ।

## ढ

**ढक**–स्वर्णादि तौलबामे रुपैआ अठन्नी प्रभृतिक प्रतिनिधि परिमाण ।

**ढकढक करब**–क्रि० वस्तुक संचालनसँ तदभ्यन्तरस्थ वस्तुक ढकढक शब्द करब ।

**ढकढकाएब**–क्रि० ढकढक् + अब-ढकढक करब ।

**ढकढोरब**–क्रि० उठाए-बैसाए हड़बड़ाए नाना वस्तु देखब (निन्दामे) ।

**ढकढोल**–पैघ (निन्दामे) ।

**ढकना**–सरबासँ पैघ तादृश मृत्पात्र ।

**ढकब**–क्रि० मिथ्या आत्मप्रशंसा करब ।

**ढक्का**–सं० डफरा ।

**ढङ्गर**–चातुर्य, प्रकार, गहड़ि ।

**ढङ्ग**–उ० चतुर, अधिक गहड़ि बाला ।

**ढट्ठा**–ढाठ, अवरोधक १ । डाँड़मे आधा बान्हल धोती २ ।

**ढट्ठा मारब**–क्रि० मार्+अब-आधा पहिरि आधा धोती डाँड़मे बान्हब।

**ढठिआएब**–ना० ढाठसँ अवरोधन १। ढाठी लागब (ढठिआइत अछि)२। ढाठी लगाएब (ढकिअबैत अछि) ३ ।

**ढड़रा ओदरब**–क्रि० दाहादिसँ चमड़ा ओदरब ।

**ढनढनाएब**–क्रि० ढनढन्+अब-ढनढन शब्द करब, मेघध्वनि ।

**ढनमन**–अयथावत् स्थित (बासन आदि)।

**ढनमनाएब**–क्रि० ढनमन् + अब-अयथोचित स्थित होएब ।

**हढनमनाह**–अयथावत् रहनिहार (घैल आदि) ।

**ढनमनी लागब**–क्रि० लग्+अब-वारंवार ढनमनाएब ।

**ढबक**–अधिक मोसिक पतन ।

**ढबकब**–क्रि० अधिक मोसि खसब ।

**ढबकाह**–अधिक लप (भूमि) ।

**ढरक**–क्रमिक नीच (भूमि) ।

**ढरकब**–क्रि० टघड़ब ।

**ढरकाह**–अधिकप्लव (भूमि) ।

**ढरब**–क्रि० जलादि द्रव वस्तुक पात्रद्वारा भूपतन १ । शीतला व्रणक अनुकूल होएब २ ।

**ढरुआ**–ढारिकेँ बनाओल (लोहिआ प्रभृति) ।

**ढलइ**, **ढलै** } –मत्स्यविशेष ।

**ढहनाएब**–क्रि० ढहन्+अब–अयथोचित स्थितिक होएब ।

**ढहब**–क्रि० माटिप्रभृति फाटिकेँ उपरसँ खसब ।

**ढहलेल**–बूड़ि, मूड़ ।

**ढाक**–ढक्का, वाद्यविशेष ।

**ढाकन**–ढकना, मृत्पात्रविशेष ।

**ढाकी**–पैघ छिट्टा, धान्यादि उद्वहनार्थ वंशनिर्मित पात्रविशेष ।

**ढाठ**–मालक अवरोधक वंशादि ।

**ढाठब**–क्रि० ढठ्+अब–ढाठसँ अवरोधन।

**ढाठी**–रीति ।

**ढाढ़**–धान्यादि रखबाक वंशरचित बृहदाकार पात्र ।

**ढाढ़स** / **ढाँढ़स** } –धैर्य ।

**ढाबा**–फुटएबाक भेद ।

**ढाबा लगाएब**–क्रि० लगब्+अब–परस्पर विरोधक उत्पादन ।

**ढाबुस**–पैघ पीरा (बेँग) ।

**ढार**–उतार, प्लव ।

**ढारब**–क्रि० ढार्+अब–द्रव वस्तु (जलादि) तथा अन्नादिक पात्र द्वारा अधःपातन ।

**ढाल**–तरवारिक निरोधक गेँड़ाक चाम ।

**ढाहब**–क्रि० क्रमिक उपरसँ तोड़िकेँ खसाएब ।

**ढाही**–माथमे परस्पर आघात ।

**ढाही लड़ब**–क्रि० माथसँ परस्पर आघात करब (भेणा आदिक) ।

**ढिकुरी**–छोट मृत्खण्ड ।

**ढिठपन**–निर्भयता, प्रौढ़ता ।

**ढिठाइ**–हि० निर्भयता ।

**ढिठिआएब**–ना० ढीठ+अब–ढीठ (प्रौढ़) होएब ।

**ढिँड़री**–स्त्री० जारपुरुषसँ गर्भवती ।

**ढिढ़मदरा**–केवल पेट भरनिहार (निन्दामे)।

**ढिढुका**–बीचमे उच्च भूमि ।

**ढिढुकाह**–मध्यमे उच्च भूमिसँ युक्त (खेत आदि) ।

**ढिढुकी**–बीचमे उच्च माटि ।

**ढिलढिल**–शिथिल, संलग्न नहि होएनिहार (औँठी–प्रभृति) ।

**ढिलढिलाह**–कनेक ढिलढिल ।

**ढिली** / **ढिल्ली** } –शिथिलता, मन्दता ।

**ढीठ**–निर्भय ।

**ढीँढ़**–जारपुरुषसँ सगर्भ पेट ।

**ढील**–शिथिल १ । संलग्न नहि भेल (औँठी आदि) २ । यूका, केशकीटविशेष ३ ।

**ढुकब** / **ढूकब** } –क्रि० ढुक्+अब–हठात् प्रवेश करब ।

**ढेउआ**–पैसा, पण, पाइ ।

**ढेउआही**–एक ढेउआ प्रमाणक बटिखारा।

**ढेकरब**–क्रि० उद्गार, कण्ठमार्गे वायुनिःसरणशब्द करब ।

**ढेका**–पाञाँ दिस खोँसबाक वस्त्रक प्रान्त ।

**ढेकार**–उद्गार ।

**ढेकी**–धान कुटबाक यन्त्रविशेष १। अखण्ड (हरदिप्रभृति) २ ।

**ढेकुल**–करीन आदिमे बाँसक जड़िमे बान्हल स्थूल वस्तु १ । ढेकीमे समीबाला अङ्ग २ ।



**ढेँग** / **ढेङ** } –छोट तथा मोट लकड़ी ।

**ढेँढ़**–ढीँढ़सँ जनमल, जारल ।

**ढेढ़बा**–नढ़चेतन ।

**ढेप**–मृत्तिकाखण्ड ।

**ढेपचेप**–छोटपैघ सभ प्रकारक ढेप ।

**ढेपाओज**–वारंवार ढेप फेँकब ।

**ढेबा**–भेदबुद्धि ।

**ढेबा लगाएब**–क्रि० लगब् +अब–भेदबुद्धिक उत्पादन ।

**ढेबाहि**–वारंवार प्रवृत्ति ।

**ढेबाहि लागब**–क्रि० वारंवार एक कार्यक प्रवृत्ति होएब ।

**ढेर**–राशि, पुञ्ज १। राशीभूत, पुञ्जीभूत २ ।

**ढेलमासु**–जोरसँ ढेप फेकबाक रज्जुयन्त्र ।

**ढेला**–हि० ढेप ।

**ढेँसब**–क्रि० मालक उकासी करब ।

**ढेसरि** / **ढेसरी** } –मडुआप्रभृतिक सीस ।

**ढेहा**–आघात, वेगापन्नक संयोग ।

**ढेहिआएब**–क्रि० ढेहि+अब–विना हेतुक इतस्ततः करब (निन्दामे) ।

**ढोँग**–विशाल छोट काठक खण्ड ।

**ढोँगा**–पैघ बूड़ि, महामूढ़ ।

**ढोङ**–विशाल छोट काष्ठखण्ड ।

**ढोङा**–पैघ बूड़ि, महामूढ ।

**ढोँढ़**–सर्पविशेष, डुण्डुभ १। पैघ ढोँढ़ी २।

**ढोँढी**–नाभी ।

**ढोल**–पटह, वाद्यविशेष ।

**ढोलक**–मृदङ्गाकार वाद्यविशेष ।

**ढोलकी**–खजुरी, वाद्यविशेष ।

**ढोलढाक**–पटह, ढक्का, प्रभृति ।

**ढोलहो**–मुनादी, ढोल बजाए वार्ता देब ।

**ढोलिआ**–ढोल बजओनिहार ।

**ढोली**–दू सए पातक पानक मूठि ।

**ढोही**–बुड़िबक (निन्दामे) ।

**ढौर**–पिठारक लेप ।

**ढौरब**–क्रि० पिठारसँ लेपन ।

## त

**त**–अ० स्वीकार, एहिमे अकार गुरूच्चारण ।

**तँ**–अ० विशेष, तु सं० १ । तखन, तदा सं० २ ।

**तइओ**–अ० तथापि ।

**तकड़ार**–वि० विवाद, झगड़ा, विरोध ।

**तकड़ारी**–वि० विवादग्रस्त ।

**तकथपोस** / **तकथपोस्त** } –वि० काठक खाट ।

**तकथा**–सिन्धुक आदि बनएबा योग्य पातर ओ चाकर कए चीरल काठ, पट्टा ।

**तकथी**–छोट तकथा, फलक ।

**तकलीफ**–वि० क्लेश ।

**तकेआ**–उपधान, गेडुआ ।

**तक्र**–सं० जीरलवणयुक्त मथल दही ।

**तखन**–अ० ताहि क्षणमे, तदुत्तर ।

**तखनुक** / **तखनुका** } –ताहि कालक ।

**तगड़**–तगर, पुष्पविशेष ।

**तगबा**–सर्वविशेष ।

**तगर**–सं० पुष्पविशेष, तगड़ ।

**तगादा** / **तगेदा** } –वि० आदेयक माँग ।

**तग्गी**–माछ मारबाक यन्त्रविशेष ।

**तङ**, **तङ्ग**–वि० दिक्क, व्याकुल ।

**तच्छ**–वायुसँ फूलल सक्कत (पेट) ।

**तज**–त्वक्, ओषधिविशेष ।

**तड़क**–चारक आधारभूत लकड़ी ।

**तड़कब**–क्रि० शब्द करब ।

**तड़का**–कानक भूषणविशेष ।

**तड़की**–कानक भूषणविशेष, छोट तड़का।

**तड़ख**–तड़क, चारक आधारभूत काष्ठ।

**तड़(र)गर**–कड़ा ।

**तड़(र)पब**–क्रि० फानब ।

**तड़फड़**–अ० शीघ्र ।

**तड़फड़ी**–शीघ्रता ।

**तड़िपत**–तालीपत्र, बजरबट्टूक पात ।

**तड़ेरा**–बनसीक डोरीमे बान्हल कोढ़िला आदि ।

**ततए**–अ० ताहि ठाम ।

**ततखनात**–अ० तत्क्षणात्, ताही क्षणमे ।

**ततनी**, **ततने**–ताहि अल्प परिमाणक ।

**ततबा**–ताहि प्रमाणक ।

**ततमत**–तारतम्य ।

**ततमताएब**–क्रि० ततमत्+अब–तारतम्य करब ।

**ततमताह**, **ततमतिआ**–तारतम्य कएनिहार ।

**ततमा**–जातिविशेष ।

**तत मारि मारब**–क्रि० ततेक मारब ।

**ततमिनी**– स्त्री० ततमा जातिक स्त्री० ।

**ततय (ए)**–अ० तत्र, ताहि ठाम ।

**ततहि**–अ० ताही ठाम, तत्रैव सं० ।

**ततहु**–अ० ताहू ठाम, तत्रापि सं०।

**ततारब**–क्रि० ततार्+अब–बड़क दूधप्रभृति लसिगर वस्तु बेमाए आदिमे दए आगिक ताओ देब ।

**तती काल**–ततेक काल ।

**तती खन**–ततेक क्षण ।

**ततेक**–ताहि परिमाणक ।

**तत्पर**–सं० उद्‌युक्त, सावधान ।

**तनतन**–पीजु आदिक पूर्णतासँ वेदना-विशेष ।

**तनतनाएब**–क्रि० तनतन्+अब–पूर्वोक्त वेदनाविशेषयुक्त होएब ।

**तनतनी**–पूर्वोक्त वेदना ।

**तन्द्रा**–आलस्यादिवश आँखि किछु ताकब ओ किछु मुनब, आँखिक सर्वथा मुद्रणक अभाव ।

**तपत**–तप्त, उष्ण ।

**तपसी**–तापसि ।

**तब**–रोटी पकएबाक लौहपात्रविशेष ।

**तबक**–पान आदिमे उपरसँ सटबाक वस्तुविशेष ।

**तबब**–क्रि० तप्त होएब ।

**तबला**–वाद्यविशेष ।

**तबालची**, **तबाल्ची**–तबला बजओनिहार ।

**तबाह**–वि० व्याकुल ।

**तमकुलाइनि**, **तमकुलानि**–तमाकूक गन्ध १। तमाकूक गन्धसँ युक्त २।

**तमकुलाह**–तमाकूक सम्पर्की (गूआ आदि) ।

**तमघैल**–ताम्रघट १ द्रव्यक घैल २।

**तमतम करब**–क्रि० क्रोधाकुल होएब।



**तमनी**–तामनि, तामब, कोदारिसँ क्षेत्रमृत्तिकोघद्‌घाटन ।

**तमसगीर**–तमासा देखनिहार ।

**तमसाएब**–ना० तामस + अब–तामस (क्रोध)सँ युक्त होएब ।

**तमसाह**–उ० क्रोधी । स्त्री० तमसाहि ।

**तमाकू**, **तमाकूल**–तमाखु, खैनी ।

**तमासा**–नृत्याद्युत्सव १। अद्भुत दृश्य २।

**तमोलि**–उ० पानक व्यवसायी जातिविशेष।

**तमोलिनि**–स्त्री० तमोलि जातिक स्त्री ।

**तमौर**–सितार प्रभृतिक तुम्बा ।

**तम्बू**–उपकार्या, पटगृहविशेष ।

**तर**–तल, अभ्यन्तर १ । वृक्षादि आच्छादक वस्तुक नीच देश २ ।

**तरउपरा**–डाँड़क नीचाँ उपर दुहूमे पहिरल स्त्रीसम्बन्धी (वस्त्र) ।

**तरक**–अत्युष १ । तर्क २ ।

**तरकट**–तरमे जमल घृतादिक विकार ।

**तरका**–तरमे स्थित ।

**तरकारी**–व्यञ्जन ।

**तरक्की**–वि० उन्नति ।

**तरख**–चारक आधारभूत काष्ठविशेष ।

**तरखाएब**–क्रि० तरख्+अब–किञ्चित् शुष्क होएब ।

**तर(ड़)गर**–कड़ा (खढ़ आदि) ।

**तरङ**– तरङ्ग १ । आवेग २ ।

**तरङब**–क्रि० शुष्कतासँ खेत जोतबा योग्य नहि रहब ।

**तरङ्ग**–सं० ऊर्मि १ । आवेग २ ।

**तरहुत**–वि० चिन्ता ।

**तरपट**–बीच, तारतम्य, अन्तर ।

**तरफ**–वि० दिश ।

**तरब**–क्रि० तैल वा घृतमे व्यञ्जनक पाक ।

**तर-बतर**–अ०वि० समग्र देहमे अधिक (घाम चलब) ।

**तरबा**–चरणतल ।

**तरबातारू**–तरबा रगड़ब प्रभृति निखिल परिचर्या ।

**तरबोरा**–पश्चिम दिशाक इन्द्रधनुष ।

**तरल**–तैलादिपक्व (व्यञ्जन) ।

**तरहत्थी**–हस्ततल ।

**तरहरा**–कृत्रिम खाधि, धरतीक तर देने जयबाक कृत्रिम अवकाश ।

**तरहा**–घोड़ाक गद्दी १ । गहीँड़ रहबाक स्थान २ ।

**तराउपर**, **तराउपरी**–उ० तर उपर कए राखल ।

**तराए**–कट, बिछाओन, तालपत्रक पटिआ।

**तराजू**–तुला ।

**तराटक**, **तराटक्क**–त्राटक, आँखिक चिरकालिक एकाग्रता ।

**तराय**–कट, बिछाओन, तालपत्रक पटिआ।

**तरास**–अधिक पिआस ।

**तरासब**–क्रि० तरास्+अब–उपरसँ काटब ।

**तरी**–वृक्षतल १ । वृक्षतलक उपजा २ ।

**तरुआ**–तरल (तरकारी) ।

**तरुआरि**–करवाल, खड्ग, अस्त्रविशेष।

**तरेगन**–तारा ।

**तरेड़ा**–बनसीक डोरीमे बान्हल कोढ़िला आदि ।

**तरैआ**–बानिक प्रभेद, तराएतुल्य (बानि)।

**तरोटा**–पौतीप्रभृति पात्रक तरका खप्पा ।

**तर्क**–सं० अनुमान ।

**तलबी**–वि० आह्वान ।
**तलास**–वि० अन्वेषण ।
**तलासब**–वि० क्रि० तलास्+अब–अन्वेषण करब ।
**तली**–वस्तुक तल, अधस्तल ।
**तल्ला** } –जूताक निचला भाग १ । अधस्तल २ ।
**तल्ली** }
**तसबीर**–वि० चित्र ।
**तसमइ** } –पायस, खीर, क्षीर ।
**तसमै** }
**तसर**–रेशमक प्रभेद ।
**तसला**–पाकपात्रविशेष ।
**तसली**–छोट तसला ।
**तह**–मोड़ब, आवृत्ति ।
**तहदर्ज**–वि० प्रथम चौपेतल, परम नवीन (वस्त्रादि) ।
**तहसनहस**–वि० छिन्न-भिन्न ।
**तहसील**–वि० ओसूल ।
**तहसीलदार**–वि० माल ओसूल करबामे नियुक्त ।
**तहाँ**–अ० ताहि ठाम ।
**तहिआ**–अ० ताहि समयमे ।
**तहिना**–अ० ताही प्रकारेँ ।
**तहुना**–अ० ताहू प्रकारेँ ।
**ता**–अ० तावत् ।
**ताइ**–दही पौरबाक वंशपात्र ।
**ताओ**–ताप, ज्वाला १ । अच्छिन्न एक कागत २ ।
**ताक**–समयक आनुकूल्य १। अन्वेषण २ ।
**ताकति**–वि० शक्ति, बल ।
**ताकब**–क्रि० तक्+अब–अवलोकन १ । अन्वेषण २ ।
**ताक-हेर** } –खोजपुछारी, निरीक्षण ।
**ताकाहेरी** }
**ताकूति**–रक्षा ।
**ताकूती**–तत्परता ।
**ताख**–चक्का ।
**ताखी**–ताज, एक प्रकारक टोपी ।
**ताग**–सूत्र, डोरा ।
**तागब**–क्रि० तग्+अब–दूर दूर कए सिअब ।
**ताँगा** } –बड़दसँ रहित शकट, गाड़ी ।
**ताङा** }
**ताज**–क्रि० शिरोधार्य वस्त्रविशेष १। राजमुकुट २ ।
**ताड़**–तात्कालिक आवश्यकता ।
**तातकाल**–अ० तत्काल, सम्प्रति १ । ताहि काल २ ।
**ताँति**–चामक तन्तु ।
**तात्पर्य**–सं० अभिप्राय ।
**तान**–गीत गएबामे शब्दविशेष १। तानब २।
**तानपूरा**–वाद्यविशेष ।
**तानब**–क्रि० तन्+अब–जोरसँ पसारि बान्हब [तम्बू तानल अछि] ।
**तानी**–वस्त्रनिर्म्माणक नामानामी सूत १। एक यज्ञोपवीत २ ।
**तापसि**–महादेवक पण्डा, ब्राह्मणजाति-विशेष ।
**तावत्**–अ०सं० ता धरि ।
**ताबेदार**–वि० नोकरी, हुकुम मानब।
**ताम**–ताम्र, धातुविशेष ।
**तामदान**–नरवाह्य वाहनविशेष ।
**तामब**–तम्+अब–कोदारिसँ माटि काटि कें उनटाएब ।



**तामस**–क्रोध ।
**तामा**–चूड़ा चाउर नपबाक काष्ठक पात्रविशेष ।
**तामा मानब**–क्रि० आज्ञाक अङ्गीकार ।
**तामि**–कालज्ञानार्थ यन्त्रविशेष ।
**ताम्बूल**–सं० लगाओल पान १ । वि० तारतम्य २ ।
**तार**–द्रव्यक तन्तु १ । तालवृक्ष २ ।
**तारकून** } –काँच तालफल ।
**तारकूल** }
**तारतम्य**–सं० कर्तव्याकर्तव्य-विचार १ । अन्तर, वैषम्य २ ।
**तारब**–क्रि० भिजल धानकेँ किञ्चित् भुजब ।
**तारभूज**–लताफलविशेष ।
**तारमताड़** } –अ० अविरामेण बारबार ।
**तारमतार** }
**तारमूली**–औषधिविशेष ।
**तारा**–सं० नक्षत्र, तरेगन ।
**तारी**–तालमद्य ।
**तारु**–तालु ।
**ताल**–हास्यास्पद चेष्टा १। सं० तान २।
**ताल ठोकब**–क्रि० बाँहि पर करतलध्वनि करब ।
**तालमखाना**–ओषधिविशेष ।
**तालमिसरी**–बनाओल एक प्रकारक मिसरी ।
**ताला**–यन्त्रिका, बन्द करबाक यन्त्र ।
**ताली**–हास्यास्पद नाना चेष्टा कएनिहार ।
**ताली देब**–क्रि० आनकेँ उद्देश कए करतलध्वनि करब ।
**तालीसपत्र**–सं० ओषधिविशेष ।
**तालुक**–वि० अधीन ।
**तालुका**–वि० जमीन्दारी टुकड़ा ।
**तास**–खेलएबाक ५२ गोट मोट कागतक पत्र ।
**तासा**–भेरी, वाद्यविशेष ।
**तिअ**–स्त्री० स्त्री ।
**तिउरा**–पुष्पविशेष ।
**तिखुर**–आँटाक प्रभेद ।
**तिग्गी**–तास आदिक तेसर फर्द ।
**तितपड़ली**–तिक्तपटोली, लताफलविशेष।
**तितपरली**–लताफलविशेष ।
**तितब**–क्रि० भीजब, जलादिसँ सार्द्र होएब ।
**तितरिम**–वृक्षविशेष ।
**तिरि** } –तित्तिर, पक्षिविशेष ।
**तितीर** }
**तित्तिर** }
**तितुआ**–तृणविशेष ।
**तिनकनमाही**–तीन कनमाक (बहिखारा वा नपना) ।
**तिनखण्डी**–भूषणविशेष ।
**तिनपइ** } –तीन पाओक बटिखारा वा नपना ।
**तिनपै** }
**तिरछाह**–तिर्यक्, असरल ।
**तिरछी**–वक्र ।
**तिरछी काटब**–क्रि० असरल मार्गेँ जाएब ।
**तिरतीआ**–तृतीय तिथि ।
**तिरपन्न**–त्रिपञ्चाशत्, ५३, संख्याविशेष।
**तिरमिराएब**–क्रि० तिरमिर्+अब–आबल्यसँ बहुधा झुकब ।
**तिरमुहानी**–तीन मार्गक सन्धिस्थल ।

**तिरसट्ठि**–त्रिषष्ठि, ६३ ।
**तिरसट्ठिम**–तिरसट्ठिक पूरण, त्रिषष्ठितम ।
**तिरहुता**–मिथिलाक अक्षर ।
**तिरहुताम**–मैथिलोचित (वेषादि) ।
**तिरहुति**–तीरभुक्ति, मिथिला ।
**तिरहुतिआ**–तिरहुतिमे भेल १। तिरहुतिवासी २ ।
**तिराएब**–क्रि० तिर्+अब-तैआर कएला पर धान आदिक मोन पूरब ।
**तिरान्नबे**–त्रयोनवति, ९३ ।
**तिरान्नबेम**–तिरान्नबेक पूरण, त्रिनवतितम।
**तिरान्नब्बे**–त्रयोनवति, ९३ ।
**तिरान्नब्बेम**–तिरान्नब्बेक पूरण, त्रिनवतितम।
**तिल**–सं० अन्नविशेष ।
**तिलक**–सं० कपारक चानन ।
**तिलका**–वृक्षविशेष ।
**तिलकोड़**–लताविशेष, बिम्बफल ।
**तिलठी**–तिलयुक्त मिष्टान्नविशेष ।
**तिलबा**–तिलक मिष्टान्नविशेष १। तिलक, देहमे तिलाकार बिन्दु २।
**तिलरी**–कण्ठक भूषणविशेष ।
**तिलाठी**–तिलक डाँट ।
**तिलासँकराँति** / **तिलासंक्रान्ति** }–मकर-संक्रान्ति ।
**तिलौरी**–तिलमय बटी, व्यञ्जनविशेष ।
**तिसिऔटा**–तीसीक सनसँ बीनल ।
**तिसिऔरी**–तीसीक वटी, व्यञ्जनविशेष।
**तीअ**–तृतीया तिथि ।
**तीअर**–जातिविशेष ।
**तीआ**–तास आदिक तेसर फर्द ।
**तीख**–तीक्ष्ण ।

**तीत**–तिक्त ।
**तीतब**–क्रि० तित्+अब-जलादिसँ आर्द्र होएब, भीजब ।
**तीन** / **तीनि** }–त्रिसंख्यक, ३ ।
**तीमन**–तेमन, झोर ।
**तीर**–बाण १ । सं० तट २ ।
**तीरब**–क्रि० पकड़िकेँ घैँचब ।
**तीरा**–पुष्पविशेष ।
**तीसी**–अतसी सं० ।
**तुअब**–क्रि० तु+अब-बेलसि भए फलादिक पतन १ । नक्षत्रक प्रवेशदिनमे किञ्चित् जलबिन्दु पतन २ ।
**तुतिआ**–तुत्थ ।
**तुनब**–क्रि० चुटकीसँ तूरक विश्लेषण।
**तुन्न**–फुलल ।
**तुफान**–वि० पैघ बिहारि, भारी उपद्रव ।
**तुमब**–क्रि० तूरक विशकलन करब ।
**तुम्बा**–सुखाएल सजमनिक ठठ्ठर ।
**तुम्बी**–सं० छोट तुम्बा १ । रक्तमोक्षणक यन्त्रविशेष २ ।
**तुम्मा**–तुम्बा ।
**तुम्मी**–तुम्बी ।
**तुरकान**–तासक क्रीड़ाविशेष ।
**तुरन्त**–लगले ।
**तुरफान**–चीनी बनएबाक यन्त्रविशेष ।
**तुरभरा**–जाहिमे तूर भरल रहए से (दोहरि) ।
**तुरमारि**–समयपर नहि बाहनिहारि, दोसरा-तेसरा वर्षमे गर्भ लेनिहारि (माल)।
**तुरहा**–जातिविशेष ।



**तुरही**–वाद्यविशेष ।
**तुराइ**–अधिक तूर देल ओढ़ना ।
**तुरुक**–तुरुष्क, तुर्कदेशोद्भव, म्लेच्छ ।
**तुरोड़ा** / **तुरोरा** }–नेनाक हेतु तूरबाला छोट गद्दी ।
**तुल**–सम १ । तैआर २ ।
**तुलना**–सं० सादृश्य, उपमा ।
**तुलब**–क्रि० संनद्ध होएब ।
**तुलबुलिआ**–चञ्चल (बालिका) ।
**तुलसी**–सं० क्षुपविशेष ।
**तुसारी**–माघक कुमारिकाक एक पाबनि।
**तूअब**–क्रि० तु+अब-बेलसि भए फलादिक पतन १ । नक्षत्रक प्रवेशदिनमे चिञ्चित् जलबिन्दुपतन २ ।
**तूँति**–फलविशेष ।
**तूँती**–पक्षिविशेष ।
**तूनब**–क्रि० तुन्+अब-चुटकीसँ तूरक विश्लेषण करब ।
**तूनि**–वृक्षविशेष ।
**तूमब**–क्रि० तुम्+अब-तूरक विश्लेषण।
**तूर**–तूल, कपास ।
**तूल**–सज्ज, प्रस्तुत ।
**तृणकुङ्कमा**–ओषधिविशेष ।
**तृतीया**–सं० तेसर तिथि ।
**तेँ**–अ० तस्मात्, ताहि हेतु ।
**तेआगब**–क्रि० तेआग्+अब-त्यागब, छोड़ब ।
**तेकठ**–संश्लिष्ट तीन काठ १ । असरल कार्य २ ।
**तेकठी**–तीन काठी वा बाँसकेँ जोड़ि बनाओल आधार ।
**तेकमिआ**–तीन तीक्ष्णाग्र कामिबाला अस्त्र।

**तेकुसा**–तीन कुशसँ बनाओल ।
**तेखार**–तीन बेर जोतल ।
**तेखारब**–क्रि० तेखार्+अब-तेसर बेर जोतब ।
**तेगा**–अस्त्रविशेष ।
**तेगाड़**–तीन गाड़ (पटएबामे) ।
**तेगुन**–त्रिवृत्त, त्रिगुण ।
**तेगुनाएब**–ना० तेगुन+अब-त्रिगुणीकरण।
**तेघारब**–क्रि० तेघार्+अब-वारंवार पूछब।
**तेज**–वि० तीव्र १ । तीक्ष्णबुद्धि २ ।
**तेजपात**–पत्र सं० ।
**तेजब**–क्रि० त्यागब ।
**तेजबल**–ओषधिविशेष ।
**तेजाब**–वि० गन्धकादिक सारांश तीक्ष्ण द्रव ।
**तेजी**–वि० तीव्रता ।
**तेठठ**–तीन ठाम निवासगृह ।
**तेड़ारि**–पक्षिविशेष ।
**तेतर**–पचेसीमे तीन खुदरेँ लाल होएबा योग्य (गोटी) १ । तीन कन्याक उत्पत्तिक अनन्तर उत्पन्न (बालक) २ ।
**तेतरि**–तिन्तिड़ी, वृक्षविशेष ।
**तेतलिआ**–बएलगाड़ीक एक अङ्ग ।
**तेतार**–तृणविशेष ।
**तेताल**–तीन तालबाला (राग) ।
**तेँतालिसम**–त्रिचत्वारिंशत्तम, तेँतालीसक पूरण ।
**तेँतालीस**–त्रिचत्वारिंशत् ४३ ।
**तेँतिस**–त्रयस्त्रिंशत, ३३ ।
**तेँतिसम**–त्रयस्त्रिंशत्तम, तेँतिसक पूरण।
**तेधरिया** / **तेधारा** }–तीन धारीबाला (पसीझ) ।

**तेना**–अ० ताहि प्रकारेँ ।
**तेनु**–तिन्दुफल ।
**तेनुआ**–व्याघ्रविशेष ।
**तेपखा**
**तेपखिआ** } –तीन पक्षमे होएनिहार (गम्हड़ी) ।
**तेपतिआ**–शाकविशेष ।
**तेपहर**–तृतीय प्रहर ।
**तेपाइ**–वस्तुजात रखबाक चारि पादसँ युक्त तकथा (एहिमे तीनिक बोधक 'ते' पद प्रयोगक मूल विचारणीय)।
**तेबट्टी**–तीन दिश जएबाक मार्ग ।
**तेबर**–त्रिवृत्त, त्रिगुण ।
**तेबरखा**–तीन वर्षक (गृहादि) ।
**तेबासि**–तीन दिनक पर्युषित (भात आदि) ।
**तेभाग**–तीन भाग १। त्रिकोण (क्षेत्रादि) २।
**तेमहर**–अ० ताहि दिस ।
**तेमहल**
**तेमहला** } –तीन महलबाला, त्रिभूम (प्रासाद) ।
**तेमसिआ**–त्रैमासिक (शिशु) ।
**तेरह**–त्रयोदश, १३ ।
**तेरहम**–तेरहक पूरण ।
**तेरहम चास**–सर्वविरुद्ध बात (निन्दामे)।
**तेरहा**–दशाहाशौचोत्तरक (श्राद्ध) ।
**तेरोदसी**–त्रयोदशी तिथि ।
**तेल**–तैल ।
**तेलगर**–अधिक तेलसँ युक्त ।
**तेलचट्ट**–अधिक मैल ।
**तेलबासा**–तेल रखबाक चोँगी ।
**तेलहन**–तेल देनिहार अन्न (सरिसओ प्रभृति) ।
**तेलही**–तेलमे पक्व (सोहारी आदि) ।
**तेलारि**–तृणविशेष ।
**तेलाह**–तैलसम्पर्की (तण्डुलादि) ।
**तेलि**–उ० तेलक व्यवसायी जातिविशेष, तैलिक । स्त्री० तेलिनि ।
**तेलिआ**–सर्पविशेष १ । अनादरणीय तेलि २ ।
**तेलिआरी**–तेलिक आलय ।
**तेलिआह**–तेलिवत् मलिनवस्त्रा दिधारी ।
**तेलिनि**–स्त्री० तेलि जातिक स्त्री ।
**तेलिबभना**–तेलिकेँ पुजओनिहार ब्राह्मण।
**तेसज्झा**–तीनि व्यक्तिक साझी ।
**तेसर**–तृतीय ।
**तेसरी**–तृतीय (हिस्सा) ।
**तेसरुकाँ**–अ० तेसर वर्षमे ।
**तेहड़ा**–तेहरा, पैघ कोड़ल तीन थुमहाक चूल्हि ।
**तेहत्तरि**–त्रिसप्तति, ७३ ।
**तेहत्तरिम**–त्रिसप्ततितम, तेहत्तरिक पूरण।
**तेहन**–तादृश ।
**तेहरा**–पैघ कोड़ल तीन थुमहाक चूल्हि ।
**तेहराएब**–क्रि० तेहर्+अब-तृतीयावर्त्तन।
**तेहल्ला**–उदासीन, तटस्थ ।
**तेहाइ**–तृतीयांश ।
**तेआर**–वि० दुरुस्त, सज्ज, प्रस्तुत ।
**तैआरी**–वि० ओरिआओन, दुरुस्ती, सम्पन्नता ।
**तैओ**–अ० तथापि ।
**तैस**–त्रयोविंशति, २३ ।
**तैसम**–त्रयोविंशतितम, तैसक पूरण ।
**तोँ**
**तोहेँ** } –अनादरणीय सम्बोध्य, त्वम् सं० ।
**तोकार**–अनुचित व्यक्तिमे तोँ शब्दक प्रयोग



**तोड़**–झोँक १ । खेप २ ।
**तोड़ब**–क्रि० त्रोटन, खण्डशः करब १ । गाछसँ पुष्पादिक चयन २ ।
**तोड़ा**–रुपैया रखबाक जाली, थैली ।
**तोड़ी**–रक्तसर्षप ।
**तोतराएब**–क्रि० तोतर्+अब-वर्णकेँ दोहराए-तेहराए सेहराए बाजब ।
**तोतराह**–वर्णकेँ दोहराए-तेहराए बजनिहार।
**तोनी**–संयुक्त तर्जनी ओ अंगुष्ठाग्र, चुटकी।
**तोप**–बृहत् भुशुण्डी, अस्त्रविशेष ।
**तोपब**–क्रि० झाँपब ।
**तोला**–हि० दश मासा, परिमाणविशेष ।
**तोसक**–सुतबाक गद्दी ।
**तोसखाना**–वि० कोष ।
**तौनी**–उत्तरीय वस्त्र, प्रावार ।
**तौल**–तोलन, तुलासँ सम्मितकरण ।
**तौलब**–क्रि० तराजू आदिसँ परिमाणज्ञान करब ।
**तौला**–माटिक पैघ पाकपात्र ।
**तौलिआ**–हि० एक प्रकारक अँगपोछा ।
**त्याग**–सं० छोड़ब ।
**त्यागब**–क्रि० त्याग्+अब-छोड़ब ।
**त्रयोदशी**–सं० तेरहम तिथि ।
**त्रिदोष**–सं० सन्निपात (ज्वर) ।
**त्रिफला**–सं० अओरा, हड़ीर, बहेड़ ।
**त्रुटि**–सं० हीनता, दोष, छूटब ।
**त्रेटह**–उत्पटाङ कार्यकर्त्ता ।
**त्रोटि**–विश्राम (बाजब आदिमे) ।
**त्वचा**–सं० त्वक् ।
**त्वक्छ्राहछ्र**–सं० वाचा कलहविशेष ।

## थ

**थउआ**–थौआ, संचूर्णित ।
**थकथकाएब**–क्रि० थकथक्+अब-स्तब्ध होएब ।
**थकनी**–परिश्रमजन्य वेदनाविशेष ।
**थकरनी**–केशमार्जनी, केश थकरबाक साधन, बद्ध कामिसमूह ।
**थकरब**–क्रि० केशक सम्मार्जन ।
**थकुचब**–क्रि० चूर्णन, चोटसँ शिथिलावयव करब ।
**थकुचा**–थकुचल, चोटसँ शिथिलावयवी-कृत।
**थन**–स्तन, स्त्रीक पयोधर ।
**थनैल**–नारीक स्तनमे दुग्धाधिक्यप्रयुक्त भेनिहार रोगविशेष ।
**थपड़ाएब**–ना० थपड़ब्+अब-थापड़सँ मारब ।
**थपड़ी**–करतलध्वनि, ताली ।
**थपुआ**–चापट कोर मोड़ल (खपड़ा) ।
**थम्भ**
**थम्ह** } –कदलीकाण्ड, स्तम्भसदृश कदलीवृक्षाङ्ग ।
**थम्हगर**–थम्हि सकनिहार, भारसह, दृढ़।
**थम्हब**–क्रि० स्थित रहब, रुकब, ठहरना हि० ।
**थर**–पैघ माछक बच्चा ।
**थरथर**–सकम्प ।
**थरथराएब**–क्रि० थरथर्+अब-कापब, कम्पन ।
**थरथरी**–कम्प ।
**थरि**–माल बन्हबाक स्थान ।
**थल**–स्थल ।
**थलकमल**–स्थलकमल, कमलसन पुष्पविशेष ।

**थलगर**–अधिक थालसँ युक्त ।
**थलथल**–भितर जलमयताप्रयुक्त पाएरसँ दबि गेनिहार (भूमि) ।
**थलाह**–थालसँ युक्त ।
**थलिआएब**–ना० थलिअब्+अब–थाला (आलवाल) सँ युक्त करब ।
**थाक**–ढेरी, समूह ।
**थाकनि**–थकनी, श्रान्ति ।
**थाकब**–क्रि० थक्+अब–परिश्रान्त होएब ।
**थाकर**–धान्यविशेष ।
**थान**–कपड़ाक परिमाणविशेष १। देवादिक स्थान २ ।
**थाना**–राजकीय पदातिक स्थान ।
**थाप**–व्यवस्था १। निर्भरता स्थान २ ।
**थापड़**–चपेटा, ताड़नोद्यत करतल ।
**थापना**–स्थापन (देवादिक) ।
**थापब**–क्रि० थप्+अब–स्थापित करब ।
**थापा**–स्थासक, सम्पूर्ण करतललग्न पिष्टातक कुङ्कमादिक चिह्न ।
**थापी**–चाकर मुङरी ।
**थार**–पैघ थारी ।
**थारी**–भोजन करबाक कांस्यादिपात्र ।
**थारू**–जातिविशेष ।
**थाल**–कर्दम, कीच ।
**थाल-खीच**–कर्दमादि ।
**थाला**–आलवाल १। पुष्पादिक बीजवपन २। लगबाक हेतु वृक्षक गाड़ल खुट्टी ३ ।
**थाह**–तलस्पर्शयोग्य (जलाशय) ।
**थाह पाएब**–क्रि० पब्+अब–तलस्पर्श करब ।

**थाहब**–क्रि० थाह्+अब–तलस्पर्शयोग्यताक परीक्षा करब ।
**थिति**–अवस्था, स्थिति १। सम्पत्ति २ ।
**थितिगर**–विभवशाली ।
**थिर**–स्थिर ।
**थिराएब**–क्रि० थिर्+अब – मालक आर्तवप्राप्ति ।
**थीर**–स्थिर ।
**थुकरब**–क्रि० थूत्करण, मुखस्थ वस्तुक वेगपूर्वक उद्गिरण ।
**थुकहा**–तृणविशेष ।
**थुक्कम-थुक्का**, **थुक्कम-फझैती** }–निघृष्ट कलह ।
**थुथनाएब**–ना० थुथनब्+अब–थुथूनसँ आघात देब ।
**थुथुन**, **थुथून** } –पशुक मुखाग्रभाग ।
**थुमहा**–कृत्रिम मृत्पिण्डविशेष ।
**थुलथुल**–अधिक स्थूल ।
**थूक**–मुखोत्पन्न जल ।
**थूकब**–क्रि० थुक्+अब–थूक फेकब ।
**थूरब**–क्रि० थुर्+अब–स्थूलयष्टिमुखसँ चूरब ।
**थेथर**–दुर्निवार अनेक निवारणहु नहि माननिहार (निन्दामे) ।
**थेथरिऔं देब**–क्रि० निराकरणहु वारंवार याचनादि ।
**थेहगर**–अक्षमताशून्य ।
**थैली**–रुपैआप्रभृति रखबाक जाली ।
**थोड़**–अल्प ।
**थोड़बए**–अ० अल्पे ।
**थोड़बओ**–अ० अल्पो ।



**थोड़ेक**–अल्प ।
**थोथरब**–क्रि० उत्पीड़नजनक दुलार करब १। तीक्ष्ण अग्रक मूर्च्छित होएब २। मूर्च्छित करब ३ ।
**थोप-थाप लगाएब**–क्रि० लगब्+अब–कोनहुना कलहादिक तात्कालिक निवृत्ति करब ।
**थोपब**–क्रि० कार्य समर्पित करब १। आच्छादित करब २ ।
**थोपी**–फुदनाबाला खोपाक डोरि ।
**थोपी ममरखा**–पानिक कातमे होनिहार चौपतिआक जड़ि, ममरखाक प्रभेद ।
**थोभ**–स्तोभ, समता, जलक गतिनिवृत्ति।
**थोभ लागब**–क्रि० लग् + अब–जलद्वयसमताप्रयुक्त प्रवाहहीन होएब ।
**थोम-थाम लगाएब**–क्रि० थोप-थाप लगाएब, कलहादिक तात्कालिक कयचित् शान्ति करब ।
**थोर**–थोड़, अल्प ।
**थौआ**–थउआ, संचूर्णित ।
**थौका**–फलविशेष ।

## द

**दए**–अ० दय, प्रसङ्गेँ, मादए ।
**दओन**–करीनक कृत्रिम पनिबह ।
**दओना**–पुष्पविशेष ।
**दओनाकदम्ब**–कदम्बपुष्पविशेष ।
**दक**–तेजाब आदि तीव्र वस्तुक दाप ।
**दकचब**–क्रि० अनेक ठाम छओ देब १। वृथा लिखब २ ।
**दक्षिण**–सं० अवाची दिश ।

**दक्षिणा**–सं० कर्मप्रतिष्ठार्थ उत्सृष्ट ।
**दक्षिणी अडाँची**–गुजराती एला, छोटी लाँयची हि० ।
**दक्षिणी सुपारी**–पूगीविशेष ।
**दगदग**–हृदयक कम्प ।
**दगदगाएब**–क्रि० दगदग्+अब–छातीक कम्पन ।
**दगदगी**–हृदयकम्प ।
**दगध**–दग्ध ।
**दगधब**–क्रि० व्याकुलीभाव ।
**दगधल**–व्याकुल (मन आदि) ।
**दगनी**–बाछा दगबाक लौहनिर्मित अङ्कुश ।
**दग्ध**–सं० जरल ।
**दङ्ग**–वि० दिक्क, चिन्ताऽकुल ।
**दच्छिन**–दक्षिण दिक् १। दक्षिण देश २ ।
**दच्छिन भर**–दक्षिण दिशा ।
**दछिनबरिआ**–दक्षिणदिगवस्थित प्रभेदक (गृहक्षेत्रादि) ।
**दछिनबारि**–दक्षिण दिशामे स्थित (गृहादि)।
**दछिनहा**–दक्षिणदेशभव (अनादरमे) ।
**दछिना**–दक्षिणा ।
**दछिनाहा**–दछिनहा ।
**दछिनाहुत**–समीप दक्षिणस्थित ।
**दछिनी अँडाची**–उपकुञ्चिका, एला, छोटकी अँड़ाची ।
**दड़रब**–क्रि० चकरीसँ दलिहनकेँ विदलित करब ।
**दड़ारि**–दीर्घ फाट ।
**दड़िमी**–धान्यविशेष १। कोषरहित आमक (आमिल) २ ।
**दण्ड**–सं० सजाए १। ठेँगा २। व्यायामविशेष

३ । कालक परिमाणविशेष, २४ मिनट ४ ।
**दण्डताल**–वद्यविशेष ।
**दण्डपरनाम** / **दण्डप्रणाम** } –दण्डवत् पतनपूर्वक प्रणाम ।
**दण्डपरनाम देब** / **दण्डप्रणाम देब** } –क्रि॰ घरसँ आरम्भ कए देवालयपर्यन्त बराबरि दण्डप्रणाम करैत जाएब ।
**दण्डी**–तराजूक दण्ड १ । सं॰ संन्यासी २।
**दण्डीतराजू**–तारात्रितयविशेष।
**दँतकड़रि**–दाँत कड़कड़ओनिहार ।
**दँतखिसोट**–बहुत पातर असन्नद्ध (कपड़ा)।
**दँतगर**–उ॰ बलिष्ठ दाँतसँ युक्त ।
**दँतबेथा**–दन्तव्यथा, दाँतक दर्द ।
**दँतमनि**–दन्तधावन, दन्तकाष्ठ ।
**दँतमनि करब**–क्रि॰ दन्तमार्जन, दँतमनिसँ दाँत साफ करब ।
**दँतारि**–दन्तव्यथा, दाँतक दर्द ।
**दँतिआएब**–ना॰ दँति+अब-दैन्यसँ दाँत देखाएब ।
**दँतुल**–दन्तुल, पैघ दाँतबाला (मनुष्य) ।
**दँतुलाह**–उ॰ किञ्चित् दन्तुल ।
**ददरी**–डाहल शुक्तिकादि ।
**दन**–जलमार्ग, दओन १ । अ॰ विशेषरूपेँ अज्ञायमान, चित् सं॰ कश्चित् [यथा केदन, ककरादन, कोनादन]।
**दनदनाएब**–क्रि॰ दनदन्+अब-दनदन शब्द करब १। सस्फूर्ति रहब २ ।
**दनफन**–रगड़-झगड़ ।
**दनादन**–बन्दूक आदि शस्त्रध्वनिक अनुकरण १ । अ॰ झटझट २ ।
**दनासी**–कचिआ हाँसूक दाँत ।
**दनूफ**–द्रोणपुष्प ।
**दनौरी**–पोस्ता दानाक वटी, व्यञ्जनविशेष।
**दन्तकथा**–पुस्तकमे अलिखित कथानक।
**दन्तभर**–स्वारस्य ।
**दन्तार**–पु॰ दाँतबाला (हाथी) ।
**दन्ति**–कौड़ीक सोड़हम अंश ।
**दपटब**–क्रि॰ दबाड़ब, वाचा तर्जन ।
**दपाएब**–क्रि॰ दपब्+अब-अपहरणक हेतु मन करब १ । दर्प करब २ ।
**दफदर**–वि॰ बहीआदिक मोटा।
**दफदरी**–दफदर बनओनिहार वा रखनिहार।
**दफादार** / **दफेदार** } –वि॰ कोतबाल सभक सरदार ।
**दबओट**–दाब, दबाएब, प्रतिरोध ।
**दबकब**–क्रि॰ प्रच्छन्न होएब १ । सङ्कुचित होएब २ ।
**दबब**–क्रि॰ नीच होएब, हारब, न्यून होएब १ । प्रच्छन्न होएब २ ।
**दबाओट**–प्रतिरोध ।
**दबाड़**–वाक्तर्जन ।
**दबाड़ब**–क्रि॰ दबाड़्+अब-वाचा गञ्जन करब ।
**दबिला**–बाँस काठ कटबाक काता, अस्त्रविशेष ।
**दम**–वि॰ शक्ति, बल १। प्राण, श्वास २।
**दमक**–दमस, शब्दविशेष ।
**दमकब**–क्रि॰ दमसब, मेघादिक शब्द ।
**दमन्डढ़ू** / **दमकढ़ू** } –दाम टुटि गेलापर नहि बिकाएल (माल) ।



**दमकल** / **दमकला** / **दमकाला** } –पानि पटएबाक यन्त्रविशेष ।
**दमगर**–अधिक दामक, मूल्यवान् १। अधिक दम्मक, बलवान् २। अधिक भारी ३ ।
**दमड़ी**–कञ्चाक चतुर्थांश ।
**दमस**–मेघ आदिक शब्द ।
**दमसब**–क्रि॰ मेघादिक शब्द करब ।
**दमाइनि**–खाद्य कन्दविशेष ।
**दमाएब**–ना॰ दमब्+अब-दाम लगाएब, मूल्यनिर्णय करब ।
**दमपोख्त**–वि॰ एक प्रकारक तीमन ।
**दम्पोसिआ**–दाम कए पोसबाक हेतु देल (माल) ।
**दय**–अ॰ हेतु, प्रसङ्ग [यथा राम दय कहल, अर्थात् रामक प्रसङ्ग कहल] ।
**दया**–सं॰ कृपा ।
**दयाद**–देआद, दायाद सं॰ ।
**दयादिनी**–स्त्री॰ स्वामीक भ्राताक पत्नी ।
**दर**–भाओ, विक्रयमूल्य ।
**दरक**–विदीर्णता, फाट ।
**दरकब**–क्रि॰ विदीर्ण होएब ।
**दरखास्त**–वि॰ निवेदनपत्र ।
**दरजिआही**–दरजीक टोल ।
**दरजी**–वस्त्र सिउनिहार म्लेच्छ जातिविशेष ।
**दरड़ब**–क्रि॰ दलिहनकेँ चकरीसँ विदलित करब ।
**दर-दरबार**–खुसामदीप्रभृति ।
**दर-दरमाहा**–मासिकवेतनप्रभृति ।
**दरदराएब**–क्रि॰ दरदरब्+अब-दरदर-शब्दपूर्वक भक्षण । [यथा माल नार दरदरबैत अछि]
**दरब**–द्रव्य, कांस्यादि धातु ।
**दरबाजा**–वि॰ घरक अग्रिम सहन ।
**दरबार**–वि॰ सुसज्जित स्थानमे राजदर्शन, राजसभा ।
**दरबारी**–वि॰ राजानुग्रहपात्र, अधिक काल राजाक समीप गेनिहार ।
**दरमाहा**–वि॰ मासिक वेतन ।
**दरस**–दर्शन १ । धान्यविशेष २ ।
**दरसनी**–दर्शनोत्तर देय फलद्रव्यादि ।
**दरसा**–मत्स्यविशेष ।
**दरसूदि**–वि॰ सूदिक सूदि ।
**दरही**–मत्स्यविशेष ।
**दराड़ि**–भूतलक स्फोट ।
**दराध**–सर्पविशेष ।
**दराधिनी**–एक जड़ी, मूर्वा सं॰ जकर गुणसँ मौर्वी बनेत अछि ।
**दरिआओ**–वि॰ पैघ गर्त्त ।
**दरिद्र**–सं॰ निःस्व, गरीब ।
**दरी**–सतरञ्जी, आस्तरणविशेष ।
**दरेराह**–वि॰ सकलसाधारण रास्ता, जाहि देने अधिककाल लोक चलैत हो।
**दरोगा**–एक राजकर्मचारी १ । कार्य करएबामे नियुक्त २ ।
**दर्प**–सं॰ गर्व ।
**दर्शन**–सं॰ देखब ।
**दर्शनी**–दर्शनोत्तर चढ़ौआ ।
**दल**–झुण्ड १ । तुलसीक पात २ । बाँसक गादि ३ ।
**दलकब**–क्रि॰ डोलब, उपरनीचाँ कम्पन।

**दलगर**–अधिक गादिसँ युक्त (बांस) ।
**दलदल**–पादादिक आघातसँ नीचाँ-उपर होएनिहार (भूमि) ।
**दलदलाएब**–क्रि० दलदल्+अब-पादादिक आघातसँ डोलब ।
**दलदली**–पादादिक आघातसँ डोलब ।
**दलपर्दा**–वि० वस्त्रक आवरण १ । धोखा देब २ ।
**दलमल**–आन्दोलित ।
**दलमलाएब**–क्रि० दलमल्+अब-दलदलाएब ।
**दलमलित**–आन्दोलित ।
**दलमली**–आन्दोलन ।
**दलान**–वि० चतु:शालसँ वहिर्भूत बैसबाक घर, बहरघरा ।
**दलाल**–वि० क्रयविक्रय करओनिहार तदुपजीवी ।
**दलाली**–दलालक क्रिया वा वेतन ।
**दलिपिट्ठी**–कृतान्नविशेष ।
**दलिपुरी**–दालिक फूँटिदए बनाओल पूरी।
**दलिभिस्त**–मिष्टान्नविशेष ।
**दलिसगा**–दालि ओ साग एकत्र रान्हल।
**दलिहन**–दालिबाला अन्न (राहड़ि आदि)।
**दल्लू**–बानरक सरदार, बानरी सेनाक अधिपति ।
**दश**–सं० दस, दशसंख्यापरिमित ।
**दशम**–सं० दशक पूरण ।
**दशमी**–सं० दशम तिथि १ । आश्विनक नवरात्र २ ।
**दशहरा**–सं० ज्यैष्ठ शुक्ल दशमी ।
**दशा**–सं० अवस्था ।
**दशावतार**–सं० मत्स्यादि दस अवतार ।
**दशाह**–सं० मरणाशौचक दस दिन ।
**दस**–दश, १०, १ । पचेसीमे सभ पट एक चित्त कौड़ी २ ।
**दसखत**–वि० हस्ताक्षर ।
**दसगजा**–दस गजक (धोती आदि) ।
**दसगर**–नीक शारीरक स्थिति बाला (व्यक्ति)।
**दसड्डी**–पचेसीमे पबहारिसँ दशम घर।
**दसम**–दशम ।
**दसा**–दशा, अवस्था ।
**दसाही**–दशदिनोत्तर श्राद्ध ।
**दसोत**–विवाहमे दस सधवासँ निष्पाद्य तान्त्रिक क्रिया ।
**दसौन्ही**–भाट, वन्दी ।
**दस्त**–वि० पुरीषोत्सर्ग ।
**दस्तगर्दा**–वि० हथपैँच ।
**दस्ताना**–वि० प्रत्येक अँगुरीमे पहिरबाक हस्ताकार वस्त्रविशेष ।
**दस्तावेज**–वि० प्रमाणपत्रविशेष ।
**दस्ती**–वि० कलमदान ।
**दस्तूर**–वि० चालि, स्वभाव, सरह ।
**दस्तूरी**–वि० कार्य कएनिहारसँ कार्य करओनिहारक नियत आदेय ।
**दस्सी**–सूताक भीँड़ी ।
**दह**–ह्रद १ । पुरैनि २ ।
**दहकब**–क्रि० किञ्चित् जरब ।
**दहलब**–क्रि० अनिष्टचिन्ता, अधीर होएब ।
**दहार (ड़)**–जलाप्लावनसँ आक्रान्त ।
**दहिगन**–पक्षिविशेष १ । क्षुपविशेष २ ।
**दहिन**–दक्षिण ।
**दहिबाड़ा**–मिष्टान्नविशेष ।



**दही**–दधि ।
**दहेज**–जौतुक ।
**दहोदिस** / **दहोदिसा** }–दसो दिस, समन्तात् ।
**दहोदिसिआ**–दुनू पक्षक अनुगामी (व्यक्ति) ।
**दहोबहो**–अ० धाराप्रवाह रूपेँ (नोर खसब) ।
**दाइ**–स्त्री० स्त्रीक उपाधि, देवी ।
**दाउन** / **दाउनि** }–मेधिमे अनेक वृषभ जोड़ि धान्याद्युपमर्दनार्थ घुमाएब ।
**दाउनि (न) चढ़ाएब**–क्रि० दाउनिमे वृषभयोजना ।
**दाओ**–अलगचित आदि मल्ल क्रिया १ । अवसर २ ।
**दाख**–द्राक्षा ।
**दाखिल**–वि० समर्पित ।
**दाग**–वि० चिह्न, कालिमादिसम्बन्ध ।
**दाड़िम**–सं० अनार हिन्दी ।
**दाढ़**–सं० दंशस्थान १ । पैघ दाढ़ी २ ।
**दाढ़ी**–चिबुक, मुहक निचला उच्च अङ्ग १ । चिबुकमे जनमल केश २ ।
**दाँत**–दन्त ।
**दाँत कीचब**–क्रि० क्रोध ओ कार्पण्यक द्योतक दनतप्रकाशन ।
**दाँत खिसटब** / **दाँत सिखोटब** / **दाँत निपोड़ब** }–क्रि० दैन्यसूचक दन्तप्रकाशन ।
**दाँतब**–ना० दँत्+अब-मालक दाँतसँ युक्त होएब ।
**दाँतमनि**–दन्तकाष्ठ ।
**दाता**–सं० दानी ।
**दाँती**–रोगत: दाँतपर दाँत जोरसँ बैसब, हनुस्तम्भ ।
**दाँती लागब**–क्रि० रोगवश दाँतपर दाँत बैसब ।
**दाँतुल**–दन्तुल ।
**दादा**–पितृव्यादि गुरुजन ।
**दादी**–पितृयादि गुरुजनपत्नी ।
**दादु( रु )हरढ़ि**–दारुहरिद्रा, वृक्षविशेष ।
**दान**–सं० देब ।
**दाना**–हाथी आदि पशुपक्षीक भक्ष्य धान्यादि १ । प्रत्येक अन्न २ ।
**दाप**–धोंक, दाब, दूरसँ तीव्र तेज:सम्बन्ध।
**दाब**–अवरोध, आक्रमण ।
**दाबब**–क्रि० दब्+अब-भाराक्रान्त करब, उपरसँ आक्रमण ।
**दाबा**–पाएरसँ दाबि-दाबि बनाओल भित्ति जाहिपर टाट रहए वा जे ओसाराक अग्रभाग हो ।
**दाबा बान्हब**–क्रि० बन्हू+अब-खेतमे धसना बचएबाक हेतु दाबा देब ।
**दाबि**–वंशकाष्ठनिर्मित दर्वी ।
**दाबिल**–ओषधिविशेष ।
**दाबी**–वि० आदेयकथन १। अभिमान २।
**दाम**–मूल्य ।
**दाम तोड़ब**–क्रि० मूल्यनिर्णय करब ।
**दामस**–शीतलासम्बन्धी रोगविशेष ।
**दारु**–धोती खिचब प्रभृतिक हेतु स्थापित काष्ठ ।
**दारुहरदि**–दारु-हरिद्रा ।
**दारू**–मद्य ।
**दालि**–दड़रल दलिहन, विदलित द्विदल अन्न ।

**दालिचीनी**–त्वक्, एक प्रकारक वृक्षक त्वचा ।

**दालिपाक**–कृतान्नविशेष ।

**दास**–सं० सेवक ।

**दासिनी**–स्त्री० संन्यासिनी ।

**दाह**–मृतकसंस्कार ।

**दाहा**–तास प्रभृतिक दशम फर्द १ । मुसलमानक तजिआ २ ।

**दाही**–धान्यादिनाशक जलाधिक्य ।

**दिअठि**–दीप रखबाक काष्ठादिरचित पात्र ।

**दिअर** / **दिअरि** –नदीक बीचमे जलसँ जागल भूमि, द्वीप ।

**दिआ**–दीप १ । अ० द्वारा २ ।

**दिआबाती**–दीपावली, सुखरात्रिक दीपोत्सव ।

**दिक्**–वि० तङ्ग, व्याकुल ।

**दिक्साधन**–दिशाज्ञानक यन्त्र ।

**दिगर**–वि० अन्य, उदासीन ।

**दिघोँच**–जलीय पक्षिविशेष ।

**दिन**–सं० वासर ।

**दिनगर**–अधिक दिन ।

**दिनजौड़**–समयपर नहि खएनिहार ।

**दिन-दुपहर**–अ० दिनक दोपहरिआ ।

**दिन-देखार**–अ० दिनक प्रकाशमे ।

**दिन-बेकाल**–अधलाह दिन ।

**दिनाए**–दद्रु ।

**दिनुक** / **दिनुका** –दिनमे भेल ।

**दिनेक**–अ० कोनो दिन ।

**दिब**–दिव्य, सुन्दर ।

**दिबड़खौकू**–जकरा यत्किञ्चित् भागमे दिबाड़ खएने रहए ।

**दिबड़ाक भीड़**–बल्मीक ।

**दिबड़ाह**–दिबाड़क सम्बन्धबाला ।

**दिबाड़**–कीटविशेष ।

**दिबाड़ी**–माटिक छोट दीप ।

**दिबाल**–इष्टकाभित्ति ।

**दिलजमइ ( मै )**–वि० विश्वास ।

**दिलमोटाओ**–वि० वैमनस्य ।

**दीअठि**–दीप रखबाक काष्ठादि-रचित पात्र ।

**दीअर** / **दीअरि** –नदीक बीचमे जलत्यक्त भूमि, द्वीप ।

**दीआ**–दीप ।

**दीआबाती**–सुखरात्रिक दीपाबली ।

**दीठि**–दृष्टि ।

**दीप**–सं० दीपपात्र ।

**दीपझाड़**–शोभार्थ दीपवृक्ष ।

**दीपदान** / **दीपदानी** –दीपाधारपात्र ।

**दीबान**–वि० लेखमे नियुक्त राजपुरुष ।

**दीर्घसूत्री**–सं० चिरकारी ।

**दुइ**–दू, द्विसंख्यक २ ।

**दुख** / **दुःख** –दुःख १ । रोग २ ।

**दुखनामा**–दुःखवार्ता कहब ।

**दुख-बेकाल**–दुःखकृत वैकल्य ।

**दुखाएब**–ना० दुख्+अब-दुख (पीड़ा) सँ युक्त होएब ।

**दुखित** / **दुःखित** –दुःखसँ युक्त १। रोगयुक्त २।

**दुखिताह**–उ० किञ्चित् रोगयुक्त ।

**दुखी**–दुःखयुक्त ।

**दुग्गी**–तास आदिक दोसर फर्द ।



**दुतिआ** / **दुतीआ** –द्वितीया, दोसर तिथि ।

**दुद्धा दाँत**–शिशुक प्रथमोत्पन्न दाँत ।

**दुद्धी**–वृक्षविशेष १ । धान्यविशेष २ । भोस केराक प्रभेद ३ ।

**दुधगरि**–स्त्री० अधिक दूध देनिहारि ।

**दुधपीबा**–दूध पिउनिहार (शिशु) १ । शिशुकेँ दूध पिअएबाक पात्रविशेष २ ।

**दुधभरा**–दूधसँ भरल (धान्यादि) ।

**दुधमुँगर**–फलविशेष ।

**दुधमुह**–शिशु, स्तनन्धय ।

**दुधबार**–जातिविशेष ।

**दुधिआ**–शाकविशेष ।

**दुन्ना**–द्विगुण ।

**दुपत्ता**–दू पातसँ युक्त ।

**दुबर**–उ० दुब्बर, दुर्बल । स्त्री दुबरि ।

**दुबराएब**–ना० दुबर्+अब-दुबर (दुर्बल) होएब, देहेँ कृश होएब ।

**दुब्बर**–उ० दुर्बल । स्त्री दुब्बरि ।

**दुम्मा**–पर्वतीय मेषविशेष ।

**दुरगमनिआ**–द्विरागमनसम्बन्धी (वस्तुजात) ।

**दुरछी**–अ० धिक्कार ।

**दुरदुट**–दुर्द्धुट, दुर्मुखं, अधलाह कथा बजनिहार ।

**दुरागमन**–द्विरागमन ।

**दुराहु**–किछु दूर ।

**दुरि करब**–क्रि० अनुपयुक्त करब, नष्ट करब, बिगाड़ब ।

**दुरि जाएब** / **दुरि होएब** –क्रि० अनुपयुक्त होएब, नष्ट होएब, बिगड़ब ।

**दुरुस्त**–वि० प्रस्तुत, सज्ज, सर्वाङ्गपूर्ण ।

**दुरुस्ती**–सज्जीकरण ।

**दुर्गति**–सं० कष्टक अवस्था ।

**दुर्गा**–सं० देवताविशेष ।

**दुर्निवार**–सं० जकर निवारण नहि कएल हो ।

**दुर्भगा**–सं० स्त्री० विधवा ।

**दुर्भिक्ष**–सं० रौदी आदिसँ अन्नक अभाव।

**दुर्मति**–सं० अधलाह बुद्धि ।

**दुलकब**–क्रि० किञ्चित् उपर-नीचां डोलब, कम्प ।

**दुलहा**–पुं० वर ।

**दुलहिनि**–स्त्री० नवविवाहिता वधू ।

**दुलार**–लालन ।

**दुलारा**–ओषधिविशेष ।

**दुलारू**–दुलारसँ पालित ।

**दुल्लह**–हि० वर ।

**दुष्ट**–सं० खल १ । शत्रु २ ।

**दुसब**–क्रि० दूषण, दोषक उल्लेख करब।

**दुसाध**–उ० चाण्डाल जातिविशेष । स्त्री० दुसाधिनी ।

**दुसाधी**–दुसाधक वृत्ति (चोरि) ।

**दुहब**–क्रि० दोहन ।

**दू**–द्विसंख्यक ।

**दूआ**–क्रिड़ामे दूसंख्याबाला (तास आदि) ।

**दूध**–दुग्ध ।

**दूधा दाँत**–शिशुक प्रथमोत्पन्न दाँत ।

**दूबर**–द्विगुण १ । कृश २ ।

**दूबि**–दूर्वा, तृणविशेष ।

**दूर**–सं० विप्रकृष्ट ।

**दूरि करब**–क्रि० नष्ट करब, बिगाड़ब ।

**दूरि जाएब**, **दूरि होएब** —क्रि० नष्ट होएब, बिगड़ब ।
**दूर्वाक्षत**–सं० आशीर्वादार्थ दूबि ओ अक्षत ।
**दूसब**–क्रि० दुस्+अब–दूषण, दोषक उल्लेख ।
**दूहब**–क्रि० दुह्+अब–दोहन, गाए आदिक स्तनसँ दूध बहार करब, चुटकीसँ पुनःपुनः निःसारण ।
**देआएब**–क्रि० दू+ अब्+अब–दापन, दान कराएब ।
**देआद**–दायाद ।
**देआदिनी**–स्त्री० पतिक भ्रातृ-पत्नी ।
**देओर**–पुं० देवर, पतिक छोट भाए ।
**देखनुक**–दर्शनीय, रमणीय ।
**देखब**–क्रि० दर्शन ।
**देखसी**, **देखाँउस** – देखलासँ उत्पन्न अनुकरणक इच्छा ।
**देखादेखी**–पारस्परिक दर्शनजन्य प्रवृत्ति।
**देखार**–दृश्य, अनावृत, प्रत्यक्ष ।
**देन**–दातव्य ।
**देने**–अ० स्पर्श करैत [यथा, काशी देने प्रयाग गेलाह] बाटेँ, [यथा, एम्हर देने चलू] ।
**देब**–क्रि० द्+अब–दान ।
**देबडधड़**–आकाशमे मार्गाकार सूक्ष्मतारा समूह ।
**देवता**–सं० स्वर्गवासी इन्द्रादि ।
**देबतासारि**–धान्यविशेष ।
**देवदारु**–सं० वृक्षविशेष ।
**देवनागर**–देवाक्षर ।
**देवालय**–सं० देवताक स्थान ।
**देवी**–स्त्री० स्त्रीदेवता ।
**देरी**–वि० विलम्ब ।
**देश**–सं० प्रान्त ।
**देशी**–स्वदेशसम्बन्धी ।
**देसकोस**–प्रान्त ।
**देसरिआ**–धान्यविशेष ।
**देसाँतर**–देशान्तर, अन्य देश ।
**देसिला**–स्वदेशमे उत्पन्न ।
**देह**–सं० शरीर ।
**देहगर**–उ० पैघ देहसँ युक्त । स्त्री देहगरि ।
**देहफुल्ली**–देहक फुलब ।
**देहरि**–देहली, द्वारकाष्ठ ।
**देहात**–नगरसँ भिन्न जनस्थान ।
**देहाती**–नगरसँ भिन्न स्थानमे रहनिहार १। देहातसम्बन्धी २ ।
**देहादेही**–अ० यावज्जीवन, डिला डिली ।
**देही**–व्यावहारिक, खिजमती (वस्त्रादि) ।
**दैव**–स० अदृष्ट, पूर्वजन्मार्जित धर्माधर्म।
**दैवी**–दैवकृत ।
**दोअन्नी**–दुइ आनाक मुद्राविशेष ।
**दोअम्मा**–एक डँटकीमे फड़ल दूआम ।
**दोआति**–वि० मोसिआनी, मसीपात्र ।
**दोआदसी**–द्वादशी तिथि ।
**दोआरा**–द्वारा ।
**दोआरि**–द्वार ।
**दोआरेँ**–अ० (निन्दामे) हेतुएँ ।
**दोआली**–बेरमा घुमएबाक यन्त्रविशेष ।
**दोएम**–मध्यम श्रेणीक ।
**दोकठ**, **दोकठी** –दू काठक अभ्यन्तर ।
**दोकड़ा**–पाइक चतुर्थांश ।
**दोकन्धा**, **दोकन्हरा** –दू डारिक सन्धिस्थान ।



**दोकमिआँ**–दुइ कामिसँ युक्त भोंकबाक अस्त्र ।
**दोकान**–विक्रयालय ।
**दोकानदार**–वणिक्, दोकान कएनिहार ।
**दोकानदारी**–वाणिज्य ।
**दोकिस्त**–वि०अ० दुइ बेरि कए देय ।
**दोखड़ब**–क्रि० बहुत मोट-मोट पीसब ।
**दोखड़ा**–मोट-मोट (बालि आदि) ।
**दोखाह**–उ० दोषयुक्त । स्त्री दोखाहि ।
**दोग**–दुइ वस्तुक मध्यस्थ अवकाश ।
**दोगमिआ**, **दोगामी** –अगिला पुस्ति पर्यन्त ।
**दोगासी**–दोग ।
**दोगोला**, **दोगोली** –मतभेदेँ भेल दू दल ।
**दोचारा**, **दोचारी** –दू चारबाला (घर) ।
**दोचोपा**–दू चोपबाला (तम्बूक) ।
**दोछब्बी**–अ० दू छओ कए ।
**दोजनिआ**–दू व्यक्तिक उपयोग योग्य ।
**दोटप**–तम्बूविशेष ।
**दोटप्पी**–अ० बहुत थोड़ काल ।
**दोठठ**–दोहराएकेँ ठाठब, दोहरौनी ।
**दोतर**–पचेसी खेड़िक से गोटी जे दू खुदरामे लाल हो ।
**दोदाउन**, **दोदाउनि** –दू कड़ामसँ दाउनि ।
**दोनबार**–उ० जातिविशेष ।
**दोना**–पत्ररचित पुटक १। पुष्पविशेष २ ।
**दोनाइ**–बीस पर्यन्त अङ्केँ दस पर्यन्त अङ्कसँ गुणनाक पाठ ।
**दोना कदम्ब**–पुष्पविशेष ।
**दोपटा**, **दोपट्टा** –दू पाटसँ युक्त ओढ़बाक वस्त्रविशेष ।
**दोपढ़िआ**–दू पाढ़िसँ युक्त (साड़ी आदि)।
**दोपत्ता**, **दोपत्ती** –दू पातसँ युक्त ।
**दोपहरबा**–मध्यरात्रमे उगनिहार एक तारा।
**दोपहरि**, **दोपहरिआ** –मध्याह्न ।
**दोफक्का**–दुइ फाँक कएल ।
**दोफसिला**–वि० दू फसिल जाहिमे उपजए से (खेत) ।
**दोफाँक**–दू फाँक भेल ।
**दोबगली**–वि० अ० दुनू कातमे ।
**दोबट्टी**–से बाट जतएसँ दुइ दिस बाट गेल हो ।
**दोबर**–द्विगुण ।
**दोबरखा**–दुइ वर्षक ।
**दोबराएब**–ना० वस्त्रादिक द्विरावृत्त करब ।
**दोबिधा**–विधाद्वय, संशय ।
**दोम**–आन्दोलन ।
**दोमञ्जिला**–वि० दू महलबाला (कोठा)।
**दोमब**–क्रि० आन्दोलित करब ।
**दोमस**–अ० दोसर हेतु ।
**दोमसिआ**–दू मासक जनमल (नेना) ।
**दोमहला**–दू महलबाला (कोठा) ।
**दोमाँगि**, **दोमाङि** –दू सीमापर स्थित स्थान ।
**दोमोनी**–दू मोनक (नपना वा बटिखारा)।
**दोयम**–मध्यम श्रेणीक ।
**दोरब्बी**–दोबर राबाबाला (भूषणविशेष)।
**दोरस**, **दोरसि** –जाहिमे किछु बाल ओ किछु चिक्कन माटि दुनू मिलल हो से (भूमि) ।

**दोलँग**
**दोलँगी**
**दोलङ**
**दोलङी** } –धान्यविशेष ।

**दोलाइ**–अल्प तूरसँ भरल ओढ़ना ।
**दोलू**–वि० गजीफामे एक फर्द राखि अगिला हुकुम फर्द ।
**दोलेब**–दोसर खेपक लेबब ।
**दोलैँ**–ऐकारक मात्रा (ै) ।
**दोष**–सं० अपराध, दूषण ।
**दोष देब**
**दोष लगाएब** } –क्रि० दोषक आरोप करब, दोष कहब ।
**दोषभागी**–सं० दोषक आश्रय ।
**दोषी**–सं० दोषयुक्त ।
**दोसञ्झा**
**दोसञ्झी** } –दुइ व्यक्तिक सम्मिलित (धन) ।
**दोसर**–द्वितीय ।
**दोसराइत**
**दोसराति** } –द्वितीय सहायक ।
**दोसरासाँझ**–पहिल सन्ध्याक बाद झलफल समय ।
**दोसह**
**दोसहा** } –सतरञ्जमे तेहन स्थानसँ लगाओल सह जाहि सँ दोसरो गोटी बीन्हल जाइत हो । एक गोटीक दू गोटी पर साम्मुख्य।
**दोसंझी**–अ० दुनू साँझमे ।
**दोसाहा**–दोसह ।
**दोसीरा**–वि० मालिक ओ रैअति दुनूक अंशबाला (वृक्षादि) ।
**दोसेरा**
**दोसेरी** } –दू सेरक बटिखारा वा नपना ।
**दोस्त**–वि० मित्र ।

**दोस्ती**–वि० मित्रता ।
**दोहठ**–एक व्यक्तिक दू ठाम बास ।
**दोहन**–मिश्रित दू अन्न ।
**दोहमति**–वि० मिथ्या दोषारोपण ।
**दोहराएब**–क्रि० दोहर्+अब-पुनः होएब।
**दोहराएब**–क्रि० दोहरब्+अब-पुनः करब।
**दोहरि**–दोलाइ, अल्प तूरबाला ओढ़ना ।
**दोहरौनी**–दोहराएब ।
**दोहसाएब**–क्रि० दोहसब्+अब-एके बातक प्रसङ्ग दुइ बेरि टोकब ।
**दोहा**–शपथ १ । छन्दोविशेष २ ।
**दोहाइ**–दीनवात्सल्य ।
**दोहाइ देब**–क्रि० 'दोहाइ' शब्द कहि दैन्य प्रकाश करब ।
**दोहारा**–दुइ तहसँ युक्त (अङ्गा, फूल इत्यादि) ।
**दोहारि**–दोआरि, द्वार ।
**दौगब**–क्रि० दौड़ब, धावन ।
**दौड़**–धावन ।
**दौड़धूप**–इतस्ततः अधिक धावनादि ।
**दौड़ब**–क्रि० दौगब, तीव्र गतिसँ चलब, धावन ।
**दौड़ब-धूपब**–क्रि० धावन-कूर्दनादि क्रिया ।
**दौड़बरहा**–वारंवार दौड़ब ।
**दौहित्र**–उ० दुहिताक पुमपत्य ।
**दोहित्री**–स्त्री० दुहिताक स्त्री अपत्य ।
**द्वादशी**–सं० बारहम तिथि ।
**द्वारि**–गृहप्रवेशमार्ग ।
**द्वारि छेकाओन**–वर-कन्याक द्वारि छेकबाक पारितोषिक ।
**द्वितीया**–सं० दोसर तिथि ।
**द्रव्य**–धातु १ । रुपैआ कच्चाप्रभृति २ ।



## ध

**धओन**–नीहार, कुहेस ।
**धओना**–गर्दनिक धारिणी शिरा ।
**धओना खसब**–क्रि० गर्दनिक धारिणी शिराक पतन ।
**धकधकाएब**–क्रि० धकधक्+अब-जोरसँ वारंवार हृदय कापब ।
**धकरी**–तृणविशेष ।
**धकिआएब**–ना० धकिअब्+अब-धक्का देब ।
**धकेलब**–क्रि० जोरसँ धक्का देब ।
**धक्कमधक्का**
**धक्कमधुक्का** } –अनेक व्यक्तिक पारस्परिक धक्का ।
**धक्का**–आघात, अनका ठेलब ।
**धक्का देब**–क्रि० लोककेँ ठेलब ।
**धखछुट्टू**–जकरा धाख छूटि गेल छैक से।
**धखाएब**–क्रि० धख्+अब-धाखसँ युक्त होएब ।
**धछेक**–किञ्चित शेष (दिन) ।
**धड़धड़**–वारंवार (हृदयक) कम्पन १ । अ० शीघ्रतापूर्वक २ ।
**धड़धड़ाएब**–क्रि० धड़धड्+अब-वारंवार (हृदय) कम्पित होएब १ । धड़धड़ शब्द करब २ ।
**धड़धड़ी**–हृत्कम्प ।
**धड़फड़**–अ० शीघ्रतापूर्वक ।
**धड़फड़ाएब**–क्रि० धड़फड्+अब-शीघ्रता जन्य चञ्चलतासँ युक्त होएब ।
**धड़फड़ी**–शीघ्रता ।
**धड़हर**–अत्युच्च प्रचीन डीह ।
**धड़हेर**–मध्यमे आबि युद्धक निरोध ।

**धड़हेरिआ**–धड़हेर कएनिहार ।
**धड़ाक**–बन्दूक आदिक शब्दक अनुकरण।
**धढ़ेर**–धड़हेर, मारि झगड़ाक मध्यमे आबि निरोध ।
**धतपत**–अ० कनेक, पूर्ण रूपेँ नहि ।
**धधकब**–क्रि० धधरासँ युक्त होएब, प्रज्वलित होएब ।
**धधरा**–अग्निशिखा ।
**धन**–सं० वित्त ।
**धनकटनी**–धानक काटब ।
**धनकट्टा**–धान कटनिहार १ । जाहिसँ धान काटल जाए से (हाँसू) २ ।
**धनखेती**–धानक खेत ।
**धनगर**–अधिक धानसँ युक्त १ । अधिक धनसँ युक्त २ ।
**धनचर**–अनेक कार्यक युगपत् प्राप्ति ।
**धनछ**–पक्षिविशेष ।
**धनछूहा**–पक्षिविशेष ।
**धनपनिआ**–धान ओ धानक अनुसार पानि ।
**धनपापड़**–ओषधिविशेष, पर्पटी ।
**धनबधा**–धानक बाध ।
**धनमन्त**–उ० धनवान् । स्त्री धनमन्ति ।
**धनमी**–धनुष ।
**धनरोपनी**–धानक रोपब ।
**धनस**–पक्षिविशेष ।
**धनसन**–अ० उपेक्षाबुद्धि ।
**धनसीस**–मकैक उपरका सीस ।
**धनहर**–धान उपजएबाला (खेत) ।
**धनहा**–धानसँ युक्त (चूड़ा आदि) ।
**धनिआँ**–धान्यविशेष ।
**धनिक**–उ० सं० अधिक धनसँ युक्त । स्त्री० धनिकाइनि ।

**धनिकठेँठ**–अभिमानी धनिक ।
**धनी**–धन्री, धान्यक सं० ।
**धनुकाइनि**–स्त्री० धानुक जातिक स्त्री ।
**धनुख**–धनमी ।
**धनेसरी**–भालसरी १ । धान्यविशेष २ ।
**धन्ध**–द्वन्द्व, विस्मय, चिन्ता ।
**धन्धा**–चिन्ता १ । कार्य २ ।
**धन्वन्तरि**–आदिवैद्य १। ओषधिलता-विशेष २ ।
**धपाड़ब** / **धपारब** }–क्रि० जलकेँ सञ्चालित कए तरङ्गित करब ।
**धबब**–क्रि० उजरी आदिक कनेक प्रकट होएब ।
**धबाएब**–क्रि० धबब्+अब-प्रच्छन्न भए चोरक प्रतीक्षा करब ।
**धमक**–मेघादिक गम्भीर घोष १ । धमधम पादादिशब्द २ ।
**धमकब**–क्रि० गम्भीर घोष करब १ । धम-धम शब्द करब २ ।
**धमकी**–धम-धम शब्द १। भयप्रदर्शन २।
**धमगज ( ज्ज ) र**–आस्मर्द ।
**धर**–हस्तधार्य आवरण-पट १। शरीरक मूड़ीसँ निचला भाग २ । पकड़ब ३ ।
**धरकट**–पुं० लोभातिशयेँ अपन अपमानक विचार नहि कएनिहार, निघृष्ट ।
**धरखन**–गृध्नुता ।
**धरखनाह**–उ० गृध्नुतायुक्त । स्त्री० धरखनाहि ।
**धरछन**–दू जनसँ माटि आदि उघबाक साधनविशेष ।
**धरती**–धरित्री, पृथ्वी ।
**धरना**–शरीरपातन, पृथिवीशयन, प्रायोपवेश ।
**धरना देब**–क्रि० कोनो कार्यक उद्देश्येँ पृथिवी-शयन, प्रायोपवेश करब ।
**धरनि**–बड़ेरीक भार थम्हनिहार गृहाङ्ग काष्ठविशेष ।
**धरनिआ**–धरना ।
**धरपड़न**–शरीर-पातन ।
**धरब**–क्रि० धारण १। स्थापन कड़ब २। दंशन ३ ।
**धरम**–धर्म ।
**धरमदोष**–धर्मदोष ।
**धरहेर**–मरतरिआक बीच आबि दुहू पक्षक लोककेँ हटाएब ।
**धरहेरिआ**–पुं० धरहेर कएनिहार ।
**धरहोरि**–जिम्मा राखल (वस्तु) ।
**धरानी**–कष्ट ।
**धराह**–उ० धरबाक स्वभावबाला (कुकुर आदि) । स्त्री० धराहि ।
**धरि**–पोखरिक चारू कातक जलसँ उपर भाग १ । अ० अवधि, पर्यन्त २ ।
**धरिआ**–कौपीन ।
**धरिका**–अमोटक लम्बाकार खण्ड ।
**धरिकार**–उ० जातिविशेष ।
**धरी**–धारा तौलल ।
**धरोहर**–न्यास, जिम्मा लगाओल (वस्तु)।
**धर्म**–सं० पुण्य ।
**धर्मात्मा**–सं० धार्मिक ।
**धरोँहि**–श्रेणी ।
**धरोँहि लागब**–क्रि० पंक्तिबद्ध होएब ।
**धसना**–जलादिमे धसल भूमिखण्ड ।
**धसब**–क्रि० भूमिक नीच होएब ।
**धसमस**–तारतम्य ।



**धसमसाएब**–क्रि० धसमस्+अब-तारतम्य करब ।
**धसमसी**–दोबिधा, तारतम्य ।
**धाइँ**–ओषधिविशेष ।
**धाए**–स्त्री० नेनाकेँ नित्य अपन दूध पिअओनिहारि माएसँ भिन्न, धात्री सं० ।
**धाकर**–बिना दागल साँढ़ ।
**धाख**–वि० संकोच, गुरुत्वबुद्धि या उचितो कहबामे भय ।
**धाँगब**–क्रि० धँग्+अब-चरणसँ आक्रमण करब ।
**धाँगर**–उ० जातिविशेष ।
**धाङब**–क्रि० धाङ्+अब-धाँगब ।
**धाङर**–जातिविशेष ।
**धात्री**–सं० अओरा ।
**धाधर**–अशुभ ।
**धान**–धान्य, अन्नविशेष, शालि सं० ।
**धानी**–पीत-हरित (रङ्ग) ।
**धानुक**–उ० शूद्रजातिविशेष ।
**धाप**–ओसारा १ । पैघ डेग २ ।
**धाबा**–धोषधिविशेष, धव सं० ।
**धामन**–सर्पविशेष ।
**धामा**–बाँसक पात्रविशेष ।
**धामि**–मन्त्र-यन्त्र जननिहार जातिविशेष ।
**धाय**–स्त्री० धाए, धात्री सं० ।
**धार**–खड्गादिक तीक्ष्ण भाग १ । नदी २ । धारब ३ ।
**धार फुटब**–क्रि० जलक धारा १ । अस्त्रक धार स्फुट होएब २ ।
**धारब**–क्रि० धार्+अब-अपरिशोधित ऋणक धारण करब १ । शुभप्रद होएब २ ।
**धारा**–दुइ पसेरीक परिमाण १ । सं० प्रवाह २ ।
**धारी**–पंक्ति ।
**धाह**–ताप ।
**धिआ**–स्त्री० कन्या ।
**धिआ-पूता**–छओँड़ा-छओँड़ीसभ, छोट नेनासब ।
**धिपब**–क्रि० तप्त होएब ।
**धिपल**–तप्त ।
**धिपलकोँढ़ि**–अति आलसी ।
**धिम्मर**–उ० धीवर, जातिविशेष । स्त्री० धिम्मरि ।
**धिरकार**–धिक्कार ।
**धिरकारब**–ना० धिक्कार देब ।
**धीआ**–स्त्री० कन्या ।
**धीआ-पूता**–बालिकाबालकसमुदाय ।
**धीपब**–क्रि० धिप्+अब-तप्त होएब ।
**धीमर**–उ० जातिविशेष ।
**धुँआएब**–ना० धुँ+अब-धूआँसँ युक्त होएब ।
**धुकधुक**–मन्द-मन्द प्रज्वलन ।
**धुकधुकाएब**–क्रि० धुकधुक्+अब-मन्दमन्द प्रज्वलित होएब ।
**धुकधुकी**–भूषणविशेष १ । हृदयवातक गति २ । आतङ्क ३ ।
**धुथहू**–सीँगा, वाद्यविशेष ।
**धुथुरमूहा**–उ० अप्रसन्नमुख । स्त्री० धुथुरमूही ।
**धुथूर**–धत्तूर सं०, पुष्पविशेष ।
**धुधुआएब**–क्रि० धूधू+अब-धूधू शब्द करब ।

**धुधुनमूह**–उ० अप्रसन्नमुख । स्त्री० धुधुनमूहि ।
**धुनब**–क्रि० तूरक विश्लेषण करब ।
**धुनि**–ध्वनि १ । शीतज्वरक चरमावस्थाक ताप २ । चिन्ता ३ ।
**धुनिआँ**–तूर धुननिहार म्लेच्छजातिविशेष।
**धुनी**–बाबाजीक पैघ घूर ।
**धुनेठ**–तूर धुनबाक यन्त्र ।
**धुपकाठी**–धूपार्थ रचित शलाका ।
**धुपछाँह**–वस्त्रविशेष ।
**धुपदानी**–धूपक आधारपात्र ।
**धुपब**–क्रि० केरा आदिकेँ धूमसँ पक्व करब ।
**धुपबत्ती**–धुपकाठी ।
**धुमन**–सर्जनिर्यास, शालवृक्षक लस्सा ।
**धुमनाइनि**, **धुमनाह** }–धुमनक सदृश गन्धबाला।
**धुमस**–अनेक बालकक कलहक्रीड़ा ।
**धुमसाह**, **धुमसिआ** }–धूमस कएनिहार (नेना) ।
**धुमसुर**–आघात दए माटि बैसएबाक डण्टा लागल काष्ठखण्ड वा लौहपिण्ड।
**धुमूह**–उ० धूआँसन मुहबाला । स्त्री० धुमूही ।
**धुरकिल्ली**–धूरीमे पैसाओल जएबाक किल्ली ।
**धुरखुड़**, **धुरखुर** }–दोआरिक कातक भित्ति ।
**धुरबन्हू**–वलिक हेतु बान्हल (छागादि) ।
**धुरिआएब**–ना० धुरि+अब-धूरासँ युक्त करब ।
**धुसब**–क्रि० गञ्जन ।
**धुसरी**–धान्यविशेष १ । पुष्पविशेष २ ।
**धूआँ**–धूम ।
**धूआँकस**–धूआँ बहरएबाक कृत्रिम कोठाक अङ्ग ।
**धूनब**–क्रि० धुन्+अब-ताँतिक ताड़नसँ तूरक विश्लेषण करब ।
**धूनि**–चिन्ता, भावना १ । शीतज्बरमे शीतावस्थानन्तर उत्तापावस्था २ ।
**धूप**–सं० सुगन्धित धूम ।
**धूपब**–क्रि० धुप्+अब-धूआँक गरमीसँ पक्व करब १ । धूपक सौरभसँ युक्त करब २ ।
**धूमन**–यक्षधूप, सालनिर्यास ।
**धूमधाम**–पैघ आयोजनक कोलाहल ।
**धूम मचब**–क्रि० पैघ आयोजनक कारण अधिक कोलाहल होएब ।
**धूमा खेड़हा**, **धूमा खेढ़ा** }–धान्यविशेष ।
**धूर**–कट्ठाक बीसम अंश १ । सफटैतीमे उपजल हरक अंश ।
**धूरा**–धूलि ।
**धूरा माटि**–माटिक धूरासँ भेनिहार खेल।
**धूरी**–गाड़ीक पहिआक आधार लौहदण्ड, अक्ष ।
**धूर्त्त**–सं० प्रपञ्चसँ स्वकार्यसाधनमे पटु, परिहासपण्डित ।
**धूर्त्तबाज**–गारियुक्त परिहासक योग्य व्यक्ति, सार बहिनोए प्रभृति ।
**धूर्त्ता**–गारियुक्त परिहास ।
**धूसब**–क्रि० धुस्+अब-भर्त्सना करब ।
**धेनु**–नव बिआएलि गाए ।



**धेनुआर**–पूर्ण दूध देनिहारि बिआएलि गाए ।
**धैरज**–धैर्य्य ।
**धोआ**–धोआओल नव वस्त्र ।
**धोआइ**–धोबिकेँ देय कपड़ा धोएबाक वेतन ।
**धोएब**–क्रि० धो+अब-प्रक्षालन ।
**धोकड़ा**–छोट बोरा, छोट अक्खा, गोणी सं० ।
**धोकड़ी**–छोट धोकड़ा ।
**धोखरब**–क्रि० जलसंयोगसँ अपगत होएब ।
**धोखा**–भ्रम, प्रमाद ।
**धोखारब**–क्रि० धोखार्+अब-जलक आघातसँ अपगत करब ।
**धोँछ**–उ० अनुचितकार्यकरणशील । स्त्री० धोँछि ।
**धोँछिआ**–स्त्री० अनादरणीय धोँछि ।
**धोटकी**–ओष्टपुट ।
**धोटकी लगाएब**–ओष्ठपुटसँ धरब ।
**धोतिआहा**–दरभङ्गाराजकीय धौत परीक्षामे उत्तीर्ण भय धोती पओनिहार (पण्डित) ।
**धोती**–धौतवस्त्र, पुरुषक परिधानीय ।
**धोधर**, **धोधरि** }–कोटर ।
**धोधि**–मेदवृद्धिसँ स्थूलभूत उदर, तुन्द ।
**धोधिगर**, **धोधिल** }–धोधिबाला (व्यक्ति), तुन्दिल ।
**धोधैल**–पैघ धोधिबाला ।
**धोनि ढेकार**–विपाकजन्य विकृत रसगन्धसँ युक्त ढेकार ।
**धोपब**–क्रि० झाँपब ।
**धोबि**–उ० धावक, वस्त्र धोएनिहार जातिविशेष । स्त्री० धोबिनि ।
**धोबिआही**–धोबिक टोल ।
**धोबिघट्टा**–धोबिक वस्त्र धोएबाक घाट।
**धोबिनि**–स्त्री० धोबि जातिक स्त्री ।
**धोयब**–क्रि० धो+अब-प्रक्षालन ।
**धौरबी**–स्त्री० रखौली, नियुक्त पुंश्चली ।
**धौला**–पक्षिविशेष ।
**ध्यान**–सं० स्मरण ।

## न

**न**–अ० निषेध ।
**नएन**–मत्स्यविशेष १ । नेत्र २ ।
**नओ**–नवसंख्यापरिमित, ९ ।
**नओतिमना**–नओ तीमनसँ युक्त भोज्य ।
**नओरतन**–नओ दाँतबाला (बड़द) १ । नवरत्नयुत २ ।
**नकछिक्की**–तृणविशेष ।
**नकटा**–पक्षिविशेष ।
**नकटी**–नाकक शुष्क मल, सिंघाण सं०।
**नकडुबाब**–जलचर पक्षिविशेष ।
**नकदड़री**–आतुरतापूर्वक नितान्त प्रार्थना।
**नकबसा**–दुनू नासिकापुटक मध्यम अवयब ।
**नकबेसरि**–भूषणविशेष ।
**नकमुन्नी**–नासिकाक भूषणविशेष ।
**नकल**–वि० अनुकरण ।
**नकली**–वि० अनुकृत, अवास्तविक १ । अवास्तविक रोदनादि कएनिहार २।
**नकलोल**–पक्षिविशेष १ । बूड़ि २ ।
**नकसा**–वि० कोठा खेत आदिक चित्र १ । खोधामा २ ।

**नकार**–नक्र, जलीय हिंस्र जन्तुविशेष ।

**नकारि**–नासिकाव्रण ।

**नकुब्बा**, **नकुब्बी** –नाकसँ युक्त (आम) ।

**नकुनी**–नोक, तीक्ष्ण अग्रभाग ।

**नक्की मुट्ठी**–कौड़ीक एक खेड़ि ।

**नक्कू**–पैघ नाकबाला ।

**नखनखी**–ओषधिविशेष ।

**नखसिख**–नखसँ शिखापर्यन्तअङ्ग ।

**नखास**, **नखासी** –द्रव्यक उपर खोधिकेँ चित्रनिर्माण ।

**नग**–मोतिक मध्यमे रखबाक मणिविशेष १ । औँठीखचित मणि २ ।

**नगद**–तत्काल देल रुपैआ इत्यादि ।

**नगदा-नगदी**–अ० बिना उधार, सद्यः मूल्य दए (क्रयविक्रय) ।

**नगनिपी**–द्विरागमनक एक विधि जाहिमे नाग (वस्त्रवेष्टित भूमि) नीपल जाइत अछि ।

**नगर**–स० पुरी, ग्रामसमुदाय १ । आपणादि -युक्त देश २ ।

**नँगड़ा**–नङड़ा, ओषधिविशेष १ । अनादृत नाँगड २ ।

**नँगड़ाएब**–क्रि० नँगड्+अब-खञ्जगत्या चलब, स्खलितगति ।

**नँगड़ा खेसारी**–अन्नविशेष ।

**नँगड़िमोड़ देब**–क्रि० लोभवश पुनः पुनः इष्टवस्तुक सन्निधिमे घूमब (निन्दामे) ।

**नँगाड़ा**–वाद्‌विशेष, डका ।

**नङड़ा**–नँगड़ा, खञ्ज (अनादरमे) ।

**नङड़ाएब**–नँगराएब, स्खलितगति ।

**नङाड़ा**–नँगाड़ा, डंका ।

**नङोचङो**–अशान्ति ।

**नछोड़**–नखक्षत ।

**नछोड़ब**–क्रि० नखसँ क्षत करब ।

**नट**–उ० असभ्य जातिविशेष । स्त्री० नटिनि ।

**नटखट**–अशुभोक्ति ।

**नटखटाह**–उ० शुचिताक विषय कनेको अन्यथा भेलासँ क्रोधशील । स्त्री० नटखटाहि ।

**नटखटिआ**–अलिङ्ग, नटखटाह ।

**नटिनि**–स्त्री० नट जातिक स्त्री ।

**नटुआ**–नर्तक ओ नर्तकी ।

**नठब**–क्रि० अपलाप ।

**नठाल**–अकिञ्चन ।

**नड़ाएब**–क्रि० नड़ब्+अब-त्याग ।

**नड़िरा**–गहूमक ओ यवक एक प्रभेद ।

**नढ़री**–स्त्री० परपुरुषगामिनी ।

**नढ़ेआ**–गिदर, शृगाल ।

**नढ़ेर**–पु० परस्त्रीगामी ।

**नढेरी**–परस्त्रीगमन ।

**नतिनिजमाए**–नातिनिक स्वामी ।

**नत्थी**–नाथब, सूचीवेधपूर्वक बन्धन ।

**नथ**, **नथिआ**, **नथुनी** –नाकक भूषणविशेष ।

**ननदि**–स्त्री० ननान्दा, स्वामीक बहिनि ।

**ननदोसि**–पुं० ननदिक पति ।

**ननिआ सासु**–स्त्री० स्वामीक मातामही।

**नन्दोसि**–ननदोसि, ननदिक पति ।

**नन्हघस्सी**–छोटछोट घास ।

**नपना**–जाहिसँ नापल जाए (से पात्र) ।



**नपुंसक**–सं० बलगोबिना, क्कीब ।

**नफगर**–वि० जाहिमे नफा हो से, लाभप्रद।

**नफा**–वि० लाभ ।

**नब**–स० नूतन ।

**नबकर्मी**–कर्मठ ।

**नबका**–उ० नवीन प्रकारक । स्त्री० नबकी ।

**नबग्रह**–भूषणविशेष १। सूर्यादि नबो ग्रह २।

**नबति**–वि० तोरणवाद्य १। अवस्था २ ।

**नबतिखाना**–वि० तोरण ।

**नवम**–नओक पूरण ।

**नवमी**–सं० नवम तिथि ।

**नबसिक्खा**, **नबसिखुआ** –नवशिक्षित ।

**नबान**, **नवान्न** –नब अन्नक प्रथम भोजन ।

**नबाब**–वि० मुसलमानक राजा १। तीसीक लस्सा २ ।

**नबाबी**–वि० नबाब सदृश विलास ।

**नबाबी छाँटब**–क्रि० नबाब जेकाँ केवल आज्ञा चलाएब, कोनो काज नहि करब ।

**नबारी**–यौवन ।

**नबासी**–एकान्नवति ८९ ।

**नबासीम**–नबासीक पूरण, ऊननवतितम।

**नब्बे**–नवति, ९० ।

**नब्बेम**–नवतितम, नब्बेक पूरण ।

**नमछोड़**–घोड़ाजेकाँ लाम ।

**नमछुरती**, **नमघोर** –लम्बाकार ।

**नमती**–लम्बाइ ।

**नमब**–क्रि० नत होएब १ । मालक पानि पिअब २ ।

**नमरब**–क्रि० नम्र होएब १ । घैँचने लम्बा होएब २ ।

**नमहर**–पैघ, दीर्घ ।

**नमाइ**–लम्बाइ, दैर्ध्य ।

**नमूना**–वि० आदर्श, अनुकार्य ।

**नमेर**–स्वयं क्षेत्रपतित धानक गाछ ।

**नयन**–मत्स्यविशेष १ । नेत्र २ ।

**नर**–व्याधक छीप १ । पुमान् (पक्षी-प्रभृति) २ ।

**नरइ**–छोट गाछी ।

**नरकटि**–तृणविशेष ।

**नरासाहि**–आपकीर्ति, निन्दा ।

**नरी**–सूतक प्रमाणविशेष ।

**नरेठी**–गर्दनिक शिरा ।

**नरैठी**–गर्दनिक पाछाँ भाग ।

**नल**–सं० कृत्रिम कए बनाओल लघु जलप्रवाहपथ ।

**नली**–छोट नल ।

**नह**–नख ।

**नहकट्टी**–अशौचनिमित्तक नखच्छेदन ।

**नहकेश**–अशौचनिमितक नखाके-शकद्देदनकर्म ।

**नहँगा**–साड़ीक तर पहिरबाक छोट नूआ ।

**नहरनी**–नह कटबाक अस्त्र ।

**नहरि**–नदीसँ सम्बद्ध कृत्रिम दीर्घ बाहा ।

**नहसूर**–नखाच्छादनक चमड़ा ।

**नहाए**–अयोघन, लौहादि पिटबाक लौहनिर्मित आधार ।

**नाहएब**–क्रि० नह+अब-स्नान ।

**नहाएब-सोनाएब**–क्रि० स्नानभोजनादि क्रिया ।

**नहि**–सं० अ० निषेधद्योतक ।

**नहू-नह**–अ० मन्द-मन्द, शनैः शनैः ।

**नहेरि**–उ० लहेरि, लाक्षाभरणकारी जातिविशेष । स्त्री० नहेरिति ।

**नाउच्च**–अनुच्च

**नाओ**–नौका ।

**नाओँ**–नाम ।

**नाओ काढ़ब**–क्रि० कढ़्+अब-नौका खेबब ।

**नाओँ काढ़ब**–क्रि० कढ़+अब-मन्त्र द्वारा चोरक नाम जानव ।

**नाओँकाढ़ा**–चोरक नाम कढ़-निहार मान्त्रिक ।

**नाक**–नासिका ।

**नाकर-नूकर**–अ० निषेधप्राय, अस्पष्ट निषेध ।

**नाग**–सं० उ० सप । स्त्री० नागिनि ।

**नाँगट**–उ० नग्न । स्त्री० नाँगटि ।

**नाँगड़**–उ० खञ्ज । स्त्री० नाँगड़ि ।

**नाँगड़ि**–लाङ्गूल, पुच्छ १ । खञ्ज (स्त्री) २ ।

**नागफेनी**–कण्टकमय चापट पत्रहीन क्षुपविशेष ।

**नागरी**–हिन्दी अक्षर १ । हिन्दी भाषा २ ।

**नागा**–जातिविशेष ।

**नागिनि**–स्त्री० सर्पिणी ।

**नागेसर**, **नागेश्वर** } –पुष्पमहावृक्षविशेष, नागकेसर सं० ।

**नाङट**–उ० नग्न । स्त्री० नाङटि ।

**नाङड़**–उ० खञ्ज । स्त्री० नाङड़ि ।

**नाङड़ि**–लाङ्गूल, पुच्छ १ । खञ्ज (स्त्री) २ ।

**नाच**–नृत्य ।

**नाचधर**–नृत्यभवन ।

**नाचब**–क्रि० नच्+अब-नर्तन ।

**नाचार**–विवश, उपायहीन, लाचार हि० ।

**नाटक**–अभिनय ।

**नाड़ी**–सं० शिरा ।

**नाढ़ी**–स्त्री० व्यभिचारिणी ।

**नाति**–उ० नप्ता, अपत्यक अपत्य, पौत्र ओ दौहित्र । स्त्री० नातिनि, पौत्री वा दौहित्री ।

**नादड़ी**–गजीफाक अन्तिम छोट फर्द ।

**नाथ**–मालक नासारज्जु १ । बेधन २ ।

**नाथब**–क्रि० नथ्+अब-मालक नासिकामे छेद करब १ । बेधन २ ।

**नादि**–मालकेँ गूड़ासानी देबाक पात्र-विशेष ।

**नानन**–वृक्षविशेष ।

**नाना**–अ०स० अनेक १ । मातामह २ ।

**नानाभैआ**–नेनाक नवम दिनमे कर्त्तव्य योग टोन ।

**नानी**–स्त्री० मातामही ।

**नान्दन**–मत्स्यविशेष ।

**नान्हीटा**–स्वरूपेँ बहुत छोट ।

**नाप**–परिमाण ।

**नापजोख**–परिमाणादिक्रिया ।

**नापता**–जकर पता (स्थितिस्थान) केओ नहि बुझैत हो ।

**नापब**–क्रि० नप्+अब-नाप करब ।

**नापल**–मित, जकर नाप कएल गेल हो ।

**नाभरोस**–निराश ।

**नाभी**–सं० ढोँड़ही ।

**नाम**–सं० आख्या १ । लाम, लम्बा २ ।

**नाम काढ़ब**–क्रि० कढ्+अब-नाओँ काढ़ब ।



**नामनबैसी**–नामावलीक उल्लेख ।

**नामावली**–सं० श्रेणीबद्ध नाम ।

**नामी**, **नाम्बर** } –विख्यातनामा ।

**नाम्बरी**–नामक विख्याति ।

**नायक**–कीर्तनिआँ नटुआक प्रधान पुरुषपात्र १ । सं० नेता २ ।

**नार**–धान आदिक नाल १ । धानक डँटकी २ ।

**नारदी भजन**–भगवानक भजन जे झालि पर गाओल जाइत अछि ।

**नाराज**–वि० अप्रसन्न, क्रुद्ध ।

**नाराजगिरी**–वि० सेवकपर मालिकक क्रोध ।

**नारि**–नारी, स्त्री ।

**नारिकेर**, **नारिकेरि** } –नारिकेल ।

**नारिकेरी**–नारिकेरक लोखड़ा जकर ओढ़िका ओ हुक्का बनैत अछि ।

**नाल**–सं० कमल आदिक डाँट १ । खिआए नहि तदर्थ जूता ओ घोड़ाक टापक तरमे देय लौहनिर्म्मित वस्तु २ ।

**नाला**–पनिबट, इष्टकादिबद्ध पानि बहबाक मार्ग ।

**नालायक**–वि० अयोग्य (व्यक्ति), बूड़ि ।

**नालिस**–वि० न्यायालयमे वादीक विज्ञप्ति ।

**नाश**–सं० विनाश ।

**नास**–हलाङ्ग, हरकठक अगिला भाग ।

**नासकार**–वि० अस्वीकार, नठब ।

**नासपाती**–अमृताह्व, रुचिफल, अमृतफल ।

**नासी**–मृत नदी ।

**नाह**–नाथ, स्वामी १ । नौका २ ।

**नाहक**–वि० अ० वृथा ।

**नाहा**–तास आदिक नवम फर्द ।

**निकती**–स्वर्णादि तौलबाक छोट तुला ।

**निकलुआ**–निष्कासित ।

**निकम्मा**–वि० अधलाह ।

**निकलब**–क्रि० निकल्+अब-निःसृत होएब ।

**निःकसरि**–सर्वथा शुद्ध, दोषमुक्त (स्वर्णादि), सर्वथा रोगमुक्त (व्यक्ति) ।

**निकहा**–नीक प्रभेदक ।

**निकाएब**–क्रि० निकब्+अब-मत्स्यादिकेँ छेदनादिसँ रन्धनोप युक्त करब ।

**निकाओन**–निकएबासँ त्याजित हेय अंश १ । निकओनिहारकेँ देय २ ।

**निकायब**–क्रि० निकब्+अब-निकाएब ।

**निकालब**–क्रि० निकाल्+अब-निष्कासन ।

**निकास**–वि० घरक लग फैल जगह १ । रुपैया आदि देबाक हुकुम २ ।

**निकेँ**–सुखेँ, सुखपूर्वक ।

**निकेँना**–अ०नीक रीतिएँ ।

**निखड़ब**–क्रि० स्फुट रूपेँ अङ्कित होएब ।

**निखरूस**–वि० सर्वाङ्गपूर्ण, अविकल ।

**निखाड़ब**–क्रि० निखाड़्+अब-स्पष्ट रूपेँ अङ्कित करब ।

**निघटब**–क्रि० सधब, अनवशेष होएब ।

**निघारब**–क्रि० निधार्+अब-निभालन, निहारब ।

**निघास**–निघेस, मालक भक्षिता वशिष्ट ।

**निघुरब**–क्रि० नत होएब ।

**निवृष्ट**–सं० अत्यन्त अधम ।

**निघेस**–निघास, मालक भक्षितावशिष्ट ।
**निचका**–निचला, नीचस्थित ।
**निचगर**–अधिक नीच ।
**निचला**–नीचस्थित ।
**निचामि**–नीचात्मा ।
**निचास**–नीच चास, नीच खेत ।
**निचेन**–निरुपद्रब, शान्त, कार्यभारमुक्त ।
**निचोड़**–निष्कर्ष ।
**निचोरब**–हि० क्रि० गारब ।
**निछाउर**–इनाम, न्यौछाबर हि० ।
**निछाएब**–क्रि० निछब्+अब-तृणक संशोधन ।
**निछाओन**–तृणादिक संशोधनसँ त्याजित अंश ।
**निछाबरि**–इनाम ।
**निछायब**–क्रि० निछब्+अब-तृणक संशोधन ।
**निछार( ड़ )**–सर्वथा गर्भमुक्त (धान्यादि)।
**निछोह**–अ० निच्छोह, वेगपूर्वक (दौड़ब) ।
**निजगुति**–निश्चय ।
**निट्ठाह**–उ० प्रबल, दृढ़ । स्त्री० निट्ठाहि ।
**निट्ठर** / **निठुर** } –उ० निष्ठुर । स्त्री० निट्ठुरि ।
**निडर**–उ० निडुर, निर्भय । स्त्री० निडरि ।
**निड़ारब**–क्रि० निड़ार्+अब-आँखिक आस्फालन ।
**निड्डर**–उ० निर्भय । स्त्री० निनिड्डरि ।
**नित**–अ० नित्य, प्रतिदिन ।
**नितराएब** / **नितरायब** } –क्रि० नितर्+अब-गर्वसँ अगराएब ।
**नित्त** / **नित्य** } –अ० नित्य, प्रतिदिन ।
**निधार**–निराधार ।
**निधूह**–निर्द्धूम ।
**निधोख**–धोखासँ रहित, नि:शङ्क ।
**निन**–निन्द, निद्रा १ । निद्रित २ ।
**निनाइ**–पेटक वायुविशेष ।
**निनाइ उखड़ब**–क्रि० उदरवायुक स्थानत्याग ।
**निनान्नब्बे**–एकोनशत, ९९ ।
**निनान्नब्बेम**–एकोनशततम ।
**निन्दित**–सं० निन्दास्पद ।
**निन्न**–निद्रित १ । निद्रा २ ।
**निपट**–निपट्ट, अन्ध ।
**निपटब**–क्रि० फरिछोट होएब, विवादक पर्यवसान होएब ।
**निपटाएब**–क्रि० निपट्ब+अब-फरिछोट करब, विवादक पर्यवसान करब ।
**निपट्ट**–अन्ध ।
**निपब**–क्रि० लेपन ।
**निबहता**–निर्वाह ।
**निबहब**–क्रि० सम्पन्न होएब १ । निर्वाह करब २ ।
**निबाह**–निर्वाह ।
**निबाहब**–क्रि० निबाह्+अब-सम्पादित करब, निर्वाहण ।
**निभरोस**–निराश ।
**निमकी**–सौँस नेबोक मसाला रहित अँचार ।
**निमन**–निम्मन, उत्तम ।



**निमरसखा** / **निमरसेखा** } –अनवशेष, जकर शेष नहि रहए ।
**निमहता**–निर्बाह ।
**निमुठ हाथ**–मुट्ठी बान्हल हाथक परिमाण ।
**निमुन** / **निमुन्न** } –सर्वथा मुद्रित ।
**निमोछिआ**–मोछसँ रहित ।
**निम्मन**–निमन, उत्तम ।
**नियत**–सं० निश्चित ।
**नियति**–वि० स्वभाव ।
**निरघिन**–निर्घृण, घृणास्पद, अश्रद्ध ।
**निरदिस**–अकिञ्चन असहाय ।
**निरधार**–निर्धारण, निश्चय, सन्तोष ।
**निरधारब**–क्रि० निरधार् + अब-सन्तोषपूर्वक निश्चय करब ।
**निरधोख**–नि:शङ्क ।
**निरपराध** / **निरपराधी** } –अपराधहीन ।
**निरमाल**–निर्माल्य ।
**निरमोही**–स्नेहशून्य ।
**निरस**–नीरस, रसहीन १ । आधासँ न्यून (अश) २ ।
**निरसब**–क्रि० त्याग ।
**निरस्त**–आशाहीन ।
**निरहट**–शासनक उल्लङ्घन कएनिहार ।
**निराओ**–नीरव, निर्वात (समय) ।
**निरादर**–सं० अनादर ।
**निराल**–शुद्ध, केवल, अमिश्रित (जलादि) ।
**निराश**–सं० हताश ।
**निरुद्योग**–सं० उद्योगशून्य ।
**निरुपाय**–सं० जकर उपाय नहि हो ।
**निरैठ**–अनुच्छिष्ट ।
**निरोग**–नीरोग, रोगहीन ।
**निरोध**–सं० रोकब ।
**निरोधी**–सं० रोकनिहार ।
**निर्घिन**–घृणास्पद, दर्शनसँ चित्त-विकारोत्पादक ।
**निर्दय**–सं० दयाशून्य ।
**निर्दिस**–असहाय, अकिञ्चन ।
**निर्दोष**–सं० दोषशून्य ।
**निर्धोख**–धोखासँ शून्य, अशङ्क ।
**निर्वाह**–सं० भरण-पोषण ।
**निर्विकार**–सं० विकारहीन, लज्जाहीन ।
**निर्बिसी**–उच्चटा, ओषधिविशेष ।
**निर्व्यग्र**–सं० व्यग्रतारहित ।
**नि:शब्द**–सं० शब्दशून्य ।
**निशा**–राति ।
**निशाकाल**–मध्यरात्र ।
**निश्चय**–सं० निर्णय ।
**निश्चिन्त**–सं० चिन्ताशून्य ।
**निसङ्क**–नि:शङ्क ।
**निसबद**–नि:शब्द ।
**निसाँ**–मद्यपानजन्य मद ।
**निसादर**–ओषधिविशेष ।
**निसाफ**–वि० न्याय ।
**निसाफी**–वि० न्यायी ।
**निस्तार**–सं० समाप्ति, १। सम्पन्नता २ ।
**निहत्थ** / **निहथ** } –जकर हस्तगत धन खर्च भए गेल हो से, रिक्तहस्त ।
**निहल**–हाल (आर्द्रता) सँ शून्य (खेत)।
**निहारब**–क्रि० निहार्+अब-साकाङ्क्ष भए ताकब ।

**निहुछब**–क्रि० देवादिक उद्देश्यैँ राखब ।
**निहुरब**–क्रि० नम्र होएब ।
**नीक**–उत्तम, भल ।
**नीच**–सं० अधम १ । नत (भूमि-आदि) २ ।
**नीचाँ**–अ० नीच देशमे ।
**नीपब**–क्रि० निप्+अब-लेपन ।
**नीपब-पोतब**–क्रि० लेपनादि ।
**नीपल**–उपलिप्त ।
**नीपा**–उपलेपन ।
**नीम**–निम्ब ।
**नीमन**–उत्तम ।
**नील**–सं० हरिअर ।
**नीलकण्ठ**–सं० नील कण्ठबाला पक्षिविशेष ।
**नीलकमल**–सं० इन्दीवर ।
**नीलम** }
**नीलमणि** } –नीलमणि, वैदूर्य ।
**नीर**–मन्त्रोपहित जल ।
**नीरविभूति**–मन्त्रोपहित जल विभूत्यादि ।
**नुकाएब**–क्रि० नुक्+अब-प्रच्छण होएब १। नुकब्+अब-प्रच्छन्न करब २ ।
**नुड़िआएब**–ना० नूड़ जेकाँ आचरण करब, अर्थात् इतस्ततः पाछाँ लागल चलब १ । वस्त्रादिकेँ संकुचित कए राखब २ ।
**नूआ**–वस्त्र ।
**नूज**–न्युब्ज ।
**नूड़**–उपलेपनक हेतु आकुञ्चित वस्त्रादि ।
**ने**–अ० निषेध १ । कोमलालाप २ ।
**नेआर**–क्रिया करबाक इच्छा ।
**नेआरभास**–नेआरप्रभृति ।
**नेआरब**–क्रि० नेआर्+अब-क्रिया करबाक इच्छा करब ।
**नेओँत**–निमन्त्रण ।
**नेओँता**–अ० निमन्त्रणमे ।
**नेड़हा**–तार कटहर ओ मकैक लम्बाकार फलाधार ।
**नेढ़ लागब**–क्रि० पिल्ला-पिल्लीक उनटा जोट लागब ।
**नेन**–मत्स्यविशेष ।
**नेनओन**–नेनासन ।
**नेनपन** }
**नेनपना** } –नेनाक क्रिया, शिशुत्व ।
**नेनपनी** }
**नेनमति**–नेनाक सन मति ।
**नेनमतिआ**–नेनाक सन बुद्धिबाला ।
**नेना**–अलिङ्ग-शिशु ।
**नेनाक रोग**–पूतनादिकृत बालग्रह ।
**नेनु**–नवनीत ।
**नेनुआ भोस**–कदलीविशेष ।
**नेनोन**–नेनाक सन ।
**नेप चुबब**–क्रि० क्रन्दनविशेष ।
**नेपाली**–नेपालदेशोद्भव ।
**नेपुर**–नूपुर, चरणक भूषणविशेष ।
**नेबार**–खाट घोरबाक सूतसँ निर्मित लम्बा पटविशेष ।
**नेबारि**–स्वमालिका, पुष्पविशेष ।
**नेबेद**–नैवेद्य ।
**नेबो**–जम्बीर ।
**नेम**–नियम (व्रतादिक) ।
**नेमटेम**–व्रतादिक नियमक आडम्बर ।
**नेरसराए**–नेत्रक आवरणक रोगविशेष ।
**नेरू**–अलिङ्ग, गायक छोट बाछा-बाछी ।



**नेसब**–क्रि० दीपप्रज्वालन ।
**नेह**–स्नेह ।
**नेहाइत**–वि० अत्यन्त ।
**नेहाए** }
**नेहाय** } –अयोघन, लौहादि पिटबाक लौहनिर्मित स्थूल आधार ।
**नेहारु**–सोनारक हथिआरविशेष ।
**नेहारुन**–अल्पसँ अल्प १ । हताश २ ।
**नेहाल**–वि० अत्यन्त उपकृत, कृतार्थ ।
**नेहोरा**–दैन्यपूर्वक प्रार्थना ।
**नैआ**–नौवाहक, नाओ खेबनिहार, नाविक।
**नैवेद्य**–सं० भगवन्निवेदित (फल पक्वान्नादि) ।
**नैवेद्यपत्री**–सं० भोजनकालिकनैवेद्या-धारणपात्र ।
**नैहर**–पितृगृह (स्त्रीक) ।
**नोक** }
**नोकनी** } –तीक्ष्ण अस्त्राग्र ।
**नोकर**–उ० वि० दास, चाकर । स्त्री० नोकरानी ।
**नोकरी**–वि० दास्य ।
**नोकसान**–वि० क्षतिग्रस्त ।
**नोकसानी**–वि० क्षति ।
**नोख**–उत्तम, सुन्दर ।
**नोखगर**–सुन्दर ।
**नोचनी**–कुड़िऐनी, कण्डूति ।
**नोचनी लागब**–क्रि० कण्डूतिप्राप्ति ।
**नोचब**–क्रि० वक्रवस्तुक अग्रभाग सँ घर्षण ।
**नोतर**–पचेसीमे नवम स्थान ।
**नोन**–लवण ।
**नोनगर**–अधिक नोनसँ युक्त १ । नोनसँ युक्त २ ।
**नोनचट**–सपक्ष मशकाकार अतिछोट कीटाविशेष ।
**नोनछराह** }
**नोनछाह** } –लवणयुक्त सन ।
**नोनथरा**–लवणनिर्माणस्थल ।
**नोनफड़**–नोनिआह भूमिविशेष ।
**नोनिआ**–उ० जातिविशेष । स्त्री० नोनिआनि ।
**नोनिआह**–नोनी लागल (भूमि) ।
**नोनी**–शाकविशेष १ । भित्त्यादिक रोगविशेष २ ।
**नोर**–अश्रु ।
**नोराएब**–ना० नोर्+अब-नोरसँ युक्त होएब ।
**नोसक्कड़**–अधिक नोसि लेनिहार ।
**नोसि**–नस्य ।
**नोसिदानी**–नस्यपात्र ।
**नौआ**–उ० नापित । स्त्री० नौआइनि ।
**नौआइनि** }
**नोआनि** } –स्त्री० नापित स्त्री ।
**नौगृही** }
**नौग्रही** } –भूषणविशेष ।
**न्यार**–क्रिया करबाक इच्छा ।
**न्यारब**–क्रि० न्यार्+अब-क्रिया करबाक इच्छा करब ।
**न्यो**–भित्त्यादिक आधारभित्ति ।
**न्योत**–निमन्त्रण ।
**न्योतब**–ना० निमन्त्रित करब ।
**न्योतपिहान**–निमन्त्रणादि ।
**न्योतहारी**–निमन्त्रित व्यक्ति ।
**न्योताँ**–अ० निमन्त्रणमे ।

# प

**प'**
**पअ** } —पक्व व्रणक छेदन ।
**पइती**—पवित्र, निर्मित कुशविशेष ।
**पए**—वि० अङ्कक दोष ।
**पएजामा**—वि० अधरोरुक ।
**पएताबा**—वि० पादत्राणवस्त्र ।
**पएदार**—वि० अङ्कक दोषसँ युक्त ।
**पएरधरी**—आर्त्तिसँ पादग्रहण ।
**पओ**—एक घर आगाँ चलबाक हक्क (पचेसीमे) ।
**पओने**—पादोन (संख्या वा परिमाण) ।
**पकठाएब**—क्रि० पकठ्+अब-कठोर होएब ।
**पकठोस**—उ० बजबामे प्रौढ । स्त्री० पकठोसि ।
**पकड़ब**—क्रि० ग्रहण ।
**पकपकाएब**—क्रि० पकपक्+अब-मनहिमन क्रोधाकुल होएब ।
**पकमान**—पक्वान्न, मालपूआ प्रभृति ।
**पकाओ**—घाबक परिपाक ।
**पकोहा**—शुष्क आम्रबीज ।
**पक्का**—हि० निश्चित, दृढ़ ।
**पक्की**—वि० असली, वास्तविक ।
**पक्खा**—पाखा, कोठा आदिक पार्श्वभाग ।
**पक्ष**—सं० चान्द्रमासक कृष्ण-शुक्ल भेदसँ पूर्वापर खण्ड १ । मत २ । दल ३ ।
**पख**—पक्ष, चान्द्रमासक अर्धावयव ।
**पखरा खाएर**—खदिरनिर्यासक प्रभेद ।
**पखाओज**—वाद्यविशेष ।
**पखारब**—क्रि० पखार्+अब-प्रक्षालन ।
**पखिआ बीड़ी**—लगाओल पानक बीड़ीक प्रभेद ।
**पँखिगर**—जुटल पाँखिसँ युक्त ।
**पखिना**—गृहादिक उभयपार्श्वक अङ्ग ।
**पखेब**—मालकेँ देबाक औषधविशेष ।
**पगहा**—हलादिक डोरी, बनसीक डोरी ।
**पगाड़**—कुसिआरक अग्रभाग ।
**पघड़िआ**—हाँसूक प्रभेद ।
**पघाँस**—मत्स्यविशेष ।
**पघिलब**—क्रि० द्रवीभाव ।
**पङ्खा**—व्यजनविशेष ।
**पङ्खी**—छोट पङ्खा ।
**पङ्गा**—सामुद्रलवण ।
**पचकटारि**—दुब्बर ।
**पचकट्टा**—धानक रोगविशेष ।
**पचकनमाही**—पाँच कनमाक नपना ।
**पचकब**—क्रि० क्वचित् अवयवसँ दबब, आघातसँ कोनो भागमे निम्नता-प्राप्ति।
**पचकारब**—क्रि० पचकार्+अब-तैलादिक अधिक लिप्पन ।
**पचखण्डी**—भूषणविशेष ।
**पचनिआ**—पाच कएनिहार ।
**पचनोना**—पञ्चलवण ।
**पचपच करब**—क्रि० किञ्चित् वान्ति-शङ्कायुक्त होएब ।
**पचपचाएब**—क्रि० पचपच्+अब-बमनक शङ्कासँ युक्त होएब ।
**पचपची**—वान्तिशङ्का ।
**पचपन**
**पचपन्न** } —पञ्चपञ्चाशत् ।
**पचपन्नम**—पञ्चपञ्चाशत्तम ।
**पचपौनिआ**—पञ्चकारुकी, पाँचो पसारी ।



**पचबनिआ**—भूषणविशेष ।
**पचमी हिस्सा**—पञ्चमांश ।
**पचमेर**—पाँच प्रकारक मधुर ।
**पचरँगा**
**पचरङा**
**पचरङ्गा** } —पाँच रङ्गसँ रङल (कपड़ा)।
**पचहत्तरि**—पञ्चसप्तति ।
**पचहत्तरिम**—पञ्चसप्ततितम ।
**पचहर**—स्त्रीक पयखाना, कृत्रिम पुरीषालय ।
**पचागि**—पञ्चाग्नि (व्रत) ।
**पचास**—पञ्चाशत् ।
**पचासम**—पञ्चाशत्तम ।
**पचासी**—पञ्चाशीति ।
**पचासीम**—पञ्चाशीतितम ।
**पचीस**—पञ्चविंशति ।
**पचीसम**—पञ्चविंशतितम ।
**पचुसर**—किञ्चित् ऊस युक्त (भूमि) ।
**पचेसी**—क्रीड़ाविशेष ।
**पचौन्ह**—पञ्चबन्धन ।
**पच्चर**—बेंट आदि दृढ़ करबाक हेतु देल किल्ली ।
**पच्चा-दूआ**—अ० पाँचमे दू अंश ।
**पच्ची**—भूषणमे बालुकादिक अन्तः-प्रवेशन ।
**पच्छ**—पक्ष ।
**पच्छिम**—पश्चिम ।
**पच्छिम भर**—पश्चिम देश ।
**पच्छी**—पक्षी ।
**पछता**—पश्चाद्भव ।
**पछताएब**—क्रि० पछतब्+अब-पश्चात्ताप।
**पछबा**—पश्चिमसँ आगत (वायु) ।
**पछबारि**—पश्चिम दिगवस्थित (गृहादि)।
**पछाड़ी**—पश्चाद्भाग ।
**पछाति**—अ० पश्चात् ।
**पछारब**—क्रि० पछार्+अब-प्रतिद्वन्द्वीकेँ तर कए उपर आएब ।
**पछिमहा**—पश्चिम देशभव (ब्राह्मण) ।
**पछिमा ब्राह्मण**—पश्चिमदेशभव ।
**पछिमा कायस्थ**—कायस्थविशेष ।
**पछिमा ढार**—पश्चिमप्लव ।
**पछिमाहा**—पछिमहा ।
**पछिमाहुत**—समीपपश्चिमदेशस्थ ।
**पछिला**—पश्चाद्भव १। पश्चात् स्थित २ ।
**पछुअति**—घरक पछिला चार ।
**पछुआ**—भूषणविशेष ।
**पछुआएब**—ना० पाछू होएब ।
**पछुआड़**—घरक पश्चिम अवकाश ।
**पछुआँड़ी बान्ह**—मनुष्यक बन्धनविशेष ।
**पछुलगुआ**—पाछाँ रहनिहार अनादहणीय १ । शूद्रक स्त्रीक पछिला स्वामी सँ जनमल बच्चा २ ।
**पछोर**—अनुगमन ।
**पजरब**—क्रि० प्रज्वलन ।
**पँजरबार**—पार्श्वक गर ।
**पँजरमोड़ (र)**—पाँजरक वेदनाविशेष ।
**पजारब**—क्रि० पजार्+अब-प्रज्वालन ।
**पँजिआड़**—पञ्जीकार ।
**पजिआड़ी**—पञ्जीकारक क्रिया ।
**पजेबा**—इष्टका ।
**पँजौड़**—पाँजमे गृहीत (धान्यादि) ।
**पझाएब**—क्रि० पझ्+अब-मिझाएब ।
**पञ्च**—मानल वादनिर्णेता ।
**पञ्चकल्याण**—घोड़ाक शुभ लक्षणविशेष, चारू पाएर ओ चानिमे उज्जर ।

**पञ्चक्रोशी**–सं० पाँच कोसक परिक्रमा (काशीमे) ।

**पञ्चगरास** } –भोजनक पूर्व पाँचबेर
**पञ्चग्रास** } समन्त्र अन्नभक्षण ।

**पञ्चदीप**–सं० पाँच मुहबाला दीप ।

**पञ्चपात्र**–सं० सूर्यादिपञ्चदेवता पूजनार्थ जलपात्रविशेष ।

**पञ्चमी**–सं० पाँचम तिथि ।

**पञ्चमुखी**–पाँच मुहबाला (दीपपात्रादि) १। ओढ़ुल फूलक प्रभेद २ ।

**पञ्चान्नब्बे**–पञ्चनवति ।

**पञ्चान्नब्बेम**–पञ्चनवतितम ।

**पञ्चैती**–पञ्चक क्रिया (न्याय) ।

**पञ्ज**–पूर्णवयरक घोड़ा १ । वि० अस्वाधीन २ ।

**पञ्जीकार**–पँजिआड ।

**पञ्जीबद्ध**–जकर नाम पाँजिमे प्रारम्भसँ अछि ।

**पट**–आवरण १ । वस्त्र २ ।

**पटइ**–भार लटकएबाक वंशदण्डविशेष ।

**पटकब**–क्रि० पातन ।

**पटका**–पतन ।

**पटकापटकी**–परस्पर पातन ।

**पट दए**–अ० झट दए, झटिति, लगले ।

**पटदेहरि**–चौकठिक उपर देबाक तकथा ।

**पटब**–क्रि० वृक्षक्षेत्रादिक जलसँ युक्त होएब १ । सौमनस्य रहब, विरोध नहि होएब २ । व्याप्त होएब ३ ।

**पटबरिका**–पटबारीक क्रिया (रसीद कटबामे नियुक्ति) ।

**पटबा**–जातिविशेष ।

**पटबारी**–पोतक रसीद कटबामे नियुक्त ।

**पटम्बर**–पट्टाम्बर ।

**पटरानी**–स्त्री० राजाक प्रधान पत्नी ।

**पटरी**–काष्ठादिक छोट पट्ट ।

**पटरी बैसब**–क्रि० मिलान होएब (लाक्षणिक शब्द) ।

**पटल**–सं० प्रक्रिया ।

**पटसार**–जकर मथनी उचितसँ अधिक नीच हो से (घर) ।

**पटाँस**–तृणविशेष ।

**पटिआ**–परतानसँ निर्मित कट ।

**पटुआ**–जकर सन होइछ से वृक्ष विशेष।

**पटुआ साग**–शाकविशेष ।

**पटेर**–तृणविशेष ।

**पटोटन**–बिना बातीक खढ़सँ चारक आच्छादन १ । धरना २ ।

**पटोर**–पट्टवस्त्र ।

**पटौटी**–भोजनार्थ बिछाओल पात ।

**पटौनी**–उद्धृत जलसँ भूमिक आल्पावन।

**पट्ट**–देवमन्दिरक कवाट १ । सं० पट्टोर्ण २ ।

**पट्टा**–हि० भरल पक्की दू मोनक बोरा।

**पट्टी**–अंश १ । औषधयुक्त व्रणक आच्छादनपट २ ।

**पट्टीदार**–वि० स्वत्वांशभागी ।

**पट्टीबन्दी**–वि० भूमिक अंशविभाजन।

**पट्टीबाज**–वि० धोखा देनिहार ।

**पट्टीबाजी**–वि० धोखा देनाइ ।

**पट्टू**–ऊर्णावस्त्रविशेष ।

**पट्ठा**–पहलमानक शिष्य ।

**पठरू**–अलिङ्ग, बकरीक बच्चा ।

**पठाएब**–क्रि० पठब्+अब-प्रेषण ।



**पठिआर**–अपञ्जीबद्ध ब्राह्मणक ग्रामसमूह।

**पड़ब**–क्रि० आधार पर एक भागेँ सर्वाङ्गसंयोग १। विषयीभवन, यथा बूझि पड़ल, सूनि पड़ल २। आवश्यक प्राप्ति, यथा जाय पड़ल ३ । संबद्ध होयब ४ ।

**पड़रू**–अलिङ्ग, महिँसिक बच्चा ।

**पड़ाएब**–क्रि० पड़+अब-पलायन ।

**पड़ाएन**–पलायन, वासत्याग ।

**पड़ाँचब**–क्रि० आद्योपान्त कथन ।

**पँडुकी** } –पक्षिविशेष ।
**पडुकी** }

**पड़ोर**–पटोल ।

**पड़ोरिआ**–पटोलफलाकारक (कपाटमुद्रक) ।

**पड़ोस**–गृहसमीपक आवास ।

**पड़ोसी**–सं० गृहसमीपवासी व्यक्ति । स्त्री पड़ोसिनि ।

**पढ़ओनाइ**–अध्यापन ।

**पढ़नाइ**–अध्ययन ।

**पढ़ब**–क्रि० अध्ययन ।

**पढ़ब-गूनब**–क्रि० अध्ययनादि ।

**पढाइ**–हि० पाठन ।

**पढ़ाएब**–क्रि० पढ़ब्+अब-अध्यापन ।

**पढ़िआ**–पाढ़िबाला (धोती साढ़ी) ।

**पढ़ुआ**–छात्र ।

**पणाचब**–क्रि० पणाच्+अब-आद्योपान्त कथन ।

**पणुकी**–पँडुकी, पक्षिविशेष ।

**पण्डा**–तीर्थक ब्राह्मण ।

**पण्डित**–सं० विद्वान् ।

**पण्डिताइ**–पाण्डित्य ।

**पण्डिताम**–पण्डितोचित (पाग आदि) ।

**पण्डितारय**–पण्डितक व्यवहार, पाण्डित्य ।

**पतकट्टा**–धानक रोगविशेष ।

**पतकाछु**–कूर्मक प्रभेद ।

**पतकोबी**–बिना फूलक कोबी ।

**पतगर**–अधिक पातबाला ।

**पतचट्टा**–खएबाक काल पातपर्यन्त चटनिहार (निन्दामे) ।

**पतड़ा**–पञ्चाङ्ग, तिथिपत्र ।

**पतड़ी**–खडिका लगाय अनेक पातसँ बनाओल भोजनपात्र ।

**पतनुकान**–गाछक पातमे नुकाएब, भयादिसँ प्रच्छन्न होएब ।

**पतनोना**–पतलोना, पातपर परसल नोन ।

**पतरका**–उ० पातर प्रकारक । स्त्री० पतरकी ।

**पतरधना**–पातर धान, मेही धान ।

**पतराएब**–ना० पतरब्+अब-पातर करब।

**पतसीझ**–पसीझ ।

**पता**–स्थितिस्थानपरिचय, प्राप्तिस्थान ।

**पताका**–सं० वैजयन्ती ।

**पताल**–पाताल ।

**पता लागब**–क्रि० प्राप्तिस्थानक अवगम ।

**पतासी**–मत्स्यविशेष ।

**पति**–प्रतिष्ठा १ । सं० स्वामी २ ।

**पतिआ**–प्रायश्चित्त ।

**पतिआएब**–क्रि० पति+अब-प्रतीत करब, विश्वास ।

**पतिआनी**–पाँती, पङ्क्ति ।

**पतिआनीजोड़ (र)**–पङ्क्तिबद्ध ।

**पतिकरनी**–प्रतिष्ठारक्षार्थ अत्यल्प क्रिया।

**पतित**–सं० महापातकी ।
**पतिता**–अनादरणीय पतित ।
**पतिव्रता**–स्त्री० सं० साध्वी ।
**पतौटी**–भोजनार्थ बिछाओल पात ।
**पतौड़ी**, **पतौरी**–ताम्बूलादि रखबाक पत्रपुटक ।
**पत्तर**–लौहपत्र ।
**पत्ता**–पात १ । पता २ ।
**पत्ती**–छोट पात ।
**पत्र**–लौहपत्र १। सं० चीठी २ । पात ३ ।
**पथरखड़ी**–खटी, कठिनी ।
**पथरचूर**–क्षुपविशेष ।
**पथराएब**–ना० पाथरपर पिजाएब ।
**पथरी**–मूत्राशयस्थित पाथरसन दृढ मांसपिण्ड, रोगविशेष ।
**पथरौटी**–पाथरक बाटी ।
**पथार**–वस्तुक समन्तात् पसार ।
**पथिआ**–बाँस वा बेँतक बनाओल धान्यादिपात्रविशेष ।
**पथेरि**–पजेबा पथबाक स्थान ।
**पदन्धोती**–पादपर्यन्त पहिरल धोती ।
**पदमकाठ**, **पद्मकाठ**–वृक्षविशेष, सं० पद्मक।
**पनखौका**–उ० अधिक पान खएनिहार। स्त्री० पनखौकी ।
**पनपथिआ**–पान रखबाक एकहरा छोट पथिआ ।
**पनबट्टा**–पुटद्वयात्मक पान रखबाक पैघ पात्र, करङ्क ।
**पनबट्टी**–छोट करङ्क ।
**पनबसना**–पान बासबाक ओ रखबाक पात्र ।
**पनमा**–पर्णाकारचिह्नित रक्तवर्ण तासक फर्द, लाल पान ।
**पनरह**–पञ्चदश ।
**पनरहम**–पञ्चदश संख्याक पूरक ।
**पनहाएब**–क्रि० पनह्+अब-मालक वा ओकर स्तनक दुग्धदानोन्मुख होएब ।
**पनहाओन**–महिसिक बाहबाक पूर्वरूप ।
**पनहाओन देब**–क्रि० बाहबाक पूर्वरूप-प्राप्ति ।
**पनही**–जूता ।
**पनहैनी**–पनहाओन ।
**पनारा**–ऊपरसँ मुद्रित पनिबह ।
**पनि**–करीनसँ पटएबाक पनिबट ।
**पनिअओरा**–फलविशेष, पनिओरा ।
**पनिआएब**–ना० पानि+अब-पानिसँ युक्त होएब ।
**पनिआगर**–जलसँ रक्षार्थ ठाठक उपर अग्रभागमे देल खढ़क टट्टी ।
**पनिआ दराध**–सर्पविशेष ।
**पनिआरी**–अधिक वृष्टि ।
**पनिआह**–पानिसँ युक्त ।
**पनिआहा**–पानिसँ युक्त (मेघ) ।
**पनिओरा**–पनिअओरा, फलविशेष ।
**पनिकनरा**, **पनिकानर**–करीनसँ पटएबामे जलक सामीप्य, करीनकेँ जल सान्निध्य ।
**पनिकौआ**–काकविशेष ।
**पनिगर**–अधिक जलसँ युक्त १ । अधिक तेजीसँ युक्त २ ।
**पनिघट**–पानि भरबाक घाट ।
**पनिचड़ै**–जलपक्षी ।



**पनिचहट**–जाहिमे पानिक सम्बन्धसँ आर्द्रता बनल रहए से (खेत) ।
**पनिछाएब**–क्रि० पनिछ्+अब-स्वादिष्ट वस्तु खएबाक हेतु जिह्वा जलसँ युक्त होएब ।
**पनिछेक**–पानिक छेकब, जलगतिनिरोध ।
**पनिजत्तू**–पानिसँ जाँतल, अधिक समय धरि पानिमे डुबल (धान्यादि) ।
**पनिझाओ**–पोखरिक जलमय प्रदेश ।
**पनिझाली**–धान ।
**पनिडुब्बी**–पानिमे डुबल रहनिहार प्रेत ।
**पनितोआ**, **पनितौआ**–मिष्टान्नविशेष ।
**पनिदुहुर**, **पनिदुब्बुर**–जलोदर व्याधि ।
**पनिपत लेब**–क्रि० अधिक पानि रहबाक कारणेँ पानिक भरेँ धान्यादिक पत्रक पतन ।
**पनिपिआइ**–जलखइ, जलपान, जलपानार्थ किच्छु भोजन ।
**पनिबट**, **पनिबह**–पानि बहबाक नीच मार्ग ।
**पनिभर**–उ० पानि भरबामे नियुक्त । स्त्री० पनिभरनी ।
**पनिमरू**–किञ्चित्शुष्क तृणकाष्ठादि १ । मन्द-मन्द काज कएनिहार २ ।
**पनिसह**–अधिक पानि सहनिहार ।
**पनिसाला**–प्रपा, पानीयशाला ।
**पनिसोखा**–इन्द्रधनुष ।
**पनिसोह**–जलप्रचुर अल्पमधुर (लताम आदि) ।
**पनीर**–औषधविशेष ।
**पनुगब**–क्रि० पनुघब, निष्पत्र भए पुनः शाखाङ्कुर लाभ करब ।
**पनुगा**, **पनुगी**–वृक्षक शाखा चलबाक अङ्कुर ।
**पन्द्रह**–पनरह, पञ्चदश ।
**पन्द्रहम**–पञ्चदशसंख्याक पूरक ।
**पन्ना**–स्वर्णक प्रभेद १ । चून ओ मेही सुरखी मिलाओल २ । मरकतमणि ३ ।
**पन्नी**–चालमे शोभार्थ सटबाक चाकचक्ययुत चित्रपत्र ।
**पन्हाएब**–क्रि० पन्ह्+अब-पनहाएब ।
**पन्हान**–महिसिक गर्भधारणक पूर्वरूप विशेष ।
**पपड़ा**, **पपड़ी**–पापड़सदृश मृत्तिकादि ।
**पपिआह**–उ० असद्ध व्यक्ति । स्त्री० पपिआहि ।
**पपीहा**–पक्षिविशेष ।
**पबनाह**–पाबनिक वस्तुजात ।
**पबनेट (ठ)**–पाबनिक बखरा ।
**पबन्नी**–एक पबक हेतु लाल नहि भेल पचेसीक गोटी ।
**पबहारि**–पचेसीमे पओ पड़लासँ घरसँ गोटी बहराएब ।
**पबही**–एक पाओ प्रमाणक नपना ।
**पबाइ**–जूता खड़ामक जोड़ाक एक टा ।
**पबै**–पक्षिविशेष ।
**पमरिआ**–पमारा पढ़ि नचनिहार, जातिविशेष ।
**पमारा**–पुत्रजन्मादिक उत्सवक गीतविशेष ।

**पम्ह**–मोछक पूर्वरूप ।
**पय**–वि० काणत्वादि शारीरक दोष ।
**पयखाना**–वि० पुरीषोत्सर्गालय ।
**पयजामा**–वि० अधरोरुक ।
**पयताबा**–वि० पादत्राणवस्त्र ।
**पयदार**–वि० काणत्वादिदोषयुक्त ।
**पयरधरी**–पाएर पकड़ब ।
**पयरपोछा**–पाएर पोछाबाक (वस्त्र) ।
**पयरबजार**–बिना कण्टकादिक रास्ता ।
**पयरसंकर**–चरणक भूषणविशेष ।
**पर**–पाँखि १ । उपर २ । सं० अन्य ३ ।
**परकाल**–गोल रेखा लिखबाक यन्त्र ।
**परगास**–प्रकाश ।
**परगोत्री**–असगोत्र ।
**परचार**–प्रचार ।
**परचारब**–ना० पचार्+अब-प्रचार करब १ । अपराधी व्यक्तिक 'पुनः एना जनु करी' ई कहब २ ।
**परजाति**–स्वजातिसँ भिन्न ।
**परञ्च**–सं० अ० परन्तु, पूर्वोक्तसँ विशेष।
**परतर**–उपमा, सादृश्य ।
**परता**–बिना जोतल (खेत) १ । व्यापारमे लाभ २ ।
**परताँ**–अ० परत्व सन्ताँ, परमे रहलासँ ।
**परताएब**–क्रि० परतब्+अब-नीक अधलाह जचवाक हेतु क्रिया ।
**परतान**–पटिया आदि बिनबाक सच्छिद्र यष्टि ।
**परतार**–समय (एक परतार आम अधिक फड़य) ।
**परतारब**–क्रि० परतार्+अब-प्रतारणा ।
**परती**–बिनु जोतल भूमि ।
**परतीत**–प्रतीति, विश्वास ।
**परती-पराँत**–परतीप्रभृति ।
**परथन**–परसन, खएबाक हेतु खाद्य वस्तुक पुनरादान ।
**परदा**–वि० पर्दा, अन्तर्धा, आवरण ।
**परदेश**–अन्यदेश, विदेश ।
**परदेसिआ** / **परदेशी** } –विदेशमे रहनिहार वा होनिहार ।
**परधान**–प्रधान ।
**परनाति**–उ० प्रपौत्र वा दौहित्रपुत्र । स्त्री० परनातिनि ।
**परनाम**–प्रणाम ।
**परन्तु**–सं० अ० किन्तु ।
**परपन्न**– प्रपन्न, श्रद्धास्पद ।
**पर-परोसी**–गृहसमीपी तथा तत्समीपी उभय ।
**परब**–पर्व्व, ग्रहणदि ।
**परबतिआ** / **परबती** } –पर्वतमे रहनिहार वा होएनिहार ।
**परबरस**–वि० भरणपोषण ।
**परबल**–प्रबल ।
**परबा**–पारावत, पक्षिविशेष ।
**परबापाँखि**–धान्यविशेष ।
**परबाहि**–वि० चिन्ता ।
**परबेस**–प्रवेश ।
**परभूत** / **परभूता** } –प्रभुत्व, प्रभुता, सामर्थ्य ।
**परमाद**–प्रमाद, उचितो अप्रिय कहबामे संकोच ।
**परमानगी**–वि० आज्ञा ।
**परमाना**–वि० आज्ञापत्र ।
**परमान्न**–खीर, पायस ।



**परमेसर**–परमेश्वर ।
**परसन**–प्रसन्न १ । पुनः परिवेषित खाद्य वस्तु २ ।
**परसमनि**–स्पर्शमणि, जकर स्पर्शसँ धातु सोन भय जाय ।
**परसुक** / **परसुका** } –परसू भेल (विषय), एकान्तरितदिनभव ।
**परसू**–अ० परश्वः, एकदिनान्तरित पूर्व वा पर दिनमे ।
**परसूत**–प्रसूत रोग ।
**परसूती**–स्त्री० प्रसूता स्त्री ।
**परसौत**–प्रसूताक रोग ।
**परसौती**–स्त्री० प्रसूता स्त्री ।
**परहेज**–प्रहेज, अपराधसहन १ । पुनः अकरण २ ।
**परात**–प्रभात १ । अग्रिम दिन २ ।
**पराती**–प्रभात कालमे गेय गीत ।
**परान**–प्राण ।
**परि**–अ० सदृश, [अन्याय कएने रावणक परि होएत]
**परिकब**–क्रि० लोभेँ पुनः पुनः प्रवृत्ति ।
**परिक्रमा**–सं० प्रदक्षिणगमन ।
**परिचय**–सं० नामादिज्ञान ।
**परिचित**–सं० नाम रूप आदिसँ ज्ञात ।
**परिच्छा**–परीक्षा ।
**परिछनि**–स्त्रीकर्तृक एक प्रकारक शुभविधि ।
**परिछब**–क्रि० वर आदिक परिछनिविधि करब ।
**परिपाटी**–सं० रीति ।
**परिमित**–सं० अल्प परिमाणसँ युक्त ।
**परि लागब**–क्रि० लग्+अब-प्राप्त होएब।
**परिहब**–क्रि० पहिरब, परिधान ।
**परुकाँ**–अ० परुत्, अव्यवहित पूर्व वा पर वर्ष ।
**परेखब**–क्रि० प्रेक्षण ।
**परेत**–प्रेत, देवयोनिविशेष ।
**परेम**–प्रेम ।
**परेसान**–वि० हरान, परिश्रान्त, अतिप्रयत्नयुत ।
**परेसानी**–वि० हरानी, अत्यायास ।
**परोक्ष** / **परोछ** } –अप्रत्यक्ष ।
**परोपट्टा**–प्रान्त, समन्तात् समीप देश ।
**परोमिन**–असम्बन्धिक ।
**परोस**–समीपस्थ देश ।
**परोसिआ** / **परोसी** } –समीपवासी व्यक्ति ।
**पर्दा**–आवरण १ । आवरक पट २ ।
**पर्व**–सं० ग्रहणादिक समय ।
**पर्वत**–सं० पहाड़ ।
**पर्वतिआ** / **पर्वती** } –पर्वत पर रहनिहार वा होएनिहार ।
**पर्बी**–पर्वक खर्च ।
**पल**–सं० कालक मानविशेष १ । आँखिक आवरण २ ।
**पलइ**–बड़का माछक पेट दिशक खण्ड।
**पलखति**–अवकाश ।
**पलगर**–अधिक पल्ला, दूरस्थित ।
**पलङ्ग**–पल्यङ्क ।
**पलटन**–परिवर्त्तन १ । वि० सैन्य २ ।
**पलटब**–क्रि० पूर्वस्थितिक पुनर्लाभ ।
**पलथा**–पद्मासनादि ।
**पलथा मारब**–क्रि० मार्+अब-पद्मासनादि लगाएब ।

**पलपल**–अति कोमल (आम्रादि) ।
**पलपलाएब**–क्रि० पलपल्+अब-अति कोमल होएब ।
**पलबा**–मत्स्यविशेष ।
**पलरा**–तराजूक पृथक् पृथक् उभय अङ्ग ।
**पलाएब**–क्रि० धान्यादिक अधिक पत्रसँ युक्त होएब ।
**पलाओ**–मांसादिसँ रचित कृतान्नविशेष ।
**पलाँकी**–शाकविशेष ।
**पलार**–उच्चप्रदेशसँ प्रवाह ।
**पलार फेँकब**–क्रि० वर्षासँ उपरसँ पानिक प्रवाह ।
**पलास**–पलाश, पुष्पविशेष ।
**पलासपीपरि**–ओषधिविशेष ।
**पलासी**–पलासक बीआ ।
**पलिआ**–धान्यविशेष ।
**पलित**–अपवित्र ।
**पलिताह**–उ० घृणास्पद वा अपवित्र काज कएनिहार । स्त्री० पलिताहि ।
**पलिताही**–स्त्री० ए घृणाष्पद काज कएनिहारि निन्द्य ।
**पलै**–बड़का माछक पेट दिशक खण्ड ।
**पल्था**–आसनबन्ध ।
**पल्था मारब**–क्रि० मार्+अब-आसनबन्ध लगाएब ।
**पल्लव**–सं० पत्र ।
**पल्ला**–दूर १। केबाड़ तराजू आदि युग्मवस्तुक एक अङ्ग २ ।
**पवित्री**–पवित्रतासम्पादक औँठी ।
**पसओना**–जाहिसँ माँड़ पसाओल जाए ।
**पसर**–रात्र्यन्तमे महिसिक प्रसरण समय ।
**पसरब**–क्रि० प्रसरण ।
**पसाएब**–क्रि० पसब्+अब-प्रस्त्रावण, पात्रकेँ झुकाए माँड़ आदिक खसाएब १। मण्डादि खसाए भात आदिकेँ संस्कृत करब २ [प्रथम अर्थमे माँड़ कर्म, दोसरमे भात] ।
**पसार**–प्रसार, विस्तार ।
**पसारी**–नियत रूपेँ परिवारक कार्य कएनिहार व्यवसायी, यथा धोबि, नौआ इत्यादि ।
**पसाहनि**–स्त्रीक कपारमे शोभार्थ चित्ररचना ।
**पसाही**–भूमिस्थ तृणमे परम्परा सम्बन्धक कारण अग्निक प्रसरण ।
**पसीझ**–कण्टकमय शाखायुक्त क्षुपविशेष।
**पसेना**–घाम, स्वेद ।
**पसेरी**–पञ्चसेटकी, मनक अष्टमांश मान ।
**पस्त**–वि० दबल, धसल ।
**पहटब**–क्रि० काष्ठकेँ समतल करबाक हेतु छीलब ।
**पहटा**–माछ मारबाक साधनविशेष ।
**पहथ**–एक लप परिमाण ।
**पहपटि**–दुराग्रह (शिशुक) ।
**पहपटिआ**–दुराग्रही (शिशु) ।
**पहर**–प्रहर, कालक परिमाणविशेष ।
**पहररतिआ**–रातुक चारिम पहरमे उगनिहार (तारा) ।
**पहरा**–पहर-पहरमे रक्षकक सतर्कता, रक्षा ।
**पहरिआ**–पहरूदार ।
**पहल**–स्तम्भादिमे समन्तात अनेक समतलीकृत भाग ।
**पहलमान**–मल्ल ।



**पहलमानी**–मल्लक कार्य ।
**पहलेज**–लताफलविशेष ।
**पहाड़**–पर्वत ।
**पहाड़ी**–पर्वतीय ।
**पहाड़ी मेना**–मेना प्रभेद ।
**पहिआ**–रथचक्र ।
**पहिआएब**–पहि+अब-पाहि लगाएब ।
**पहिगर**–गतायातयोग्य (स्थान)
**पहिने**–अ० प्रथमतः ।
**पहिरना**–परिधानीय ।
**पहिरब**–क्रि० परिधान ।
**पहिल**–प्रथम ।
**पहिल-साँझ**–सन्ध्याक प्रथम भाग ।
**पहिलुक**–प्राथमिक ।
**पहिलुका**–प्रथम प्रकारक ।
**पहिलोठि**–स्त्री० प्रथमप्रसूता (गाए आदि)।
**पही**–माछ मारबाक साधनविशेष ।
**पहु**–स्वामी (गीतमे) ।
**पहुआ**–पक्षिविशेष ।
**पहुँच**–प्राप्ति ।
**पहँचनामा**–प्राप्तिपत्र ।
**पहँचब**–क्रि० प्राप्ति ।
**पहुँचा**–मणिबन्ध १ । मणिबन्धक भूषणविशेष २ ।
**पहुँचाएब**–क्रि० पहुँचब्+अब-प्रापण ।
**पहुँची**–मणिबन्धक भूषणविशेष ।
**पहुनघरा**–अतिथिगृह ।
**पहुना**–शूद्रक जामाता ।
**पहुनाइ**–पाहुन होएब ।
**पहुलाठ**–डाँड़ओ जाँघक सन्धिस्थल ।
**पाइ**–पण, कच्चा, आनाक चतुर्थांश, पैसा।
**पाइट**–हर बहबामे एक बड़दके दोसर बड़दक सङ्ग ।
**पाउजि**–रोमन्थ ।
**पाएब**–क्रि० पब्+अब-प्राप्ति १ । अरक्षित वस्तुक ग्रहण २ ।
**पाएर**–चरण ।
**पाओ**–सेरक चतुर्थांश परिमाण, पाद ।
**पाओज**–रोमन्थ, पाउजि ।
**पाक**–सं० महानस, रान्हब १। भत्ता २ । वि० उद्धत, निर्दोष ३ ।
**पाँक**–पङ्क, थाल ।
**पाकड़ि**–पर्कटी, वृक्षविशेष ।
**पाकब**–क्रि० पक्+अब-शरीरमे अग्निक संयोग होएब १ । पक्व होएब २ ।
**पाँकी**–जलक सङ्ग आबि बैसल श्लक्ष्ण (माटि) ।
**पाखडि**–धान्यविशेष ।
**पाखण्डी**–नास्तिक ।
**पाखा**–पार्श्व ।
**पाँखि**–पक्ष, पक्षीक उड़बाक साधक अङ्ग ।
**पाँखुर**–बाँहिक ओ कान्हक जोड़ ।
**पाग**–उष्णीष, वस्त्ररचित शिरोभूषणविशेष।
**पागब**–क्रि० पग्+अब-चीनीक सिरकासँ युक्त करब ।
**पाच**–सूचीक अग्र वारंवार भोँकि औषधकेँ त्वचाक तर पहुँचाएब ।
**पाँच**–पञ्चसंख्यायुत ।
**पाँचम**–पञ्चम ।
**पाछाँ** / **पाछू** }–पृष्ठदेश १ । अ० पश्चात् २ ।
**पाँज**–वस्तु पकड़बामे वर्त्तुलीकृत बाहु ।

**पाँजर**–पेटक दुहू भाग ।
**पाँजि**–पञ्जी, वंशानुक्रमे पुरुषक नामावली ।
**पार्जी**–वि० बदमास, दुष्ट ।
**पाट**–पट्ट १ । धोबीक दारु २ ।
**पाटब**–क्रि० पट्+अब-पजेबा आदिसँ आच्छादित करब १ । व्याप्त होएब २ ।
**पाटल**–जलादिसँ व्याप्त १ । पजेबासँ आच्छादित समतल छदिसँ युक्त २ ।
**पाटापाटी**–मतभेदप्रयुक्त दू दल होएब ।
**पाटि लागब**–क्रि० लग्+अब-बड़दक शिक्षार्थ प्रारम्भिक हलग्रहण ।
**पाटी**–शिक्षार्थ काष्ठनिर्मित लेखपट १ । केशविन्यासविशेष २ ।
**पाठ**–सं० पढ़ब ।
**पाठक**–सं० उपाधिविशेष १ । पाठ कएनिहार २ ।
**पाठा**–सं० ओषधिविशेष १ । मल्लक शिष्य, पट्ठा २ ।
**पाठी**–बिनु बाहलि छागी ।
**पाँड़रि**–पाटला, वृक्षविशेष ।
**पाड़ा**–उ० महिसिक बच्चा । स्त्री० पाड़ी ।
**पाँड़े**–पाण्डेय, ब्राह्मणक उपाधिविशेष ।
**पाढ़**–डाँड़क भूषणविशेष ।
**पाढ़ि**–विभिन्न वर्णक वस्त्रक अन्तिम अवयव ।
**पात**–पत्र ।
**पातड़ि**–भगवतीक हेतु क्षीरपाकादि १ । खड़िकासँ अनेक पातकेँ जोड़ि बनाओल भोजनक पात २ ।
**पातर**–कृश, सूक्ष्म ।
**पाँतर**–कान्तार, प्रान्तर, निर्जन पैघ भूमि।
**पाता**–निमन्त्रणपत्र ।
**पाति**–स्त्रीक बाहुक अलङ्करणविशेष ।
**पातिल**–भात रन्हबाक योग्य पैघ मृत्पात्र।
**पाँती**–पङ्क्ति ।
**पाँतीजोड़ (र)**–पङ्क्तिबद्ध ।
**पात्र**–सं० कण्टहा, श्राद्धमे पुजओनिहार ब्राह्मण १ । योग्य २ । वस्तु रखबाक आधार ३ ।
**पाथब**–क्रि० पथ्+अब-स्थिर कए राखब [चिपड़ी बनसी वा कान पाथू] ।
**पाथर**–प्रस्तर ।
**पाथेय**–सं० बाटमे खाद्य, बटखर्चा ।
**पादब**–क्रि० पद् + अब - अपान-वायुत्यागशब्द ।
**पान**–पर्ण, नागवल्ली १ । ताम्बूल २ ।
**पानापत्ती**–ओषधिविशेष ।
**पानापोठी**–लताविशेष ।
**पानि**–पानीय, जल ।
**पाप**–सं० अधर्म ।
**पापड़**–कृतान्नविशेष ।
**पापी**–सं० पापयुक्त ।
**पाबनि**–पावनी तिथि, व्रतपूजादिक विशिष्ट तिथि ।
**पाबनितिहार**–पावनिप्रभृति ।
**पाय**–अङ्कक दोष ।
**पायर**–पाएर, चरण ।
**पाया**–धारक अपर तट १ । पर्यायेँ प्रवर्त्तमान क्रियाक हेतु ककरो प्राप्त अवसर २ ।
**पार उतरब**–क्रि० धारक अपर तट जाएब।



**पारना**–पारणा, उपवासोत्तर भोजन ।
**पारब**–क्रि० पार्+अब-कुठारादिक्रिया ।
**पारबारी**–पारावारक क्रिया, तटान्तरगमन ।
**पारा**–पारद, धातुविशेष ।
**पारी**–पर्यायप्राप्ति, पर्यायतः प्राप्त अवसर ।
**पाल**–नौकाक गुणवृक्षक कपड़ा ।
**पालकी**–शिविकाविशेष ।
**पाल खाएब**–क्रि० खा+अब-घोड़ीक बाहब ।
**पालन**–प्रतिपाल ।
**पालब**–क्रि० पाल्+अब-पालन करब ।
**पाला**–हिम, बर्फ ।
**पालिस**–वि० श्लक्ष्ण लेप, दृढ़ लेप-विशेषसँ रङब ।
**पालिस्तर**–वि० सुरखीचून प्रभृतिक दृढ़ लेप ।
**पालो**–हरक अवयव जे बड़दक कान्हपर रहैछ ।
**पास**–कोदारि प्रभृतिक छिद्रयुक्त अङ्ग ।
**पासँग**, **पासङ**–तुलाक असाम्य, दूनू पल्लाक उठओला पर असमानता ।
**पासनि**–खुरपी ।
**पासबान**, **पासमान**–दुसाधक उपाधि ।
**पासा**–देवनाक्ष, चौपड़ि आदि क्रीड़ाक उपकरणविशेष ।
**पासि**–खाट आदिक चारू कातक अङ्ग।
**पासी**–मद्यव्यापारी जातिविशेष ।
**पाहि**–हलादिसँ धएल क्षेत्रभाग १ । मूलक पता, भाँजि २ ।
**पाहि लागब**–क्रि० लग्+अब-हलादिसँ धएल भागक कर्षणादिक समाप्त होएब १ । प्रकरणसमाप्ति २ । चोर आदिक गेल मार्गक चिह्नज्ञान होएब ३ ।
**पाही**, **पाहीपट्टी**–ग्रामान्तरक असामी ।
**पाहुँच**–मणिबन्ध, पहुँचा ।
**पाहुन**–प्राघुण, अतिथि ।
**पाहुन-परक**–प्राघुणादि ।
**पाहुर**–सूगरक बच्चा ।
**पाहुर कीचब**–क्रि० किच्+अब-ठोरपर दाँत बैसाए क्रोधमुद्रा करब ।
**पिअ**–प्रिय (गीतादिमे) ।
**पिअब**–क्रि० पिब्+अब-पान ।
**पिआजु**–पलाण्डु ।
**पिआर**–जलादिपुष्ट ।
**पिआस**–पिपासा ।
**पिआसल**–पिपासित ।
**पिआहुर**–जलपुष्ट धान्यादिवृक्ष ।
**पिउसा**–पुं० पितृष्वसृस्वामी, पिउसिक पति ।
**पिउसि**–स्त्री० पितृष्वसा, पिताक बहिनि।
**पिउसी**–स्त्री० पितृष्वसा (सम्बोधनमे) ।
**पिक**–तमाकू आदिक थूक ।
**पिकदान**, **पिकदानी**–थूत्कारपात्र ।
**पिक्की**–पुक्की, मुखध्वनिविशेष ।
**पिचड़ा**–दबलासँ चिपिटाकार ।
**पिच्चड़ि**–धान्यविशेष ।
**पिच्छड़(र)**–पिच्छिल ।
**पिछड़(र)ब**–क्रि० पिच्छिलताप्रयुक्त पादस्खलन ।
**पिछू**–अ० प्रत्येक ।

**पिजओना**–जाहिपर अस्त्र पिजाओल जाए।
**पिजड़ा** / **पिंजड़ा**–पञ्जर, पालित पक्षीकेँ बद्ध रखबाक वस्तु।
**पिजाएब**–क्रि० पिजब्+अब-अस्त्रक घर्षणसँ तीक्ष्णीकरण।
**पिजुआएब**–ना० पिजु+अब-पीजुसँ युक्त होएब।
**पिटना**–जाहिसँ वारंवार पीटि भूमि सरि कएल जाए।
**पिटुआ**–पीटिकेँ बनाओल (लोहिआ आदि)।
**पिट्ठा**–वृक्षविशेष।
**पिठकट**–मत्स्यादिक पीठ दिशक खण्ड।
**पिठबन**–पृष्ठिपर्णी।
**पिठार**–पिष्टातक, पानि दए पीसल चाउर।
**पिठिआ**–अव्यवहित जनमल (नेना)।
**पिठिआ घाओ**–पीठक व्रणविशेष।
**पिठिआ ठोक**–पाछाँसँ दौड़ब।
**पिड़ही**–पीढ़ी, भोजनकाल बैसबाक काष्ठपीठ।
**पिड़ाएब**–ना० पिड्+अब-पीड़ासँ युक्त होएब।
**पिड़ार**–फलविशेष।
**पिडुकिआ**–कृतान्नविशेष।
**पिढ़िआ**–छोट पिड़ही।
**पिण्ड**–सं० पितृकर्मक हेतु वर्त्तुलीकृत अन्न।
**पिण्डखजूर**–खजूरक एक प्रभेद।
**पिण्डस्याम**–ईषद्गौर।
**पित**–पित्त।
**पितड़ि( रि )आ**–पित्तल-रचित।
**पितपापड़**–पर्पटी।
**पितमरू**–सहनशील, श्रमसह, अक्रोधन।
**पितर**–मृत पिता आदि।
**पितरपच्छ**–पितृपक्ष, आश्विन कृष्णपक्ष।
**पितराइनि**–स्त्री० मृतमाता आदि।
**पिता**–जनक, बाप।
**पिताएब**–क्रि० पित्+अब-क्रोधयुक्त होएब।
**पिताह**–उ० क्रोधस्वभावक। स्त्री० पिताहि।
**पितिआइनि**–स्त्री० पत्तीक स्त्री, पितृव्यपत्नी।
**पितिआक**–अ० पितृव्यसम्बन्धी (धनादि)।
**पितिऔत**–उ० पितृव्यक अपत्य। स्त्री० पितिऔति।
**पितौझिआ**–पुत्रञ्जीव, वृक्षविशेष।
**पित्त**–सं० उदरस्थ प्राण्यङ्गविशेष।
**पित्तड़ि( रि )**–पित्तल, पीतलोह।
**पित्ती**–पु० पितृव्य, बापक भाए।
**पिनकी**–हफीम खएलासँ झुकनी।
**पिपनी**–पक्ष्म, आँखिक झपनाक केश।
**पिपर**–पिप्पल, वृक्षविशेष।
**पिपरपत्ता**–पिप्पलपत्राकार कर्णभूषण।
**पिपरमिण्ट**–वि० क्षुपविशेष।
**पिपरा**–अँन्नविशेष।
**पिपरामूल**–पिप्पलीमूल, ओषधिविशेष।
**पिपरि**–पिप्पली।
**पिपही**–शिशुक वाद्यविशेष १। बीजसंलग्न छोट आमक गाछ २।
**पिरबटनी**–पीरक मध्यमे देबाक काठी।
**पिरी**–प्रिय।



**पिरीति**–प्रीति।
**पिरोजा**–फलविशेष।
**पिरोँछ**–किञ्चिन्मात्र पीतवर्णक।
**पिलपिलाह**–उ० कृश, अपुष्ट (जीव)। स्त्री० पिलपिलाहि।
**पिलही**–प्लीहा, पेटक रोगविशेष।
**पिलिआ**–कुकुरक स्त्री।
**पिलुआ**–पीलु, पिपीलिका।
**पिल्ला**–उ० कुकुर। स्त्री० पिल्ली।
**पिशाच**–सं० देवयोनिविशेष।
**पिसब**–क्रि० पेषण।
**पिसाओन**–पिसबाक वेतन।
**पिसाँच**–पिशाच, देवयोनिविशेष।
**पिसिआ**–स्त्री० पिउसि, बापक बहिनि, पितृष्वसा (संबोधनमात्रमे) १। पेषणकर्म २।
**पिसिआ सासु**–स्त्री० पतिक पिउसि।
**पिसिऔत**–उ० पिउसिक अपत्य। स्त्री० पिसिऔति।
**पिसीमाल**–अत्यन्त पिष्ट।
**पिस्ता**–फलविशेष।
**पिहकारी**–उच्चतर मुखध्वनि।
**पिहना**–कोठीक उपरका झपना।
**पिहानी**–प्रहेलिका।
**पिहुआ**–पक्षिविशेष।
**पीअब**–क्रि० पिब्+अब-पान करब।
**पीअर**–पीत वर्ण।
**पीअर ढुइस**–अत्यन्त पीतवर्ण।
**पीआ**–होलिकाक्रीड़ार्थ पीअर जल।
**पीउब**–क्रि० पिब्+अब-पान करब।
**पीक**–ताम्बूलादियुक्त त्याज्य मुखजल।
**पीचब**–क्रि० पिच्+अब-जोरसँ दाबब।
**पीछू**–प्रत्येक, [घर पीछू एकक रुपैआ बाँट]।
**पीजु**–पूय, व्रणक विकार।
**पीटब**–क्रि० पिट्+अब-ताड़न।
**पीठ**–पृष्ठ।
**पीड़ा**–सं० कष्ट।
**पीड़ित**–सं० कष्टयुक्त।
**पीढ़ी**–बैसबाक काष्टपीठिका १। वंश-परम्परा २।
**पीताम्बरी**–पीत पट्टवस्त्र।
**पीनी**–धूम्रपानसाधक तमाकूक पिण्ड।
**पीपर**–पिप्पल, वृक्षविशेष।
**पीपरि**–पिप्पली, ओषधिविशेष।
**पीर**–सूत कटबाक हेतु सुसज्जित भिँड़िआओल तूर।
**पीरा**–पीतवर्णप्रकारक।
**पीरा बाँस**–वंशविशेष।
**पीरी**–किञ्चित् पीतिमा।
**पीलु**–पिपीलिका।
**पीसब**–क्रि० पिस्+अब-पेषण।
**पीसीमाल**–अत्यन्त पिष्ट।
**पुकार**–वि० सोर करब, आह्वान।
**पुकारब**–वि० क्रि० पुकार्+अब-सोर करब।
**पुक्की**–उच्चैःपूत्कार, 'ऊ' इत्यादि उच्चतम ध्वनि।
**पुक्की पारब**–क्रि० पार्+अब-जोरसँ 'ऊ' इत्यादि ध्वनि करब।
**पुक्ख**–पुष्य (नक्षत्र)।
**पुच्छ**–सं० लाङ्गूल।
**पुच्छड़( र )**–पाछाँ पुच्छजेकाँ लागल।
**पुछब**–क्रि० प्रश्न करब।

**पुछारी**–प्रश्नपूर्वक अन्वेषण ।
**पुजाएब**–क्रि० पुजब्+अब-पूजा कराएब ।
**पुजैगिरी**–पूजाकर्त्ता ।
**पुटपुड़** / **पुटपुड़ी**–आँखि ओ कानक मध्यभाग।
**पुड़हर**–पुर:स्थाप्य घट (विवाहादि माङ्गलिक विधिमे) ।
**पुड़िआ**–औषधादिक छोट कागजसँ बनाओल पुटक ।
**पुतखौकी**–स्त्री० पुत्रजग्धी, अपन बेटाकेँ खएनिहारि (गारि) ।
**पुतरी**–पुत्तलिका, शालभञ्जिका, बाल-क्रीड़ार्थ छोट मनुष्यक मूर्त्ति १ । आँखिक डिम्भा, कनीनिका २ ।
**पुतली**–कनीनिका, कृष्णतारक ।
**पुतहु**–स्त्री० पुत्रवधू ।
**पुत्ती**–मीड़ल मडुआ आदिक तुष ।
**पुदीना**–शाकविशेष ।
**पुन**–अ० पुन:, फेर ।
**पुनगा** / **पुनगी**–वृक्षमे ठारि चलबाक अङ्कुर ।
**पुन्याह**–प्रजासँ कर ओसूल आरम्भ करबाक पुण्यदिन ।
**पुबरिआ**–पूबमे स्थित ।
**पुबाहुत**–समीप पूर्वस्थित ।
**पुरओना**–पूर्त्तिकारक ।
**पुरजी**–तात्कालिककार्यवाही पत्रविशेष ।
**पुरजी काटब**–क्रि० कट्+अब-पुरजी लिखब ।
**पुरना**–प्राचीन, पुरातनप्रभेदक ।
**पुरब**–क्रि० पूरण ।
**पुरबा**–पूर्व देशसँ अबैत (बसात) ।
**पुरबासाहि**–मुखोत्तर, परोक्त कथाक मुखत: परिबोधन ।
**पुरबी**–रागिनीविशेष ।
**पुरश्चरण**–सं० अनुष्ठान ।
**पुरश्चरणिआ**–पुरश्चरणमे नियुक्त ।
**पुरहर**–माङ्गलिक पुर:स्थाप्य घट ।
**पुरहरी**–भूषणविशेष ।
**पुराएब**–क्रि० पुरब्+अब-पूर्ण करब ।
**पुरान**–प्राचीन, जीर्ण ।
**पुरानए**–पुनर्नवा ।
**पुरिबा**–पूर्वदेशागत (वायु) ।
**पुरुखा**–पूर्वज पुरुष ।
**पुरुखाह**–पौरुषशाली ।
**पुरैनि**–कमलवृक्ष ।
**पुरैनिक दह**–समूलनाल कमल ।
**पुरोहित**–सं० देवपित्रादिकर्म करओनिहार।
**पुरोहिती**–पौरोहित्य, पुरोहितक कार्य ।
**पुरोत** / **पुरौत**–पूर्ण होएबाक निमित्तेँ देल (अन्नादि) ।
**पुर्निमा**–पूर्णिमा, पौर्णमासी ।
**पुर्री**–पुक्की ।
**पुसोठ**–नेनाक प्रथम पूसमे कर्त्तव्य एक विधि ।
**पुस्ति**–वि० निचला पुरुष (वंशपरम्परामे)।
**पुहबी**–धान्यविशेष ।
**पू'** / **पूअ** / **पूआ**–अपूप, पक्वान्नविशेष ।
**पूछ**–पुच्छ १ । प्रश्न २ ।
**पूछब**–क्रि० पुछ्+अब-प्रश्न करब ।
**पूजा**–सं० पूजन ।
**पूजाघर**–पूजा हेतुक घर ।



**पूजापाठ**–पूजाप्रभृति नित्यक्रिया ।
**पूजी** / **पूँजी**–मूलधन ।
**पूठ**–मालक लाङ्गूलारम्भस्थलक उभय पार्श्व ।
**पूड़ा**–पत्रादिरचित पुटक ।
**पूड़ी**–धातुरचित पुटक ।
**पूत**–पुत्र ।
**पूब**–पूर्वदेश ।
**पूबा**–पूर्वदेशभव अनादरणीय व्यक्ति ।
**पूबाढाढ़**–पूर्वप्लव, क्रमश: पूब-पूब भागेँ नीच ।
**पूभर**–पूर्वदेश ।
**पूर**–पूर्ण ।
**पूरब**–क्रि० पुर्+अब-पूर्ण करब ।
**पूरा** / **पूर्ण**–पर्याप्त ।
**पूर्णकलस**–सं० जलपूर्ण घट ।
**पूर्णिमा**–सं० शुक्लपक्षक अन्तिम तिथि।
**पूल**–सेतु ।
**पूस**–पौष (मास) ।
**पृथिवी**–सं० धरती ।
**पेआली**–नपबाक चोँगा ।
**पेखब**–क्रि० प्रेक्षण ।
**पेँच**–घुमाए-घुमाए पैसएबाक शङ्कु ।
**पेँचकस**–पेँच कसबाक यन्त्र ।
**पेँचिल**–प्रपञ्चद्वारा स्वकार्यसाधन पटु ।
**पेँची**–कन्दविशेष ।
**पेँचुल** / **पेँचू**–प्रपञ्चद्वारा स्वकार्यसाधनपटु ।
**पेट**–उदर ।
**पेटकान्ह लाधब**–क्रि० लध्+अब-आहार त्यागिकेँ पड़ब ।
**पेटकुनिआ**–पेटक भरेँ अवस्थिति ।
**पेटगर**–पैघ पेटबाला, अधिक खएनिहार।
**पेटपोसा**–पेट पोसनिहार, उदर-भरण परायण अनादरणीय ।
**पेटपोसू**–उदरभरणपरायण ।
**पेटफुल्ली**–वायुसँ पेटक फुलब ।
**पेटबद्धी**–भूषणविशेष ।
**पेटबाहि**–अतिसार ।
**पेटार**–जलीय तृणविशेष १। मञ्जूषा २ ।
**पेटारा**–मध्यवर्तिदीपप्रकाशसँ आकाशमे उड़बाक कागजक बनाओल पुरुषादिमूर्त्ति ।
**पेटारी**–छोट मञ्जूषा ।
**पेटाह**–अधिक खएनिहार, भोजनलोलुप ।
**पेटी**–लौहादिरचित मञ्जूषा ।
**पेटू**–पेटाह, खएबापर अधिक ध्यान रखनिहार ।
**पेंड़**–गाछ ।
**पेड़ा**–मिष्टान्नविशेष १ । एकबट्टी २ ।
**पेण**–गाछ ।
**पेणा**–पेँड़ा, मिष्टान्नविशेष ।
**पेंतालीस**–पञ्चचत्वारिंशत् ।
**पेन**–बासन आदिक तरका भाग ।
**पेना**–हर जोतबाक ठेङा ।
**पेनाठ**–यष्ट्यादिक निचला स्थूलभाग ।
**पेनिआएब**–क्रि० पेनी+अब-पाछाँ-पाछाँ लागब ।
**पेँप** / **पेँसी**–स्थूल अङ्कुर ।
**पेमाल**–पिसीमाल, परिश्रान्त ।
**पेरब**–क्रि० उत्पीड़न ।
**पेसतोल**–वि० अस्त्रविशेष, अतिहस्व भुशुण्डी ।

**पेसब**–क्रि० पैसाएब ।
**पेस्तर**–वि० पूर्व, पहिने ।
**पैघ**–दीर्घ, महान् ।
**पैघत्व**–महत्त्व ।
**पैँच**–बिना सूदिक ऋण ।
**पैँचब**–क्रि० शूर्पक्रियाविशेष ।
**पैँचहार**–पैँच लेनिहार ।
**पैँचाड़**–पैंच लेबदेबक व्यवहार ।
**पैड़ी**–पैरी, स्त्रीचरणक भूषणविशेष ।
**पैता**–पवित्र, लगाओल कुशविशेष ।
**पैत्रिक**–पितृवासभूमि ।
**पैनि**–करीनक पट ।
**पैरबी**–वि० कार्यसिद्धिमे नाना प्रकारेँ सहायता पहुँचाएब ।
**पैली**–चोँगा आदि नपना ।
**पैसब**–क्रि० प्रवेश ।
**पैसा**–कच्चा, ढेउआ ।
**पैसाएब**–क्रि० पैसब्+अब-प्रविष्ट करब ।
**पोआ**–सापक बच्चा ।
**पोआर**–पलाल ।
**पोखराज**–मणिविशेष ।
**पोखरि**–पुष्करिणी ।
**पोखरिझाँखरि**–पोखरिप्रभृति भयस्थान ।
**पोखरिआ**–पोखरिमे उपजाओल (बीजवृक्ष)।
**पोचारा**–ढौर, भित्तिक उपलेपन ।
**पोछब**–क्रि० प्रोञ्छन, प्रक्षालन ।
**पोटरी**–पोट्टली ।
**पोटा**–नासाकफ ।
**पोठी**–प्रोष्ठी, मत्स्यविशेष ।
**पोत**–माल, भूमिकर १ । लेप २ ।
**पोतब**–क्रि० लेपब ।

**पोतभरिआ**–राजकरक भारबाहक ।
**पोथा**–बहुत पैघ पुस्तक ।
**पोथी**–पुस्तक ।
**पोथीपतड़ा**–पोथींपतड़ाप्रभृति ।
**पोन**–नितम्ब ।
**पोनखस**–अल्पनितम्बक ।
**पोनचटक**–पोनमे मारब ।
**पोनचटक देब**–क्रि० पोनमे मारब ।
**पोँपाँ**–वाद्यशब्दक अनुकरण ।
**पोर**–वँशादिक ओ अङ्गुरीक पर्व ।
**पोरगर**–दूर-दूर पोरबाला ।
**पोरो**–शाकविशेष ।
**पोल**–वि० रहस्य ।
**पोलखाह**–यत्किञ्चित् भागमे निम्न (लकड़ी आदि) ।
**पोला**–परिमाणविशेषसँ युक्त सूत, पूल सं० ।
**पोलाओ**–कृतान्नविशेष ।
**पोस**–पोषण ।
**पोसपूत** } –कृत्रिमपुत्र ।
**पोसपुत्र** }
**पोसब**–क्रि० पोषण ।
**पोसा**–पोसल (कुकुर आदि) ।
**पोसाओन**–पोसबाक वेतन ।
**पोसिआ**–पोसबाक हेतु देल (माल) ।
**पोसिआ लगाएब**–क्रि० लगब्+अब- पोसबाक हेतु देब ।
**पोस्ता**–क्षुपविशेष ।
**पोस्तादाना**–पोस्ताक अन्न ।
**पौआ**–कुड़प, सेर आदिक चतुर्थांश मान १ । खाटक स्तम्भ २ ।
**पौआही**–एक पौआ परिमाणक नपना ।



**पौँछ**–केराक छोट गाछ ।
**पौती**–वंशरचित मञ्जूषाविशेष ।
**पौत्र**–उ० सं० पुत्रक अपत्य । स्त्री० पौत्री ।
**पौथान**–पादस्थान, सुतबामे पाएर जेमहर रहए से स्थान ।
**पौर**–पौरब ।
**पौरब**–क्रि० दहीक हेतु पात्रमे दुग्धप्रक्षेप।
**प्रकाश**–सं० प्रकट, आलोक ।
**प्रकार**–सं० प्रभेद, रीति ।
**प्रकोप**–सं० उपद्रव, अधिक क्रोध ।
**प्रचण्ड**–स० उद्धत, तीव्र ।
**प्रण**–प्रतिज्ञा ।
**प्रणाम**–सं० नति ।
**प्रणामी**–प्रणाममे देल (द्रव्य) ।
**प्रति**–एकादशाहमे काम्य उत्सृष्ट वस्तु १ । अ० सं० प्रसङ्ग २ ।
**प्रतिपाल**–सं० भरणपोषण, रक्षा ।
**प्रतीत**–सं० ज्ञात ।
**प्रधान**–सं० प्रमुख ।
**प्रपञ्च**–सं० प्रच्छन्न क्रियाजाल ।
**प्रपञ्ची**–सं० अच्छन्न अधिक क्रिया कएनिहार ।
**प्रभाच्छए**–प्रभाक्षय, अप्रतिभत्व ।
**प्रमाद**–सं० अनवधानता १ । उचितो क्रिया भयसँ नहि करब २ ।
**प्रसक्ति**–सामर्थ्य ।
**प्रसाद**–सं० प्रसन्नता १ । नैवेद्य २ ।
**प्रहेज**–परहेज, निवृत्ति, निरोध ।
**प्राचीन**–सं० पुरातन ।
**प्राण**–सं० जीवनवायु ।
**प्रात**–प्रभात ।

**प्रातःकाल**–सं० प्रभात समय ।
**प्रान**–प्राण ।
**प्रिय**–सं० प्रेमास्पद, मनोऽनुकूल ।
**प्रियगर**–अधिक प्रेमास्पद ।
**प्रीति**–सं० प्रेम, अनुराग ।
**प्रेत**–सं० परेत, भूतयोनिविशेष ।
**प्रेम**–सं० प्रीति ।
**प्रेमी**–सं० प्रिय, प्रेमपात्र ।
**प्यादा**–वि० पदाति १ । सतरञ्जक एक गोटी २ ।
**प्याद-प्यादान**–वि० सतरञ्जमे दू प्यादाक सहेँ मातु ।
**प्यादसह**–सतरञ्जमे बादशाहकेँ प्यादाक साम्मुख्य ।
**प्याली**–पेआला, नपनाक प्रभेद ।
**प्यूसा**–पुँ० पितृष्वसृपति, पिताक बहिनिक पति ।
**प्यूसि**–स्त्री० पितृष्वसा, पिताक बहिनि ।

## फ

**फइल**–विस्तृत असंकीर्ण (स्थान) ।
**फकचोद**–असंगत विवाद ।
**फकफक करब**–देहमे हृदयवायुमात्रक सञ्चालन ।
**फकफकी**–देहमे हृदयवायुमात्रक चलन ।
**फक्का**–फाँका ।
**फटकदलाली**–अनुचित नफा उठएबाक हेतु प्रौढ़ मिथ्याभाषण ।
**फटकफन्द**–प्रच्छन्न रूपेँ उपस्थापित बाधा ।
**फकड़ा**–पिहानीतुल्य बालविनोदार्थ प्रचलित अतात्पर्यक वाक्य ।
**फकसिआर**–जन्तुविशेष ।

**फकसिआरी काटब**–क्रि० फकसिआर जन्तु जेकाँ दीन शब्द बाजब । देहक अक्षमतामे परिचारकहीन व्यक्ति दीन शब्द बजैत अछि "अओ, केओ पानि दिअ ऐन्हि ।" इत्यादि ।

**फकारि**–कखनहु-कखनहु मेघक टुकड़ासँ वृष्टि ।

**फकिरना**–फकीरकेँ देल जागीर ।

**फकीर**–वि० उ० बैरागी, परलोकसाधक विशेष । स्त्री० फकिरनी ।

**फक्कच**–उ० व्यवस्थाशून्य अधिक बजनिहार । स्त्री० फक्कचि ।

**फक्कर**–अकिञ्चन ।

**फक्की**–फागु, फागुनक अन्तिम समय ।

**फगुनहट ( टि )**–फागुन तथा तत्समीप समय ।

**फचफच बाजब**–क्रि० असङ्गत अधिक बाजब ।

**फचारि**–फचफच बजनिहार ।

**फजहति**–वि० गञ्जन ।

**फजूल**–वि० व्यर्थ ।

**फझति**–वि० भर्त्सन ।

**फटक**–आलयवेष्टनभित्तिक कपाट, फाटक ।

**फटकब**–क्रि० सूपसँ संशोधन ।

**फटकाओन**–फटकबसँ त्याजित १ । फटकबाक वेतन २ ।

**फटकार**–आडम्बर ।

**फटकारब**–क्रि० फटकार्+अब-तुच्छ बुद्ध्या वाचा निराकरण ।

**फट दए**–अ० शीघ्रतया ।

**फटफट करब**–क्रि० असमीचीन निर्धोख बहुभाषण ।

**फटफटार**–वेष-भूषादिसँ सुसज्जित (निन्दामे) ।

**फटाक दए**–अ० शीघ्रतया ।

**फटिक**–स्फटिक ।

**फटोन**–फाटल दुग्धविकार १ । फाटल सन २ ।

**फट्ठा**–बाँसक फाड़ल अधबाड़, बीचसँ फाड़ल खण्ड ।

**फट्ठी**–छोट फट्ठा ।

**फड़कब**–क्रि० प्रस्फुरण १ । लेन-देन मे शेष २ ।

**फड़की**–कपाटस्थानीय वंशनिर्मित द्वारावरण ।

**फड़गोड़**–विशेष चलनिहार ।

**फड़ब**–क्रि० गाछ फलयुक्त होएब १ । कीटक उत्पत्ति २ ।

**फड़बन्दी**–परिकर, बद्धकक्षता ।

**फड़भी**–फरभी, भूजल यव, धाना सं० ।

**फड़हर**–परस्पर असंलग्न (भात) ।

**फड़हरी**–सिकस्ती, रुपैआक अभाव ।

**फड़ुआ**–फाड़िकेँ बनाओल (तौनी प्रभृति) ।

**फतिङ्गा** / **फतिङ्गी** } –शलभ ।

**फनकी**–छोट फँसरी ।

**फनगर**–अधिक फानक (सूति, पाति प्रभृति) ।

**फनफनाएब**–क्रि० फेनयुक्त होएब ।

**फनफनी**–तैलादिमे फेनोद्गम ।

**फनिगा** / **फनिगी** } –शलभ ।



**फनैत**–अधिक चलब बाजबबाला (निन्दामे) ।

**फन्ना ( न्नी )**–फनकी ।

**फफनाएब**–क्रि० फफन्+अब-बाँतर वस्तु खएलासँ घाओक वृद्धि ।

**फबब**–क्रि० नैपुण्यसँ क्रिया सफल होएब ।

**फर**–फल (आम्रादि) १ । आरु २ ।

**फरक**–अन्तर, विभेद ।

**फरकझरा** / **फरकझार** } –विरल (धान्य वृक्षादि)

**फरकब**–क्रि० फड़कब, प्रस्फुरण ।

**फरकी**–फड़की, वंशरचित द्वारावरण ।

**फरकोस**–प्रौढ़ (चलबा-फिरबामे) ।

**फरजी**–सतरञ्जमे बादसाहक प्रधान पात्र १ । वि० अनका नामेँ उल्लिखित भूमि २ ।

**फरता**–फरसार, फरनिहार (आम्रवृक्षादि)।

**फरफराएब**–क्रि० फरफर्+अब-फरफर शब्द करब, जालादिबद्ध खगादिक पक्षधूनन शब्द ।

**फरफैसी**–मिथ्या दोषारोपण ।

**फरब**–क्रि० फड़ब, उद्गतफलयुक्त होएब ।

**फरभी**–फड़भी, भृष्टयव, धाना सं० ।

**फरमा**–वि० फार्म १ । साँच, डाँचा २ ।

**फरमाइस**–वि० मनोऽनुकूल वस्तुनिर्माणक आज्ञा ।

**फरमाएब**–वि० क्रि० आज्ञा देब ।

**फरमान**–वि० राजाज्ञा ।

**फरस**–वि० राजासनक तर विस्तीर्ण सुन्दर आस्तरण ।

**फरसा**–अस्त्रविशेष ।

**फरसार**–जे गाछ फड़ैत हो ।

**फरहर**–फड़हर, असंपृक्त (भात) ।

**फराक**–पृथक्, पृथग्भूत ।

**फराकित**–फएल, भूमिक असङ्कीर्णता ।

**फराठी**–मोट ठेँगा ।

**फरि**–गाड़ीक भारसह वंशद्वय ।

**फरिआएब**–क्रि० फरि+अब-विवाद टूटब [फरिआइत अछि] १ । फरिअब+अब-विवाद तोड़ब [फरिअबैत अछि] २ ।

**फरिछ**–निर्मल, प्रकाश ।

**फरिछोट**–फरिआएब ।

**फरी**–पैघ माछ ।

**फरीछ**–निर्मल, प्रकाश ।

**फरुसा**–अस्त्रविशेष ।

**फरुहा**–आरु आदि लत्तीक फड़ ।

**फरुहात**–वि० अप्रसाङ्गिक, बाइली ।

**फरेब**–वि० विवादमे मिथ्या व्यवहार ।

**फर्द**–वि० प्रत्येक पत्र ।

**फर्दबाल**–वि० घोड़ाक तीव्रगति ।

**फर्रास**–वि० तम्बू-कनात लगओनिहार म्लेच्छविशेष ।

**फर्रोस**–वि० स्फूर्तिशील (चलबफीरबमे)।

**फल**–सं० प्रयोजन १ । आम्रादि २ ।

**फलकब**–क्रि० विकसन ।

**फलकर**–आम्रादि फलक कर (देय) ।

**फलका**–बगड़ासन आरण्यक पक्षी ।

**फलगू**–अङ्गाच्छादक झालरि लागल कनझप्पा टोपी ।

**फलना**–अमुक ।

**फलना-चिलना**–अमुकप्रभृति ।

**फल-फलहरी**–फलकन्दमूलादि ।

**फलहारी**–फलमात्र खएनिहार १। अन्नभिन्न फलाहारोपयुक्त खाद्यबस्तु २ ।

**फलानेन**–वस्त्रविशेष ।

**फँसब**–क्रि० फाँस, पाँक आदिमे बद्ध होएब ।

**फसरी**–फाँस, पाश, बन्धकसूत्र ।

**फसाद**–वि० उपद्रव ।

**फँसिआरा**–फाँसी लटकओनिहार (चाण्डाल) ।

**फसील**–वि० उपजा ।

**फहराएब**–क्रि० पताकाक उद्धूनन ।

**फाँक**–अर्धखण्ड (गूआ प्रभृतिक) ।

**फाँकब**–क्रि० फँक्+अब-अनार्द्र लाबा प्रभृति मुहमे दए खाएब ।

**फाँकी**–फक्किका, क्लिष्टार्थक संक्षिप्त लेख १। भोतिअओनाइ, धोखा देब २ ।

**फाँका**–फक्का, चुरूमे गृहीत फाँकिकेँ खाद्य लाबा प्रभृति ।

**फागु**–फागुनमे गेय गीत ।

**फागुन**–फाल्गुन (मास) ।

**फाजिल**–वि० परिमितसँ अधिक १ । कार्यवाहीसँ भिन्न २ ।

**फाट**–विदरण ।

**फाँट**–अंश ।

**फाटक**–सैरदिबालक कपाटयुत द्वार ।

**फाटचीट**–विदरणादि ।

**फाटब**–क्रि० फट्+अब-विदरण ।

**फाँटब**–क्रि० फँट्+अब-विभक्त करब ।

**फाटब-चीटब**–क्रि० विदरणादि ।

**फाँटि**–लक्ष्यता ।

**फाँटि चढ़ब**–क्रि० लक्ष्य होएब ।

**फाँड़**–पुरुषक पहिरल वस्त्रक ठेहुन लगक प्रान्त (किन्तु स्त्रीक खोँछि) ।

**फाड़ब**–क्रि० फाड्+अंब-फाँड़ा बाला नेबो आदिक विदारण ।

**फाँड़ा** / **फाणा** } –नेबो आदिक भीतर त्वचासँ युक्त अनेक अवयव ।

**फान**–उल्लङ्घन १ । बाहुआदिक स्थूलताक मान २ ।

**फानब**–क्रि० फन्+अब-उल्लङ्घन ।

**फानी**–पक्षी आदि बझएबाक छोट फाँस।

**फाँफ**–अधिक असत्य कथा बजनिहार, अव्यवस्थित ।

**फाँफड़(र)**–फाँड़ ।

**फार**–फाल, हलाङ्ग ।

**फारक**–करक बेमाक रसीद ।

**फाँस**–पाश ।

**फाँसब**–क्रि० फँस्+अब-फाँसमे बद्ध होएब ।

**फाँसी**–मनुष्यकेँ मारबाक पाश ।

**फाहा**–लेखाद्यर्थ अग्रमे तूलादियुत पातर काठी ।

**फिचकारी**–पित्तलादिधातुकृत जलप्रक्षेप-यन्त्र, फुचुक्का ।

**फिटकिरी**–स्फटिका, उपरसविशेष ।

**फिरता**–आपस १ । मार्गक घुमान २ ।

**फिरती**–अ० आपस अएबाक समयमे ।

**फिरब**–क्रि० प्रतिनिवृत्ति ।

**फिरिस्ति**–वि० सूची, वस्तुनामावलीलेख।

**फिरोजा**–रत्नविशेष ।

**फिलङ्ग**–सतरञ्जक एक प्रकारक खेड़ि ।

**फिलफिलान**–संतरञ्जमे दू फिलक सहसँ (मातु) ।

**फिसकरन**–उत्साह दए हँटि गेनिहार (निन्दामे) ।



**फिहरिस्ति**–वि० फिरिस्ति, वस्तुनामा-वलीलेख ।

**फीता**–एक-दू आँगुर चाकर बन्धनाद्यु-पयोगी सूत्रनिर्मित लम्ब वस्तु-विशेष।

**फीरब**–क्रि० फिर्+अब-प्रत्यावर्तन ।

**फील**–वि० हाथी ।

**फुकब**–क्रि० फूत्करण ।

**फुचकुचाह**–उ० छोटो विषयपर क्रोध कए बाजि उठनिहार ।

**फुचुक्का**–वंशनिर्मित फिचकारी ।

**फुच्च**–क्रोधसँ रूसल ।

**फुच्ची**–दूध नपबाक बहुत छोट पात्र ।

**फुजब**–क्रि० बन्धनमुक्त होएब ।

**फुटकर**–पृथगवस्थित ।

**फुटकुटिआ**–अल्प पूजीक (दोकान) ।

**फुटब**–क्रि० भग्न होएब १ । पृथक् होएब २ ।

**फुटार**–क्वचित् दोसरो रङ्गसँ युक्त (छागर पाठी) ।

**फुटाह**–किञ्चित् पृथक् स्थित ।

**फुटिआ**–शाकविशेष ।

**फुट्टा**–फूटल, भग्न (बरतन आदि) ।

**फुदना**–अलङ्करणमे लटकल विन्यस्त सूत्रपुञ्ज ।

**फुद्दी**–अति छोट पक्षिविशेष ।

**फुनगी**–वृक्षक सर्वोच्च अग्रभाग ।

**फुनगुनी**–उद्गत अति सूक्ष्म अग्निकण ।

**फुनगुनी उठब**–क्रि० डाह, हृदय मे अप्रिय लागब ।

**फुफकार**–सापक फूत्कार ।

**फुफकार काटब**–क्रि० वारंवार सर्पक फूत्करण ।

**फुफकारब**–क्रि० फुफकार्+अब-मुहुः सर्पफूत्कार ।

**फुफड़ब**–क्रि० दही प्रभृति उपरमे विकारयुक्त होएब ।

**फुफड़ो**–दही आदिमे कालक आधिक्य जन्य उपरका विकार ।

**फुफड़ी पड़ब**–क्रि० फुफड़ीक संप्राप्ति ।

**फुफुआर**–फुफकार ।

**फुफुआर काटब**–क्रि० वारंवार सर्पक फूत्करण ।

**फुफुकार**–सर्पक फूत्कार ।

**फुफुकार काटब**–क्रि० वारंवार सर्पक फूत्कार ।

**फुफुस**–फुप्फुस, उदरस्थ वायु निःसरणयन्त्र ।

**फुरब**–क्रि० स्फूर्ति, वाक्प्रतिभा ।

**फुरसति**–वि० अवकाश, छुट्टी ।

**फुर्ती**–शीघ्रता १ । शीघ्रकारिता २ ।

**फुलकी**–फूलल (सोहारी) १ । काश-पुष्प २ ।

**फुलकोबी**–कोबीक प्रभेद ।

**फुलगर**–अधिक फूलबाला ।

**फुलचठैल**–नहि फड़निहार चठैल ।

**फुलझरी** / **फुलझार** } –कृत्रिम पुष्पवृक्षादि ।

**फुलडाली**–फूल रखबाक डाली ।

**फुलतोड़ा**–फूल तोड़बाक हेतु डाली ।

**फुलतोड़ी**–पुष्पक तोड़ब ।

**फुलफुलाह**–उ० फूलल-सन ।

**फुलब**–क्रि० ऊच्छूनताप्राप्ति ।

**फुलबन** / **फुलबाड़ी** } –पुष्पोपवन ।

**फुलबाँस**–वंशाकार वृक्षविशेष ।
**फुलहत्था**–यष्टिविशेष, खराजल तथा रँगल यष्टि ।
**फुलहा** / **फुलही** –फूल (उत्तम काँस) सँ निर्मित (थारी बाटी) ।
**फुलाएब**–क्रि० फुल्+अब-पुष्पित होएब।
**फुलेल**–सुगन्धित तेल ।
**फुलौकी**–भारमे उपयुक्त चँगेराक प्रभेद ।
**फुल्ला**–नेत्ररोगविशेष ।
**फुल्ली**–कल्ली, कलिका ।
**फुसराहटि**–परश्रवणागोचर परस्पर संलाप।
**फुसिआएब**–ना० फुसिअब्+अब-फूसि कहि विश्वस्त करब ।
**फुसिआह**–उ० मिथ्याभाषण स्वभावक ।
**फुसुर-फुसुर**–अ० अत्यन्त मन्द-मन्द (बाजब) ।
**फुहराम**–कार्यदक्ष लघु शरीरक (मनुष्यादि) ।
**फुहाड़ा** / **फुहारा** –यन्त्रद्वारा विकीर्यमाण जलकण ।
**फूक**–फूत्करण ।
**फूकब**–क्रि० फुक्+अब-फूत्करण ।
**फूजब**–क्रि० फुज्+अब-बन्धनमुक्त होएब ।
**फूरब**–क्रि० फुर्+अब-बजबामे शीघ्र युक्तिक स्फूर्ति ।
**फूर्ति**–शीघ्रकारिता १ । मत-समर्थन मे युक्तिक शीघ्र अनुसन्धान २ ।
**फूल**–पुष्प ।
**फूलब**–क्रि० फुल्+अब-उच्छूनताप्राप्ति।
**फूला**–फुल्ला, नेत्ररोगविशेष ।
**फूसि**–मिथ्या ।
**फूसि-फाँसि**–मिथ्या तथा अनुपादेय ।
**फूह**–फूही, जलकण ।
**फूह-फाह**–किञ्चिन्मात्र जलवृष्टि ।
**फूहर**–उ० पूर्वपर ध्यान नहि रखनिहार, स्वेच्छाचारी (निन्दामे) । स्त्री० फूहरि ।
**फूही**–आकाशपतित जलकण ।
**फेकब** / **फेँकब** –क्रि० प्रक्षेप ।
**फेँट**–मिश्रण ।
**फेँटब**–क्रि० मिश्रण ।
**फेँटा**–पाग ।
**फेन**–सं० ।
**फेनब**–क्रि० सार्द्र सूक्ष्म वस्तुक घुमाए-घुमाए हाथसँ आमर्दन ।
**फेना**–मिष्टान्न-विशेष ।
**फेनाएब**–ना० फेनसँ युक्त होएब ।
**फेफस**–हड्डीलगक बिना शोणितक मांस।
**फेर**–अ० पुनः १ । घुमान २ ।
**फेरब**–क्रि० आपस करब १। उनट-पुनट करब २ घोड़ाक एमहर-ओमहर चलाएब ३ ।
**फेरि**–अ० फेर, पुनः ।
**फेरी**–उनटपुनट ।
**फेहम**–बुझनिहार ।
**फैल्**–असंकीर्ण, विस्तृत (भूमि) ।
**फैलहारी**–(भूमिक) असकीर्णता, पर्याप्तता ।
**फोँक**–अन्तःशून्य (यष्टिप्रभृति) ।
**फोकचा**–मत्स्यविशेष १। माछक अवयवविशेष २ ।
**फोकराइनि** / **फोकरानि** –दूधक दोषसँ उत्पन्न दही-दूधक गन्धविशेष ।



**फोका** / **फोंका** –बुदबुद १ । विस्फोटक २ ।
**फोटार**–टिप्पा ।
**फोटो**–वि० यन्त्रद्वारा रचित स्फुट चित्र ।
**फोड़न**–छौंकबाक मसाला ।
**फोड़ब**–क्रि० स्फोटन, भञ्जन ।
**फोंड़ा** / **फोणा** –व्रणविशेष ।
**फोंफ काटब** / **फोंफिआएब** –फों फों शब्द करब, सशब्द श्वासप्रश्वास (निद्रामे)
**फोफी**–व्यजन आदिक डण्टीमे पैसल घुमएबाक छुच्छी ।
**फोलब**–क्रि० खोलब, उद्घाटन १ । बन्धनमोचन २ ।
**फोंसरी**–देहमे उत्पन्न मडुआसन शोणित-विकार ।
**फौदार**–वि० सिपाहीक सरदार ।
**फौदारी**–वि० परकृत उपद्रवक नालिस ।

## ब

**बइआह**–खएलापर वायुप्रकोपकारी १ । वातरोगी २ ।
**बएर**–बदर ।
**बएस**–वयस ।
**बएसगर** / **बएसाहु** –अधिक बएसबाला
**बओना**–छदिस्थापनाद्यर्थ भित्तियष्टि १ । अनादरणीय वामन २ ।
**बक**–सं० पक्षिविशेष ।
**बकछुछरू**–बालक्रीड़ाविशेष ।
**बकछुल लागब** / **बकछुहुल लागब** –क्रि० उत्कट लागब ।
**बकझोँझोँ**–नेनाकेँ पृष्ठपर लेब ।
**बकटेट**–बूड़ि ।
**बकटेँटाह**–उ० अण्ट-बण्ट बजनिहार बूड़ि ।
**बकतब**–क्रि० लागल भूतक व्यक्त वचन।
**बकतूति**–वृथा बकबाद ।
**बकधेआन लगाएब**–क्रि० बकवत् ध्यान करब ।
**बकब**–क्रि० अण्ट-बण्ट बाजब ।
**बकबक करब** / **बकबक बाजब** –क्रि० अप्रस्तुत बहुभाषण ।
**बकबाद**–निःसार विवाद ।
**बकरिहारा**–पुं० बकरीक व्यवसायी जाति, बकरीक चरबाइ ।
**बकरी**–अजा १ । तृणविशेष २ ।
**बकलेल**–बूड़ि, मूढ़ ।
**बकस**–वि० मञ्जूषाविशेष ।
**बकसब**–क्रि० अभयदान देब ।
**बकसीस**–वि० इनाम ।
**बकहुल**–सं० पुष्पविशेष ।
**बकाइनि**–ओषधिविशेष ।
**बकाची**–मत्स्यविशेष ।
**बकार**–बोल ।
**बकार फुटब**–क्रि० बोल स्फुट होएब।
**बकिअओता** / **बकिओता** –अवशिष्ट आदेय ।
**बकुची**–ओषधिविशेष १ । मत्स्यविशेष, बकाची २ ।
**बकुच्चा** / **बकुच्ची** –पीठ पर बान्हि लादल वस्तु ।
**बकुटब**–ना० बाकुटसँ पकड़ब ।
**बकुल**–सं० भालसरी ।

**बकेन**
**बकेनि** –स्त्री० वष्कयणी, चिरप्रसूता दुग्धदात्री (गाए–महिसिप्रभृति)।

**बक्क**–बक ।

**बक्कर**–वर्कर ।

**बक्खो**–उ० जातिविशेष । स्त्री० बखोनी।

**बखड़ोइआ**–बल्कल ।

**बखरा**–प्रत्यंश ।

**बखार**–पैघ बखारी ।

**बखारी**–धान्यगृह ।

**बखेआ**–सीअनिक प्रभेद ।

**बखेड़ा**–बाधा ।

**बखेड़िआ**–झमेलिआ, बखेड़ा कएहिनहार।

**बखो**–उ० बक्खो । स्त्री० बखोनी ।

**बखोड़**
**बखोड़ैआ** –कदलीस्तम्भक अशुष्क बल्कल ।

**बगए**–आकार ।

**बगए-बानि**–आकारप्रभृति ।

**बगड़ा**–कलविङ्क, गृहमे रहनिहार पक्षिविशेष ।

**बगड़ी**–बगड़ासन बाधवनमे रहनिहार पक्षिविक्षेष ।

**बगदब**–क्रि० विरुद्ध होएब ।

**बगबग करब**
**बगबगाएब** –क्रि० मिश्रितमे स्फुटतया दृश्य होएब।

**बगबार**–उ० बागक रक्षक । स्त्री० बगबारनी ।

**बगबारि**–बागक रक्षा १ । बागक रक्षाक वेतन २ ।

**बगय**–बगाए, आकार ।

**बगल**–वि० काँख १ । पार्श्व २ ।

**बगली**–बटुआ ।

**बगहा**–वातविकार तथा आबल्य जन्य शिराक स्तब्धता १ । बाओगबाला (धान्यादि) २ ।

**बगहा लागब**–क्रि० वातविकार तथा आबल्यसँ शिराक स्तब्धताप्राप्ति ।

**बगुला**–बक ।

**बगेआ**–कृतान्नविशेष ।

**बगेड़ी**–बगड़ी ।

**बग्गी**–दू घोड़ाक रथ ।

**बग्घा**–बगहा ।

**बघछाल( ला )**–व्याघ्रचर्म ।

**बघजर**–व्याघ्रभयजन्य ज्वर ।

**बघण्डी**–बँघेड़ा ।

**बघदुलार**–बाघजकाँ दुलार, सोत्पीड़न लालनी ।

**बघधरू**–बाघक धएल ।

**बघनहा**
**बघनही** –व्याघ्रनख ।

**बघनोच**–गिदरनोच, अधलाह (कपड़ा)।

**बघम्बर**–बघछाला ।

**बघा**–शिराक स्तब्धता ।

**बघारि**–मत्स्यविशेष ।

**बघुआएब**–क्रि० बघु+अब-क्रोधपूर्वक ताकब ।

**बघेड़ी**–क्षुपविशेष ।

**बङठी**–बाङक सुखाएल डाँट ।

**बङलहा**–लाक्षाभूषणविशेष ।

**बङला**–सम चौचाराक घर १ । बङ्गालक भाषा २ । पानक प्रभेद ३ ।

**बङलाही**–कण्टकवृक्षविशेष १ । लाक्षाभूषणविशेष २ ।

**बङला**–बङ्गाल ।

**बङलिनि**–स्त्री० वङ्गदेशीया स्त्री ।



**बङाली**–पुं० वङ्गदेशोद्भव पुरुष ।

**बङौर**–बाङक बीआ ।

**बङ्कड़ा**–बङ बजनिहार ।

**बङ्का**–वीर १ । भूषणविशेष २ ।

**बङ्कट**–उ० बद्द । स्त्री बङ्कटि ।

**बङ्गाली**–वङ्गदेशज नर ।

**बङ्केड़ी**–बँघेड़ी ।

**बच**–वचा, ओषधिविशेष ।

**बचओनाइ**–बचाएब १ । किछु उगारिकेँ राखब २ ।

**बचता**
**बचन्ता**
**बचन्ती** –नफा, लाभ ।

**बचब**
**बँचब** –क्रि० अबैत उपद्रवसँ वञ्चित होएब १। अवशिष्ट होएब २।

**बचबा**–वाच, मत्स्यविशेष ।

**बचाओ**–आक्रमणसँ परिहार ।

**बच्चा**–अलि० शिशु ।

**बच्चा ममरखा**–ओषधिविशेष ।

**बच्छा**–पुं० वत्सतर ।

**बछरू**–अलि० बाछा ओ बाछी ।

**बछेड़ा**–उ० घोड़ाक बच्चा । स्त्री० बछेड़ी ।

**बजओना**–वाद्य, बजएबाक साधन ।

**बजक्कड़**–अधिक वक्ता (निन्दामे) ।

**बजनिआँ**
**बेजनिञा** –बाजकार, वाद्य बजओनिहार ।

**बजन्ता**–अधिक बजनिहार ।

**बजबल करब**
**बजबजाएब**
**बजबजी** –क्रि० जलसम्बन्धेँ भूमिक लसलसी ।

**बजर**–वज्रसन १ । व्रज २ । अत्यन्त (यदि विशेषणरूपेँ प्रयोग हो, यथा 'बजर बहिर, बजर भुसकौल) ३ ।

**बजरकेराइ**–वृक्षविशेष ।

**बजरगेँठ**–सक्कत ग्रन्थि ।

**बजरब**–क्रि० आपतित होएब ।

**बजरबट्टू**–ताड़ीवृक्षक फड़ ।

**बजरा**–पटका, बजारब १। अन्नविशेष २।

**बजरा-बजरी**–परस्पर भूमिपातन ।

**बजाएब**–क्रि० बजब्+अब-आह्वान १ । वादन २ ।

**बजाँड़ी**–कन्दबाला क्षुपविशेष, ओषधि विशेष ।

**बजार**–आपण ।

**बजारब**–क्रि० बजार्+अब-बलात् भूमिपातन ।

**बजारू**–बजारक (वस्तु) ।

**बज्झा कोबी**–बिना फूलक कोबी ।

**वज्र**–सं० कुलिश ।

**वज्रकील**–सक्कत कील ।

**वज्रगेँठ**–सक्कत गेँठ ।

**वज्रलेप**–सं० से लेप जे वज्रवत् दृढ़ भए जाए, पाथर जोड़बाक लेप ।

**बझब**–क्रि० जालादिमे फँसब ।

**वञ्चना**–सं० प्रतारणा ।

**बटकढ़बा**–बाट देखओनिहार ।

**बटकर**–काँच केराओक झोर ।

**बटखर्चा**–बाटक खर्चा, पाथेय ।

**बटगबनी**
**बटगमनी** –बाटमे गेय गीत, अभिसार ।

**बटबार**–बाटमे अधिकृत ।

**बटबारा**
**बँटबारा** –विभाजन ।

**बटबारि**–बाटमे चलैत लोकक उपद्रव ।
**बटलोहिआ** / **बटलोही** –बठुकक आकारक पितड़ि पाकपात्रकविशेष।
**बटाइ**–आधा उपजापर लगाओल (खेत) ।
**बटाम**–वि० बट्टम ।
**बटारी**–कोणशुद्धि जँचबाक कमारक उपकरणविशेष ।
**बटिआरी**–नीपल बाट ।
**बटिखारा**–अन्नादि तौलबाक साधन (सेर प्रभृति) ।
**बटुआ**–पटपुट, कपड़ाक धोकड़ी-जेकाँ बनाओल अनेक खलक सरोता सुपारी प्रभृति रखबाक पात्रविशेष।
**बटुक**–मोट ओ गोल दालिक पाकपात्र १ । पञ्चवर्षाधिक बालक २ ।
**बटेर**–वर्तिका, पक्षिविशेष ।
**बटैआ**–बटाइ ।
**बटोही**–पथिक, मोसाफिर ।
**बट्टा**–पैघ बाटी ।
**बट्टी**–रुपैआ प्रभृति भजएबामे देय ।
**बट्टूक**–स्थूल द्विदलपाकपात्रविशेष ।
**बड़**–अधिक १ । तैलसिद्ध व्यञ्जन विशेष २ । वट, वृक्षविशेष ३ ।
**बड़का**–उ० पैघ प्रमाणक १ । श्रेष्ठ (पुरुष) २ । स्त्री० बड़की ।
**बड़की अड़ाँची**–स्थूल एला ।
**बड़की माछी**–सामान्य माछीसँ पैघ माछी ।
**बड़गोआर**–उ० गोपजातिविशेष । स्त्री० बड़गोआरि ।
**बड़द**–वर्द, बैल हि० ।
**बड़दबार**–वर्दवारक, वृषभचारणमे नियुक्त।
**बड़दनोनी**–शाकविशेष ।
**बड़र**–यौवनमे भेनिहार व्रणविशेष ।
**बड़री**–कमलक बीजकोष ।
**बड़रुख** / **बड़रुखि** –वटवृक्षक जटा ।
**बड़हर**–लिकुच, फलविशेष ।
**बड़हरी**–भूषणविशेष ।
**बड़िआ**–वटिका ।
**बड़िजना**–कृषिमे अधीनीकृत भृत्य ।
**बड़ी**–छोट बड़ १ । जड़ीविशेष २ ।
**बड़ी काल**–अधिक समय ।
**बड़ी खन**–अधिक क्षण ।
**बड़ी जड़ी** / **बड़ीमाइ** –ओषधिविशेष ।
**बडुका**–छोट डाबा ।
**बड़ेरी**–दू चारक उपरका आधारकाष्ठ।
**बड्ड**–वड्र, बहुत ।
**बड्ढी**–अधिक ।
**बढ़नुक**–वर्द्धिष्णु ।
**बढ़न्ती**–क्रमिक वृद्धि ।
**बढ़ब**–क्रि० वर्द्धन ।
**बढ़ारन**–सम्मार्जनत्याज्य ।
**बढ़ारन-सोहारन**–सम्मार्जनादित्याज्य ।
**बढ़ारब**–क्रि० बढ़ार्+अब-सम्मार्जन ।
**बढ़ारब-सोहारब**–क्रि० सम्मार्जनादि।
**बढ़िआँ**–उत्तम ।
**बढ़िआएब**–क्रि० बढ़ि+अब-बड्ढी होएब ।
**बतकट**–बातकेँ असम्यक् कटनिहार।
**बतकुटौबलि** / **बतकुट्टनि** –निरर्थक विवाद ।
**बतरख**–वर्त्तिरक्षक, खोल कएल बाँसक



आधा फाँक जाहिमे टाटक बाती पैसाओल जाए ।
**बतसू**–बातीक सुइया ।
**बतहभण्ड** / **बतहलण्ड** –विक्षिप्तप्राय ।
**बतहा**–उ० अनादरणीय बताह । स्त्री० बतही ।
**बतहिआ** / **बतही** –स्त्री० अनादरणीय बताहि।
**बताना**–पाग भरबाक हेतु दोसर छोट पाग ।
**बतारी**–समवयस्क ।
**बतासा**–मिष्टान्नविशेष ।
**बताह**–उ० विक्षिप्त । स्त्री० बताहि ।
**बतिआ**–उर्द्रत छोट फल (सोहाँसंप्रभृति लताक) १। लताफल विशेष २ ।
**बतिआएब**–क्रि० बति+अब-बतिआसँ-मुक्त होएब ।
**बतीसा**–केराक प्रभेद ।
**बत्तक**–वर्त्तक, पक्षिविशेष ।
**बत्तर**–उ० अविचारी । स्त्री० बत्तरि ।
**बत्ती**–वर्ति, सूतक बनाओल दीपक कर्तिका ।
**बत्तीस**–३२, द्वात्रिंशत् ।
**बत्तीसम**–द्वात्रिंशत्तम ।
**बतू**–बधिआ नहि कएल अशिशु अज ।
**बथान**–माल बैसबाक नियत स्थान ।
**बथुआ**–शाकविशेष, वास्तूक ।
**बद**–दुष्ट, उत्पाती ।
**बदनाम**–दुर्यश ।
**बदपन**–क्रूरता ।
**बदब**–क्रि० वरण, क्रीड़ाक व्यवस्था ।
**बदनामी**–दुष्कीर्तिभागी ।
**बदमास**–क्रूर, दुष्ट ।
**बदमासी**–क्रूरता, दुष्टटा ।
**बदरी**–मेघाच्छन्न प्रवृत्तवृष्टिक समय ।
**बदल**–वि० परिवर्त्तन ।
**बदलब**–क्रि० परिवर्त्तन, विनिमय ।
**बदला**–परिवर्त्तन ।
**बदला-बदली**–पारस्परिक विनिमय ।
**बदलेन**–परिवर्त्तनमे देल वा लेल ।
**बदहा**–बिनु खुट्टीक पादुकाविशेष ।
**बदान**–युद्धक आकरण ।
**बदाम**–चणक, अन्नविशेष १ । मेवाफल-विशेष, कागजी बदाम २ ।
**बदामी**–रङ्गक प्रभेद १। भूषणविशेष २ ।
**बदामी गोखुला**–गौक्षुर, ओषधिविशेष ।
**बदि**–कृष्णपक्ष ।
**बदिअल**–बद्द ।
**बद्द**–बदमास, क्रूरकर्मा, उत्पाती ।
**बद्दी**–मद्दी, बदब, क्रीड़ामे व्यवस्था ।
**बद्धक**–दस्त रोकबाक औषध ।
**बद्धी**–देवोत्सृष्ट गरामे पहिरबाक सूत ।
**बधना**–मुसलमानक जलपात्रविशेष ।
**बधबारि**–बाधक रक्षा ।
**बधहा**–बदहा, बिना खुट्टी खड़ामविशेष।
**बधाइ**–जन्मोसव ।
**बधाबा** / **बधैआ** –जन्मोत्सवदेय ।
**बन**–सं० जङ्गल १ । लाक्षालङ्करणविशेष २ । अङ्गमे बन्हबाक लटकल अवयवविशेष ३ ।
**बनउरीद**–बनैआ माष, माषपर्णी ।
**बनकर**–वनक कर ।

**बनखेढ़ी**–बनैआ मूँग ।
**बनगोइठा**–वनमे सुखाएल गोबर ।
**बनजमानि**–बड़का जमानि, अजमोदा ।
**बनपोरो**–पोरो सागक प्रभेद ।
**बनब**–क्रि० निर्मित होएब १ । मेल होएब २ ।
**बनबिलाड़**–पुं० बनैआ मार्जार ।
**बनमानुख**–बनैआ मनुष्याकार जन्तुविशेष।
**बनमुरगी**–आरन्यक कुक्कुट ।
**बनरनी**–बानरजातिक स्त्री ।
**बनरफाँस**–पाशविशेष ।
**बनरबान्ह**–ग्रन्थिविशेष ।
**बनरमाछी**–बानरक माछी ।
**बनस**–गोहि आदि मारबाक बड़का बनसी ।
**बन-सपेता**–पक्षिविशेष ।
**बनसी**–बड़िश, माछ मारबाक अस्त्रविशेष।
**बनसीम**–आरण्यक शिम्बी ।
**बनसो** / **बनसोह** }–वनक सोहसँ युक्त भूमि ।
**बनहरदि**–हरिद्राविशेष ।
**बनहुलुक**–वन्य जन्तुविशेष ।
**बनात**–वस्त्रविशेष ।
**बनिआ**–उ० वणिक् । स्त्री० बनिआनि ।
**बनिओज**–वाणिज्य ।
**बनिऔटी** / **बनिऔती** }–बनिआक कार्य, वाणिज्य ।
**बनिजब**–क्रि० बनिआक क्रिया ।
**बनिजाली**–माल बन्हबाक एक प्रकारक डोरी ।
**बनिसार**–बन्धशाला ।
**बनिहार**–उ० बोनि लए कार्यकर्त्ता । स्त्री० बनिहारनी ।

**बनैआ**–आरण्यक (शूकरादि) ।
**बनैआ जीर**–आरण्यक जीर ।
**बनैआ सूगर**–आरण्यक शूकर ।
**बन्द**–वि० अवरुद्ध, मुद्रित ।
**बन्दूक**–भुशुण्डी, युद्धक अस्त्रविशेष ।
**बन्दोबस्त**–वि० प्रबन्ध ।
**बन्धक**–ता ऋण आदाय सूदिक तर देल खेत ।
**बन्धकी**–ता आदाय विश्वासार्थ देल भूषणादि ।
**बन्धा कोबी**–पतकोबी ।
**बन्हक**–बन्धक ।
**बन्हन**–बन्धन ।
**बन्हा**–नियत ।
**बन्हिसार**–बन्धनशाला, कारा ।
**बन्हेज**–सामाजिक बन्धन ।
**बन्होटा**–बन्हले रहनिहार (घोड़ा) ।
**बपखौकी**–स्त्री० बापकेँ खएनिहारि (स्त्रीक उक्तिमे गारि) ।
**बपहारि काटब**–क्रि० 'बाप रे बाप' इत्यादि बाजब ।
**बपौती**–बापक धन, मरौसी सम्पत्ति ।
**बप्पाबैरी**–अन्यकृत बापक शत्रुता ।
**बबूर**–बर्वर, वृक्षविशेष ।
**बब्बर**–व्याघ्रविशेष ।
**बभनगामा**–ब्राह्मणक ग्राम ।
**बभनगोष्ठी**–ब्राह्मणक गोष्ठी ।
**बभनटोली**–ब्राह्मणक टोल ।
**बभनभोजी**–ब्राह्मणक भोजन ।
**बभनाह**–ब्राह्मणसम्पादित (जल-पुष्पादि)।
**बभनी**–धानक रोगविशेष ।



**बभनोज**–ब्राह्मणक हठ, ब्रह्मणवत् लगारि भएकेँ पड़ब ।
**बमकब**–क्रि० चुप रहैत एकाएक जोरसँ बाजब ।
**बमकी**–बमकब ।
**बमगोला**–उत्सवादिसूचक महाशब्दकारी गोला ।
**बमछब**–क्रि० क्रोधेँ जोरसँ बाजि उठब।
**वमन**–सं० वान्ति ।
**बमरेटुआ** / **बमरौटिआ** }–बामा हाथेँ काज कए-निहार १ । अ० बामाहाथेँ २।
**बयस**–जीवनसमयपरिमाण ।
**बयसगर**–उ० अधिक बएसक । स्त्री० बयसगरि ।
**बयसाहु**–अलि० अधिक बयसक ।
**बयाद**–कन्दविशेष ।
**बर**–स्वामी १। विवाह कएनिहार २। गुण (यथा 'एक बर' 'दू बर'; यदि संख्यासँ उत्तर प्रयोग हो) ३। मालक ओषध्यर्थ क्षुपविशेष ४ ।
**वरइ**–बरै, पर्णव्यापारी जातिविशेष ।
**बरकब**–क्रि० अग्नितापसँ सशब्द पाक।
**बर करब**–क्रि० दीप मिझाएब ।
**बरकस**–चौपालाप्रभृतिक बाँसमे कसबाक डोरी ।
**बरख**–वर्ष ।
**बरखा**–वृष्टि ।
**बरखास्त**–वि० पुरुषशून्य १ । मोकूफ, निष्कासित २ ।
**बरखी**–वार्षिक श्राद्ध, एकोद्दिष्ट ।
**बरछा** / **बरछी** }–अस्त्रविशेष ।

**बरजब**–क्रि० वर्जन ।
**बरजीत**–पराजयसँ पूर्व पराजयोत्तरकालिक परस्पर देयादेयक प्रतिज्ञा ।
**बरतन**–धातुनिर्मित पात्र ।
**बरतोड़**–रोइँउपाड़ ।
**बरदनोनी**–बरदबाह ।
**बरदहसा**–वर्षा समयमे दक्षिणसँ अबैत बसात ।
**बरदाएब**–क्रि० बरद् + अब – प्रतिबन्धकवशात् कार्यसँ निवृत्त रहब।
**बरदेखी**–विवाहार्थ वरक देखनाइ ।
**बरदोठ**–प्रतिबन्धकवशात् कार्य करबासँ निवृत्ति ।
**बरनब**–क्रि० वर्णन करब ।
**बरनि**–हरक कील ।
**बरनिआ**–पुं० वरण कएल (स्व-स्तिवाचकादि) ।
**बरफ**–वि० जमल जल, पाला ।
**बरब**–क्रि० मृत्तिकाक शिवलिङ्ग बनाएब।
**बरबंगा**–बाङक प्रभेद ।
**बरबराएब**–क्रि० बरबर्+अब– अनर्थक बात बाजब ।
**बरबरी**–बरबराएब ।
**बरबा**–छन्दोविशेष ।
**बरमा**–छिद्र करबाक यन्त्रविशेष, बेरमा ।
**बरहगामा**–अनेक गाम ।
**बरहदरी**–नरवाह्य यानविशेष ।
**बरहधना**–मिश्रित अनेक प्रकारक धान ।
**बरहबट्टू**–जाहिसँ सभलोक काज कए लेअए तादृश अरक्षित (वस्तु) ।
**बरहबर्दा**–जमीनक प्रमाणपत्रविशेष ।

**बरहमासा**–बारह मासक वर्णनात्मक गीत।

**बरहरूपा**–बहुरूपा, अनेक रूप देख-ओनिहार ।

**बरहसिंहा**–हरिणक सिंह ।

**बरहा**–मोट रस्सा १ । बारह दिन (श्राद्ध) २ ।

**बरहा-बरही**–मोट बरहाक झीकातीरी क्रीड़ा ।

**बरही**–तक्षा, कमार ।

**बराइत**–वरागत, वरक दिसक लोक ।

**बराँट(ठ)**–पैघ बरुआ ।

**बराबरि**–अ० अनवरत १ । तुल्य २ ।

**बराहिल**–गाममे असामी बजएबाक हेतु नियुक्त (व्यक्ति) ।

**बरिआत** / **बरिआती** }–बारात, वरक सङ्ग गेनिहार लोक, ढोल बजनिआँ प्रभृति ।

**बरिआर**–बला, ओषधिविशेष ।

**बरिसन्धन**–एक पाबनि ।

**बरिसब**–क्रि० वर्षण ।

**बरिसाइत**–वटसावित्रीव्रत ।

**बरिसात**–वर्षा समय ।

**बरिसाति**–वटसावित्रीव्रत ।

**बरिसाती**–वृष्टिपात बचओनिहार कोठामे नमरल छदि १ । बरिसात मे उपकारक वस्त्र २ ।

**बरी**–बड़ेरी, चारक मथनीक आधार-काष्ठ ।

**बरु**–अ० वरम् ।

**बरुआ**–माणवक ।

**बरुका**–बड़ुका, डाबासँ छोट तत्सदृश मृतत्पात्रविशेष ।

**बरेब**–पानक लताक घर ।

**बरै**–उ० पर्णविक्रेता जातिविशेष । स्त्री० बरैनि ।

**बरैनि**–हरक कील १। बरै जातिक स्त्री २।

**बरोत**–घर छारबामे बरी लगक उपरका बाती ।

**बरोबर**–धान्यविशेष ।

**बर्खा**–वृष्टि ।

**बर्खी**–वार्षिक श्राद्ध, एकोद्दिष्ट ।

**बर्छा**–अस्त्रविशेष, शूल ।

**बर्जब**–क्रि० वर्जन ।

**बर्जाति**–बद्द स्त्री ।

**वर्ण**–सं० गौरपिण्डश्यामादि शरीरक रङ्ग १। ब्राह्मणादि चारि जाति २ ।

**बर्तन**–धातुक पाकपात्र ।

**बर्फ**–वि० जमल जल ।

**वर्ष**–सं० बारह मास ।

**वर्षभोज्य**–एक वर्ष खएबाक सकल सामान्य (दानार्थ) ।

**बर्ह्मी**–ब्राह्मी जड़ी ।

**बल**–सं० शक्ति, बुत्ता ।

**बलकुचाह(हि)**–बालयुक्त (माटि) ।

**बलगर**–उ० अधिक बलसँ युक्त ।

**बलगोबिना**–नपुसंक ।

**बलजोरी**–अ० बलात्कार ।

**बलतोड़**–रोँइउपाड़ ।

**बलदाउनि**–असङ्गत आग्रह ।

**बलधकेल**–अ० बलात्कारपूर्वक धकेलिकेँ ।

**बलधरा** / **बलधारा** }–चारमे बल देबाक हेतु बनाओल खाम्ही ।

**बलबलाएब**–क्रि० बलबल्+अब–द्रवपदार्थक भितरी विकारक ऊर्द्ध्वमुख होएब ।



**बलम**–चानीसँ सौँसे मढ़ल थोप-बाला छड़ी ।

**बलमन्त**–बलवान् ।

**बलहिँ**–अ० बलात्, व्यर्थ ।

**बलही**–दू जुन्नाबाला पैघ बोझ ।

**बलहुत्थ**–निर्हेतु अत्याग्रह ।

**बलि**–मांसक उपहार ।

**बलिकट्टा**–देवताक उत्सृष्ट छागबलि कटनिहार ।

**बलिदान**–सं० छागादि बलि प्रदान ।

**बलेल**–बूड़ि, मूढ़ ।

**बल्ला**–गाड़ीक अङ्गविशेष ।

**वंशलोचन**–ओषधिविशेष, वंशरोचना।

**बस**–अ० निरोधद्योतक ।

**बँसकट्टा**–बाँस कटनिहार ।

**बँसकट्टी**–बाँस काटब ।

**बसगीद**–अनेक संनद्ध बस्ती ।

**बसाएब**–ना० दसात+अब–बसातसँ विरस वा शुष्क होएब ।

**बसनी**–ठाढ़ कानक घैल ।

**बसन्त**–पुष्पविशेष १ । सं० चैत-बैसाख मासद्वय २ ।

**बसन्ती**–रङ्गक प्रभेद ।

**बसब**–क्रि० निवास ।

**बँसबारि**–वंशवाटी ।

**बँसबिट्टी**–बाँसक बीटसमूह ।

**बसहा**–जटाबाला बड़द १ । नेपालक (कागत) २ ।

**बसाँड़ि**–वंशवाटिका ।

**बसाँढ़ी**–मत्स्यविशेष ।

**बसात**–वात, हाबा ।

**बसिआएब**–ना० बासि+अब–बासि होएब ।

**बसिन्दा**–बासी ।

**बसिला**–वास्या ।

**वंसी**–वंशी ।

**बंसीप्रेम**–पुष्पविशेष ।

**बसुरी**–वंशी ।

**बसुली**–वंशी ।

**बसैला**–बाँसक (खाम्ही) ।

**बस्ता**–नूआमे बान्हल बही प्रभृति कागजसब ।

**बस्ती**–वसति, ग्राम ।

**वस्तु**–सं० पदार्थ ।

**वस्तुजात**–सं० वस्तुसमूह ।

**बह**–सीरसँ जनमल गाछ ।

**बहखार**–हर बहबामे समर्थ (बड़द) ।

**बहकब**–क्रि० कुमार्गप्रवृत्ति ।

**बहटारब**–क्रि० बहटार्+अब–मन प्रसन्न करबाक निमित्त कोनो आन क्रियामे लागब ।

**बहतर**–उ० वार्द्धक्यादिप्रयुक्त जकरा बजबाक ठेकान नहि हो ।

**बहतरा**–अनादरणीय बहतर ।

**बहता**–बहैत (जलादि) ।

**बहताओन**–तेल पेरबाक वेतन ।

**बहती**–छोट बाहा ।

**बहत्तरि**–द्विसप्तति, ७२ ।

**बहत्तरिम**–द्विसप्ततितम ।

**बहन्तू**–बाहबाक योग्य, सम्भावित ऋतुकालक (गाएआदि) ।

**बहपोत**–अनुचित विस्तार ।

**बहपोर**–दूर दूर पोरबाला (ठेङा, लाठी)।

**बहब**–क्रि० स्रवण १। वहन [बड़द गाड़ीमे बहैत अछि] २ ।

**बहबाँड़**, **बहबाणि** }–अनुचित बहुवक्ता ।

**बहरघरा**–चतुःशालसँ बाहरक घर ।

**बहरपेन**–जकर जड़ि घरसँ बहार-दिस झुकल हो तादृश (खाम्ह) ।

**बहराएब**–क्रि० बहर्+अब–बहिर्भवन ।

**बहरिआ**–रजस्वला ।

**बहरी**–बाह्य देश ।

**बहलमान**–बड़दक गाड़ी हँकनिहार ।

**बहलाएब**–क्रि० बहलब्+अब–बहल गप्प करब ।

**बहसब**–क्रि० कुमार्गप्रवृत्ति ।

**बहाँड़**, **बहाण** }–अङ्गुल्यन्तबाहु-प्रमाण ।

**बहादुर**–वि० वीर ।

**बहादुरी**–वि० वीरता ।

**बहाना**–वि० छल ।

**बहार**–बहिर्देश ।

**बहारब**–क्रि० बहार्+अब–संमार्जन ।

**बहाल**–वि० नियुक्त ।

**बहाली**–वि० नियुक्ति ।

**बहिआ**–उ० दास । स्त्री० बहिकिरनी ।

**बहिआँ**–बाहीँ, काँसाक बनाओल लहठीस्थानीय भूषण ।

**बहिकिरनी**–स्त्री० दासी ।

**बहिक्रम**–वयस् ।

**बहिखत**–दासतक पत्र ।

**बहिँगा**, **बहिङा** }–भार उठएबाक चिपिट दण्ड ।

**बहिङासारि**–धान्यविशेष ।

**बहिनजमाए**–पुं० भगिनीकन्यापति ।

**बहिनधी**–स्त्री० स्त्रीक बहिनिक कन्या ।

**बहिनि**–स्त्री० भगिनी ।

**बहिनो**, **बहिनोए** }–भगिनीपति ।

**बहिनौत**–उ० मौगीक बहिनिक पुत्र ।

**बहिन्वे**–भगिनीपति ।

**बहिर**–वधिर ।

**बहिरी**–पक्षिविशेष ।

**बहिला**–बन्ध्या (माल) ।

**बही**–पैघ आकारक आयव्ययादिम्मारक बान्हल पत्रसमूह ।

**बहीनि**–स्त्री० भगिनी ।

**बहु**–स्त्री० वधू, जाया ।

**बहुआसिनि**–बहुवासिनी, पुत्र-पौत्रादिक जाया ।

**बहुगुना**–अनेककार्योपयोगी पात्र विशेष ।

**बहुत**–अधिक, अनेक ।

**बहुत पक्ष**–अ० अधिक सम्भूत ।

**बहुत रास**–अधिक परिमाणक ।

**बहुबात**–अनैकमत्य ।

**बहुरिआ**–स्त्री० वधूटिका, नवीन पुतोहु ।

**बहुरूपा**–पुं० बरहरूपा, अनेक रूप देखओनिहार ।

**बहेड़**–बिभीतक ।

**वा**–सं० अ० अथवा ।

**बाइ**–वायु ।

**बाइनि**–वयन ।

**बाइभिरिङ्ग**–विडङ्ग ।

**बाइली**–अतिरिक्त, वाह्य ।

**बाइस**–द्वाविंशति, २२ ।



**बाइसम**–द्वाविंतितम ।

**बाउ**–पुं० वटुक, वत्स ।

**बाउली**–वापी, अल्पजलाशयविशेष ।

**बाएब**–क्रि० बब्+अब–व्यादान ।

**बाओग**–बीजवपन ।

**बाओन**–वामन ।

**बाँक**–भूषणविशेष ।

**बाकरा**–अधिक बजनिहार ।

**बाकल**–वल्कल ।

**बाकस**–वासा, ओषधिविशेष ।

**बाकसरस्सी**–हथिआरविशेष ।

**बाँकी**–अवशिष्ट ।

**बाकूट**–विरल कए संकुचित कएल हाथक पञ्चाङ्गुलि ।

**बाखुबी**–वि०अ० सर्वथा ।

**बाग**–हि० उद्यान ।

**बागड़**–मिश्रित (अन्न) ।

**बागनर**–कदलीप्रभेद ।

**बागडोरि**–रथरश्मि ।

**बाघ**–उ० व्याघ्र । स्त्री० बाघिनि ।

**बाघगोटी**–क्रीड़ाविशेष ।

**बाघिनी**–स्त्री० व्याघ्रजाति स्त्री ।

**बाघी**–वेदनायुक्त काछक गिलटी ।

**बाङ**–कार्पास ।

**बाचब**–क्रि० बच्+अब–आपत्तिसँ स्पृष्ट नहि होएब ।

**बाँचब**–क्रि० बँच्+अब–चोठी पुराणादिक पठन १ । अवशिष्ट होएब २ ।

**बाछब**–क्रि० बछ+अब–मिश्रितसँ हटाइएब ।

**बाछा**–उ० वत्सतर । स्त्री० बाछी ।

**बाछी**–स्त्री० वत्सतरी ।

**बाज**–श्येन, दोसर पक्षीकेँ झपटि पकड़निहार पक्षिविशेष १। वाद्य २ ।

**बाजकार**–वेतनपर बाजा बजओनिहार, बजनिआँ ।

**बाजन**–वाद्य ।

**बाजब**–क्रि० बज्+अब–भाषण, शब्द करब ।

**बाजब-भूकब**–क्रि० भाषण हासादि क्रिया।

**बाजा**–वाद्य ।

**बाजाभूकी**–बाजब प्रभृति व्यवहार ।

**बाजी**–क्रीड़ाकाण्ड ।

**बाजी लगाएब**–क्रि० क्रीड़ाकाण्डसंनाह १। एक क्रीड़ाकाण्ड समाप्त करब २ ।

**बाजू**–बाहुभूषणविशेष ।

**बाजूबन्द**–भूषणविशेष ।

**बाँझ**–बन्ध्य (वृक्षादि) ।

**बाझब**–क्रि० बझ्+अब–जालादिमे बद्ध होएब ।

**बाँझि**–स्त्री० बन्ध्या ।

**बाँझी**–वन्दाक १ । वृक्षरोग विशेष २ ।

**बाट**–मार्ग ।

**बाँट**–व्यक्तिक उद्देशेँ विभाजन ।

**बाट ताकब**–क्रि० आगमनक प्रतीक्षा करब ।

**बाँटब**–क्रि० बँट्+अब–व्यक्तिक उद्देशेँ विभाजन १ । सन आदिकेँ गुणसँ युक्त करब २ ।

**बाँट-बखरा**–विभाजनादि ।

**बाटा**–बहुत पैघ बाटी ।

**बाटाबाटी ताकब**–क्रि० आतुरतापूर्वक आगमनक प्रतीक्षा करब ।

**बाटी**–तीमनक पात्र ।
**बाड़ी**–वाटी, उद्यान ।
**बाड़ी-झाड़ी**–उद्यानादि ।
**बाढ़नि**–सम्मार्जनी ।
**बाढ़ब**–क्रि० बाढ़्+अब–संम्भार्जन ।
**बाढ़ि**–आगत जलक आप्लावन १ । वृद्धि २ ।
**बात गढ़ब**–क्रि० बनाओल बात बाजब ।
**बातचीत**–वि० वार्तालाप ।
**बातबारुन**–ओषधिविशेष ।
**बाँतर**–जे खएलासँ घासो बढ़ए (यथा उरीद) ।
**बाती**–वर्त्ति, तूरक वा नूआक टेमी १ । बाँसक चीरल अनेक खण्ड २ ।
**बाद**–उत्तरकाल १ । विवाद २ ।
**बादरि**–मेघ, बदरी ।
**बादसाह**–वि० अधीश्वर (मुसलमान) ।
**बादसाही**–वि० बादसाहक क्रिया १ । बादसाहसम्बन्धी (गद्दी आदि) २ ।
**बादुर**–उलूक, रात्रिचर पक्षिविशेष ।
**बाध**–धानक विस्तृत क्षेत्रसमूह १ । बाधा २ ।
**बाधकार**–बाधा कएनिहार ।
**बाधबन**–बाध ओ वन ।
**बाधा**–प्रतिबन्ध ।
**बान**–वयन ।
**वानर**–सं० सर्कट ।
**बाना**–वयन ।
**बाना बान्हब**–क्रि० कोनो हेतु हठपूर्वक नाना प्रयत्नमे लागब ।
**बानि**–वयन ।
**वान्ति**–सं० वमन ।
**बान्हब**–क्रि० बन्ह्+अब–बन्धन ।
**बाप**–पिता ।
**बापूत**–पितापुत्र ।
**बाफदा**–वि० वस्त्रविशेष ।
**बाबन्न**–द्वापञ्चाशत् ५२ ।
**बाबन्नम**–द्वापञ्चशत्तम ।
**बाबा**–पितामह मातामहादि । स्त्री० बाबी ।
**बाबाजी**–पुं० वैरागी ।
**बाभन**–उ० ब्राह्मण । स्त्री० बाभनि ।
**वाम**–सं० सव्य, दक्षिणभिन्न (बाहुप्रभृति तथा भाग) १। सं० प्रतिकूल २ ।
**बामी**–मत्स्यविशेष ।
**बाय**–अ० अथवा ।
**वायु**–सं० बसात तथा पेटक वायु ।
**बारब**–क्रि० बार्+अब–त्यागब ।
**वारंवार**–द्वादश, १२ ।
**बारहम**–बारहक पूर्त्ति कएनिहार ।
**बारहो बिरही**–बहुत प्रकारक वस्तुजात ।
**बारि**–घोड़ाक लगाम ।
**बारी**–माछ मारबाक स्थानविशेष १ । शूद्रजातिविशेष २ ।
**बारीक**–भोजमे परसनिहार ।
**बारी लगाएब**–क्रि० माछ मारबाक यन्त्र लगाएब ।
**बारुद**–बन्दूक, रबाइस प्रभृतिमे उपकारक एक विस्फोटक पदार्थ ।
**वार्त्ता**–समाचार, वृत्तान्त ।
**बाल**–सिकता १ । सं० शिशु २ ।
**बालक**–उ०स० शिशु १। पुत्र २ । स्त्री० बालिका ।
**बालग्रह**–पूतनादिग्रहदोष ।



**बालबच्चा**–बालप्रभृति ।
**बालविधवा**–स्त्री० बाल्यावस्थामे मृतभर्तृका ।
**बाला**–वलय, भूषणविशेष ।
**बालि**–गाछमे फड़ल अन्न तथा मकैक पत्राच्छादित अन्नकोष ।
**बाली**–भूषणविशेष ।
**बालुम**–वल्लभ, स्वामी ।
**बालुम खीरा**–एक प्रकारक खीरा ।
**बालूसाही**–मिष्टान्नविशेष ।
**बालेसरी**–ढरुआ लौहकण्टकविशेष ।
**वास**–सं० निवास ।
**बाँस**–वेणु, वंश ।
**बासट्ठि**–द्विषष्टि ६२ ।
**बासट्ठिम**–द्विषष्टिम ।
**बासन**–अन्नादि रखबाक पात्र ।
**बाँसफूल**–धान्यविशेष ।
**बाँस बरेड़ी**–धान्यविशेष ।
**बासमती**–धान्यविशेष ।
**बासब**–क्रि० बस्+अब–वासित करब ।
**बासरा**–गुलाबक प्रभेद ।
**बासि**–पर्युषित ।
**वासी**–सं० निवासी ।
**बाँसी**–आगि फुकबाक बाँसक चाँगा ।
**बासी मुहेँ**–अ० अभुक्त, बिना किछु खएने ।
**बासुरी** / **बाँसुरी**–बसुली, वंशी ।
**बाह**–अ० प्रशसाद्योतक १ । बाहब २ ।
**बाहब**–क्रि० बाह्+अब–मालक गर्भाधन ।
**बाहर**–वाह्य ।
**बाँहि**–बाहु ।
**बाँहीँ**–लहठीक स्थानमे पहिरबाक काँसाक अलङ्करण ।
**बान्हू**–रङ्गीन वस्त्रविशेष ।
**बिअरि**–विल ।
**बिअहिआएब**–क्रि० बिअहिअब्+अब–बीहनि देब ।
**बिअहुआ** / **बिअहुती**–विवाहसम्बन्धी ।
**बिआएब**–क्रि० बि+अब–गर्भमोचन ।
**बिआन**–बिआएब, प्रसव १ । धान्यादिक पनुघा चलब २ ।
**बिआह**–विवाह ।
**बिआहब**–क्रि० विवाह करब ।
**बिआहलि**–विवाहिता ।
**बिऔरी**–कुम्हड़ प्रभृतिक बीआक वटी ।
**बिकजी**–जलपानार्थ नाना फल ।
**विकट**–सं० भयावह ।
**बिकड़ार**–अधिक फुलाएल १ । भयावह २ ।
**विकराल**–सं० विशाल, भयङ्कर ।
**विकल**–सं० दरिद्र, विषादयुक्त ।
**बिकाएब**–क्रि० बिक्+अब–विक्रीत होएब ।
**बिकाल**–वर्षाप्रयुक्त अधलाह समय ।
**बिकौआ**–रुपैया लए जे अपना सँ छोटमे विवाह कएने छथि से (व्यक्ति) ।
**बिक्री**–विक्रय, बिकाएब ।
**विक्रू**–विक्रय्य, विक्रयार्थ (वस्तु) ।
**बिखाह**–उ० विषयुक्त । स्त्री० बिखाहि, अन्त : प्रकोपस्वभावक (लाक्षणिक प्रयोग) ।
**विखिन्न**–सं० दीन, दुखी, निकृष्ट ।

**विख्यात**–सं० प्रख्यातनामा ।
**बिगड़ब**–क्रि० विघटन ।
**बिगड़ाबिगड़ी**–परस्पर विरोध ।
**बिगहा**–बीस कट्ठा (भूमि) ।
**बिगाड़ब**–क्रि० बिगाड़्+अब–विघटन करब ।
**बिगाड़ि**–विरोध ।
**बिगुल**–वि० वाद्यविशेष ।
**विघटन**–सं० संघटन मे वाधा ।
**विचलन**–सं० स्खलन ।
**बिचला**–मध्यवर्त्ती ।
**विचार**–सं० युक्तिपूर्वक पर्यालोचन ।
**बिचारब**–क्रि० पर्यालोचन करब ।
**बिच्छू**–वृश्चिक ।
**बिछओना**–आस्तरण ।
**बिछाएब**–क्रि० बिछब्+अब–आस्तरण करब ।
**बिछाओन**–आस्तरण ।
**बिछिआ**–भूषणविशेष ।
**बिछुआ**–बीछल ।
**बिछुरब**–क्रि० वियुक्त होएब ।
**बिछोह**–वियोग ।
**विजयघंट**–बड़का घड़ी-घंटा ।
**बिजली**–बिजुली, विद्युत् ।
**बिजलोका**–विद्युल्लता ।
**बिजाती**–बिजातीय, विलक्षण ।
**बिजुकब**–क्रि० मूहक सङ्कोचन ।
**बिजुली**–विद्युत् ।
**बिजो**–भूताद्यावेशचेष्टा ।
**बिजोठ**–भूषणविशेष ।
**बिजोड़**–जोड़ा नहि लागल (रत्नादि) ।
**बिजोड़ा**–नेबोक प्रभेद ।
**बिझो**–भोजनार्थ कथन ।
**बिटगहरा**–एगारहसँ लए गुणापाठ ।
**बिटण्डाबाद**–वितप्डावाद, स्वपक्षशून्य खण्डन ।
**बिटण्डी**–वैतण्डिक ।
**बिट्ठू** / **बिठुआ** } –अँगुठा ओ तर्जनीक अग्रसँ उत्पीड़न ।
**बिड़रो**–वात्या ।
**बिड़हरा**–पीर टकुरी आदि रखबाक वंशपात्रविशेष ।
**बिड़ार**–बीजवपनक्षेत्र ।
**बिड़ारू**–बिड़ारमे उपजल (बीआ) ।
**बितब**–क्रि० व्यतीत होएब ।
**बितराएब**–क्रि० बितर्+अब–विरल होएब ।
**वितान**–सं० शय्याक सोझेँ उपरमे टाङल वस्त्र ।
**बिथरब**–क्रि० पाएर आदिक सरलीभाव ।
**बिथारब**–क्रि० बिथार् + अब–पाएर आदिक सरलीकरण ।
**बिथुति**–कार्यप्रतिबन्ध ।
**बिदति**–बिद्दति, क्षेत्रादिक उपद्रव ।
**बिदरब**–क्रि० विदीर्ण होएब ।
**बिदल**–बिगोल, अन्यपक्षक लोकसमूह ।
**बिदा**–प्रस्थित ।
**बिदाइ**–बिदाय, जएबाक कालि देल ।
**बिदागिरी**–प्रस्थान ।
**बिदारब**–क्रि० बिदार्+अब–विदीर्ण करब ।
**विदेश**–सं० देशान्तर, हिन्दुस्तानसँ आन देश ।
**विदेशी**–सं० विदेशभव ।



**बिदेसिआ**–विदेशमे रहनिहार ।
**बिद्दति**–क्षेत्रादिक उपद्रव ।
**विद्युल्लता**–सं० बिजली ।
**बिधिकरी**–स्त्री० विवाहमे लौकिक विधि करओनिहारि स्त्री ।
**विधवा**–सं० बेबा ।
**विधाता**–सं० ब्रह्मा ।
**बिधार**–ओषधिविशेष, त्रिवृत् ।
**बिधुआएब**–क्रि० बिधु+अब–मुखक उदास होएब ।
**बिधुनब**–क्रि० गड्डबड्ड कए वस्तु ताकब।
**बिनती**–सविनय निवेदन ।
**बिनब**–क्रि० वयन ।
**बिनबिन करब**–क्रि० जलादिमे अधिक पीलु आदिक संचरण ।
**बिनबिनाएब**–क्रि० बिनबिन्+अब–बिनबिन करब ।
**विनय**–सं० अनुनय, अनौद्धत्य ।
**विना**–सं०अ० बिनु, वेत्रेक ।
**विनाश**–स० ध्वंस ।
**बिनु**–अ० बिना ।
**बिनोट**–बीनब, वयन ।
**विनोद**–सं० आनन्दप्रद क्रिया ।
**विनोदी**–सं० आनन्दप्रद क्रियाकारी ।
**विन्यास**–सं० विशेष रूपेँ आयोजन ।
**विन्यासी**–सं० विन्यासशील ।
**बिन्हकी**–बिन्हनिहार बिखाह (चुट्टी) ।
**बिपटा**–छकोड़बाजी नाचमे हास्यरसी नर्त्तक ।
**बिपटार**–विपत्तिग्रास ।
**बिपता** / **बिपति** } –विपत्ति ।
**बिपतिमरू**–विपत्तिसँ मृत प्राय ।
**विपत्ति**–सं० आपत् ।
**बिपन**–असम्पन्न, विपत्तिग्रस्त ।
**विपन्न**–सं० विपत्तिग्रस्त ।
**विपाक**–सं० पेटमे अन्नक अपच ।
**विफल**–सं० व्यर्थ ।
**विवाद**–सं० विरुद्ध वाद ।
**विवादी**–सं० विरुद्धवादकारी ।
**विवाह**–सं० सविधि पाणिग्रहण ।
**बिवाही**–स्त्री० पाणिगृहीती (भार्या) १। विवाहसम्बन्धी २ ।
**बिभरस** / **विभ्रम** } –भ्रम ।
**बिमन**–अप्रसन्नमनस्क ।
**विमल**–सं० मलहीन, निर्मल ।
**विमुख**–सं० असम्मुख, अप्रसन्न ।
**बिरखी**–मालक जिह्वाक रोगविशेष ।
**बिरञ्चि**–कृतान्नविशेष ।
**बिरनफूल**–धान्यविशेष ।
**बिरनिआ छत**–अनेक मुहबाला व्रणविशेष ।
**बिरनी**–बामा हाथमे रखबाक कुश, वेणी १। मधुमाछीसन छाता लगओनिहार बिन्हनिहार पतङ्गविशेष, वरट २ । गूहल माथक खोपा, वेणी ३ ।
**बिरब**–क्रि० बीछब ।
**विरल**–सं० अघन, अल्प ।
**बिरलेल**–अ० कदाचित् कोनहुठाम ।
**विरस**–सं० विकृतरसबाला ।
**बिरहरा**–पीर टकुरी आदि रखबाक पात्रविशेष ।
**बिरान्नब्बे**–द्विनवति, ९२ ।

**बिरान्नब्बेम**–द्विनवतितम ।
**बिरासी**–द्व्यशीति, ८२ ।
**बिरासीम**–द्व्यशीतितम ।
**बिराह**–लागल जजातिमे हर चलाएब ।
**बिराहब**–क्रि० बिराह्+अब लागल जजातिबाला खेतमे हलकर्षण ।
**बिरुझब**–क्रि० विरुद्ध होएब ।
**बिरोजा**–ओषधिविशेष ।
**बिलमब**–क्रि० बिलम्ब करब ।
**विलम्ब**–सं० दीर्घकाल ।
**बिलहब**–क्रि० वितरण ।
**बिलहा** / **बिलहाबाँट** } –क्रि० वितरण ।
**बिलाएब**–क्रि० बिल्+अब–विलीन होएब ।
**बिलाड़( र )**–उ० मार्जार/जारी स्त्री० बिलाड़ि ।
**बिलैआ**–केबाड़ लगएबाक छिटकी ।
**बिलैआकन्द**–ओषधिकन्दविशेष ।
**बिलोँ**–अ० अओ, सम्बोधन ।
**बिलोबन्द**–प्रबन्ध ।
**बिलौकी**–वर ओ बरुआक भिक्षा ।
**बिलौकी माँगब**–क्रि० वर ओ बरुआक भिक्षा माँगब ।
**विश्राम**–सं० क्रियाविरति ।
**विष**–सं० माहुर ।
**विषबड़िआ**–विषवटी, सर्पादि विषक गोला ।
**बिषाह**–विषबाला (जन्तु) ।
**विष्टी**–कौपीन ।
**विष्ठा**–सं० अन्नमल ।
**बिष्ठी**–कौपीन ।
**बिसखब**–क्रि० गवादिक दुग्धदानक परित्याग करब ।
**बिसखोपरा**–जन्तुविशेष ।
**बिसनाएब**–क्रि० बिसन्+अब–निन्द्रामे बाजब ।
**बिसनारि**–जलभव ओषधिविशेष ।
**बिसपिपरी**–विषपिपीलिका, विखाह कीटविशेष ।
**बिसबिस करब**–क्रि० वेदना विशेष ।
**बिसबिसाएब**–क्रि० बिसबिस्+अब–वेदनाविशेष ।
**बिसबिसी**–बिसबिसाएब ।
**बिसरब**–क्रि० विस्मरण ।
**बिसरभोर** / **बिसराभोर** } –विस्मरणशील ।
**बिसराम**–विश्राम ।
**बिसराह**–उ० विस्मरणशील । स्त्री० बिसराहि ।
**बिसहरा**–पूज्य सर्पिणीविशेष ।
**बिसाएब**–ना० विष+अब–भुक्तविषवत् पाछाँ अधलाह करब ।
**बिसाँढ़**–विस, कमलकन्द ।
**बिसानि** / **बिसाइन** } –दौर्गन्ध्यविशेष, विस्रगन्ध ।
**बिसारब**–क्रि० बिसार्+अब–विस्मृत कराएब ।
**विस्तार**–सं० विस्तीर्णता ।
**विस्फोट**–सं० व्रणविशेष ।
**विस्मय**–सं० आश्चर्य ।
**बिहखारब**–क्रि० बिहखार्+अब–तकबाक हेतु टाट फाड़ब ।
**बिहँगड़ा**–मालक रोगविशेष ।



**बिहरि**–बिल ।
**बिहरिआ हाल**–ग्रीष्ममे बिहारिक सङ्ग भेल वृष्टिसँ क्षेत्रक सार्द्र होएब ।
**बिहरोन**–बिहारि हो तादृश लक्षणयुक्त समय ।
**बिहारि**–तीव्र बात ।
**बिहि**–विधि, ब्रह्मा ।
**बिहुँसब**–क्रि० ईषद्धास ।
**बिहुँसी**–ईषद्धास ।
**बिहून**–विहीन ।
**बीअनि**–व्यजन ।
**बीआ**–बीज १ । बीजवपनसँ जनमल रोपणीय धान्यादिवृक्ष २ ।
**बीच**–मध्य १ । तारतम्य, अन्तर २ ।
**बीची**–तमाकूक छोट रोपणीय गाछ ।
**बीछ**–वृश्चिक ।
**बीछब**–क्रि० बिछ्+अब–मिश्रितसँ पृथक् करब, चयन करब ।
**बीजी**–नकुल ।
**बीजी पुरुष**–वंशक मूलपुरुष ।
**बीजू**–बीजोद्भव ओ कलमसँ अन्य (आम्रवृक्ष) ।
**बीट**–एकठाम एक टा रोपला उत्तर ताहिसँ जनमल अनेक वृक्ष (यथा बाँसक, बीट, धानक बीट) १ । विड्, लवणविशेष २ ।
**बीझ**–लौहादिधातुमे बहुत दिनेँ बैसल मलविशेष ।
**बीड़** / **बीँड़** } –ताटङ्क, भूषणविशेष ।
**बीड़ा**–ताम्बूलक प्रभेद १। तृण निर्मित वर्तुल घटादिक आधार २। बैसबाक हेतु मध्यमे बान्हल तृणपुञ्ज ३ ।
**बीड़ी**–पर्णवीटी १ । धूमपानवीटी २ ।
**बीड़ुक**–भात पसओना तृणपुञ्ज ।
**वीणा**–सं० वाद्यविशेष ।
**बीत**–वितस्ति ।
**बीतब**–क्रि० बित्+अब–व्यतीत होएब ।
**बीन**–वीणा, वाद्यविशेष ।
**बीनब**–क्रि० बिन्+अब–वयन ।
**बीभत्स**–सं० घृणाव्यञ्जक ।
**वीर**–सं० शूर १ । केराक अविकसित पत्र २ ।
**बीरनफुल**–धान्यविशेष ।
**बीस**–विंशति २० ।
**बीसम**–विंशतितम ।
**बीहन**–बीआक अन्न ।
**बीहनि**–धान्यवृक्षादिक पंक्तिक पृथक् करब ।
**बीहनि देब** / **बीहब** } –क्रि० धान्यवृक्षादिक पंक्तिकेँ पृथक करब ।
**बीहरि**–बिल ।
**बुकनी**–चूर्ण ।
**बुकब**–क्रि० चूर्ण करब ।
**बुकौर लागब**–क्रि० रोदनादिसँ कण्ठक रुद्धताप्राप्ति ।
**बुचकट**–कनकट्टा (चैलप्रभृति) ।
**बुच्च**–घोकचल अल्पावकाशक (कान)।
**बुझब**–जानब ।
**बुझनुक**–विशेष बोद्धा ।
**बुझारति**–वादीप्रतिवादीसँ विषयक अवगम ।
**बुट्टी**–बूट, काटल वृक्षक सीर लागल खण्ड १ । मांसक खण्ड २ ।
**बुड़ब**–क्रि० जलमे मग्न होएब १ । नष्ट होएब २ ।

**बुड़ित्व**–मूर्खता, बुड़िबकी ।
**बुड़िधनहा**–उ० निन्द्य अनादरणीय बूड़ि।
**बुड़िपन**–ज्ञानशून्यता १। बूड़िक क्रिया २ ।
**बुड़िबक**–ज्ञानशून्य ।
**बुड़िबकहा**–उ० अनाद्रियमाण बूड़ि । स्त्री० बुड़िबकही ।
**बुड़िबकी**–ज्ञानशून्यता १ । बूड़िक क्रिया २ ।
**बुड़िभतन**, **बुड़िसुण्ठी** }–ज्ञानशून्य ।
**बुढ़पन**, **बुढ़ारी** }–वार्द्धक्य ।
**बुढ़िन**–स्त्री० अनादरणीय वृद्धा ।
**बुढ़िआ पाखरि**–धान्यविशेष ।
**बुढ़ोन**–वृद्धसदृश ।
**बुतेँ**–अ० बलेँ, यत्नेँ ।
**बुत्त**–मदमत्त ।
**बुत्ता**–बल ।
**बुद्धि**–सं० ज्ञान ।
**बुद्धिमान्**–सं० बुद्धिशाली ।
**बुध**–सं० दिनविशेष, रविस चारिम दिन ।
**बुधिआर**–उ० बुद्धिमान् । स्त्री० बुधिआरि ।
**बुधिआरी**–बुद्धिमत्ता ।
**बुधिबधिआ**–छलसँ अनका द्वारा अपना हेतु बाछाक अण्डच्छेद कराएब ।
**बुनका**, **बुनकी** }–बिन्दु ।
**बुनछेक**–वर्षाबिन्दुक विच्छेद ।
**बुनब**–क्रि० बीजवपन ।
**बुनबुना**–बुद्बुद् ।
**बुनबुनाएब**–क्रि० बुनबुन्+अब–बुद्बुद्-युक्त होएब ।
**बुनिआ**–लड्डू मुँगबा प्रभृतिक हेतु बुन्दक सन गोल गोल घृतपक्व खाद्य ।
**बुनिआएब**–ना० बुन्नी छोड़ब, मन्द-मन्द वृष्टि होएब ।
**बुन्द**, **बुन्दा** }–बिन्दु ।
**बुन्न**, **बुन्नी** }–जलबिन्दु ।
**बुलब**–क्रि० पर्यटन ।
**बुलाकी**–नासाभूषणविशेष ।
**बूकब**–क्रि० बुक्+अब–चूर्ण करब ।
**बूझ**–बोध ।
**बूझब**–क्रि० बुझ्+अब–जानब ।
**बूझब-सूझब**–क्रि० जानब सूनब-प्रभृति।
**बूझि**–बुद्धि ।
**बूट**–बुट्टी, काटल वृक्षक सीरबाला खण्ड १। हि० बदाम, अन्नविशेष २ ।
**बूटी**–औषधरूप डारिक खण्ड ।
**बूड़ब**–क्रि० बुड्+अब–नष्ट होएब ।
**बूड़ि**–ज्ञानशून्य ।
**बूढ़**–उ० वृद्ध । स्त्री० बूढ़ि ।
**बूनब**–क्रि० बुन्+अब–बीआ छीटब ।
**बूलब**–क्रि० बुल्+अब–टहलब ।
**वृत्तान्त**–सं० वार्त्ता ।
**वृत्ति**–सं० व्यवहार १ । जीविका २ ।
**वृद्ध**–सं० जराप्राप्त ।
**वृद्धप्रपतिमाह**–पुं० प्रपितामहक पिता ।
**वृद्धप्रपितामही**–स्त्री० प्रपितामहक स्त्री० ।
**वृद्धप्रपौत्र**–उ० प्रपौत्रक अपत्य । स्त्री० वृद्धप्रपौत्री ।
**वृद्धप्रमातामह**–पुं० प्रमातामहक पिता ।
**वृद्धप्रमातामही**–स्त्री० प्रमातामहक माता ।



**वृहत्**–सं० पैघ ।
**वृहस्पति**–सं० गुरुवार ।
**बेआलिस**–द्वाचत्वारिंशत् ।
**बेआलिसम**–द्वाचत्वारिशत्तम ।
**बेइमान**–वि० स्वार्थवश मिथ्या-व्यवहर्ता ।
**बेओरा**–उपाय ।
**बेकछाएब**–क्रि० बेकछब्+अब–व्यक्त करब ।
**बेकति**–व्यक्ति ।
**बेकार**–निष्क्रिय, अकार्यक ।
**बेकाली**–दूर जाए अँगने-अँगने क्रय-विक्रयकर्त्ता ।
**बेख**–नाना वृक्ष ।
**वेग**–सं० तीव्र गति ।
**बेगरता**–व्यग्रता ।
**बेगरताशान्ति**–व्यग्रताक उपशम ।
**बेगरतित**, **बेगरतू** }–व्यग्रतायुक्त ।
**बेगार**–भारवाहक ।
**बेगारी**–भारवहन, बेगारक कर्म ।
**बेङ**–भेक, मण्डूक ।
**बेङची**–बेङक बच्चा ।
**बेच**–लवणादिक्रयणमे मूल्यस्थानापन्न अन्न ।
**बेचब**–क्रि० विक्रय ।
**बेचब-बिकिनब**, **बेच-बिकिन** }–क्रयविक्रय ।
**बेचारा**–दीन, अप्रतिम (परोक्ष चर्चा मे)
**बेजाए**–अ० अधलाह, असम्यक् ।
**बेजान**–अ०वि० प्राणपातानपेक्ष ।
**बेञ्च**–वि० बैसबाक लम्बा कुरसी ।
**बेँट**–अस्त्रमे पकड़बाक हेतु लगाओल डण्टा (खुरपी कोदारि कुड़हरि आदिमे) ।
**बेटा**–पुं० पुत्र ।
**बेटी**–स्त्री० पुत्री ।
**बेठ**–बेगार ।
**बेड़ी**–शृङ्खला ।
**बेडोल**–बेढब, कुत्सिताकारक ।
**बेढ़**–वेष्टन ।
**बेढ़ब**–क्रि० वेष्टन ।
**बेढ़ी**–वेष्टन ।
**बेँत**–वेत्र, लताविशेष ।
**बेतहा**, **बेतही** }–वेत्रनिमित (तराजूक पल्ला प्रभृति) ।
**बेताक**–कुताक ।
**बेतासा**–व्याकुल ।
**बेँती नमब**–क्रि० पीठ भूमि दिस कए हाथ-पाएर भूमिमे रोपि धनुषाकार नमब ।
**बेतुकार**–अपमानशब्द कथन, रेकारसँ बाजब ।
**बेत्रेक**–अ० बिना ।
**बेथा**–व्यथा ।
**बेधुनि**–असंज्ञ ।
**बेन**–पठाओल पाबनिक बखरा ।
**बेनमा**–दुःखी ।
**बेना**–ब्योना, क्रयविक्रयमे स्थिरताक हेतु प्रथमतः थोड़ेक देल मूल्य ।
**बेनामक**, **बेनामा** }–बिना नामक (पत्रादि) ।
**बेपर्द**–वि० आवरणशून्य ।
**बेपारी**–व्यापारकारी (बनिआँ आदि) ।
**बेबसाए**–व्यवसाय, परिश्रम ।

**बेबसायी**–व्यवसायी ।
**बेबा**–स्त्री० विधवा ।
**बेबाइल**, **बेबालि** –वृथाव्यय ।
**बेबूझ**–बुद्धिहीन ।
**बेमार**–वि० अस्वस्थ, रोगी ।
**बेर**–आवृत्ति (यथा 'दू बेर, तीन बेर') १ । अवसर (यथा 'बेरमे अएलहुँ') २ । दिनक चतुर्थ पहर (यथा 'बेरखन आएब') ३ ।
**बेर उठब**–क्रि० दिन उटब, सूर्यकें उदयस्थानसँ दूर आएब ।
**बेरबाद**–वृथा खर्च, नष्ट ।
**बेरमा**–छिद्र करबाक यन्त्रविशेष ।
**बेरहट**–बेरुक पहरक खाद्य ।
**बेराएब**–क्रि० बेरब्+अब–पृथक् करब ।
**बेराओल**–पृथक् कृत ।
**बेरागन**–शूद्रादिक पूजापाठ करबाक नियत दिन ।
**बेराबेरी**–अ० पर्य्यायेण ।
**बेरुक**–दिनक चारि मपहरमे होएनिहार (कार्यादि) ।
**बेरुका पहर**–दिनक चारिम पहर ।
**बेरेक**–अ० कदाचित् ।
**बेल**–बिल्व ।
**बेलओना**–मत्स्यविशेष ।
**बेलकठ**–बेलक गाछक काठ ।
**बेलगान**–करशून्य (भूमि) ।
**बेलचा**–खुरपीक आकारक दीर्घ हथिआर।
**बेलतोड़ी**–बेलक तोड़नाइ ।
**बेलदार**–उ० माटि कटनिहार जातिविशेष । स्त्री० बेलदारनी ।
**बेलना**–रोटी बेलबाक साधनविशेष ।
**बेलनोती**–बित्वाभिमन्त्रण, दुर्गा शारद-पूजाक एक कर्म्म ।
**बेलपात**–बिल्वपत्र ।
**बेलब**–क्रि० बेलनाक व्यापार, आधार पर आँटाक गुलिआ पसारब ।
**बेलसि**–निःसत्व ।
**बेलसूँठि**–काँच बेलक सुखौती ।
**बेला**–बेलीफूलक प्रभेद १। वाद्यविशेष २ ।
**बेली**–मल्लिका, पुष्पविशेष ।
**बेलौना**–मत्स्यविशेष ।
**बेस**–अ० स्वीकार १। साधु (क्रिया-विशेषणमे) २ ।
**बेसकिमती**–हि० बहुमूल्य ।
**बेसन**–तीमन मिष्टान्न आदिमे देबाक तण्डुलादिचूर्ण ।
**बेसबाहा**–उत्तम प्रकारक ।
**बेसरि**–नासाभूषणविशेष ।
**बेसरोकार**–वि० असम्बन्धी ।
**बेसाती**–देशान्तरसँ आबि वस्तु विक्रेता ।
**बेसाह**–भोजनार्थ अन्नक्रयण ।
**बेसाहब**–क्रि० बेसाह्+अब–भोजनार्थ अन्न कीनब ।
**बेसुधि**–असंज्ञ, अनवधान ।
**वेश**–सं० भेस, स्वरूप ।
**बेहरी**–चन्दा ।
**बेहला**–अलि० बरिआतीक मङ्गलार्थ घटधारीक समूह ।
**बेहलबाँट**–बेहलाकें द्रव्यक बाँट ।
**बेहाया**–वि० निर्लज्ज, दुर्निवार ।
**बेहाल**–वि० व्यग्र ।
**बेहोस**–वि० चैतन्यहीन ।



**बेहोसी**–चैतन्यहीनता ।
**बैगन**–वि० भाटा, वार्त्ताकी ।
**बैगनी**–रङ्गक प्रभेद ।
**बैठक**–बैसक, बैसबाक पीठ ।
**बैठा**–धोबिक उपाधि ।
**बैठाड़**–बैसबाक नियत स्थान ।
**बैद**–वैद्य ।
**बैदगिरी**–वैद्यक काज ।
**वैदिक**–सं० अधीतवेदक ।
**बैमान**–वि० स्वार्थवश धर्मत्यागी ।
**बैमानी**–वि० स्वार्थवश धर्म्मत्याग, अधर्म्म ।
**वैर**–सं० शत्रुता ।
**बैरागी**–विरक्त, बाबाजी ।
**बैरि**–बदर, फलविशेष ।
**बैरी**–सं० शत्रु ।
**बैलाएब**–क्रि० बैलब्+अब–निष्काशन ।
**वैशाख**–सं० मासविशेष ।
**वैश्य**–सं० तृतीय वर्ण ।
**बैस**–वैश्य, जातिविशेष ।
**बैसक्खा**–वैशाखसम्बन्धी (अन्न) ।
**बैसक**–बैठक, बैसबाक पीठ ।
**बैसब**–क्रि० उपवेशन ।
**बैसबनिआँ**–जातिविशेष ।
**बैसाड़**–नित्य बैसबाक स्थान ।
**बैसाड़ी**–निष्क्रियता ।
**बोअब**–क्रि० बो+अब–बीजवपन ।
**बोआर**–पैघ बोआरी ।
**बोआरी**–पाठीन, मत्स्यविशेष ।
**बोकरब**–क्रि० वमन ।
**बोकार**–वमन १। वमनमे बहराएल विकार २ ।
**बोकिएब**–क्रि० बोकि+अब–बो बो शब्द करब ।
**बोकैआ**–धान्यविशेष ।
**बोको**–पृष्ठवाह्य यान ।
**बोकड़ा**–अधिक बएसक छागर ।
**बोच**–जलीय जन्तुविशेष ।
**बोझ**–जुन्नासँ बान्हल तृणादिपुञ्ज ।
**बोझा**–उघबाक भार ।
**बोट**–वि० यन्त्रयुत नौका ।
**बोड़ा**–अन्नविशेष ।
**बोड़ी**, **बोँड़ी** –कटनिहार विषयुक्त जन्तुविशेष ।
**बोतू**–विना बधिआ कएल अशिशु छाग ।
**बोदरि**–धान्यविशेष ।
**बोन**–वन ।
**बोनाएब**–क्रि० बोन्+अब–आम्रफलक परिपाकक पूर्वरूप प्राप्त करब ।
**बोनि**–दैनिक वेतन ।
**बोनि-चूकब**–बोझसँ कटबाक बोनि देब ।
**बोंबिआएब**–ना०बोंब+अब–हाथीक बोँ बोँ शब्द करब ।
**बाभिआएब**–ना० बोबि+अब– बाँबिआएब।
**बोर**–माछ मारबाक हेतु बनसीमे देल खाद्य १ । अमट बनएबामे देबाक आमक रस २ ।
**बोरब**–क्रि० घोरल रङ्गमे डुबाएब ।
**बोरसि**–माटिक अगिनपात्र ।
**बोरा**–गोणी ।
**बोल**–वाणी, शब्द ।
**बोल फूटब**–क्रि० वाणी स्फुट होएब ।
**बोली**–पक्षी आदिक बाजब १ । मनुष्यभाषा २ ।

**बोली देब**–क्रि० टिटकारी देब, अनुचित प्रोत्साहन करब ।

**बोह**–अधिक जलप्रवाह ।

**बोहनि**–प्रात:कालक प्रथमविक्रयसँ लाभ ।

**बोहाएब**–क्रि० बोह्+अब–जल-प्रवाहमे भसिओएब, नष्ट करब ।

**बौआ**–बालक (कोमलालापमे) ।

**बौआएब**–क्रि० बौ+अब–भोतिआएब ।

**बौआसिनि**–स्त्री० बहुवासिनी, पुत्रवधू-प्रभृति ।

**बौक**–मूक ।

**बौड़ी**–पलचतुर्थांश ।

**बौसब** / **बौँसब** } –क्रि० रुष्टतापनोदन करब ।

**व्यक्ति**–लोक ।

**व्यक्तिताराए**–व्यक्तित्व, सत्यत्वा-दित्वगुणयुक्तता ।

**व्यक्तित्व**–व्यक्तिताराए ।

**व्यग्र**–सं० आकुल ।

**व्यग्रता**–सं० बेगरता, आकुलीभाव ।

**व्यतीत**–सं० बीतल ।

**व्यथा**–सं० पीड़ा, वेदना ।

**व्यवस्था**–सं० निर्णय ।

**व्यवहार**–सं० लौकिकक्रिया ।

**व्यर्थ**–सं० वृथा ।

**व्याकुल**–सं० दु:स्थित ।

**व्याधि**–सं० रोग ।

**ब्योँत**–प्रबन्ध ।

**ब्योँतब**–क्रि० प्रबन्ध करब ।

**ब्योना**–क्रयणमे स्थिरताक हेतु क्रयणसँ पूर्व देल थोड़ेक मूल्य ।

**ब्योरा**–उपाय ।

**ब्रह्मपत्र**–पुराणादिक अबद्ध पत्र ।

**ब्रह्मा**–विधि ।

**ब्राह्मण**–सं० विप्र ।

## भ

**भओक**–बसातक घूमिकेँ गतायात ।

**भओगर**–अधिक भाओसँ आदेय ।

**भओना करब**–क्रि० क्रन्दनविशेष ।

**भक**–किञ्चित् अँखिझप्पी ।

**भकइजोत**–अत्यल्प दीपादिक प्रकाश ।

**भक खाएब**–क्रि० किञ्चित् भ्रममे पड़ब।

**भकचक**–विस्मय ।

**भकचब**–क्रि० अनुपयोगी लेखसँ दूरि करब ।

**भकड़ब**–क्रि० तण्डुलादिक नि:सार होएब ।

**भकड़ा**–धानकेँ सड़ाए बनाओल (चाउर) ।

**भकड़ार**–समन्तात् प्रफुल्लित ।

**भकजोगनी**–खद्योत, ज्योतिरिङ्गण ।

**भकभक करब**–क्रि० कटु वेदनाविशेष ।

**भकभकाएब**–भकभक्+अब–कटुवेदना-विशेष ।

**भक लागब**–क्रि० जाग्रदवस्थामे किञ्चित् निद्रागमवशात् वा मद्यवशात् अज्ञानताप्राप्ति ।

**भकसी झोँकब**–क्रि० सर्वथा उच्छिन्न करब ।

**भकुआ**–धानक अधिक भिजबाक कारण गन्धयुक्त (उसिना चाउर) ।

**भकुआएब**–क्रि० भकु+अब–निद्राभङ्गा-दिवशात् अप्रसन्नता ।

**भकुरमुह**–उ० भाकुर माछसन चाकर मुहबाला ।



**भकोभण्ड**–अरक्षित, यत्रकुत्र अयथोचित स्थित ।

**भखब**–क्रि० भाषण ।

**भखिऔटी**–भाषाक प्रयोग ।

**भँगतराह**–विक्षिप्तप्राय, बाधायुक्त, असूद्धर ।

**भगता**–जकरा देहमे देवता आबथि ।

**भगन्दर** / **भगन्नर** } –भगन्दर, रोगविशेष ।

**भगबा**–कौपीन ।

**भगवान्**–ईश्वर ।

**भँगरिआ**–भृङ्गराज, ओषधिविशेष ।

**भगिनजमाए**–भगिनीक जमाए ।

**भगिनपुतोहु**–बहिनिक पुत्रस्त्री ।

**भगिनमान**–भागिनेयत्वेन मानार्ह ।

**भगिनी**–स्त्री० भागिनेयी, बहिनिक कन्या ।

**भङघोटा**–भाङ घोटबाक पात्र ।

**भङठाह**–बाधायुक्त, जाहिमे भाङठ हो ।

**भङठी**–मरम्मति ।

**भङपीबा**–अधिक भाङ पिनिहार ।

**भङतराह**–असूद्धर, बाधायुक्त, विक्षिप्तप्राय।

**भङरिआ**–भृङ्गराज, ओषधिविशेष ।

**भङेड़ी** / **भङेरी** } –अधिक भाङ पिनिहार ।

**भङ्ग**–रहस्य, निर्माणप्रकार ।

**भजन**–सं० भगवन्नामकीर्तन, भगवद्गीतगान १ । भगवत्सेवा २ ।

**भजनिआ**–भगवद्गीतगायक ।

**भजब**–क्रि० भज्+अब–स्वसमानमूल्यक अनेक लघुमुद्रासँ परिवर्तित होएब ।

**भजाएब**–क्रि० भजब्+अब–स्वसमान-मूल्यक अनेक लघुमुद्रासँ परिवर्तित करब ।

**भजार**–अनुरूपताक जाँच ।

**भजारब**–क्रि० भजार्+अब–अनुरूपताक जाँच करब ।

**भँजिआएब**–ना० भाँजि+अब–भाँजि ताकब ।

**भञ्जीत**–भजाओल छोट मुद्रासभ ।

**भट**–भट्ट, पेटक गरेँ भूस्थित (कपर्दकादि) ।

**भटकब**–क्रि० किञ्चिन्मात्र प्रत्यभिज्ञा करब ।

**भटका**–बजारब, बजरा ।

**भटपुरैनि**–पुरैनिक पातसन पातबाला ओषधिविशेष ।

**भटबड़(र)**–तरल भाटाक चक्का ।

**भटभेर**–पाकमे अशुद्धिसम्बन्ध ।

**भटमाह**–उ० जकर जेठ मरि गेल छैक से (व्यक्ति) । स्त्री० भटमाहि ।

**भटरङ्ग**–जाहिमे रङ्ग क्वचित् कम हो से (वस्त्रादि) ।

**भटाक दए**–अ० 'भट' शब्द पूर्वक ।

**भटौड़ी**–भाण्टाकीवटी (व्यञ्जनमे देय)।

**भट्टा**–भण्टाका ।

**भट्ठा**–भाठा, कुम्हरौट माटिक लेखनी १ । पाकार्थ पुञ्जीकृत इष्टकासमुदाय २ । अप्रधान स्थान ३ ।

**भट्ठी**–मद्यालय ।

**भठिआर** / **भठिआरी** } –भाठि दिस, जेमहर नदीक प्रवाह जाय १ । अप्रधान स्थान २ ।

**भठोत्तर**–भाटकेँ देल (भूमि)।
**भड़कब**–क्रि० मालक भयसँ पड़ाएब।
**भड़कताली**–मिथ्याभयप्रदर्शन।
**भड़की देब**–क्रि० भयप्रदर्शन करब।
**भँड़(भण)कुस्सा**, **भँड़(भण)कूस** –चूरचूर भेल, बहुत फूटल।
**भँड़(भण)छूह**, **भँड़(भण)छूहा** –जिह्वालोलुपताप्रयुक्त खएबामे विचार नहि कएनिहार।
**भड़हर**–धसना खसलासँ निम्न भूमि।
**भँड़ (भण) हर**–मृद्भाण्ड फेकबाक भूमि।
**भँड़ा(भणा)र**–भाण्डागार।
**भँडा(भणा)रकोन**, **भड़ा(भणा)रकोनी** –वायव्यकोण।
**भँड़ा(भणा)री**–भाण्डागारमे नियुक्त (व्यक्ति)।
**भँड़ु (भणु)आ**–देश्याक दलाल, कुत्सितकार्यकर्त्ता।
**भँड़े(भणे)र**–अधिक मृद्भाण्डक स्थान।
**भण्डा**–रहस्य।
**भण्डाफोड़**–रहस्योद्घाटन।
**भण्डार**–वस्तुस्थापनागृह।
**भण्डारा**–बाबाजीक मोज।
**भण्डारी**–भाण्डागारमे नियुक्त (पुरुष)।
**भण्डारी कोन**–वायव्यकोण।
**भतखइ**, **भतखै** –भात खएबाक व्यवहार।
**भतबरी**–असौजन्य, परस्पर भात खएबाक व्यवहारक निवृत्ति।
**भतभुल्लुक**–अरत्यन्तभक्तप्रिय (निन्दामे)।
**भतरासि**–एक पाबनि।
**भतरोइँ**, **भतरोइआँ** –अत्यन्त छोट रोम।
**भतलोह**–मृदु लोह।
**भतार**–भर्त्ता, स्वामी।
**भतिजी**–स्त्री० भ्रातृजा।
**भतोल**–बूड़ि, मूढ़।
**भत्ता**, **भत्ती** –डोरीक गुण।
**भथिहान**–वस्तिस्थान।
**भदइ**–भदै, मादबमे होनिहार।
**भदबा**–श्रवणादि रेवत्यन्त।
**भदबारि**, **भदबारी** –भाद्र ओ तत्प्रान्त समय।
**भदरसोख**–भादबक सुखाएल खेत।
**भदेस**–अधलाह देश।
**भदै**–भाद्रभव (अन्न)।
**भनकब**–क्रि० कर्णपरम्परया किञ्चित् प्रकाशित होएब।
**भनकी**–कर्णपरम्परया किञ्चित् प्रकाश।
**भनब**–क्रि० वर्णन।
**भनभनाएब**–क्रि० भनभन्+अब–मन्द मन्द अस्पष्ट शब्द बाजब।
**भनभनी**–मन्दमन्द अस्पष्ट शब्द।
**भनसाघर**–महानसगृह।
**भनसार**–महानसागार।
**भनसिआ**–पाककर्त्ता।
**भनिता**–गीतमे कविनामोल्लेख।
**भने**–अ० उत्तम रीतिसँ।
**भफाएब**–ना० भफ्+अब–वाष्पोद्गमन।
**भबब**–क्रि० मन:पूत होएब।
**भभक**–दौर्गन्ध्य।
**भभकब**–क्रि० दौर्गन्ध्यप्रकाशन।



**भभठपन**–आग्रह, दुराग्रह।
**भभठिआ**–दुराग्रही।
**भभरब**–क्रि० विदीण भए खसब।
**भभाएकेँ खसब**–क्रि० सशब्द खसब।
**भभाएकेँ हँसब**–क्रि० सशब्द हँसब।
**भभाएब**–क्रि० पतनजन्य शब्दधारा।
**भमरा**–भ्रमर १। पानि बहबाक हेतु बनाओल वर्तुल पूलक अवयव २।
**भय**–स० डर, भीति।
**भयोन**–भयावह।
**भर**–अवलम्ब।
**भरकछ**–बद्धकच्छता।
**भरकुस्सा**–आघातसँ पूर्ण चूरल गेल।
**भरखरि**–पर्याप्त (फलक पाकब)।
**भरगर**–सावलम्ब।
**भरती**–नियुक्त १। भरल २।
**भरदुतिआ**–भ्रातृद्वितीया।
**भरथा**–पक्षिविशेष।
**भरदूआ**–भारद्वाज, पक्षिविशेष।
**भरन**–निम्न स्थलमे बाढ़िसँ माटिक पूर्णता।
**भरना**–ऋणक आदाए पर्यन्त सूदिमे देल (भूमि)।
**भरनि**–निम्नमे बाढ़िसँ मृत्पूर्णता।
**भरनी**–वस्त्र बिनबामे तिर्यक् सूत्र।
**भरब**–क्रि० पूर्ण करब।
**भरम**–भ्रम।
**भरमब**–क्रि० किञ्चिन्मात्र निद्रायुक्त होएब।
**भरसह**–भारवहनमे सहायता देब।
**भरसाहा**–भार सहनिहार स्तम्भविशेष।
**भराइ**–भरब, पूर्ण करब।
**भराएब**–क्रि० भरब्+अब–पूर्ण कराएब।
**भराठ**–माटि दए समतल कएल (भूमि)।
**भरि**–अ० परिमाण (यथा 'एक भरि, मन भरि') १। यावत्, पर्यन्त (यथा 'भरि दिन, दिन भरि' २। पूर्णता (यथा 'भरि घैल भरि पेट') ३।
**भरिआ**–भारबाह।
**भरिआएब**–ना० भारी+अब–गुरुभूत होएब।
**भरिगर**–अधिक भारसँ युक्त, ओजनमे गुरुतर।
**भरि पाएर**–अ० पादानुरूप (गमन)।
**भरि पोख**–अ० शक्त्यनुसार।
**भरिसक**–अ० यावच्छक्ति १। प्राय: २।
**भरुआ**–भीजल धानकेँ भूजिकेँ बनाओल (चाउर)।
**भरेठ**–माटि दए भरल।
**भरोस**–भरवश, आशा।
**भल**–उत्तम, नीक (हुनका भल होइन्हि)।
**भलमनसात**–उत्तम मनुष्यक क्रिया।
**भलमन्दा**–ने नीक ने अधलाह, मध्यम।
**भलमानुस**–उत्तम व्यक्ति, नीक लोक।
**भसब**–क्रि० भसिआएब, प्रवाहवश भाठि दिसि गमन।
**भसम**–भस्म।
**भसाठ**, **भसाठी** –जलमे भसिकेँ आएल माटि।
**भस्म**–सं० छाउर।
**भहुँ**–भ्रू।
**भाइ**–भाए, भ्राता।
**भाउजि**–स्त्री० ज्येष्ठभ्रातृवधू।
**भाउली**–ओ जमीन जाहिमे आधा मालिकक ओ आधा रैअतिक अंश हो।
**भाए**–भ्राता।

**भाओ**–विक्रयमूल्यव्यवस्था ।
**भाकुर**–मत्स्यविशेष ।
**भाखब**–क्रि० भख्+अब–भाषण ।
**भाग**–अँश १ । विभाजन २ ।
**भाँग( भाङ )**–विजया ।
**भाँग( भाङ )ठ**–बाधा, विलम्ब ।
**भाँग( भाङ )ब**–क्रि० भँग्( भङ )+अब–खण्ड करब ।
**भागमन्त**–उ० उत्कृष्टभाग्यशाली । स्त्री० भागमन्ति ।
**भागिन**–उ० मागिनेय । स्त्री० भगिनी ।
**भागी**–सं० सम्बन्धी ।
**भाग्य**–स० नीक अदृष्ट ।
**भाँज**–भाँजब ।
**भाँजब**–क्रि० भँज्+अब–हाथसँ उठाए घुमाएब १। कौड़ीसभकेँ हाथमे लए माटिमे खसाएब २ ।
**भाँजि**–गमनागमनचिह्न ।
**भाट**–भाठ, मागध, कबित्तपाठक जातिविशेष ।
**भाँटा**–वार्त्ताकी ।
**भाँटि**–क्षुपविशेष ।
**भाठ**–से दिशा जेमहर नदीक प्रवाह जाए १। अप्रधान स्थान २। मागध ३ ।
**भाठा**–भूमिमे लिखबाक कुम्हरौट माटिक शलाका १। पाकार्थ इष्टकासमूह २।
**भाठि**–नदीमे प्रवाह जाहि दिसि जाए से (भूमि) ।
**भाँड़**–जाहिमे पाक कएल जाए से मृद्‌भाण्ड ।
**भाँड़ बहराएब**–क्रि० मालक गर्भाशय बहराएब ।

**भात**–भक्त, सिद्ध तण्डुल ।
**भातमसाला**–तृणविशेष ।
**भातिज**–उ० भ्रातृज । स्त्री० भतिजी ।
**भाथि** / **भाथी** } –मस्त्रा ।
**भादब**–भाद्रपद (मास) ।
**भानस**–महानस, भोजनार्थ पाक ।
**भाफ**–वाष्प ।
**भाफब**–क्रि० भफ्+अब–वाष्प युक्त करब ।
**भाव**–स० अभिप्राय ।
**भावना**–सं० मानसविचार ।
**भाबहु**–स्त्री० भावी, भविष्यमे होएनिहार ।
**भाभट** / **भाभठ** } –दुराग्रह ।
**भाभरी**–पौरुषवचनसँ भयप्रदर्शन ।
**भाभंस**–अभ्युदय ।
**भाय**–भाए, भ्राता ।
**भार**–सं० दाब, भारी वस्तुक आक्रान्ति १। वहनीय वस्तुसँ भरल दू सीकसँ युक्त स्कन्धवाह्य वंशदण्ड २ ।
**भारतवर्ष**–स० हिन्दुस्तान ।
**भारदोर**–भार-बेन-प्रभृति ।
**भारब**–क्रि० भार्+अब–भीजल धानकेँ भूजब ।
**भारा**–वरण १ । यानादिक वेतन २ ।
**भारी**–गुरुभूत ।
**भालरि**–सम्पूर्ण केराक पात ।
**भालसरी**–बकुल ।
**भाला**–भल्ल, भोकबाक अस्त्रविशेष ।
**भास**–स्वर ।
**भासब**–क्रि० भास+अब–प्रवाह वश गमन १ । गृहादिक झुकब २ ।



**भिखमँग( मङ )नी**–स्त्री० भिक्षा मँगनिहारि ।
**भिखमङ्ग** / **भिखारि** } –पुं० भिक्षा मँगनिहार ।
**भिजब**–क्रि० आर्द्र होएब ।
**भिड़गर**–लोकसङ्कुल १। श्रमसाध्य २ ।
**भिड़न्त**–मुठभिराओ, साम्मुख्य ।
**भिँड़िआएब** / **भिणिआएब** } –ना०भीड़ीँ+अब–भीँड़ी बनाएब, मोड़ि मोड़ि एकत्रित करब जाहिसँ ओझराए नहि।
**भितघर**–माटिक भित्तिबाला घर ।
**भितर**–अभ्यन्तर ।
**भितरपेन**–जकर जड़ि गृहादिक भीतर झुकल हो से (खाम्ही) ।
**भितरिआ**–आभ्यन्तरिक ।
**भितरी**–आभ्यन्तर ।
**भिनकब**–क्रि० भात आदिमे माछीक सम्बन्ध होएब ।
**भिनभिनाएब**–क्रि० भिनभिन्+अब–मन अश्रद्धायुक्त होएब ।
**भिनसर**–प्रातः काल ।
**भिनसरबा( बी )राति**–उषःकाल ।
**भिनसरुक** / **भिनसरुका** } –प्रातःकालिक ।
**भिनाओज**–विभक्तता ।
**भिरगर**–भिड़गर, संकुल १। श्रमसाध्य २ ।
**भिरब**–क्रि० संयुक्त होएब ।
**भिलबा**–उ० अनादरणीय भिल्ल । स्त्री० भिलबी ।
**भिल्ल**–सं० उ० वन्य लोक । स्त्री० भिलनी ।

**भिसिण्ड**–अतिविशाल (निन्दामे) ।
**भिहगर**–लम्बा-चओड़ा देहबाला ।
**भीख**–भिक्षा ।
**भीखन**–भीषण, भयावह ।
**भीजब**–क्रि० भिज्+अब–आर्द्र होएब ।
**भीठ**–धनहरसँ आन (खेत) ।
**भीड़**–लोकसमुदाय ।
**भीँड़( भीण )**–पोखरिक उच्च मोहार ।
**भीँड़ी( भीणी )**–भिँड़िआओल (डोरी)।
**भीत**–कुड्य, भित्ति १। सं० भययुक्त २।
**भीतर**–अभ्यन्तर ।
**भीर**–भार, परिश्रम ।
**भीरब**–क्रि० भिर्+अब–संयुक्त होएब ।
**भील**–भिल्लजाति ।
**भुअङ्गर**–फटफटार, स्पष्ट देखार (चानन आदि) ।
**भुइआँ**–भूमि ।
**भुइँहार**–उ० भूमिहार ब्राह्मण ।
**भुकनी लागब**–क्रि० वारंवार एके बात कहब ।
**भुकब**–क्रि० कुकुर-गिदड़क बाजब ।
**भुकरी**–तृणविशेष ।
**भुखल**–बुभुक्षित ।
**भुच्च**–ज्ञानहीन ।
**भुजब**–क्रि० भर्जन ।
**भुजबन्द**–भूषणविशेष ।
**भुजबी**–काँच आम्रादिक बिनु चिबओनहु खएबाक योग्य मेही-मेही खण्ड ।
**भुजाली**–दबिला, कटबाक उपकरण-विशेष।
**भुटकब**–क्रि० रोमाञ्चयुक्त होएब ।
**भुटका**–मोट ओ कम लम्बा (मेरिचाइ आदि) ।

**भुटाड़ि** } –अधिक भुट्ट, वामन ।
**भुटाढ़ि**

**भुट्ट**–उ० वामन । स्त्री० भुट्टि ।

**भुड़रब**–क्रि० साक्षात् आगिमे लवङ्गादिक ईषत् पाक ।

**भुड़भुरी**–कीटोत्खात् छोट-छोट मृत्खण्ड -पुञ्ज ।

**भुड़रा**–साक्षात् अग्निमे अतिपक्क ।

**भुड़ुकबा**–रात्रिशेषमे उगनिहार पैघ ताराविशेष ।

**भुण्डी**–कतोक गहनामे लटकल गोल अवयव १ । अङ्गाक मून्हीमे पैसएबाक गोल नूआ २ ।

**भुतखापड़ि**–अलच्छ ।

**भुतसप्पा**–सर्पस्वरूप भूत ।

**भुताहि**–भूतयुक्त (गाछी) ।

**भुनचट्टी**–भुन्नी, मत्स्यविशेष ।

**भुन्ना**–मत्स्यविशेष ।

**भुन्नी**–मत्स्यविशेष ।

**भुमफोड़**–भूमि फाड़ि बहराएल ।

**भुमहुर**–सूक्ष्म-सूक्ष्म बह्निकणयुक्त तप्त छाउर ।

**भुरकुस्सा**–अनेक खण्ड भए फुटल ।

**भुरचुङ्गा**–छोट सुकाठक स्तम्भमे पैसाओल बाँस ।

**भुरभुरी**–भुरभुड़ी, गोमयादिमे कीटकृत मृत्कणपुञ्ज ।

**भुररी**–चूर्ण, भुड़री ।

**भुरसी**–भूयसी दक्षिणा ।

**भुल्ल**–उ० लालिमायुक्त उजरीधबल (केश) १। तद्युक्त (महिसाप्रभृति) २ । स्त्री० भुल्लि ।

**भुल्ला**–मत्स्यविशेष ।

**भुसकाँड़**–भुस्सी रखबाक घर ।

**भुसकौल**–अध्ययन कएनहु मूर्ख, असंस्कारी ।

**भुसखार**–भुस्सा रखबाक घर ।

**भुसबा**–मिष्टान्न विशेष ।

**भुसभुसाह**–दबला उत्तर फूटि गेनिहार ।

**भुसहन**–साधारण भूसाबाला खाद्यान्न ।

**भुसहा** } –भुस्सासँ युक्त ।
**भुसाह**

**भुस्सा** } –बुस, अन्नक तुष ।
**भुस्सी**

**भूकब**–क्रि० भुक्+अब–कुकुरगिदरक बाजब ।

**भूकमल**–स्थलकमल ।

**भूकम्प**–सं० भूमिक डोलब ।

**भूकुम्हड़ा**–भूकूष्माण्ड, ओषधिविशेष ।

**भूख**–बुभुक्षा ।

**भूखल**–बुभुक्षित ।

**भूचाप**–पुष्पविशेष ।

**भूजब**–क्रि० भुज्+अब–भर्जन ।

**भूजा**–भृष्ट, भूजल (खाद्य) ।

**भूत**–सं० देवयोनिविशेष, प्रेत ।

**भूताक्षर**–भूतलिखित आखर, पढ़बाक अयोग्य अक्षर ।

**भूतांसए**–भूतावेश ।

**भूमि**–सं० धरित्री ।

**भूमिहार**–सं० भुइँहार, ब्राह्मण विशेष ।

**भूर**–बिल ।

**भूरभार**–विलादि ।

**भूरा**–चीनीक प्रभेद १। रङ्गक प्रभेद २ ।

**भृङ्ग**–सं० कीटविशेष १। शाकविशेष २।



**भृङ्गी**–पक्षिविशेष १ । वाद्यविशेष २ ।

**भेख**–वेष ।

**भेज**–प्रातिनिध्य ।

**भेज पूरब**–क्रि० प्रातिनिध्य पूरब ।

**भेट** } –वियुक्तक साक्षात्कार १ । कल्हार २ ।
**भेँट**

**भेँट घाँट**–साक्षात्कारादि ।

**भेँटी**–सलामी, भेँट करबाक कालक उपहार ।

**भेँड़( भेण )बा**–अक्षरक अन्यथात्वसूचक चिह्न ।

**भेँड़ा( भेणा )**–उ० मेष । स्त्री० भेँड़ी, भेणी ।

**भेँड़ ( भेणा )**–उ० मेष । स्त्री० भेँही, भेणी ।

**भेँड़ा( भेणा )री**–बकरी भेँड़ी प्रभृतिक विष्ठा ।

**भेँड़ि( भेणि )आ धसान**–भेँड़ी-जेकाँ अन्धानुकरण ।

**भेँड़ि( भेणि )हर**–उ० भेँड़ीक उपजीवी जातिविशेष । स्त्री० भेड़िहरनी ।

**भेँड़ी( भेणी )**–स्त्री० मेषी ।

**भेद**–सँ० विशेष १ । तारतम्य, बुद्धिभेद २ । रहस्य ३ ।

**भेदभाव**–भेदबुद्धि ।

**भेम** } –पक्षिकीटविशेष ।
**भेम्ह**

**भेर**–निद्रादिवशात् असंज्ञ ।

**भेर करब** } –क्रि० अनेक मीलि एकदिन एक गोटक कार्य करब दोसरा दिन दोसराक जाहिसँ बोनि देय नहि हो ।
**भेर लागब**
**भेरी करब**

**भेला**–गुड़क प्रभेद १। भल्लातक २ ।

**भेस**–भेख, वेष ।

**भेँसब**–क्रि० भोँकब ।

**भैआ**–भायक सम्बोधन ।

**भैआबाँट** } –विषम विभाजन ।
**भैबट्टी**

**भैसुर** } –स्त्रीकेँ स्वामीक जेठ भाए।
**भैँसूर**

**भोआर**–भोगार, लुलुहार, वृद्धिमुख पुष्ट (वृक्ष) ।

**भोकन्नर**–भगन्दर ।

**भोकन्नर फुटब**–क्रि० भगन्दरक स्फुटता।

**भोकारि पारब**–क्रिण बहुत जोर सँ कानब ।

**भोग**–सं० उपभोग ।

**भोगार**–भोआर, लुलुहार, उन्नतिमुख ।

**भोगी**–सं० उपभोगशील ।

**भोग्य**–भोगयोग्य ।

**भोज**–अनेक निमन्त्रितक भोजन ।

**भोजघरा**–अनेक निमन्त्रितक भोजनालय।

**भोजन**–सं० तृप्तिक हेतु भक्षण ।

**भोजनी**–भोजनसामग्री ।

**भोजपत** } –भूर्जपत्र ।
**भोजपत्र**

**भोजैत**–उ० भोज कएनिहार । स्त्री० भोजैतिनी ।

**भोँट**–पेटक बड़का भोँटी ।

**भोँट चहकाएब**–क्रि० अस्त्रसँ भोँट फारब ।

**भोँटिआ**–पर्वतीय (घोटकविशेष) ।

**भोँटी**–अन्त्र ।

**भोँड़( मोण )ही**–माछक प्रभेद ।

**भोँड़ा( मोणा )**–मत्स्य विशेष ।
**भोतिआएब**–क्रि० भोति+अब–भ्रमवशात् कुमार्गगमन ।
**भोथ**–कुण्ठित (अस्त्र) ।
**भोथरब**–क्रि० भोथ होएब ।
**भोम्हरब**–क्रि० समन्तात् दंशादिक्रिया ।
**भोम्हा शङ्ख**–वाद्यशङ्ख ।
**भोर**–प्रात:काल १ । व्याकुल, विह्वल २ ।
**भोरगर**–उष:काल ।
**भोरुक**–प्रात:कालिक ।
**भोरुक पहर**–प्रात:कालिक प्रहर, दिनक प्रथम प्रहर ।
**भोरुका**–प्रात:कालिक ।
**भोरुका पहर**–प्रा:कालिक प्रहर ।
**भोस**–केराक प्रभेद ।
**भौकी**–आवर्त ।
**भौजाइ**–ज्येष्ठभ्रातृजाया (सम्बोधनसँ भिन्नमे) ।
**भौजी**–ज्येष्ठभ्राताक जाया ।
**भौरिआ**–आवर्तवत् घुमल (केश) ।
**भौरी**–विक्रयावर्ष परिभ्रमण १। फलविशेष जे घुरमा रोगबाला पहिरैत अछि २।
**भौरी करब** / **भौरी देब** }–क्रि० घूमि घूमि वस्तु बेचब ।
**भौँह**–भहुँ, भ्रू ।
**भ्रम**–सं० विपरीत ज्ञान ।
**भ्रमाह**–भ्रमजनक अस्पष्ट (अक्षरादि) ।
**भ्रातृद्वितीया**–सं० एक पाबनि जे कार्तिकशुक्ल द्वितीयाकेँ होइत अछि।

## म

**मइमुह**–माएक मुहसन मुहबाला ।
**मउसी**–स्त्री० मातृष्वसा, माएक बहिनि।
**मएदान**–चत्वर ।
**मएना**–पक्षिविशेष, सारिका ।
**मओसा**–पु० माएक बहिनिक पति ।
**मकइ**–मकै, अन्नविशेष ।
**मकमकाएब**–क्रि० मकमक+अब–कार्यक शिथिलीभाव ।
**मकब**–क्रि० मालक लीलया धावन ।
**मकरगोड़**–मकराक आकारक टेढ़ टाङबाला (बड़द) ।
**मकरा**–कीटविशेष जकरा गाँड़िगे सूत लागल रहैत अछि ।
**मकरी ऐँठब**–क्रि० दुष्टतासँ कार्यमे ओझरोठ लगाएब ।
**मकुआ**–मकोआ, छड़ी प्रभृतिक अङ्कुशाकार अर्द्धभाग ।
**मकुआएब**–ना० मकु+अब–मकुआजेकाँ लबब ।
**मकुट**–मुकुट ।
**मकुना**–बिनु देखार दाँतक हाथी ।
**मकोना**–मकुना ।
**मकोर**–वंशविशेष १ । फलविशेष २ ।
**मक्खन**–नवनीत ।
**मखबूलँ** / **मखमूल** }–वि० ऋण पर देल से क्षेत्र जे नियमित अवधि धरि ऋण सशोधन नहि कएलापर महाजनक भए जाए ।
**मखान**–माषान्न ।
**मखोलिआ**–हास्यरसी ।
**मगजी**–वि० दोहरि आदिक वस्त्रक अन्तमे स्यूत शोभार्थ वस्त्रान्तर ।



**मगहा** / **मगहिआ** }–मगधदेशोद्भव ।
**मगही**–मगधदेशोद्भव (खेसारी ओ पानक प्रभेद) ।
**मग्घ**–मघा (नक्षत्र) ।
**मघा**–सं० आश्लेषोत्तर नक्षत्र ।
**मघारि**–माघक समय ।
**मङ( मँग )नचन**–अधिक काल मँगनिहार ।
**मङ( मँग )नी**–अ० बिना मूल्य १ । बिना मूल्य देबाक हेतु याचना २ ।
**मङ( मँग )नी-चङ( चँग )नी**–माँगब आदि क्रिया ।
**मङ( मँग )रा**–सभसँ उपर देबाक खपरा।
**मङ( मँग )रैल**–कृष्णवर्ण अन्नविशेष, कालजीरक ।
**मङ( मँगा )एब**–क्रि० मङ(मँग) ब्+अब–आनयन ।
**मङु( मँगु )री**–दुगुर (माछ) ।
**मङ्गल**–स० कल्याण १ । सोमक अगिला दिन २ ।
**मङ्गल पठान**–क्रीड़ाविशेष ।
**मचकी**–मछकी, झुलबाक साधन, दोला।
**मचब**–क्रि० अधिक होएब ।
**मचमचाएब**–क्रि० मचमच्+अब–मचमच शब्द करब ।
**मचान**–मञ्च ।
**मचिआ**–कुर्सी ।
**मचोड़( र )**–घुमाएकेँ ऐँटब ।
**मचोड़( र )ब**–क्रि० घुमाएकेँ ऐँटब ।
**मच्छर**–हि० मशक, मोस ।
**मछकी**–हिड़ोला ।
**मछखौका**–अधिक काल माछ खएनिहार।
**मछगर**–अधिक माछबाला (पोखरि प्रभृति) ।
**मछगिद्धी**–सर्पाकार मत्स्यविशेष ।
**मछतरा**–माछ तरबाक लोहिआ ।
**मछबार**–माछ मारनिहार ।
**मछबारि**–माछक मारब ।
**मछरिआ**–भूषणविशेष ।
**मछहट्टा**–माछक हाट ।
**मछहर**–गाँज, टापि आदिसँ माछ मारब ।
**मछाइनि**–माछक गन्धयुक्त ।
**मछाडाली**–धान्यविशेष ।
**मछारब**–क्रि० मछार+अब–कम ऊँच आरि बान्हब ।
**मजर**–पज्जर, मञ्जरी ।
**मजरब**–ना० मञ्जरीयुक्त होएब ।
**मजगूत**–वि० दृढ़, बलिष्ठ ।
**मजगूती**–वि० दृढ़ता ।
**मजहुल**–वि० दब, हीनबल ।
**मजीठ**–मञ्जिष्ठा, ओषधिविशेष ।
**मजीरा**–तानवाद्यविशेष ।
**मजील**–वि० बहुत दूर मार्ग ।
**मजुरली**–वि० टहल कएनिहारि ।
**मजूर**–मयूर ।
**मजूरा**–हि० अजूरा पर काज कए देनिहार, मजदूर ।
**मजूरी**–पारिश्रमिक, वेतन ।
**मज्झा**–माल बन्हबाक ढोरीक अवयव जकरा मिलाए कड़ाम प्रभृति बनैत अछि १ । गुड्डीक डोराकेँ कड़ा करबाक लस्सा २ ।

**मझधार**–धारक मध्य ।
**मझफारी**–औकारक मात्रा ।
**मझिआएब**–ना० मझि+अब–माझमे लेब।
**मझिआम**–गामक मध्य भाग ।
**मझिला**–मध्यभव, मध्यम (पुत्रादि) ।
**मझिली**–स्त्री० मध्यम (पुत्री आदि) ।
**मञ्जूर**–वि० स्वीकृत ।
**मञ्जूरी**–वि० स्वीकार ।
**मटका-मटकी**–कज्जलतिलक ।
**मटकी**–नेत्राच्छादक चर्म ।
**मटकी मारब**–क्रि० नेत्रावरण चालन ।
**मटकुड़ी( री )**–दहीक मृत्पात्रविशेष ।
**मटकूड़( र )**–पैध दहीक पात्रविशेष ।
**मटर**–पैघ उज्जर केराओ ।
**मटसुन**–मतिशून्य, अनवधान-स्वभावक ।
**मटिआ**–किरासन (तेल) १। रङ्गक प्रभेद २। हाथसँ बनाओल वस्त्रविशेष ३।
**मटिआएब**–ना० माटि दए धोएब १। माटिसँ युक्त करब २ ।
**मटिआमेट**–नेस्तनामूद, सर्वथा लुप्त ।
**मटिआर**–बालसँ अमिश्रित माटि बाला (खेत) ।
**मटिआरी**–बालसँ अमिश्रित सक्कत माटि।
**मटिआह**–माटिसँ मिश्रित (जलादि) ।
**मटिकम**–माटिक काज (माटि काटब, भरब आदि) ।
**मटिकोड़** / **मटिकोड़ा** }–माटि कोड़बाक स्थान ।
**मटिगर**–अधिक माटिसँ युक्त ।
**मटिसुन**–मतिशून्य, अनवधानस्वभावक ।
**मटुक**–मुकुट ।
**मटुकी**–मृत्पात्रविशेष ।
**मट्टर**–मटर, उजर पैघ केराओ ।
**मट्ठा**–माठा, बलय १। मन्थनीउर्वरित नवनीतविकार २ ।
**मठ**–मन्दिर, देवालय ।
**मठठ**–घरक उपरका दुहू चारक सन्धि-स्थल ।
**मठब**–क्रि० कोड़ो प्रभृतिक बाँसक गीरहकेँ छीलब ।
**मठबा**–शाकविशेष ।
**मड़कब**–क्रि० किञ्चित् धिपन्न होएब ।
**मँड़( मण )गील**–माँड़ रहि गेलासँ गील (भात) ।
**मँड़( मण )फेका**–माँड़ फेकबाक बासन।
**मँड़( मण )बा**–माड़ब, मण्डप ।
**मड़मड़ाएब**–क्रि० मड़मड़्+अब–मड़मड़ शब्द करब ।
**मड़र** / **मँड़र** }–शूद्रादि कतोक जातिक उपाधि १। चौठिचन्द्रक सन्ध्याकालक सिद्धान्न नैवेद्य २ ।
**मड़रा**–चङेरा टापि प्रभृतिक मण्डलीकृत हिड़रा ।
**मड़राएब**–क्रि० मड़र्+अब–मण्डलाकारेँ घूमब ।
**मडुआ**–अन्नविशेष ।
**मड़ुक**–छोट गोलाकार बखारी ।
**मड़ेआ**–ठोकबाक उपकरणविशेष ।
**मढ़नि**–मढ़ब ।
**मढ़ब**–क्रि० दृढ़ताक हेतु अन्तमे वस्त्र धातु इत्यादिसँ आवृत करब १। जुट्ठी बनाएब २ ।
**मढ़ाइ**–मढ़ब ।
**मणि**–सं० रत्न ।



**मण्डा**–मिष्टान्नविशेष ।
**मण्डिल**–मन्दिर, देवालय ।
**मत**–सं० पक्ष, सम्मतिविषय ।
**मतब**–क्रि० हाथीक मत्तताप्राप्ति ।
**मतल**–मत्त ।
**मतामह**–मातामह ।
**मतामही**–मातामही ।
**मति**–सं० बुद्धि ।
**मती**–सर्पादिविषकेँ मन्त्रसँ हँटओनिहार।
**मतोना**–कोदोक प्रभेद ।
**मथदुक्खी**–माथक व्यथा ।
**मथनिआ**–मन्थनपात्र ।
**मथनी**–चार आदिक सभसँ उपरका भाग।
**मथब**–क्रि० मन्थन ।
**मथबाहि**–शिरोवेदना ।
**मथाक मोल**–बुद्धिक इयत्ता (निन्दामे)।
**मथानी**–मन्थनदण्ड, रही ।
**मथासोहार**–वर्णक माथपर अनुस्वारसूचक बिन्दु ।
**मद**–सं० यौवनादिजन्य गर्व १। धनागमस्थानक विभाग २ ।
**मदब**–क्रि० बदब, वरण ।
**मदति**–ि० साहाय्य ।
**मद्दी**–क्रीड़ानियमप्रकारव्यवस्था ।
**मद्य**–सं० सुरा ।
**मधु**–सं० माक्षिक ।
**मधुआएब**–ना० मधुसँ युक्त होएब ।
**मधुकुप्पी**–पक्षिविशेष ।
**मधुमाछी**–मधुमक्षिका ।
**मधुमाल**–धान्यविशेष ।
**मधुर**–निष्ठ, मिष्टान्न ।
**मधुरबा**–मधुर प्रकारक ।
**मधुराइ**–माधुर्य ।
**मधुराँठ** / **मधुराह** }–किञ्चिन्मात्र मिष्ट ।
**मधुरी**–बन्धूक, पुष्पविशेष ।
**मधुश्रावणी**–सं० श्रावणशुक्लतृतीया ।
**मधेसिआ**–मध्यदेशीय ।
**मन**–अन्तःकरण १ । खारी, परिमाण विशेष २ ।
**मनःकथा**–चिन्ता ।
**मनक्का**–द्राक्षाक प्रभेद ।
**मनखप**–से खेत जकर कर नियतरूपेँ अन्ने लेल जाए ।
**मनगर**–प्रसन्न मनसँ युक्त ।
**मनघुटाह**–उ० विमनस्क । स्त्री० मनघुटाहि ।
**मनजाएज**–वि० अन्नक तौल ।
**मनपै**–मनमे पाओ भारि ग्राह्य ।
**मन पारब**–क्रि० स्मरण करब ।
**मनमोट** / **मनमोटाओ** }–वैमनस्य ।
**मनरञ्जन**–मनोरञ्जक १। मिष्टान्नविशेष २।
**मनरोगा**–मानसिक रोग ।
**मनसठ**–ऊपरसँ अनुकूल किन्तु मनसँ शठ ।
**मनसरा**–धान्यविशेष ।
**मनसरी**–धान्यविशेष ।
**मनसा**–मनुष्य (स्त्रीक उक्तिमे) १। वि० इच्छा २ ।
**मनसी**–मनस्वी ।
**मनसुबा**–उत्साह, पौरुष ।
**मनसुबाएब**–ना० मनुसुब्+अब–उत्साह करब। ।

**मनसोठ**–मनसठ ।
**मनहकार**–निषेध, मना करब ।
**मनहुस**–हतोत्साह ।
**मना**–अ० निषेध ।
**मना करब** / **मना देब** } –क्रि० निषेध करब ।
**मना मानब**–क्रि० निषेधक स्वीकार ।
**मनि**–मणि ।
**मनिआर**–मणिबाला (सर्प) ।
**मनुक्ख** / **मनुख** } –मनुष्य ।
**मनुखाह**–उ० मनुष्यमे रीतल (कुकुर आदि) ।
**मनुष्य**–सं० मानुष ।
**मनुस**–मनुष्य ॥
**मनुसा**–अनादरणीय मनुष्य ।
**मने**–अ० प्राय: १ । सम्भावना २ ।
**मनेजर**–वि० प्रधान अधिकृत व्यक्ति ।
**मनोरथ**–सं० इच्छा ।
**मनोहर**–सं० स्मरणीय ।
**मनोरी**–कपड़ामे लगएबाक भूषणविशेष।
**मन्त्र**–सं० फलप्रद जप्य ।
**मन्त्राएब**–ना० मन्त्रब्+अब–मन्त्रोपहित करब ।
**मन्त्री**–सं० सचिव ।
**मन्द**–सं० शिथिल ।
**मन्दिर**–देवालय ।
**ममरखा**–शिशुक रोगविशेष १ । ममरखाक ओषधिविशेष (छड़ी ममरखा इतयादि) २ ।
**ममरी**–टेमीक अन्तमे उत्पन्न कज्जल जाहिसँ दीपक ज्योति कम भए जाइछ ।
**ममहर**–मातृक, मामाक घर ।
**ममा**–मामा, मातुल ।
**ममिआ सासु**–स्त्री० पतिक मामि ।
**ममिऔत**–उ० मामक बेटा । स्त्री० ममिऔति ।
**ममोर**–वेदनाविशेष ।
**ममोरब**–क्रि० देहक वेदनाविशेष ।
**मयूर**–सं० शिखी ।
**मयूरपङ्खी**–मयूरक पाँखिक पङ्खा ।
**मर**–मरण १। मृतक २। अ० विस्मय-द्योतक ३।
**मरक**–पेटक विपाकापन्न अन्नक भाग ।
**मरकछ**–कृत्रिम मृतवत् चेष्टाशून्यता ।
**मरकछ लाधब**–क्रि० मृतवत् कृत्रिम चेष्टाशून्यता देखाएब।
**मरकन**–अर्जीण अन्नक कण ।
**मरकाठी**–मुरदा डाहबाक शेष काष्ठ।
**मरखाह**–उ० मारनिहार (माल) । स्त्री० मरखाहि ।
**मरघट**–मुरदा डाहबाक घाट ।
**मरचर**–जाहिठाम अधिक मुर्दा डाहल जाए ।
**मरछाउर**–चिताभस्म ।
**मरछिआहि**–स्त्री० जकर सन्तान मरि-मरि जाइक ।
**मरतढ़िआ**–मारिमे प्रौढ़ ।
**मरदुआर**–मृतसम (वृक्षादि), जे लुलुहार नहि हो ।
**मरनइ**–मृतनदी, पूर्वक नदी जे सम्प्रति भरनिसँ प्रवाहहीन भए गेल हो ।
**मरब**–क्रि० मरण ।
**मरम**–मर्म्म ।



**मरमूठि**–मुइलाक मूठिजेकाँ दृढ़ मुष्टि ।
**मरम्मति**–विघटित अवयवक पुनर्योजन ।
**मरहन्ना**–मुइल अन्न, जलक अभावसँ अन्नहीन (उपजा) ।
**मराठी**–मृतप्राय (वृक्षादि) ।
**मरिचाइ**–कटुवीरा, तीक्ष्णा ।
**मरिच** / **मरीच** } –मरिच ।
**मरुअनि**–बाँसक उपरका त्वचा ।
**मरुआएब**–क्रि० मरु+अब–पल्लवादिक मूर्च्छित होएब ।
**मरुऐनी**–मरुआएब ।
**मरेड़**–तृणविशेष ।
**मरोछि** / **मरोछिआहि** } –स्त्री० भूरिमृतवत्सा ।
**मरौसी**–पैतृक (सम्पत्ति) ।
**मर्म**–सं० नरम, रहस्य, तात्पर्य।
**मर्यादा**–सं० अलोलुपतादि गुण ।
**मलकोका**–कुमुदिनीप्रभेदक रक्त पुष्पविशेष ।
**मलब**–क्रि० मर्दन ।
**मलमल**–वस्त्रविशेष ।
**मलहम**–व्रण छुटबाक लेप ।
**मलाइ**–बरकाओल दूधक सार ।
**मलान**–म्लान ।
**मलार**–मलार, रागविशेष ।
**मलाह**–उ० मत्स्यजीवी जाति विशेष । स्त्री० मलाहिनि ।
**मलाही**–चारकेँ नीचाँ खसबासँ रोकबाक यन्त्रविशेष ।
**मलिकाइनि** / **मलिकानि** } –स्त्री० स्वामिनी ।
**मलिछ** / **मलिछन** } –मलिन ।
**मलिछाह**–किञ्चित् मलिन ।
**मलिन**–सं० मलयुक्त (वस्त्रादि) ।
**मलीदा**–ओढ़बाक ऊनी वस्त्रविशेष ।
**मल्लिक**–कतोक जातिक उपाधि ।
**मस**–मशक, मोस ।
**मसक**–पानि भरबाक चमड़ाक पात्र १ । वस्त्रादिक अवयवक किञ्चित् विलचन २ ।
**मसकब**–क्रि० वस्त्रादिक अवयबक किञ्चित् विचलन ।
**मसकिल**–वि० विपत्ति, कठिन, मोसकिल ।
**मसकूर**–चौमे संलग्न मांस ।
**मसदिना**–मास दिन होएनिहार (अशौचादि) ।
**मसनही**–मासपूर्त्युत्तर स्त्रीकर्तृक स्नान।
**मसलन्द**–ओँगठबाक पैघ गेडुआ ।
**मसहरी**–मशकवारक स्यूत पट ।
**मसहारा**–वि० मासिक वेतन ।
**मसान**–श्मशान ।
**मसान्त**–मासान्त, सौर मासक अन्तिम दिन ।
**मसाल**–कृत्रिम उल्का ।
**मसालची**–कृत्रिम उत्कासम्पादनादि प्रकाश करबाक कार्य कएनिहार।
**मसाला**–हीँगु हरदि तेजपात प्रभृति व्यञ्जन उपकरण १। पानक उपकरण (लवङ्ग अड़ाँची आदि) २ ।
**मसि**–सं० मसी, मोसि, लेखार्थद्रव ।
**मसिआनी**–मसीधानी, मसीपात्र ।

**मसिआ सासु**–स्त्री० पतिक मातृष्वसा ।
**मसिऔत**–उ० माउसिक अपत्य । स्त्री० मसिऔति ।
**मसिदानी**–मसीधानी, मसीपात्र ।
**मसुआएब**–ना० मासु+अब–भाँटा आदिक कुपाकवश मासुसन सक्कत होएब।
**मसुरी**–मसूर, द्विदलान्नविशेष ।
**मसुवृद्धि**–देहमे पिण्डाद्याकार मांसवृद्धि।
**मसुरामनी**–मधुश्रावणी ।
**मसोड़**–विरल वस्त्रक घर्षणजन्य विचलन।
**मसोड़ब**–क्रि० मसोड़ व्यापार ।
**मस्खरी**–हँसी-ठट्ठा ।
**कस्तकतोड़**–गृहदोष विशेष ।
**महक**–गन्ध ।
**महकब**–क्रि० गन्धक प्रकाशन ।
**महखर**–परिवारक सर्वजनसम्बन्धी वस्तु।
**महखरिआ**–महखरक कार्य कएनिहार ।
**महग**–महार्घ ।
**महगी**–महार्घता ।
**महगोरिआ**–महग बेचनिहार ।
**महजीद**–मुसलमानक देवघर ।
**महतम**–महत्तम, खामिन्द ।
**महतोँ**–महत्तम, प्रभु १ । कतोक जातिक उपाधि २ ।
**महथा**–वि० अधिकारविशेषनियुक्त ।
**महन्थ**–देवालयाधिकारी, मठाधीश ।
**महन्थी**–देवालयप्रभुता, मठाधीशत्व ।
**महफ्फा**–नरवाह्य यानविशेष ।
**महब**–क्रि० मन्थन ।
**महमह करब**–क्रि० सुगन्धिक प्रसारण ।
**महरा**–चमारक उपाधि ।
**महराज**–भाटक उपाधि ।

**महराद**–ओषधिविशेष ।
**महल**–प्रासादभूमि ।
**महलिआएब**–क्रि० महाल–महाल फुटाएब ।
**महाइ**–मन्थन ।
**महाउथ**–हस्तिपक ।
**महाजन**–वणिक् १ । उत्तमर्ण २ ।
**महाजनी**–वणिग्वृत्ति १ । उत्तमर्णता २ ।
**महाजाल**–अति विशाल माछ मारबाक जाल ।
**महाफा**–शिविकाविशेष ।
**महावरी**–सं० ओषधिविशेष ।
**महामहोपाध्याय**–विद्वानक उपाधिविशेष।
**महामुङ**–मूङक प्रभेद ।
**महाराज**–सं० महान् राजा ।
**महाराजी**–महाराजक कार्य ।
**महाल**–वि० मद, विभाग ।
**महाशय**–सं० उदारान्तःकरण पुरुष ।
**महाश्वेता**–पुष्पविशेष ।
**महि**–सम्बन्ध, लेश ।
**महिआएब**–क्रि० उपकरिकेँ आएब ।
**महिसा**–पुं० महिष, पशुविशेष ।
**महिसा लोट**–वान्यविशेष ।
**महिसि**–स्त्री० महिषी, पशुविशेष ।
**महिसिबार**–महिषीवारक, महिसिक चरबाह ।
**महिसिबारि**–महिसिबारक क्रिया १ । ओकर वेतन २ ।
**महिसिमोढ़**–अत्यन्त मोट बुद्धि बाला ।
**महीसि**–महिषी, पशुविशेष ।
**महु**–मधुक, वृक्षविशेष ।
**महुआ**–महल (दूध, तकर दही)।



**महुआएब**–क्रि० महु+अब–रससँ युक्त होएब ।
**महुथबार**–हस्तिपक ।
**महुथबारि**–हस्तिपकक क्रिया ।
**महुली सोँफ**–शीतहा; छत्रक ।
**महुबक**–वृक्षविशेष ।
**महेसबानी**–महादेवक तिरहुति गीत ।
**महोपाध्याय**–विद्वानक एक उपाधि ।
**महोर**–अत्यन्त पक्व ।
**माइ-धी**–स्त्री० माता तथा पुत्री ।
**माउगि**–जनी, स्त्रीलोक ।
**माउगि-मेहर**–स्त्री० स्त्रीवर्ग ।
**माउसि**–स्त्री० मातृष्वसा ।
**माए**–स्त्री० माता, माय ।
**माख**–आभ्यन्तर क्रोध ।
**माखब**–क्रि० माख्+अब–विष्ठादि अस्पृश्य वस्तुक अज्ञानतः स्पर्श ।
**माँग( माङ )ब**–क्रि०मँग् (मङ्)+अब–याचना ।
**माँगु( माङु )र**–मद्गुर, मत्स्यविशेष ।
**माघ**–पौषक अगिला मास ।
**माघी**–माघक (पूर्णिमा) ।
**माछ**–मत्स्य ।
**माछी**–मक्षिका ।
**माजब**–क्रि० मज्+अब–मार्जन, मर्दनसँ स्वच्छ करब ।
**माजूफल**–फलविशेष ।
**माझ**–मध्य ।
**माझफारी**–औकारक मात्रा, ौ ।
**माझिल**–उ० मध्यम । स्त्री० मझिली ।
**माट**–माटिक पैघ पात्र ।
**माटि**–मृत्तिका ।

**माटिमङ्गल** / **माटिमाँगर** } –उपनयनक पूर्व मङ्गल दिनक लौकिक विधि विशेष ।
**माठ**–मिष्टान्नविशेष १ । पैघ तण्डुलादि रखबाक मृत्पात्रविशेष २ ।
**माठा**–वलय ।
**माँड़** / **माण** } –मण्ड ।
**माँड़ब**–मण्डप ।
**माड़बारी**–माड़बार देशभव ।
**माँड़रि**–सूर्य ओ चन्द्रमाक समन्तात् मण्डल, परिवेष ।
**माँड़ी**–कृत्रिम मण्ड ।
**माढ़**–भूजल चीन ।
**माणिक्य**–सं० मणि ।
**मातदिल**–वि० अल्प उष्ण (घृतादि) ।
**मातबर**–वि० धनिक ।
**मातबरी**–वि० धनिकत्व ।
**मातल**–मत्त ।
**माता**–प्रसू, जननी १ । शीतला २ ।
**मातामह**–सं० पुं० माताक पिता ।
**मातामही**–सं० स्त्री० माताक माता ।
**मातु**–सतरञ्जक हारि ।
**मातृकापूजा**–विवाहादिक अङ्गतया आभ्युदयिकसँ पूर्व गौरी प्रभृति सोलह देवीक पूजा ।
**मात्रा**–सं० औषध खएबाक परिमाण १ । व्यञ्जनोत्तर इकारादि स्वरक चिह्न २ ।
**मात्रिक**–माताक पितृगृह ।
**मात्सर्य्य**–स्नेह (संस्कृतमे द्वेष) ।
**माथ**–मस्तक ।

**माथ भुकाएब**–क्रि० बहुत वृथा बजाएब।

**मादए**
**मादेँ** } –अ० प्रसङ्गेँ ।

**माधबसिंही**–माधवसिंहक चलाओल जलपानपात्रविशेष ।

**माधवी**–पुष्पविशेष ।

**मान**–क्षुपविशेष १ । नहक आच्छादक त्वचा २ । सं. आदर ३। रुष्टता ४।

**मानटीका**–मस्तकक भूषणविशेष ।

**मानब**–क्रि० मान्+अब–स्वीकार करब १ । आदर करब २ ।

**मानमिसाने**–ओकारक मात्रा ।

**मानर**–मर्दल, वाद्यविशेष ।

**मानसिंही**–मिष्टान्नविशेष ।

**मानि**–मान्यता ।

**मानिक**–माणिक्य १ । औषधविशेष, मानिकरस २ ।

**मानिकचन्दी**–सुपारीक प्रभेद ।

**मानिकथम्ह**–धरनिक उपरका स्तम्भ ।

**मानिकरस**–औषधविशेष ।

**मानिजन**–मान्यजन, शूद्रक सामाजिक व्यवस्थाक एक नेता ।

**मानुख**
**मानुस** } –मनुष्य ।

**माफ**–वि० सहन, क्षमा ।

**माम**–पुं० मातुल (असम्बोधनमे; सम्बोधनमे मामा)।

**मामा**–पुं० मातुल ।

**मामि**–स्त्री० मातुली (असम्बोधनमे, सम्बोधनमे मामी) ।

**मामी**–स्त्री० मातुली ।

**माय**–स्त्री० माए, माता ।

**मार**–मारब, ताड़न ।

**मारपीट**–ताड़नादि ।

**मारब**–क्रि० मान्+अब–मारण १ । ताड़न २ ।

**मारि**–ताड़न १ । अ० बहुत २ ।

**मारि खाएब**–क्रि० ताड़नप्राप्ति ।

**मारि-पीट**–ताड़नादि ।

**मारुक**–घातक (स्थान) ।

**माल**–गोमहिष शूकरादिपशु १ । चरखामे टाकुकेँ घुमओनिहार डोरी २ । कृषिकर ३ ।

**मालक**–उबेर ।

**मालकोस**–रागविशेष ।

**मालगुजारी**–करग्रहण ।

**मालजाल**–गोमहिषीप्रभृति ।

**मालती**–सं० पुष्पविशेष ।

**मालदह**–आम्रविशेष ।

**मालपूआ**–उत्तम अपूप, पक्वान्नविशेष ।

**मालभोग**–केरा ओ धानक प्रभेद ।

**माला**–सं० स्रक् ।

**मालि**–उ० मालाकार जातिविशेष । स्त्री० मालिनि ।

**मालिक**–वि० उ० प्रभु । स्त्री० मलिकाइनि ।

**मालिकाना**–मालिकक मओजे ।

**मालिस**
**मालिस्त** } –वि० अभ्यङ्ग ।

**माली**–तैलादिक छोट पात्रविशेष।

**मास**–सं० त्रिंशद्दिनात्मक समय ।

**माँस**–से भूमि जकर माल स्वाधीन राजा पाबथि।

**मांस**–सं० देहक धातुविशेष, मासु।



**मांसमसाला**–तृणविशेष जे मांसक मसाला होइत अछि ।

**मासा**–माषप्रमाण ।

**मासादि**–सं० सौर मासक प्रथम दिन ।

**मासान्त**–सं० सौर मासक अन्तिम दिन।

**मासिक**–सं० मासभव (वेतनादि) ।

**मासी**–मासिक, अ० प्रतिमास ।

**मासु**–मांस ।

**मासुल**–वि० यानक वेतन ।

**माह**–वि० मास ।

**माहबारी**–वि० अ० प्रत्येक मास मे ।

**माही**–मालिकक पत्रस्थ स्वचिह्नविशेष ।

**माहीमोहर**–माहीसहित मोहर ।

**माहुर**–वि० अजङ्गम विष (यथा डकहा प्रभृति) ।

**मिझर**–मिश्रित ।

**मिझराएब**–क्रि० मिझर्+अब–मिश्रित होएब ।

**मिताराए**–मित्रालय १ । मित्रता २ ।

**मिथिला**–सं० तीरभुक्ति ।

**मिनट**–वि० अढ़ाए पल, होराक साठिम भाग ।

**मिनती**–सविनय निवेदन ।

**मिनहा**–मोजर ।

**मिरखी**–अन्नकण ।

**मिरगी**–अपस्मार ।

**मिरजइ**
**मिरजै** } –हि० अङ्गाक प्रभेद ।

**मिरमिराएब**–क्रि० मिरमिर्+अब–मन्द-मन्द अस्पष्ट बाजब ।

**मिरहन्नी**
**मिरहिन्नी** } –अपुष्ट अन्न ।

**मिलब**–क्रि० मिलान होएब १ । सदृश होएब २ ।

**मिलान**–अविरोध, मेल, सादृश्य ।

**मिलुआ**–सं० मिश्रित ।

**मिश्र**–स० श्रेष्ठ, ब्राह्मणक उपाधि ।

**मिश्रित**–सं० मीलल, मिझर ।

**मिसर**–मिश्र ।

**मिसरी**–खण्ड, संशोधित सिताखण्ड ।

**मिसिआ**–स्त्रीक दन्तशोभामञ्जन, मीसी १ । अन्नविशेष २ ।

**मिस्री**–मिसरी ।

**मीआँ**–मुसलमानक उपाधि ।

**मीड़ब**–क्रि० मिड्+अब–मर्दन ।

**मीत**–मित्र ।

**मीमा**–तृणविशेष ।

**मीलब**–क्रि० मिल्+अब–मिलब, मिलान होएब १ । सदृश होएब २ ।

**मीलब-जूलब**–क्रि० मिलान-प्रभृति ।

**मीस**–वि० मेला ।

**मीस पड़ब**–वि० क्रि० मेला लागब ।

**मीसी**–दन्तशोभार्थ मञ्जनविशेष ।

**मुइल**–मृत ।

**मुकिआएब**–ना० मुकि+अब–मुक्कासँ मारब ।

**मुकुट**–सं० शिरोभूषणविशेष ।

**मुक्का**–मुष्टि, मूका ।

**मुक्कामुक्की**–परस्पर मुक्कासँ मारब ।

**मुक्की सूगा**–सूगाक प्रभेद ।

**मुख**–सं० मुह ।

**मुखपात**–वस्त्रप्रान्तशोभाधायक वस्त्र ।

**मुखड़ा**–मुहमे लगएबाक कृत्रिम मुख ।

**मुखिआ**–मुख्य, संघश्रेष्ठ ।

**मुगदर**
**मुँग( मुङ )रदन** } –मुद्गल ।

**मुँग( मुङ )रा**
**मुँग( मुङ )री** } –ढेप फोड़ब आदिक साधनविशेष ।

**मुँग( मुङ )बदाम**–मेबाविशेष, चिनिआ बदाम ।

**मुँग( मुङ )बा**–पैघ बुनिआसँ बनाओल मिष्टान्नविशेष ।

**मुँगे( मुङे )रिआ**–मुङ्गेरनगरभव ।

**मुजैली**–लताविशेष १ । मुञ्जनिर्मित छोट पथिआ २ ।

**मुटमुर**–तृणविशेष ।

**मुट्ठी**–मूठि, मुष्टि ।

**मुठबार**–कागतक मूठि ।

**मुठबाँसी**–मुष्टिमेय पातर बाँस ।

**मुठभिराओ**–अतिनिकट युद्ध ।

**मुठमुर**–तृणविशेष ।

**मुठरा**–मुट्ठीसँ बद्ध पिण्ड ।

**मुठिआ**–मुष्टिमेय (बड़दक सिंह) १ । मुष्टिमित अन्न २ ।

**मुठिआ सिंह**–बड़दक ओ सिंह जे मुष्टिमेय हो ।

**मुड़न**–मुण्डन, प्रथम कचकर्तन ।

**मुड़ब**–क्रि० मुण्डित करब (लक्षणया, ठकि लेब) ।

**मुड़री**–बिना केशक माथ ।

**मुड़हा**–अतिनिन्द्य, मूढ़, अधम ।

**मुड़ी**–मुण्ड ।

**मुड़ी हानब**–क्रि० इतस्ततः मुखचालन ।

**मुण्ड**–मुड़ी ।

**मुण्डी**–तृणविशेष ।

**मुतना**–अधिक मूत्रत्यागी ।

**मुतब**–क्रि० मूत्रत्याग करब ।

**मुनना**–मुनबाक साधन ।

**मुनब**–क्रि० मुद्रण, बन्द करब ।

**मुनहारि साँझ**–अप्रकाश सन्ध्यासमय ।

**मुनही**–भुण्डी पैसएबाक गोलाकार वस्त्र।

**मुनिगा**–सौभाञ्जनप्रभेदक वृक्षविशेष ।

**मुहिआएब**–क्रि० मुहि+अब–उन्मुख होएब ।

**मुन्ही**–ओ फनकी जाहिमे भुण्डी पैसाओल जाए ।

**मुरगा**–उ० कुक्कुट । स्त्री० मुरगी ।

**मुरछब**–क्रि० अस्त्राग्रक कुण्ठन ।

**मुरदघट्टी**–जलतटस्थ शवदाह स्थान ।

**मुरदा**–वि० शव ।

**मुरदारी**–शवदाहावशिष्ट (इन्धनादि) ।

**मुरदाशङ्ख**–औषधविशेष, उपधातुविशेष ।

**मुरझब**–क्रि० मूर्च्छित (कुण्ठित) होएब ।

**मुरबड़**–मूरक बड़ ।

**मुरमुर**–दाँतसँ सशब्द भङ्गयोग्य ।

**मुरहन**–पुष्ट प्रथमगृहीत अन्न ।

**मुरही**–तण्डुलस्फोट, चाउरक लाबा ।

**मुरेठा**–शिरोवेष्टन ।

**मुरौड़ी**–मूरक वटी ।

**मुर्दघट्टी**–शवदाहक घाट ।

**मुर्दा**–शव ।

**मुलकी**–सार्वत्रिक ।

**मुलह**–सजातीय पक्षीकेँ बझएबामे उपकारक मूलभूत बुलबुल प्रभृति।

**मुलहक्की**
**मुलहट्टी** } –मूलभूत गुप्ततत्व ।

**मुलहन**–मूलधन, पूजी ।

**मुल्लह**–मुलह ।



**मुसकाँड़ी**
**मुसकाणी** } –मूस बझएबाक कल ।

**मुसर**–मुसल ।

**मुसरा**–मुसलाकार प्रधान सीर आदि ।

**मुसरी**–छोटका मूस ।

**मुसलमान**–म्लेच्छ ।

**मुसलमानी**–म्लेच्छसम्बन्धी ।

**मुसली**
**मुसलीकन्द** } –कन्दविशेष ।

**मुसहर( ड़ )**–उ० जातिविशेष । स्त्री० मुसहर ड़)नी ।

**मुसहरी**–मुसहरक टोल ।

**मुसुकाएब**
**मुसुकिआएब** } –क्रि० मुसुक्(कि) +अब–मन्द हास ।

**मुसुकी**–मन्द हास ।

**मुह**–मुख ।

**मुहखर**–उ० मुहक तीव्र, बजबामे अप्रतिबद्ध (निन्दामे) । स्त्री० मुहखरि ।

**मुहगर**–उ० बजबामे प्रौढ़ । स्त्री० मुहगरि ।

**मुहचुरन**
**मुहचूर**
**मुहचोर** } –बजबामे अप्रौढ़ ।

**मुहछुट्टा**–निःसंङ्कोच बजनिहार अनादरणीय व्यक्ति (निन्दामे) । स्त्री० मुहछुट्टी ।

**मुहछुट्टू**–निःसंकोच बजनिहार आदरणीय (निन्दामे) ।

**मुहजोर**–उ० बजबामे प्रौढ़ । स्त्री० मुहजोरि ।

**मुहठान**–अन्य मुखाकृति ।

**मुहठाह**–अप्रतिम (कार्यक असिद्धिप्रयुक्त)।

**मुहठी**–आम आदिक मुखस्थान ।

**मुहड़ा**–स्थानक अग्रभाग ।

**मुहतक्की**–पराभिप्रायज्ञानार्थ मुखवीक्षण ।

**मुहतोड़**–उत्तरानर्ह कथन ।

**मुहथरि**–पोखरि आदिक बाहाक मुखस्थान ।

**मुहददुब( ब्ब )र**–उ० दीन, बजबामे अप्रौढत्र । स्त्री० मुहदुब(ब्ब)रि ।

**मुहदुस्सी**–पक्षिविशेष ।

**मुहदेखना**
**मुहदेखाओन** } –मुह देखबाक परितोषिक ।

**मुहनि**–कोल्हुक एक अङ्ग ।

**मुहपुरुष**–वक्ता प्रधान पुरुष ।

**मुहपोछना**–मुह पोछबाक वस्त्र ।

**मुहफट( ट्ट )**–बिना धाख बजनिहार ।

**मुहबउ**–अधिक काल व्यादितमुखक ।

**मुहबजाओन**–संलाप करबाक पारितोषिक ।

**मुहबौआ**–बिदीर्णमुखक ।

**मुहबौक**–अप्रौढ़ ।

**मुहलग**
**मुहलगुआ** } –मुह लागल गप कएनिहार ।

**मुहसच्छ( छ )**–उ० स्तब्ध, अप्रौढ़ । स्त्री० मुहसच्छि (छि) ।

**मुहाबज्जी**–परस्परभाषाणव्यवहार ।

**मुहाँमुहीँ**–मुखोत्तर, सांमुख्य ।

**मुहिआएब**–क्रि० मुहि+अब–पूर्वरूपप्राप्ति।

**मुहूर्त**–सं० दण्डद्वयात्मक काल ।

**मूका**–मुष्टि ।

**मूकामूकी**–मुष्टीमुष्टि, परस्पर मूकाक प्रहार।

**मूँग( मूङ )**–मुद्ग ।

**मूँगा( मूङा )**–प्रवाल ।
**मूठि**–मुष्टि ।
**मूठि भाँजब**–क्रि० क्रीड़ामे कौड़ी हाथमे लए नीचाँ खसाएब ।
**मूठि लेब**–क्रि० देवपित्रर्थ प्रथम धान्यच्छेदन
**मूड़**–मुण्ड ।
**मूड़न**–मुण्डन ।
**मूड़ब**–क्रि० मुड्+अब–माथक केश काटब, (लक्षणया, ठकि लेब) ।
**मूड़ा**–झाँकसँ रहित (कोठा) ।
**मूड़ी**–मुण्ड ।
**मूत**–मूत्र ।
**मूतब**–क्रि० मुत्+अब–मूत्रत्याग ।
**मूनब**–क्रि० मुन्+अब–मुद्रण, बन्द करब।
**मूनल**–मुद्रित, बन्द ।
**मूर**–मूलक १ । मूलधन २ ।
**मूर्ख**–स० अज्ञ ।
**मूर्च्छा**–सं० अकस्मात् चैतन्यशून्यता ।
**मूस**–मूषिक ।
**मूसनि**–मूसक माटि ।
**मूसब**–क्रि० मुस्+अब–मोषण, चोराएब।
**मूसर**–मुशल ।
**मूसाकानी**–आखुपर्णी, ओषधिविशेष ।
**मूह**–मुख ।
**मूह दुसब**–क्रि० अपमानजनक मुखचेष्टा।
**मूह बनाएब**–क्रि० नानाविध मुखचेष्टा ।
**मूह बिजुकाएब**–क्रि० बिजुकब्+अब–मुखसंकोचन ।
**मृग**–सं० हरिणविशेष ।
**मृगछाला**–हरिणचर्म ।
**मृदङ्ग**–सं० वाद्यविशेष ।
**मृदङ्गिआ** }
**मृदङ्गी** } –मार्दङ्गिक, मृदङ्ग बजाओनिहार ।
**मेआन**–म्यान, खड्गकोष ।
**मेकचओँ**–बाधा, असुद्धरता ।
**मेघउनार**–वृष्टगत मेघक समय ।
**मेघओन**–किञ्चिन्मेघयुत समय ।
**मेघडम्बर**–वंशनिर्मित छाता ।
**मेघदिनाए**–मेघक समयमे उत्पन्न होएनिहार दद्रु ।
**मेघाओन**–मेघओन ।
**मेच**–झाँक, तिर्यक् कर्षण ।
**मेचब**–क्रि० जोरसँ घुमाएब ।
**मेजन**–एक खाद्यमे मिलएबाक दोसर खाद्य ।
**मेट**–नर्तकगणक प्रधान पुरुष ।
**मेटाएब**–क्रि० मेट्+अब–लुप्त होएब १ । मेटब्+ अब–लुप्त करब २ ।
**मेटिआ**–मेट, दलपति ।
**मेठनि**–वारंवार एक बातक बाजब वा एक क्रियाक करब ।
**मेथी**–सं० मेथिका ।
**मेद**–वृक्षविशेष ।
**मेदा**–जैक परम सूक्ष्म चूर्ण ।
**मेधा**–सं० स्मरणशक्ति १ । सलाह, ऐकमत्य २ ।
**मेधा पँटुआ**–पटुआसागक प्रभेद ।
**मेन**–क्षुपविशेष १। आटामे देय घृत २ ।
**मेनदार**–आटामे वृत मिलाए बनाओल (सोहारी) ।
**मेनसिल**–मन:शिला ।
**मेनहर**–कण्टकी क्षुपविशेष ।
**मेबा**–दाख किसमिस प्रभृति शुष्क फल।



**मेमिआएब**–ना० मेमि+अब–मे मे शब्द करब, अजभाषण ।
**मेर**–नटुआ आदिक मण्डली ।
**मेराएब**–क्रि० मेरब्+अब–मिलाएब, दोहराओल डोरीमे तेसर प्रभृति डोरी पैसाएब ।
**मेरिआ**–एक मण्डलीक व्यक्ति ।
**मेरिचाइ**–तीक्ष्णा ।
**मेल**–मिलान, ऐकमत्य, सादृश्य ।
**मेल खाएब**–क्रि० मेल समुचित होएब ।
**मेल पाँच**–मिलानपूर्वक समावेश ।
**मेला**–बहुलोकसंकुलीभाव, जनसम्मर्द ।
**मेह**–मेधि, धान दाउनक खुट्टा ।
**मेहतर**–हि० हेला ।
**मेहनति**–वि० परिश्रम ।
**मेहनतिआ**–वि० परिश्रमी ।
**मेहदी**–वृक्षविशेष ।
**मेहब**–क्रि० मन्थन ।
**मेहमान**–वि० पाहुन ।
**मेहिआँ**–मेहीँ प्रकारक (तण्डुलादि) ।
**मेहिआएब**–ना० मेहीँ करब ।
**मेहीँ**–सूक्ष्म ।
**मेहौती( थी )**–मेहक डोरी जाहिमे कड़ाम बान्हल जाइछ ।
**मैआँ** }
**मैआ** } –मातासँ श्रेष्ठ स्त्री ।
**मैथिल**–सं० उ० मिथिलाभव (ब्राह्मणादि)। स्त्री० मैथिलानी ।
**मैल**–मल १ । मलिन २ ।
**मैलछन**–किञ्चिन्मलिन ।
**मैलमूह**–मलिन मूहबाला ।
**मैलाह**–मैलसँ युक्त, मलिन ।
**मोआर**–पैघ विवर ।
**मोआर फुटब**–क्रि० पैघ विल स्फुटित होएब ।
**मोकड़( र )**–विवर ।
**मोकड़( र ) फुटब**–क्रि० विवर स्फुटित होएब ।
**मोकनि**–ओषधिविशेष ।
**मोकब**–क्रि० गरदनि आदिकेँ नीचाँ दिस दबाएब ।
**मोकर्री**–वि० निश्चितकरक भूमि ।
**मोकूफ**–वि० दासतासँ निष्कासित ।
**मोकूफी**–वि० नोकरीसँ हटाएब, पदच्युति।
**मोख**–टाटक प्रान्तभाग ।
**मोख मारब**–क्रि० मोखमे खड़ही दए बान्हब ।
**मोगल**–वि० मुसलमान जातिविशेष ।
**मोगलान**–वि० मोगलक स्थान ।
**मोगली**–सतरञ्जक एक प्रकारक खेड़ि ।
**मोचण्ड**–तीव्रस्वभावक बूड़ि ।
**मोचण्डपना** }
**मोचण्डी** } –मोचण्डक क्रिया ।
**मोचना( नी )**–बहुत छोट सूक्ष्माग्र चूटा ।
**मोचरब**–क्रि० घुमाएब, ऐँठब ।
**मोचरस**–औषधविशेष ।
**मोछ**–श्मश्रु, नाकक निचला केश १ । कटहरक ओ बन्ध्य फल जाहिमे को नहि होइछ २ ।
**मोछाएब**–क्रि० मोछ (बन्ध्यफल) सँ युक्त होएब ।
**मोजर**–मिनहा ।
**मोजूद**–वि० वर्तमान, स्थित ।
**मोट**–उ० स्थूल । स्त्री० मोटि ।

**मोटका**–उ० स्थूलप्रभेदक । स्त्री मोटकी।
**मोटगर**–उ० अधिक मोट । स्त्री० मोटगरि ।
**मोटधना**–मोट धान ।
**मोटबन्हना**–मोटा बन्हबाक वस्त्र ।
**मोटरा**–पैघ मोटा ।
**मोटरी**–छोट मोटा ।
**मोटा**–वस्त्रबद्ध (अनेक वस्त्रादि) ।
**मोटाइ**–स्थूलता ।
**मोटाएब**–ना० मोट्+अब–स्थूल होएब ।
**मोटामोटी**–अ० स्थूल हिसाबेँ ।
**मोटिआ**–मोट प्रभेदक (धान्यादि) ।
**मोटैत**–मोटा उघनिहार ।
**मोड़**–वक्रता १ । वक्रभावेँ शिरामे आघात २ ।
**मोड़ब**–क्रि० वक्रीकरण ।
**मोड़ा**–मोटक ।
**मोढ़**–पैघ मोढ़ी १ । मूढ़तम २ ।
**मोढ़ा**–काष्ठखण्ड ।
**मोढ़ी**–स्थूल इन्धन ।
**मोताद**–भोजनार्थ नियत देय ।
**मोति**–मुक्ता ।
**मोतिआ बिन्दु**–नेत्ररोगविशेष ।
**मोतिआ बेली**–मल्लिकापुष्पक एक प्रभेद ।
**मोतीचूरक लड्डू**–मिष्टान्नविशेष ।
**मोतीझाबा**–पुष्पविशेष ।
**मोथा**–मुस्तक ।
**मोथी**–दीर्घमुस्तक जकर पटिआ बनाओल जाइछ ।
**मोन**–खारी, परिमाणविशेष १। चित्त २ ।
**मोनक्कह**–वि० स्थिरीकरण ।
**मोन पड़ब**–क्रि० स्मरण होएब ।
**मोन पाड़ब**–क्रि० स्मरण करब, ध्यान ।
**मोनही**–मोन परिमाणक बटिखारा १। एक मोन अँटबाक योग्य (बोरा ढाकी प्रभृति) २ ।
**मोनासिब**–वि० उचित ।
**मोनि**–नदीक अतिगम्भीर प्रदेश ।
**मोफत** } **मोफ्त** }–वि० बिना मूल्य लब्ध ।
**मोम**–बरकाओल मधुमक्षिकागृह ।
**मोमछाता**–मोमसँनिश्छिद्रीकृत वस्त्रक छत्र ।
**मोमजामा**–मोमसँ निश्छिद्रीकृत वस्त्रविशेष ।
**मोमबत्ती**–मोमक वर्त्तिका ।
**मोर**–मयूर ।
**मोरब**–क्रि० मोड़ब, वक्रीकरण ।
**मोराबा**–पागल धात्रीप्रभृति फल ।
**मोरि**–धान रखबाक तत्कालनिर्मित तृणपात्र ।
**मोरी**–बद्ध जलनिर्गममार्ग ।
**मोल**–क्रयण ।
**मोलमोलाइ**–क्रयमूल्यविवाद ।
**मोलाएब**–ना० मोलब्+अब–मूल्यनिर्णय करब ।
**मोलामी**–उपरसँ चढ़ाओल सोनाक पानि प्रभृति ।
**मोस**–मशक ।
**मोसकिल**–वि० उपद्रवसंपात, कठिन ।
**मोसब्बर**–औषधविशेष ।
**मोसम्मात**–स्त्री० बिनु स्वामीक स्वतन्त्र स्त्री ।



**मोसाफिर**–वि० पान्थ ।
**मोसाहेब**–वि० राजाक सहचर ।
**मोसिआनी**–मसीधानी, मसिपात्र ।
**मोस्ताएद**–वि० तत्पर ।
**मोह**–सं० मूढ़ता ।
**मोहनभोग**–मिष्टान्नविशेष ।
**मोहनमाला**–मध्य-मध्यमे मूँगा देल सोनाक माला ।
**मोहर**–मुद्रा, नामादिमुद्रणयन्त्र ।
**मोहस्सिल**–वि० आदेयग्रहणार्थ प्रेषित जन ।
**मोहार**–भीड़, उच्च जलतट ।
**मौगिआह**–स्त्रैण ।
**मौगिआही**–केवल स्त्रीक उपभोगयोग्य (वस्तु) ।
**मौगी**–स्त्री० स्त्री ।
**मौनाह**–उ० अल्पभाषी । स्त्री० मौनाहि।
**मौनी**–छोट पात्रविशेष ।
**मौर**–कोढ़िलाक अलङ्कारविशेष ।
**मौसा**–मातृष्वसृपति ।
**मौसी**–स्त्री० मातृष्वसा ।
**म्याद**–वि० कारावास १ अवधि २ ।
**म्यान**–मेआन, खड्गकोष ।

## य

**यथा**–धन १ । सं० अ० जेता २ ।
**यथेष्ट**–सं० इच्छानुरूप, पर्याप्त ।
**यथोचित**–सं० उचितानुरूप ।
**यदि**–सं० अ० जँ ।
**यद्यपि**–सं० अ० प्रक्रान्तविरोधद्योतक ।
**यन्त्र**–भूषणविशेष १ । सं० तान्त्रिक प्रयोगविशेष २ । कल ३ ।
**यम** } **यमराज** }–सं० यमुनाक भाए, वैवस्वत ।
**यमुना**–सं० नदीविशेष ।
**यव**–सं० जओ ।
**यश**–सं० कीर्ति ।
**याग**–सं० यज्ञ ।
**याचक**–सं० मँगनिहार, भिक्षुक ।
**यात्रा**–सं० प्रस्थान ।
**यात्री**–सं० पथिक ।
**यावत्**–सं० अ० यावत्कालपर्यन्त ।
**युग**–सं० कलियुगादि ।
**युक्त**–सं० उचित, सङ्गत ।
**युक्ति**–सं० हेतु, साधन ।
**यूप**–सं० यागीय काष्ठविशेष ।
**योग**–सं० संबन्ध १। चित्तक निरोध २ ।
**योगाभ्यास**–सं० योगक्रियाक अभ्यास ।
**योगाभ्यासी**–सं० योगाभ्यासकर्ता ।
**योगी**–सं० योगाभ्यासी, विरक्त ।
**योग्य**–सं० समर्थ, योग्यताशील ।
**योग्यता**–सं० उत्कृष्टगुणवत्ता १ । सम्भवविषयता २ ।

## र

**रइता**– रैँची ओ दही दए बनाओल तीमन ।
**रइनि**–राति ।
**रए**–अ० नीच पुरुषक सम्बोधन ।
**रओ**–अ० नीच पुरुषक सम्बोधन ।
**रकतकोँए**–रक्तोत्पल, कोकनद ।
**रकतचानन**–लाल चन्दन ।
**रकता साग**–ललका साग ।
**रकबा**–वि० भूमिक परिमाण ।
**रकम**–अन्न ।

**रकसा**–तृणविशेष ।
**रक्षक**–सं० रक्षाकारक ।
**रक्षा**–सं० पालन, उपद्रवसँ बँचाओ ।
**रखना**–रखबाक पात्र ।
**रखबार**–उ० रक्षक । स्त्री० रखबारनी ।
**रखबारि**–रक्षकत्व ।
**रखाओँत**–स्वार्थ रक्षित् तृणभूमि ।
**रखौली**–धरुबी, रत्यर्थ नियुक्त परस्त्री ।
**रगड़**–घर्षण ।
**रगड़ब**–क्रि० घर्षण ।
**रँग( रङ )**–रञ्जक द्रव्य १। क्रम, स्थिति २।
**रँग( रङ )ब**–क्रि० रञ्जन ।
**रँग( रङ )रेज**–रञ्जक जातिविशेष ।
**रँग( रङ )साज**–भीतमे चित्रलेखक ।
**रँगे( रङे )रङ्ग**–सर्वत्र रक्त ।
**रघबा बोआर**–मत्स्यविशेष ।
**रङ्ग**–सं० रञ्जकद्रव्य १। क्रम, स्थिति २।
**रङ्गबिरङ्ग**–अनेक रङ्गक ।
**रचना**–सं० निर्माण १। ओषधिविशेष २ ।
**रचब**–क्रि० निर्माण ।
**रच्छक**–रक्षक ।
**रच्छा**–रक्षा ।
**रजगिद्ध**–गृध्रविशेष ।
**रजन्ती**–शाकविशेष ।
**रजपूत**–उ० क्षत्रिय जातिविशेष । स्त्री० रजपुतनी ।
**रजभाट**–मुसलमानक भाट ।
**रजला**–धान्यविशेष ।
**रजाइ**–दोलाइ, दोहरि ।
**रटनी**–तृणविशेष ।
**रटब**–क्रि० वारंवार पढ़ब ।
**रँड़( रण )खेप खेपब**–क्रि० राँड़ (विधवा) जेकाँ काल बिताएब, कष्टपूर्वक कालक्षपण ।
**रड़धूमस**–राड़जेकाँ धूमस करब ।
**रड़पोख**–राड़(शूद्र)केँ पोसनिहार, रड़ाह।
**रड़हा**–राड़क योग्य ।
**रड़ाह**–राड़क सन क्रिया कएनिहार ।
**रतिगर**–अधिक राति, पहरसँ अधिक रात्रिक भाग ।
**रतिचर**–रात्रिञ्चर, रातिमे चरनिहार पक्षी ।
**रतुका**–रात्रिभव ।
**रतौन्ही**–रात्र्यन्धता ।
**रत्ती**–रिक्तका ।
**रथ**–सं० बग्गी ।
**रथयात्रा**–सं० रथपर भगवानक यात्रा ।
**रद्दा**–रादा, भीतपर द्वितीयादि बेर चढ़ाओल माटि ।
**रद्दी**–वि० बेकार, कार्यानर्ह (वस्तु) ।
**रनरनाएब**–क्रि० रन-रन शब्द करब ।
**रनिबास**–रानीक वासस्थल, अन्तःपुर ।
**रन्ना**–तकथा आदि छीलिके सम करबाक यन्त्रविशेष ।
**रन्हुआ**–रान्हिकेँ बनाओल (चाउरक रोटी प्रभृति) ।
**रपट**–अधिक दौड़ ।
**रपटब**–क्रि० अधिक दौड़ब ।
**रप्तौ**–वि० अभ्यास ।
**रबड़**–वृक्षविशेषक लस्सा ।
**रबाइस**–अग्निचित्र ।
**रबाएब**–क्रि० ठेँगाप्रभृतिक स्वतः विदलन ।
**रबाना**–वि० प्रस्थित ।
**रबानी**–शिबिकावाही जातिविशेष ।



**रवि**–सं० सूर्य १। शनिक अगिला दिन २।
**रबिआती**–रब्बी (अगहनीक अगिला) अन्न ।
**रमण्डर**–क्रीड़ाविशेष ।
**रमचकरा**–कृतान्नविशेष ।
**रमना**–चत्वर ।
**रमानी**–रबानी ।
**रस**–सं० इच्छा १। खेतक गुणविशेष २। पत्रादिक जलीय अंश ३ ।
**रसओँ**–दूरसँ किञ्चित् आगिक ताप ।
**रसगुल्ला**–मिष्टान्नविशेष ।
**रसनचौकी**–वाद्यविशेष ।
**रसपीपरि**–पिप्पलीक प्रभेद ।
**रसाएब**–ना० रस्+अब–खेतक रससँ युक्त होएब ।
**रसायन**–सं० रस, स्वर्णभस्मादि ।
**रसिआ**–सरस व्यक्ति ।
**रसिक**–सं० सरस व्यक्ति ।
**रसीद**–वि० द्रव्यप्राप्तिप्रमाणपत्र ।
**रसौती**–हालक रससँ बाओग ।
**रस्सा**–डोरी ।
**रस्सी**–डोरी ।
**रहटि( ठि )**–अरघट्ट, पानि भरबाक धिरनीबाला यन्त्र ।
**रहब**–क्रि० स्थिति, गतिनिवृत्ति ।
**रही**–मन्थनदण्ड ।
**रहु**–रोहित, मत्स्यविशेष ।
**रहुआ बोआर**–सामुद्रिक पैघ मत्स्यविशेष।
**राइ**–राजिका, रैँची ।
**राउटी**–एकहारा पटगृहविशेष ।
**राए**–वि० राय, संमति ।
**राकस**–उल्कामुख प्रेत ।
**राखी**–खेतक रक्षाक वेतन १ । रक्षिका, मङ्गलसूत्र २ ।
**राँग**–रङ्ग सं०, धातुविशेष ।
**राँगी**–धान्यविशेष ।
**राज**–इष्टका जोड़निहार कारीगर १ । राजा २ । राज्य ३ ।
**राज-काज**–राजकीय कार्य ।
**राजकीय**–सं० राजसम्बन्धी ।
**राज-दरबार**–वि० राजसभा ।
**राजपाट**–राज्यादि ।
**राजपूत**–क्षत्रिय जातिविशेष ।
**राजमहल**–राजाक प्रासाद ।
**राजस**–बलात् उपद्रव ।
**राजसिंहासन**–सं० राजगद्दी ।
**राजसी**–नृपोचित ।
**राजा**–सं० नृपाल ।
**राजा-दैव**–राजदैवप्रयुक्त बाधा ।
**राजासाही**–लोटाक प्रभेद ।
**राजी**–वि० सहमत, प्रसन्न, अविरुद्ध ।
**राजीनामा**–परस्पर मेलक स्वीकारपत्र ।
**राटन**–वि० तौलबाक यन्त्रविशेष ।
**राड़**–उ० शूद्र । स्त्री० राड़िनि ।
**राँड़( राण )**–स्त्री० रण्डा, विधवा ।
**राताराती**–अ० दिनक अस्पर्शपूर्वक रातिमे ।
**रातिबिराति**–राति तथा वर्षादि उपद्रवसँ युक्त राति ।
**रातिम**–उपनयनसँ चारिम रातिक कृत्यविशेष ।
**रातुक**–रात्रिसम्बन्धी ।
**रादा**–रद्दा, भीतपर एक दिनमे चढ़ाओल माटि ।

**रानी**–राज्ञी ।
**रान्ह**–पाक ।
**रान्हब**–क्रि० रन्ह+अब–रन्धन, पाक-क्रिया।
**राब**–चोनीक साधक इक्षुविकार ।
**राबड़ी**–छाल्ही मिसरीसहित दूध ।
**राबा**–धातुक छोट-छोट बिन्दु ।
**रामकेरा**–फलविशेष ।
**रामचकरा**–कृतान्नविशेष ।
**रामझिँगु( झिङ्गु )नी**–व्यञ्जनविशेष ।
**रामदतमनि**–कण्टकलताविशेष ।
**रामदाना**–अन्नविशेष ।
**रामदुलारी**–धान्यविशेष ।
**रामनी**–धान्यविशेष ।
**रामरूचि**–व्यञ्जनविशेष ।
**राय**–वि० राए, विचार, संमति ।
**राल**–धूमनसँ बनाओल लस्सा ।
**रास**–नृत्यविशेष १ । पुञ्ज, रात्रि २ ।
**रासधारी**–रास कएनिह ।
**रासि**–रश्मि, घोड़ाप्रभृतिक डोरी ।
**रास्ता**–वि० मार्ग ।
**राहठ**–राहड़िक सुखाएल वृक्ष ।
**राहड़ि**–आढ़की, द्विदल अन्नविशेष ।
**रिआइत-खिआइत**–अ० खर्च होइत-होइत ।
**रिकबी**–वि० छोट भोजनपात्र ।
**रिकाब**–वि० घोड़सबारक पाएरक अवलम्बन ।
**रिट्ठी**–हैँठीक फलत्वक् ।
**रितब**–क्रि० रीतब ।
**रित्ती-छित्ती**–छितिर-बितिर, अश्रेणीबद्ध, यत्र-कुत्र विकीर्ण ।

**रिनिआ**–अधमर्ण, ऋण लेनिहार ।
**रिन्हुका**–नित्य प्रात:कालक सिद्धान्नभोज्य।
**रिबरिब**–मुखमे वेदनाविशेषजनक (ओल आदि) ।
**रिबरिबी**–ओल आदिक भक्षणजन्य मुखक वेदनाविशेष।
**रिसाल**–मालिकक ओतए पठाओल नगद वा अन्न ।
**रीढ़**–पीठक बिचला हाड़ ।
**रीतब**–क्रि० रित्+अब–नेनाक अनुरक्त होएब ।
**रीन**–ऋण ।
**रील**–तागक प्रभेद ।
**रीस**–ईर्ष्या ।
**रुक्ख( ख )**–शुष्क (माटि आदि) ।
**रुखान**–कमारक हथिआरविशेष ।
**रुखानी**–छोट रुखान ।
**रुखिगर**–रूखि (अगिला प्रकाश) बोला।
**रुचब**–क्रि० देखबामे नीक लागब ।
**रुचि**–सं० इच्छा, भोजनेच्छा ।
**रुचिगर**–भोजनमे परम प्रिय ।
**रुपैगर**–अधिक रूपैआबाला ।
**रुपैया**–रूप्यक, राजतमुद्रा ।
**रुसना**–उ० अधिक रुसनिहार । स्त्री० रुसनी ।
**रुसाफुली( ल्ली )**–रुष्टता तत्कृत मुखमालिन्यादि ।
**रूआ**–पाइक चतुर्थांश ।
**रूखि**–आगाँमे प्रकाश ।
**रूप**–सं० आकार, स्वरूप १। रजत २ ।
**रूपकरन**–वृक्षविशेष ।
**रूपमञ्जरी**–पुष्पविशेष ।



**रूसब**–क्रि० रुस्+अब–रुष्ट होएब ।
**रूसा-फूली**–रुष्टता तत्कृत मुख-मालिन्यादि।
**रेकब**–क्रि० शिशुक धावन ।
**रेका-तोकी**–'रे' तोँ' शब्दोच्चारणपूर्वक कहल ।
**रेकार**–'रे' शब्देँ सम्बोधन ।
**रेकार-तुकार**–रेका-तोकी ।
**रेखा**–सं० डाँड़ि, सरल चिह्न ।
**रेँगनी**–कण्टकारी ।
**रेँगब**–क्रि० एक पाएरेँ कुदैत चलब ।
**रेघा**–रेखा, चिह्न ।
**रेजरेजा**
**रेजरेजीस** } –महाश्रम ।
**रेजा**–उ० राजक सङ्ग काज कए निहार। स्त्री० रेजी ।
**रेठान**–वारंवार गमन ।
**रेड़**–अनेक लोकक धक्का ।
**रेड़ब**–क्रि० चलैत धक्का मारब ।
**रेड़म-बहेड़म**–अनेक लोकक संकुलता-प्रयुक्त धक्का ओ घोल ।
**रेत**–स्रोतस्, प्रवाह ।
**रेतब**–क्रि० रेतीसँ छीलब ।
**रेती**–घर्षणसँ लोह आदिक तक्षणयन्त्र ।
**रेबा**–मत्स्यविशेष ।
**रेबाज**–वि० सदासँ भए आएल चालि, सम्प्रदाय ।
**रेबाड़**–पाछाँसँ खेहाड़ब ।
**रेबाड़ब**–क्रि० पाछासँ खेहाड़ब ।
**रेल**–वि० धूमयानमार्ग १। रेलगाड़ी २ ।
**रेल-गाड़ी**–धूमयान ।
**रेस**–वि० तीव्रगति, वेग ।

**रेसब**–क्रि० भग्न धातुपात्रक सन्धान ।
**रेसम**–पाट ।
**रेसमी**–पट्टरचित (वस्त्र) ।
**रेह**–रेखा ।
**रेहल**–जिल्द बान्हल पुस्तक रखबाक आधारपट्ट ।
**रैअति**–वि० प्रजा ।
**रैँची**–राजिन ।
**रैता**–रैँची ओ दहीक व्यञ्जनविशेष ।
**रैनि**–रजनी, राति ।
**रोआब**–वि० रोब, अलङ्घनीय आज्ञा ।
**रोआबी**–वि० रोबदार, अलङ्घनीय आज्ञाबाला ।
**रोइआँ**–रोम ।
**रोइँउपाड़**–रोमोत्पाटनव्रण ।
**रोक**–अवरोध ।
**रोक-टोक**–अवरोधादि ।
**रोकब**–क्रि० अवरोधन ।
**रोकाबट**–हि० अवरोध ।
**रोग**–सं० व्याधि ।
**रोगहा**–उ० अनादरणीय रोगाह । स्त्री० रोगही ।
**रोगाएब**–ना० रोग+अब–रोगसंयुक्त होएब ।
**रोगाह**–उ० रोगयुक्त । स्त्री० रोगाहि ।
**रोगी**–सं० अलि० रोगयुक्त ।
**रोच**–धाख, भाषणादिमे भय ।
**रोज**–हि० दिन ।
**रोज उतारब**–क्रि० दण्डन ।
**रोजगार( री )**–वाणिज्य ।
**रोजनामचा**–प्रतिदिनक खर्चोटा ।
**रोजहा**–दैनिक वेतनपर कार्यार्थ नियुक्त अनादरणीय ।

**रोट**–पैघ मोट रोटी ।
**रोटी**–मोट सोहारी, शष्कुली ।
**रोड़**–अधिक उलाओल (दालि) ।
**रोड़ा**–पजेबाक छोट-छोट टुकड़ा ।
**रोड़ी**–छोट रोड़ा ।
**रोदात**–वि० मुखोत्तर न्यायप्रवर्तन ।
**रोप**–गाछक रोपण ।
**रोपब**–क्रि० रोपण ।
**रोब**–वि० रोआब ।
**रोबकारी**–रोदात, मुखोत्तर न्यायप्रवर्तन ।
**रोल**–वि० गोल शलाका ।
**रोस**–क्रोध, क्रोधजन्य आवेग ।
**रोसनी**–वि० दीपादिप्रकाश ।
**रोसाह**–उ० क्रोधी । स्त्री० रोसाहि ।
**रोहनि**–रोहिणी नक्षत्र ।
**रोहनिआ**–रोहिणीमे होएनिहार ।
**रोहिनी** / **रोहीनि** } –रोहिणी नक्षत्र ।
**रौद**–आतप ।
**रौदमुहाँ**–अ० आतपाभिमुख ।
**रौदाएब**–ना० रौद+अब–रौदसँ तप्त होएब।
**रौदिआह**–आतपप्रधानक (वर्षासमय) ।
**रौदी**–अनावृष्टि ।
**रौला-रौली**–नृत्यविशेष ।

## ल

**लइ**–पिष्ट तण्डुलादिक लस्सा ।
**लए**–अ० निमित्तेँ १ । ग्रहण कए २ ।
**लओठा**–पैघ (हर) ।
**लकड़ी**–हि० काष्ठ ।
**लकबा**–वातरोगविशेष ।
**लकलक पातर**–उ० अत्यन्त कृश । स्त्री पातरि ।
**लखौरी**–खपराक प्रभेद ।
**लग**–समीप ।
**लँग**–लवङ्ग ।
**लँगटा**–उ० अनादरणीय लङ्गट । स्त्री० लँगटी ।
**लँगटाह**–उ० किञ्चित् लङ्गट । स्त्री० लँगटाहि ।
**लँगड़ा**–उ० अनादरणीय नाँगड़ ।
**लगता( ति )**–कोनो कार्यमे समस्त खर्च।
**लगन**–लग्न, शुद्ध समय ।
**लगनी**–गीतविशेष ।
**लगभग**–अ० किछु कम वा अधिक ।
**लगले**–अ० तुरन्त ।
**लगले-लागल**–अ० अव्यवधानेन पुनःपुनः।
**लगहर**–मङ्गलार्थ पूर्णकलश ।
**लगहरि**–दूध देनिहारि (गाय आदि) ।
**लगही**–लघुशङ्का, मूत्रत्याग ।
**लगान**–पत्रारूढ़ कर ।
**लगातार**–निरन्तर ।
**लगानी**–सूदिप द्रव्यादिप्रदान ।
**लगाम**–घोड़ाक रश्मि, प्रग्रह ।
**लगामी**–गलफड़क घाओ ।
**लगार**–लागि कएनिहार, मादक ।
**लगारि**–लागिकेँ पड़निहार, दृढ़संकल्प १। अधिक उपजनिहार (धान) २ ।
**लगिँचाएब**–ना० लगीच+अब–समीप होएब ।
**लगीच**–लग, समीप ।
**लगुआ**–दासभिन्न आश्रित व्यक्ति ।
**लगोँटा( टी )** / **लगौँटा( टी )** } –कौपीन ।
**लगौरी**–जोड़ल (चार आदि) ।



**लगौरी असगन्ध**–ओषधिविशेष ।
**लग्गा( ग्गी )**–पातर लम्बा वंशदण्ड ।
**लग्न**–सं० मेषवृषादि ।
**लङ**–लँग, लवङ्ग ।
**लङटा**–उ० अनादरणीय लङ्गट । स्त्री० लङटी ।
**लङटाह**–उ० किञ्चित् लङ्गट । स्त्री लङटाहि ।
**लङड़ा**–अनादरणीय पङ्गु ।
**लङोटा( टी )** / **लङौटा( टी )** } –कौपीन ।
**लङ्क लेब**–क्रि० पड़ाएकेँ नुकाएब ।
**लङ्गट**–उ० बदमास, बद्द, उत्पाती । स्त्री० लङ्गटि ।
**लङ्गूर**–पैघ लाङ्गूलबाला बानर ।
**लचकब**–क्रि० पटै प्रभृतिक भारवश आन्दोलन ।
**लचका**–वंशनिर्मित सेतु ।
**लचलच करब**–क्रि० चलकब ।
**लचलचाएब**–क्रि० लचलच्+अब–लचकब ।
**लचलची**–लचकब ।
**लच्छन**–लक्षण ।
**लछमी**–लक्ष्मी ।
**लछुमन भोग**–धान्यविशेष ।
**लछुमना**–जड़ीक प्रभेद ।
**लजकोटर**–उ० अत्यन्त लज्जाशील (निन्दामे) । स्त्री० लजकोटरि ।
**लजबिज्जी** / **लजबीजी** } –लज्जावती, क्षुपविशेष।
**लजाएब**–ना० लाज+ अब–लाजसँ युक्त होएब ।
**लज्जति**–तत्त्व, सारांश ।
**लट**–केशक अग्रभाग १ । संलग्नता, संगति २ ।
**लटकन**–मालक भूषणविशेष ।
**लटकब**–क्रि० उपर सँबद्ध भए भूमिदिस नम्र होएब ।
**लटकेना**–नाना वस्तुक छोट (दोकान) ।
**लटपट**–शुष्क झोरबाला (तीमन) १ । अस्तव्यस्त, पर्याकुल (वस्त्रादि) २ ।
**लटपटाएब**–क्रि० लटपट्+अब–स्खलन।
**लटपटाह**–उ० स्खलनशील । स्त्री० लटपटाहि ।
**लटपटिआ**–लेन-देनमे झमेलिआ ।
**लटपटी**–लेन-देनमे झमेल ।
**लटब**–क्रि० दुर्बल ओ पातर होएब ।
**लटबा**–गुड्डीक ताग लपटएबाक साधन ।
**लटबेल**–चारू कातमे बान्हू ।
**लटबौरा**–अनर्गल कएनिहार, दुलारू, आग्रही ।
**लट लागब**–क्रि० पूर्वापरक संगति ।
**लटाइ**–लटबा ।
**लटाढम** / **लटारहम** } –प्रणयजन्य शिशुक आग्रह ।
**लटुआएब**–क्रि० लटु+अब–रोगादिकृत आबल्यसँ अक्षम होएब ।
**लट्टा**–चूड़ामे सटल चूड़ा १ । मत्स्यविशेष २ । चलबाक काल पाएरमे पाएर सटब ३ । जटा ४ ।
**लट्टोपट्टो**–नेनाक एक खेलओना ।
**लठिआएब**–ना० लाठी+अब–लाठीसँ मारब।

**लठिधर**–युद्धार्थ यष्टिधारी ।
**लड़क्का**–युद्धदक्ष ।
**लड़ब**–क्रि० युद्ध करब ।
**लड़ाइ**–युद्ध ।
**लड़ाक**–योद्धा ।
**लडुबी**–मिष्टान्नविशेष ।
**लडुब्बा**–गोल पैघ (आम) ।
**लडुब्बी**–गोल छोट (आम) ।
**लड्डू**–लड्डुक, मिष्टान्नविशेष ।
**लण्ठ**–मूर्ख अविचारी ।
**लत**–निम्न (तुलाभाग), तराजूक एक पल्लासँ नम्र भेल (दोसर पल्ला) ।
**लतखुर्दन**–लतमर्दन, लतसँ धाँगब ।
**तलखोरा**–लात पोछबाक साधन ।
**लतमर्दन**–लतखुर्दन ।
**लतमारा**–लतखोरा ।
**लतरब**–क्रि० लताक प्रसरण ।
**लता**–सं० लत्ती ।
**लताम**–फलविशेष, अमरूद हि ।
**लति**–स्वभाव ।
**लतिआएब**–ना० लात+अब–लात मारब।
**लतिआहा**–लताबाला ।
**लत्तहिँ-पत्तहिँ**–अ० अतिशीघ्र ।
**लत्ता**–कर्पट, जीर्ण छोट वस्त्रखण्ड ।
**लत्ती**–लता ।
**लथराह**–उ० लथार मारनिहार (पशु) । स्त्री० लथराहि ।
**लथार**–मालक पादप्रहार ।
**लदना**–पीठपर लादिकेँ वस्तु उधनिहार (घोड़ाप्रभृति) ।
**लदफदाएब**–क्रि० लदफद्+अब–धोती आदिक स्खलन ।

**लदबद**–स्त्री० पूर्णगर्भभाराक्रान्त ।
**लदबदाएब**–क्रि० लदबद्+अब–पूर्णगर्भसँ युक्त होएब ।
**लद(ध)हा**, **लधा** } –हर लधबाक डोरी ।
**लप**–एक प्रसृतहस्तपरिमाणक ।
**लपकब**–क्रि० अतित्वरया ग्रहण ।
**लपटन**–मल्लयुद्धविशेष ।
**लण्टब**–क्रि० शिक्षार्थ मल्लयुद्ध ।
**लपसी**–लप्सिका, अतिप्रशंसा ।
**लपौड़ी**–मिथ्या अतिप्रशंसा ।
**लफन्दर**–बहुमिथ्याभाषी ।
**लवङ्ग**–सं० लँग ।
**लवङ्गलता**–सं० पुष्पलताविशेष ।
**लवङ्गी**–मेरिचाइक प्रभेद ।
**लबनी**–तारी चुबएबाक पात्र ।
**लबब**–क्रि० झुकबं, नमब ।
**लबर**–उ० मिथ्या बहुभाषी । स्त्री० लबरी।
**लबर-लबर बाजब**–क्रि० झट-झट बहुभाषण (निन्दामे) ।
**लबरा**–उ० अनादरणीय लबर । स्त्री० लबरी ।
**लबलबाएब**–क्रि० लबलब्+अब–अनवसरक भाषण (निन्दामे) ।
**लबलबी**–काकलक, कण्ठविवरस्थ मांसपिण्डविशेष ।
**लबाठी**–लाबामे बिनु फूटल अन्न ।
**लबान**–नम्रीभाव ।
**लबै**–तितीरक प्रभेद ।
**लमका**–लाम प्रभेदक ।
**लय**–सं० गीतक स्वर १। लए, हेतु २।
**लयगर**–नीक स्वरबाला ।



**लरकब**–क्रि० शिथिल भए नीचाँ दिसि नमब ।
**लरगुज**–अत्यन्त कोमल ओ शिथिल ।
**लरताङर**–शक्तिहीनतासँ अकर्मण्य ।
**लरब**–क्रि० शिशुक प्राथमिक गमन ।
**लरबर**–शिथिलावयवक ।
**लरबराएब**–क्रि० लरबर्+अब–शिथिलावयवक होएब ।
**लरोना**–क्रि० नेनाक चलब सिखबाक (गाढ़ी) ।
**लल**–लल्ल, अन्नवस्त्रादिक विकल ।
**ललकब**–क्रि० क्रोधेँ जोरसँ बाजब ।
**ललका**–लाल प्रभेदक ।
**ललकारब**–क्रि० क्रोधवश उच्च स्वरेँ कथन ।
**ललका-ललकी**–क्रोधवश परस्पर जोरसँ भाषण ।
**ललचाएब**–क्रि० ललच्+अब–गृध्नु होएब, लोभाएब ।
**ललबौआ**–पुं० दुलारू ।
**ललित**–सं० सुन्दर ।
**ललितगर**–उ० अति सुन्दर । स्त्री० ललितगरि ।
**ललोन**–किञ्चित् लाल ।
**लल्ल**–लल, अन्नवस्त्रादिविकल ।
**लसकर**–वि० सैन्य ।
**लसलस**–लस्साजेकाँ सटनिहार ।
**लसलसाएब**–क्रि० लसलस्+अब–लसलस होएब ।
**लसलसी**–सचनशीलता ।
**लसि**–सम्पर्क ।
**लसिगर**–परस्पर सटबाक योग्य (भातप्रभृति) ।

**लसून**–लशुन ।
**लस्सा**–निर्यास ।
**लहक**–धधराक अग्रभाग ।
**लहकब**–क्रि० अग्नि संयोगाधिक्यसँ अल्प जरब ।
**लहका**–बिनु तड़ेराक माछ मारबाक छीप ।
**लहटगर**–रमणीय ।
**लहटन**–पल्लीसदृश जन्तुविशेष ।
**लहटोरा**–पक्षिविशेष ।
**लहठी**–लाक्षालङ्करण ।
**लहना**–सूदि पर लागल रुपैआ ।
**लहब**–क्रि० सफल होएब ।
**लहरब**–क्रि० प्रज्वलित होएब ।
**लहरि**–ज्वाला १ । जोह, तरङ्ग २ ।
**लहसन**–क्वचित् शरीरस्थ पैघ कारी चिह्न।
**लहसुन**–लशुन ।
**लहसुनिआ**–भूषणविशेष ।
**लहुक**–छोट, हल्लुक, लघु ।
**लहेरि**–उ० लाक्षालङ्करणकार जातिविशेष । स्त्री० लहेरिनी ।
**लहेरिआ बाजू**–बाहुक भूषणविशेष ।
**लहेरिआ बान्हू**–बान्हूक प्रभेद ।
**लाएब**–क्रि० लब्+अब–आनयन ।
**लाएल**–आनीत ।
**लाख**–लक्ष ।
**लाखपति**–लक्षेश ।
**लाखराज**–सम्म्राटसँ निवर्तित करबाला (भूमि) ।
**लागन**–लाङ्गल, हरक ओ अवयव जे जोतबाक काल हाथसँ पकड़ल जाइछ ।

**लागब**–क्रि० लग्+ अब–संबद्ध होएब १ । पन्हाएब २ । (परि, हाथ इत्यादिक सङ्ग एकर अनेक अर्थ)।

**लागल**–लग्न, सम्बद्ध ।

**लागल-लागल**–अ० शनैःशनैः ।

**लागि**–शीतज्वर १ । निसाँ, मद २ । सम्बन्ध ३ ।

**लाँघ**–लङ्घन, बाहबाक काल मालपर मालक चढ़ब ।

**लाँघब**–क्रि० लैघ्+अब–लङ्घल ।

**लाङड़्**–उ० नाङड़्, खञ्ज । स्त्री० लाङड़ि।

**लाङड़ि**–नाङड़ि, लाङ्गूल ।

**लाज**–लज्जा ।

**लाट**–अवसर ।

**लाठालाठी**–परस्पर लाठीक प्रहार ।

**लाठी**–यष्टि, पैघ ठेँगा ।

**लाठी-लठौबलि**–लाठालाठी ।

**लाढ़**–सानुनय हठ ।

**लाढ़ि**–पानिपर होएनिहार तृणविशेष ।

**लाथ**–छल, अपलाप ।

**लाद**–गाड़ी आदिपर वस्तुक आरोपण ।

**लादब**–क्रि० लद्+अब–गाड़ी-प्रभृतिपर वस्तुस्थापन ।

**लाधब**–लध्+अब–चिरकालेँ सम्पाद्य क्रियाक आरम्भ ।

**लाफु**–शाकविशेष ।

**लाबन**–माटिक दीपाधारविशेष ।

**लाबा**–लाज सं०, भृष्टधान्यस्फोट ।

**लाबा-दूआ**–शाकादिक्रयणमे स्वीकृतसँ किछु अधिक वस्तुक दान ।

**लाभ**–सं० प्राप्ति ।

**लाम**–उ० लम्ब । स्त्री० लामि ।

**लायक**–वि० योग्य, बुधिआर ।

**लार**–संचालन, लारब ।

**लार-चार**–संचालनादि, प्रचार ।

**लारना**–संचालनक साधन दर्वीप्रभृति ।

**लारनि**–लारना ।

**लारब**–क्रि० लार्+अब–संचालन ।

**लारूबातू**–अत्यन्त शिथिल ।

**लाल**–रक्तवर्ण ।

**लालकी**–शिबिकाविशेष ।

**लालच**–हि० गृध्नुताँ, उत्कट लोभ ।

**लालची**–गृध्नु, अत्यन्त लोभी ।

**लालटेम**–वि० दीपपात्रविशेष ।

**लालटेस**<br>**लालबुन्द** } –अत्यन्त रक्त ।<br>**लालभुजुङ्ग**

**लालसर**–जलचर पक्षिविशेष ।

**लाल-सिमरिफ**–सिमरिफसन लाल ।

**लालिमा**<br>**लाली** } –रक्तता ।

**लास**–वि० मुर्दा, शरीर ।

**लाह**–लाक्षाविकार ।

**लाहट( ठ )**–मोहर उखड़बाक लाह ।

**लाहब**–क्रि० फूटल लहठीकेँ धिपाए संलग्न करब ।

**लाही**–लाक्षा ।

**लिखब**–क्रि० लेखन ।

**लिखा**–लिखित कुशलादिपत्र ।

**लिखा-पढ़ी**–लिखब-पढ़बप्रभृति ।

**लिखिआ**–छोटका (बनसी) ।

**लिखुआ**<br>**लिखोट** } –हस्तलिखित ।



**लिच्छोपलिच्छ**–अत्यन्त शुद्ध ।

**लिट्टी**–साक्षात् अग्निपक्व स्थूल रोटी।

**लिढ़िआह**–लीढसँ युक्त (पोखरि) ।

**लिद्दी**–हाथी घोड़ाप्रभृतिक विष्ठा ।

**लिधुरिआ**–छोट नेना ।

**लिधुर**–रुधिर, रक्त ।

**लिलकण्ठ**–नीलकण्ठ ।

**लिलोह**–निराश ।

**लीक**–गाड़ीक पहिआक चिह्न ।

**लीख**–लिक्षा, केशक कीटविशेष ।

**लीखब**–क्रि० लिख्+अब–लेखन ।

**लीखा**–लिखा, कुशलादिपत्र ।

**लीखा-पढ़ी**–लिखब पढ़बप्रभृति ।

**लीची**–फलविशेष ।

**लीढ़**–पृष्ठवंश, पीठक बिचला हाड़ १ । जलक उपरमे मोट भए जनमल तृणविशेष २ ।

**लील**–नीली, क्षुपविशेष १ । ओहिसँ बनाओल रङ्ग २ ।

**लीलपङ्खी**–चारू कात नील ओ मध्यमे लाल (साड़ी) ।

**लुकझुक**–मिझएबापर उद्यत (दीपादि), अस्तप्राय (सूर्यादि) ।

**लुकझुकाएब**–क्रि० लुकझुक्+अब–लुकझुक करब ।

**लुकठी**–अग्निमुख काठी ।

**लुक्कड़**–असदूवृत्तिक (व्यक्ति) ।

**लुक्कुस**–फलविशेष ।

**लुक्खी**–गाछपर चढ़निहार चतुष्पद जन्तुविशेष ।

**लुगता**–नीचता, जधन्यता ।

**लुचक्कड़**–लुचलुच कएनिहार ।

**लुचलुच करब**–क्रि० सञ्च नहि रहब, वृथा हस्तादिव्यापार करब (निन्दामे)।

**लुचिआ**–स्त्री० लुच्ची (गारिमे) ।

**लुच्चा**–पुं० अनादरणीय लुचक्कड़ ।

**लुच्ची**–स्त्री० अस्थिर अनादरणीय स्त्री०।

**लुझब**–क्रि० लूझब ।

**लुटब**–क्रि० लुण्ठन ।

**लुढ़कब**–क्रि० गड़कब ।

**लुतुक**–लति, अभ्यास, प्रकृति ।

**लुत्ती**–चिनगी १ । मशकाकार कीट-विशेष २ ।

**लुदुर-लुदुर**–अ० शिशुक मन्द-मन्द (चलब) ।

**लुधकब**<br>**लुबुधब** } –क्रि० एकमे अनेकक योग ।

**लुरिगर**–उ० लूरिबाला, क्रियादक्ष । स्त्री० लुरिगरि ।

**लुलुआएब**–क्रि० लुलु+अब–खिसि-आएब।

**लुलुहाएब**–क्रि० लुलुहब्+अब–नीरोग पत्रपुष्पादिसँ युक्त होएब ।

**लुलुहार**–सम्पन्न शाखापत्रादिसँ युक्त ।

**लुल्ह**–उ० एक हाथसँ शून्य । स्त्री० लुल्हि ।

**लुल्हुआ**–मणिबन्ध ।

**लू**–वि० सूर्यक घातक तीव्र किरण ।

**लूझब**–क्रि० लुझ्+अब–कौआक हठात् लोलसँ लेब ।

**लूटब**–क्रि० लुट्+अब–लुण्ठन ।

**लूटि**–लुण्ठन ।

**लूरि**–अवगति, दक्षता ।

**लूलूथूथू**–अत्यन्त तिरस्कारपूर्वक परास्त ।
**लेआएब**–क्रि० लेअब्+अब–बजाए लाएब, सादर निमन्त्रण ।
**लेआओन**–सादर ता कार्य रहबाक निमन्त्रण ।
**लेखा**–गणना, हिसाब ।
**लेखेँ**–अ० गणनासँ, विचारेँ, बुद्धिक अनुसार ।
**लेटाएब**–क्रि० लेट्+अब–भूमिमे समन्तात् संघर्षण ।
**लेढ़ब, लेढ़ाएब, लेढ़िआएब**–क्रि० लेढ्+अब, लेढ्+अब लेढि+अब–कर्दमादिमे समन्तात् संघर्षण ।
**लेध**–कर्दमसहिते उपड़निहार (धान आदिक बीआ) ।
**लेधुरिआ**–स्वयं स्वकार्याक्षम नेना ।
**लेन**–आदेय ।
**लेप**–सं० लिम्पन ।
**लेपटाएब**–क्रि० लेपट्+अब–चारू कातसँ वस्त्रकर्दमप्रभृतिक सम्बद्ध होएब ।
**लेपब**–क्रि० लिम्पन ।
**लेब**–लेबाइ १ । क्रि० ल्+अब–ग्रहण ।
**लेबब**–क्रि० जलमिलित मृत्तिकासँ टाट भीत प्रभृतिक मोट लेप ।
**लेबा**–भित्यादिमे मोट लिप्त माटि ।
**लेबाइ**–लेबब ।
**लेबाल**–ग्राहक ।
**लेभड़ब**–क्रि० समन्तात् लिप्त होएब ।
**लेर**–लाला, मुखद्रव ।
**लेराह**–उ० लेर खसबाक स्वभाव बाला। स्त्री० लेराहि ।
**लेरू**–गाएक बच्चा ।
**लेसब**–क्रि० दीपप्रज्वालन ।
**लेहू**–शोणित ।
**लै**–गोधूमादि चूर्णक लस्सा ।
**लोइआ**–पिण्ड ।
**लोक**–सं० जन ।
**लोकगर**–अधिक लोकसँ युक्त ।
**लोकवेद**–लोकादि ।
**लोकलीन**–स्त्री० कन्याक सङ्ग गेनिहारि स्त्री ।
**लोकारए**–अधिक लोकक स्थिति ।
**लोखड़**–हजामप्रभृतिक स्वस्वकार्यक उपकरण ।
**लोखड़ैआ**–गाछक विदलित त्वचा ।
**लोटकी**–बहुत छोट लोटा ।
**लोटन**–परबाक प्रभेद ।
**लोटपोट**–परास्त ।
**लोटा**–जलपानपात्रविशेष ।
**लोटाएब**–क्रि० भूमिपतित भए उनटब-पुनटब ।
**लोड़हब**–क्रि० धानक कटलापर छूटल धानक सीस बीछब ।
**लोड़हा**–शिलवृत्ति, लोड़हब ।
**लोड़ही**–शिलापुत्रक, सिलौटपर पिसबाक साधन छोट पाथर ।
**लोढ़नि**–लोड़हा ।
**लोढ़ब**–क्रि० लोड़हब ।
**लोढ़ा**–लोड़हा ।
**लोढ़ी**–लोड़ही ।
**लोथ**–सञ्चारायोग्य ।
**लोथराह**–अधिक भारी (लोटाप्रभृति) ।
**लोध**–वृक्षविशेष ।
**लोन**–नोन, लवण ।



**लोभ**–सं० लाभेच्छा ।
**लोभाएब**–ना० लोभ+अब–लोभयुक्त होएब ।
**लोमान**–धूपविशेष ।
**लोरि, लोरिक**–गीतविशेष ।
**लोल**–चञ्चु ।
**लोला**–नमरल निरर्थक अवयव ।
**लोली**–हाउ, बालबिभीषिका ।
**लोह**–सं० लौहधातु ।
**लोहकट**–सिकस्त कोटल जाहिमे अवशिष्ट कटबाक हेतु कुड़हरि नहि जाए सकए ।
**लोहकम**–लोहक उपकरण ।
**लोहखड़**–लोखड़ ।
**लोहङ्गड़**–लोहक पैघ छड़ ।
**लोहछब**–क्रि० पिपासादिवश सक्रोध भाषण ।
**लोहझाम**–लौहकिट्ट, अति पुरातन लौह।
**लोहराइनि, लोहरानि**–दुर्गन्धविशेष ।
**लोहागढ़**–धान्यविशेष ।
**लोहार**–उ० लौहकार, कर्मकार । स्त्री० लोहारिनि ।
**लोहारि**–बिखाह ललका चूटी ।
**लोहारी**–लोहारक वृत्ति ।
**लोहिआ**–लौहकटाह ।
**लौका**–सजमनिक प्रभेद जकर तुम्बा बनैत अछि ।
**लौल**–लौल्य ।

## श

**शक्ति**–सं० सामर्थ्य ।
**शक्य**–सं० साध्य ।
**शङ्का**–सं० समाधेय प्रश्न ।
**शङ्ख**–सं० कम्बु ।
**शङ्खद्राव**–सं० नेबोक प्रभेद ।
**शनि**–सं० रविक पूर्व दिन ।
**शत्रु**–सं० वैरी ।
**शत्रुता**–सं० वैर ।
**शर**–सं० बाण ।
**शशिलता**–सं० लतापुष्पविशेष ।
**शाखा**–सं० डारि ।
**शान्त**–सं० शमयुक्त, निचेन १ । उपरत, मृत २ ।
**शान्ति**–सं० उपशम ।
**शासन**–सं० प्रजाक निग्रहानुग्रह ।
**शिखा**–सं० टीक ।
**शिवरात्रि**–सं० फाल्गुनशुक्ल चतुर्दशीक पर्वविशेष ।
**शिवालय**–सं० शिवक मठ ।
**शिवोत्तर**–सं० महादेवक प्रीत्यर्थ उत्सृष्ट भूमि ।
**शीघ्र**–अ० द्रुत, अविलम्ब ।
**शीघ्रता**–सं० त्वरा ।
**शीत**–सं० ठण्ढा १ । हिम, ओस २ ।
**शीतल**–सं० ठण्ढा ।
**शीतला**–सं० भगवतीविशेष ।
**शील**–सं० स्वभाव ।
**शुक्र**–सं० बृहस्पतिक अगिला दिन ।
**शुद्ध**–सं० निर्दोष, पवित्र ।
**शुभ**–सं० मङ्गल, कल्याण ।
**शुभाशिष्**–सं० शुभकामना ।

**शूद्र**–सं० चतुर्थ जाति । स्त्री० शूद्री ।
**शूर**–सं० वीर ।
**शोक**–सं० खेद ।
**शोणित**–सं० रक्त ।
**शोथ**–सं० फूलब, रोगविशेष ।
**शोभा**–सं० सौन्दर्य ।
**शौच**–सं० शुद्धि, पुरीषोत्सर्गोत्तर संशोधन।
**श्याम**–सं० कारी ।
**श्रद्धा**–सं० आदरबुद्धि ।
**श्रद्धेय**–सं० श्रद्धा करबा योग्य ।
**श्रम**–सं० मेहनति ।
**श्राद्ध**–सं० पितरक उद्देशेँ श्रद्धापूर्वक दान।
**श्री**–सं० शोभा ।
**श्रेष्ठ**–सं० उत्तम ।
**श्रोत्रिय**–सं० कतोक ब्राह्मणक उपाधि।
**श्लोक**–सं० पद्य ।

## ष

**षट्रस**–छबो रससँ युक्त (भोजन) ।
**षट्राग**–नियम-निष्ठा (निन्दामे) ।
**षष्ठी**–सं० छठम तिथि १ । जन्मोत्तर छठम दिनमे पूज्य देवी, षष्ठिका २ ।

## स

**सइ**–अप्रकाश अभिप्राय ।
**सईस**–सहीस, घोड़ाक पालक ।
**सए**–शतसंख्यक ।
**सएरदिबाल**–प्राचीर, समन्तात् आवासवेष्टनभित्ति ।
**सओदा**–विक्रय्य वस्तु ।
**सओदागर**–विक्रेता, व्यापारी ।
**सक**–शक्ति १ । वि० सन्देह २ ।
**सकचून(र)**–सर्वथा चूर्णित ।
**सकत**–दृढ़, कठोर ।
**सकदम**–वि० भयसँ स्तब्ध ।
**सकनाचूर**–सर्वथा चूर्णित ।
**सकब**–क्रि० शक्त होएब ।
**सकबेध**–दृढ़ वेष्टन ।
**सकबेधब**–क्रि० दृढ़वेष्टन करब ।
**सकरकन**–अल्हुआ (बाबाजीक भाषामे)।
**सकरब**–क्रि० कृतकार्य होएब ।
**सँकराँति**–संक्रान्ति ।
**सकरौड़ी**–बुनिआ दए बनाओल दूध ।
**सकल**–वि० स्वरूप १ । समस्त २ ।
**सकलारिष्ट**–निखिलदोषशान्त्यथ दान ।
**सकलुच्ची**–अलि० खुरलुच्ची, स्थिर नहि रहि उकठ कएनिहार(नेना) ।
**सकसकाएब**–क्रि० सकसक्+अब–सन्देह वा आलस्यसँ तारतम्य करब ।
**सकसब**–क्रि० अनवकाश होएब ।
**सकाँढ़**–सिकस्त स्थान ।
**सकार**–स्वीकार ।
**सकारब**–क्रि० सकार्+अब–स्वीकार करब ।
**सकाल**–सबेर, से समय जखन सूर्य उगिकेँ थोड़ दूर आएल होथि ।
**सकुचँब**–क्रि० संकुचित होएब ।
**सकुल्य**–सं० दसम पुरुषसँ अगिला पुरुषक अपत्य ।
**सकेल**–संकीर्णस्थान ।
**सक्क**–सक, शक्ति १ । वि० सन्देह २ ।
**सक्कत**–सकत, दृढ़, कठोर ।
**सक्की**–वि० सन्देही ।



**सख**–वि० इच्छा, मनोरथ ।
**सखारी**–वस्तुजात रखबाक पैघ समतल पौती ।
**सखी**–सं० वयस्या, सहेली हि० ।
**सखुआ**–साँखु, शाल, वृक्षविशेष ।
**सँगतुरिआ**–अलि० सङ्गी, जकरासँ समवयस्कताक व्यवहार हँसी-ठट्ठा हो ।
**सगतोड़नी**–स्त्री० साग तोड़निहारि ।
**सगबग करब**–क्रि० किञ्चित् इतस्ततः संचलन ।
**सगबगाएब**–क्रि० सगबग्+अब–सगबग करब ।
**सगबगी**–सगबगाएब ।
**सगर**–सम्पूर्ण, साग्र ।
**सगही**–स्त्री० सगाइबाली (स्त्री) ।
**सगाइ**–सम्बन्ध, पतिभिन्नकेँ पतिरूपेँ वरण ।
**सँगिता**–सङ्गिता, समवयस्कताक व्यवहार हास्यादि ।
**सगुन**–शकुन १ । ज्योतिर्विट् वैद्य आदिकेँ मङ्गलार्थ देय द्रव्य २ ।
**सगुनबान्ह**–बरीपर ठाठ चढ़बाक बाद देबाक प्रथम बन्धनविशेष ।
**सगुनिआ**–मङ्गलप्रद ।
**सगून**–सगुन ।
**सँगोर**–सङोर, वस्तु वा लोकक संग्रह ।
**सङतुरिआ**–सँगतुरिआ ।
**सङिता**–सँगिता ।
**सङोर**–सँगोर ।
**सङ्कोच**–लज्जा ।
**सङ्खा**–परतानक छिद्रक अन्तराल ।
**सङ्खिआ**–विषविशेष ।
**सङ्ग**–सं० साहित्य, मेल, सामीप्य ।
**सङ्गम**–सं० मेल ।
**सङ्गमर्मर**–श्वेत पाषाणविशेष ।
**सङ्गमूसा**–कृष्ण पाषाणविशेष ।
**सङ्गी**–सङ्ग रहनिहार ।
**सङ्गीत**–सं० वाद्यादिसँ युक्त गीत ।
**सङ्ग्रह**–सं० सञ्चय ।
**सङ्ग्रही**–सं० सञ्चयी ।
**सङ्घटन**–सं० ओरिआओन ।
**सचढ़**–चरफर, शीघ्र कार्यकर्ता ।
**सचार**–दोनामे, साँठल व्यञ्जन ।
**सचेत**–सावधान ।
**सजनी**–सखी ।
**सजब**–क्रि० सुसज्जित करब ।
**सजबी**–शुद्ध अनुद्धृतसार दूधक (दही)।
**सजमनि**–अलाबू, कद्दू हि० ।
**सजाए**–वि० दण्ड ।
**सजाबट**–हि० सज्जीकरण ।
**सजाय**–वि० कारावासादि दण्ड ।
**सजौड़ी**–सजमनिक भुजबी दए बनाओल वटी ।
**सज्जित**–सं० सज्ज, दुरुस्त ।
**सज्जीखार**–सर्वक्षार, साजीखार ।
**सँझाएब**–ना० सन्ध्यासमयसम्प्राप्ति ।
**सझिआ**–साझी, अविभक्त, अनेक-स्वामिक।
**सझिला**–उ० चारिमे तेसर (भाए, पुत्र इत्यादि) स्त्री० सझिली।
**सँझौत**–सन्ध्याकालक दीप ।
**सश्र**, **सश्र-मश्र** –स्थिर ।

**सञ्चर**–स्तोत्रादिपाठमे अन्यत्र पठनीयक भ्रमवश अन्यत्र पाठ ।
**सञ्चाफ**–वस्त्रप्रान्तमे शोभार्थ योजनीय वस्तुविशेष ।
**सटकन**–पातर दण्ड ।
**सटकब**–क्रि० सङ्कुचित होएब १ । भयसँ नुकाएब २ ।
**सटका**–पातर दण्ड ।
**सटब**–सक्त होएब १ । स्पृष्ट होएब २ ।
**सटसट करब**–क्रि० रोच नहि राखि प्रौढ़तापूर्वक बाजब (निन्दामे) ।
**सटिआ**–मिलुआ, एक दलक ।
**सट्टा**–घरसँ बाहरक से खुट्टा जकर शिखरपर भार नहि रहए ।
**सट्ठा**–साठि हाथक (पाग) १ । साठि वर्षक (पुरुष) २ ।
**सठब**–क्रि० निघटब, निःशेष होएब ।
**सड़क**–राजमार्ग ।
**सड़ब**–क्रि० निःसार होएब १ । फलादिक दौर्गन्ध्यादिविकारसँ युक्त होएब २।
**सँड़बाहि**–वृषोतसर्गश्रा (नीचक उक्तिमे)।
**सड़र**–सरल सं०, वृक्षविशेष ।
**सड़ल**–निःसार, विकृत ।
**सड़लाइनि** / **सड़लानि** –सड़ल वस्तुक गन्धसदृश गन्धबाला ।
**सड़सी**–सरसी, तप्त बट्टुक आदि पकड़बाक साधन विशेष ।
**सड़ाइनि** / **सड़ानि** –सड़बाक गन्ध ।
**सड़ारि**–पक्षिविशेष ।
**सण्ठी**–शणयष्टि ।
**सत**–सत्य ।
**सतगजा**–सात गज परिमाणक (धोतीप्रभृति) ।
**सतघरा**–क्रीड़ाविशेष ।
**सतधी**–स्त्री० सपत्नीपुत्री ।
**सतजुग**–सत्ययुग ।
**सतपुतहु**–स्त्री० सपत्नीपुत्रवधू ।
**सतपुतिआ**–भाँटाक प्रभेद ।
**सतमसिआ** / **सतमस्सू** –अलि० सात मासक जनलम (नेना) ।
**सतमाए( य )**–स्त्री० माताक सपत्नी ।
**सतरकी**–शीघ्रता ।
**सतरह**–सप्तदश ।
**सतरहम**–सतरहक पूर्तिकर्ता ।
**सतरा**–धान्यविशेष ।
**सतरिआ**–धान्यविशेष ।
**सतनरिआ**–पक्षी मारनिहार व्याध ।
**सतसङ्ग**–सत्सङ्ग ।
**सतसट्ठि**–सप्तषष्टि ।
**सतसट्ठिम**–सप्तषष्टितम ।
**सतसासु**–स्त्री० सासुक सपत्नी ।
**सतहत्तरि**–सप्तसप्तति ।
**सतहत्तरिम**–सप्तसप्ततितम ।
**सताएब**–क्रि० सतब्+अब–शातन, दुःख देब ।
**सताबन( न्न )म**–सप्तपञ्चाशत्तम ।
**सताबरी**–शतावरी ।
**सतारब**–क्रि० सतार+अब–शीघ्रतासँ कार्य सम्पन्न करब ।
**सतारि**–सप्ताहव्यापक वृष्टि ।
**सतारि लाधब**–क्रि० सप्ताहव्यापक वृष्टिक आरम्भ ।
**सतालुक**–फलविशेष ।



**सतासी**–सप्ताशीति ।
**सतासीम**–सप्ताशीतितम ।
**सती**–स्त्री० स्वामीक सङ्ग दग्धा १। सं० पतिव्रता २। अ० प्रतिनिधि ३ ।
**सतीत**–प्रमाणित ।
**सतुआ**–सातु ।
**सतुआइनि**–सातु खएबाक पाबनि, मेष संक्रान्ति ।
**सत्त**–सत, सत्य ।
**सत्तरि**–सप्तति ।
**सत्तरिम**–सप्ततितम ।
**सत्ता**–सामर्थ्य १। तासक सातम फर्द २।
**सत्ताइस**–सप्तविंशति ।
**सत्ती**–सती, अ० प्रतिनिधि ।
**सत्य**–सं० तथ्य, यथार्थ ।
**सत्यवादी**–सं० सत्य बजनिहार ।
**सत्यानास**–सर्वथा विनाश ।
**सदत**–सतत ।
**सदबद**–अल्प जल मिलाए रान्हल (तीमन)।
**सदा**–सं० अ० सर्वदा ।
**सदाए**–उ० मुसहर जातिक उपाधि । स्त्री० सदाइनि ।
**सदाबर्त**–सदाव्रत, प्रतिदिन सब अभ्यागतकेँ खोआएबाक व्रत ।
**सदाबर्ती**–सदाबर्त कएनिहार ।
**सदाय**–मुसहरक उपाधि ।
**सदिआम**–लताम ।
**सदिखन**–अ० सर्वदा ।
**सदुल**–पक्षिविशेष ।
**सद्द**–सद, सहनशील, अनुपद्रवी. ।
**सद्दो-बद्दो**–सवस्त्र खूब तीतल ।
**सद्धम-सद्ध**–लेन-देनक सम्पन्न संशोधन।
**सधब**–क्रि० सठब, निःशेष होएब ।
**सधवा**–सं० जीवद्भर्तृका ।
**सधम-सध**–लेन-देनक सम्पन्न संशोधन।
**सधाएब**–क्रि० सधब्+अब–निःशेष करब ।
**सधान**–निःशेषीभाव ।
**सधोरि**–गुर्विणीक हेतु भार ।
**सन**–शण, वृक्षविशेष जकर छालसँ डोरी आदि बनैछ १ । आम्रबीजादिमे लागल सूक्ष्म तन्तुसमुदाय २ ।
**सनक**–विक्षेप १। सक्रोध हठात् प्रवृत्ति २।
**सनकब**–क्रि० विक्षिप्त होएब १। सक्रोध हठात् प्रवृत्ति २ ।
**सनकाह**–उ० विक्षिप्तप्राय । स्त्री० सनकाहि ।
**सनकिरबा**–कीटविशेष ।
**सनकी**–विक्षेप १। सक्रोध हठात् प्रवृत्ति २।
**सनखेसरा**–कीटविशेष ।
**सनगोहि**–गोधाकार स्थलचर जन्तुविशेष।
**सनगिद( द्द )**–सद्दो-बद्दो, समस्त अत्यन्त तीतल ।
**सनठी**–सण्ठी, शणयष्टि ।
**सन दए**–सन-सन शब्दपूर्वक ।
**सनपत**–श्योनाक, वृक्षविशेष ।
**सनपटुआ**–शणवृक्षविशेष ।
**सन-सन करब**–क्रि० सन-सन शब्द करब १ । सक्रोध सामर्थ्य प्रकाशन २ ।
**सनसनाएब**–क्रि० सनसन्+अब–सनसन करब ।
**सनसनी**–सन-सन शब्द १ । जोरसँ सामर्थ्यप्रकाशन २ ।

**सनहकी**–यवनक भोजन-पाटि ।
**सनहुल**–सोनहुल, पुष्पविशेष ।
**सनाए**–सनाय, रेचक ओषधिविशेष ।
**सनातन**–सं० अनादिकालप्रवृत्त ।
**सनाय**–सनाए ।
**सनाह**–सनसँ युक्त (आम्रादि) ।
**सनीप**–समीप ।
**सनेस**–स्नेहीक प्रति उपहार ।
**सनै**–सनइ, शण, क्षुपविशेष ।
**सनैचरी**–प्रत्येक शनिमे शिष्य सभसँ आदेय द्रव्य ।
**सनोह**–सनोहब ।
**सनोहब**–क्रि० दूहिकेँ दूधक परिमाण जानब ।
**सन्तति**–सं० सन्तान ।
**सन्तनत**–वि० विधान, प्रबन्ध ।
**सन्ताँ**–अ० सत्तामे १ । तत्काल (यथा, देखैत सन्ताँ) २ ।
**सन्तान**–सं० अपत्य ।
**सन्तान्नबे**–सप्तनवति ।
**सन्तान्नबेम**–सप्तनवतितम ।
**सन्तोला**–मिष्ट जम्बीरविशेष ।
**सन्तोष**–सं० यथालाभप्रसन्नता ।
**सन्तोषी**–सं० यथालाभ प्रसन्न ।
**सन्देश**–सनेस, उपहार ।
**सन्देह**–सं० संशय ।
**सन्न**–भयसँ स्तब्ध।
**सन्न दए**–अ० तीव्रतापूर्वक ।
**संन्यास**–सं० चारिम आश्रम ।
**संन्यासी**–सं० यती ।
**सन्हिआएब**–क्रि० सन्हि+अब–अभ्यन्तर मे पैसब ।

**सपटा**–शणनिर्मित अतिस्थूल पट ।
**सपठब**–क्रि० मिलब, मेल होएब ।
**सपठैती**–आन बड़दक सङ्ग आनक बड़दक नित्य बहबामे मेल ।
**सपत**–शपथ ।
**सपत खाएब**–क्रि० शपथग्रहण ।
**सपत देब**–क्रि० शपथ कराएब ।
**सपत-सपतान**–परस्पर शपथ ।
**सपता-बिपता**–पूज्यदेवताविशेष ।
**सपथ**–शपथ ।
**सपधरू**–अलि० सर्पदष्ट ।
**सपन( ना )**–स्वप्नदर्शन, निद्रामे मानसज्ञान ।
**सपनाएब**–ना० स्वप्नदर्शन ।
**सपना देखब**–क्रि० सपनाएब ।
**सपनौती**–स्वप्नमे लब्ध (मन्त्रादि) ।
**सपनौर**–नकुल ।
**सपरतिभ**–सप्रतिभ (निन्दामे) ।
**सपहरब**–क्रि० सर्पविषयुक्त होएब ।
**सपहरिआ**–सर्पहर्ता जातिविशेष ।
**सपहा**–सर्पविषहत ।
**सपाटू**–फलविशेष ।
**सपिण्ड**–सं० सप्तपुरुषान्तर्गत ।
**सपूत**–हि० सत्पुत्र ।
**सपेत**–वि० श्वेत ।
**सपेता**–आम्रविशेष ।
**सप्तमी**–सं० सप्तम तिथि ।
**सप्ताह**–सात दिनक समूह ।
**सफगोल**–इसफगोल, अन्नविशेष ।
**सफर**–वि० विदेशभ्रमण ।
**सफरिआ**–सपहरिआ १। सफरमे उपकारक २ ।



**सफरी कटहर**–फलविशेष ।
**सफल**–सार्थक ।
**सफा**–वि० साफ, स्वच्छ ।
**सफाइ**–वि० नैर्मल्य १ । फरिछोट २ ।
**सफाचट**–वि० लोमनाशक ।
**सब**–सर्व, सकल ।
**सबजना**–सभजना, परिवारक सर्वजन सम्बन्धी (निमन्त्रण) ।
**सबजी**–वि० दूर्वाच्छादित भूमि ।
**सबतरि**–अ० सर्वत्र ।
**सबदिना**–प्रतिदिन भेनिहार ।
**सबरङ्ग** / **सबरङ्गा** }–अनेक रङ्गबाला ।
**सबरब( बी )**–भूषणविशेष ।
**सबा**–सपाद (संख्या वा परिमाण) ।
**सबाइ**–पादाधिक प्रत्यर्पणक व्यवस्थापर गृहीत वा दत्त अन्नक ऋण ।
**सबार**–वि० यानारूढ़ आरोही ।
**सबारिस**–नीक समय, सुभिक्ष ।
**सबारी**–यान ।
**सविष**–सर्वाङ्ग सर्पविषव्याप्त ।
**सबूत**–वि० प्रमाण ।
**सँभरम**–सम्भ्रम ।
**सबेर**–सकाल ।
**सबैआ**–पादाधिक ।
**सबैएँ**–अ० चतुर्थांश बढ़ने ।
**सभ**–सब, सर्व, निखिल ।
**सभजना**–सबजना ।
**सभागाछी**–वैवाहिक सभाक गाछी ।
**सभैती**–सभामे कर्तव्य ।
**सम**–शम, न्यूनता १ । सं० तुल्य २ ।
**समइआ**–सामयिक ।

**समगरए**–ठाठक समुचित उच्चता ।
**समङ्गर**–उ० अधिक समाङ्सँ युक्त । स्त्री० समङ्गरि ।
**समचा**–सामग्री ।
**समच्छ**–सांमुख्य, सामक्ष्य ।
**समझोता**–हि० मिलान, सन्धि ।
**समटब**–क्रि० प्रसृतक एकत्रीकरण ।
**समतूल**–तुलासँ समीकृत, बराबरि ।
**समथरि**–समतलस्थली ।
**समदाउनि**–कन्याक सासुर जएबाक कालक उपदेशक गीत ।
**समदिआ**–अलि० संवाद कहनिहार ।
**समधान**–सावधान ।
**समधि**–उ० कन्यापुत्रप्रभृतिक श्वशुरादि । स्त्री० समधिनि ।
**समधिआउर**–समधिक आलय ।
**समधिआरए**–समधिक व्यवहार ।
**समधौत**–पुं० समधिक अपत्य ।
**समय**–सं० काल ।
**समयसतरा**–समयपर अपन कार्य सम्पन्न कए लेनिहार ।
**समरथ**–उ० युवा । स्त्री० समरथि ।
**समरथ-सकरथ**–उ० समर्थ ओ क्रियादक्ष । स्त्री० समरथि-सकरथि ।
**समर्थ**–उ० तरुण । स्त्री० समर्थि १ । सं० दक्ष, शक्त २ ।
**समर्थाइ**–तारुण्य ।
**समशाखा**–सं० एके वेदशाखाक ।
**समसब**–क्रि० किञ्चित् आर्द्र होएब ।
**समसम**–किञ्चित् आर्द्र ।
**समसरही**–अल्प करबाला (खेत) ।

**समसान**–श्मशान ।

**समाइत**–वि० सङ्गत ।

**समाएब**–क्रि० सम्+अब–अँटब ।

**समाँग** / **समाङ( ङ्ग )** –पुं० समीपी एक परिवारक बन्धु ।

**समाचार**–सं० वार्ता ।

**समाज**–सं० समीपवासी जनसमूह ।

**समाठ**–मुशल ।

**समाद**–संवाद, मौखिक वार्ता ।

**समान**–सं० तुल्य १ । आनक वेष बनओने २ ।

**समाप्त**–सं० सम्पूर्ण १ । नष्ट २ ।

**समार**–एक दिसेँ जोतलकेँ दोसर दिसेँ जोतब ।

**समारोह**–सं० सम्भारपूर्वक अनेक मीलि पैघ कार्यक आरम्भ ।

**समाहब**–क्रि० समाह्+अब–जोतिकेँ बड़दक परीक्षा करब ।

**समुच्चा**–सम्पूर्ण, अखण्ड ।

**समुद्र**–सं० पारावार ।

**समुद्रफेन**–सं० समुद्रक शुष्क फेन ।

**समूचा**–समुच्चा, समस्त ।

**समेटब**–क्रि० प्रसृतकेँ एकत्र करब ।

**समेटि-बटोरि**–अ० समेटब प्रभृतिक्रिया कए, सर्वसंकलनपूर्वक ।

**समेना**–सामिआना, पटगृहविशेष ।

**समै**–दुग्धप्रधानक भक्ष्यविशेष ।

**समैआ**–समयभव ।

**समैल**–पालोक मझिला खुट्टी ।

**समोधब**–क्रि० सम्यक् बोधन, बुझाए अनुकूल करब ।

**सम्पत्ति**–सं० धन ।

**सम्पन्न**–सं० सिद्ध १ । समृद्ध २ ।

**सम्पर्क**–सं० सम्बन्ध ।

**सम्पनी**–यानविशेष ।

**सम्प्रति**–सं० अ० एखन, इदानीम् १ । आइ-काल्हि २ ।

**सम्बन्ध**–सं० संसर्ग १ । यौन सम्बन्ध, पितृत्वादि २ ।

**सम्बन्धिक**–अलि० यौनसम्बन्धबाला ।

**सम्भव**–सं० शक्यता, आशा ।

**सम्भ्रम**–सं० हड़बड़ी, कार्यव्याकुलता ।

**सम्मत**–सं० अनुमत, स्वीकृत ।

**सम्मति**–सं० अनुमति ।

**सम्मुख**–सं० अभिमुख, प्रत्यक्ष ।

**सम्हरब**–क्रि० शक्तिसँ सम्पादित होएब ।

**सम्हार**–कार्यक भारवहनपूर्वक सम्पादन ।

**सम्हारब**–क्रि० सम्हार्+अब–शक्तिसँ सिद्ध करब ।

**सय**–सए, शत ।

**सयम**–सएम, शततम ।

**संयत**–सद्द, अनुपद्रवी, स्थिर ।

**संयम**–सं० पथ्य, दोषकारकक त्याग ।

**संयमी**–सं० संयमशील ।

**संयोग**–सं० मिलान १ । दैवी घटना २ ।

**सर**–शर ।

**सरकट**–सरकण्डा, तृणविशेष ।

**सरँकब**–क्रि० जलादिक पीबामे कण्ठस्खलनजन्य अन्यथावद्गति ।

**सरकस**–वि० शरीरादिक कौतुक जनक क्रिया ।

**सरका**–बड़दक गरदनिक सिराक सङ्कोच।

**सरकार**–वि० प्रधान, राजा ।

**सरकारी**–मालिकी, राजकीय ।



**सरकी**–वंशकृत आवरणविशेष ।

**सर-कुटुम्ब**–कुटुम्ब तथा अपेक्षित ।

**सर-कुटुमैती**–कुटुम्ब तथा अपेक्षितक व्यवहार ।

**सरङ**–स्वर्ग आकाश ।

**सरङ-पताली**–एक ऊर्ध्वमुख ओ दोसर अधोमुख सिंह, मालक दोष ।

**सरड़**–सरलवृक्ष ।

**सरदर**–वि० समग्र ।

**सरदार**–वि० मुख्य।

**सरदिआह**–सरदीसँ युक्त ।

**सरदी**–शैत्यजन्य रोग ।

**सरधा**–श्रद्धा ।

**सरन**–शरण ।

**सरनरिआ**–सरनरसँ पक्षी बझओनिहार व्याधविशेष ।

**सरपत**–तीक्ष्णपत्रक, खड़हीसन तृणविशेष।

**सरफोँका**–शरपुङ्ख, ओषधिविशेष ।

**सरबत**–वि० प्रपाणक पेयमिष्टद्रव ।

**सरबती**–नेबोक प्रभेद ।

**सरबन**–पागक प्रभेद ।

**सरबब**–क्रि० अल्प छिद्रादिद्वारा जलादिक मन्द-मन्द स्रवण ।

**सरबस**–सर्वस्व ।

**सरबसोख**–बड़दक जिह्वामे श्यामताचिह्न, बड़दक दोषविशेष ।

**सरबस्ता**–आगत अनागत सभक बिदाइबाला न्योत ।

**सरबा**–शराब, माटिक पात्रविशेष ।

**सरबेटा**–पुं० श्यालपुत्र ।

**सरभोज**–श्यालभोज्य, सार सभक भोज।

**सरम**–वि० लज्जा ।

**सरस**–सं० रसिक १ । आधासँ अधिक अंश २ । रसयुक्त ३ ।

**सरसरी**–हि० अतिशीघ्रता ।

**सरसी**–धीपल बटुक आदि पकड़बाक लौहयन्त्र ।

**सरस्वती**–सं० वाग्देवता ।

**सरह**–देबाक सम्प्रदाय ।

**सरहँच**–सारस पक्षी ।

**सरहँची( च्ची )**–शाकविशेष ।

**सरही**–बिना मेनक (सोहारी) १। सामान्य (दही) २। बीजभव (आम) ३।

**सरहोजि**–स्त्री० श्यालपत्नी ।

**सराड़ि**–पक्षिविशेष ।

**सराध**–श्राद्ध ।

**सराप**–शाप ।

**सरापब**–ना० सराप+अब–शाप देब ।

**सरासरी**–वि०अ० अतिशीघ्रतापूर्वक ।

**सराहब**–क्रि० सराह्+अब–प्रशसा करब ।

**सरि**–समतल, अनुच्चावच ।

**सरिआएब**–ना० सरि+अब–सरि (समतल) करब १। सुस्थित करब २ ।

**सरिआती**–कन्यागत, विवाहादिमे कन्याक पक्षक लोक ।

**सरिआम**–समतल स्थान ।

**सरिबन**–शालिपर्णी ।

**सरिसओ( ब )**–सर्षप ।

**सरी**–लोहाक छर ।

**सरीफा**–फलविशेष ।

**सरुआरी**–तृणविशेष ।

**सरुकी**–छोट सारुक, जलीय कन्दविशेष।

**सरैआ**–एक प्रकारक छोट थारी ।

**सरैला**–माछ मारबाक बाँसक पात्रविशेष।
**सरोकार**–वि० सम्बन्ध, अधिकार ।
**सरोकारी**–वि० सम्बन्धिक ।
**सरोज**–वाद्यविशेष ।
**सरोत**–तृणसँ छारलक उपर देल बाती ।
**सेरोता**–शङ्कुला, सुपारी कटबाक अस्त्र ।
**सरौनी**–मेनाक प्रभेद ।
**सर्त**–वि० व्यवस्था, प्रतिज्ञा ।
**सर्वजया**–सं० पुष्पविशेष ।
**सर्वनेजा**–नैवेद्यार्थ एकत्रित कएल खाद्यसामग्री ।
**सर्वैकत्वेँ**–अ० सभ मिलाए ।
**सल**–सारभाग, शक्ति ।
**सलका मारब**–भूमिक अभ्यन्तरसँ सार्द्रता प्राप्ति ।
**सलग**–संलग्न ।
**सलगा**–दोहरि, शीतवारक दोहराओल वस्त्र ।
**सलमसाही**–लोटाक प्रभेद ।
**सलसलाएब**–क्रि० सलसल्+अब–अभ्यनतरसँ सार्द्र होएब ।
**सलसलाह**–अभ्यन्तरसँ सार्द्र भूमि ।
**सलहाल**–भूमिक पूर्ण सार्द्रता ।
**सलाइ**–हि० शलाका, दीआसलाइ ।
**सलाम**–वि० प्रणाम, दूरसँ नतिविशेष ।
**सलामी**–वि० प्रणाली, प्रणाममे देबाक द्रव्य ।
**सलार( रि )**–उच्चावच क्षेत्रादिमे जलक समता ।
**सलाह** } **सलुक** } –वि० अविरोध, मिलान
**सलौनी**–श्रावणी (पूर्णिमा) ।
**सल्लाह**–सलाह ।
**ससरफानी**–बन्धनविशेष ।
**ससरब**–क्रि० सरण, संसर्पण ।
**ससारब**–क्रि० ससार+अब–पेटक वायु वा स्थानच्युत सिरा आदिकेँ बैसएबाक हेतु अङ्गपर हाथक घर्षणपूर्वक सञ्चालन ।
**ससि**–शस्य ।
**ससुर**–पुं० श्वशुर ।
**ससुराड़ि**–श्वशुरकुलगृह ।
**ससुहथ**–सासुक हेतु भार ।
**संस्कार**–विद्याग्रहणशक्ति १। विवाहादि-कर्म २ ।
**सस्त**–स्वल्पमूल्यलब्ध, समर्घ ।
**सह**–सङ्ग, अबरजात १ । सतरञ्जमे बादशाहकेँ विपक्ष पात्रक साम्मुख्य २ ।
**सहज**–साहाय्यद्रव्य १ । अनैमित्तिक, सवभावसिद्ध २ ।
**सहजोर**–पूर्ण सम्पन्न (धान्यादि) ।
**सहटब**–क्रि० सुस्तेँ हँटब ।
**सहठुल**–सद्द, नीक प्रकृतिक, मिलनसार ।
**सहड़ी**–छागर आदिक मासुक झोरक हाड़।
**सहथ**–अस्त्रविशेष ।
**सहन**–वि० समभूमि १। सं० मर्षण २।
**सहनाइ**–वाद्यविशेष १ । मर्षण २ ।
**सहब**–क्रि० सहन, क्षमा करब ।
**सहमर्दा**–धान्यविशेष ।
**सहमिलू**–अधिक सङ्ग होएबाक कारण मिलनसार ।
**सहर**–वि० पैघ बजार ।
**सहरगञ्ञा**–साधारण ।



**सहरजमीन**–वि० विवादभूमि ।
**सहरफोँका**–शरपुङ्ख, क्षुपविशेष ।
**सहरू**–सहरक निवासी ।
**सहलोल**–बूड़ि, निवासी ।
**सह-सह करब**–क्रि० पीलुसर्पादिक सञ्चलन ।
**सहसहाएब**–मा० सह-सह करब ।
**सहसा**–सहस्त्र मत (आम्रादि) १ । सं० अ० हठात् २ ।
**सहसौल**–सहस्त्रदक कपल ।
**सहाज**–सह्य ।
**सहाजिक**–स्वभाविक ।
**महाय**–सं० सङ्गदेनिहार, सहायक ।
**सहिआ**–सखी ।
**साहिआरब**–क्रि० सहिआर्+अब–सम्हारब।
**सही**–वि० हस्ताक्षर १। गृहादिक शोधन २।
**सहीस**–सईस, अश्वपालक ।
**साँइ( ए )**–श्रावणमास ।
**साकट( ठ )**–शाक्त ।
**साँकर**–संकीर्ण (स्थल), छोट (पात्रादि)।
**साँख**–शङ्ककऔँठी ।
**साँखर**–सर्पविशेष ।
**साँखु**–शालवृक्ष ।
**साग**–शाक, शाखापत्रसहित खाद्य गेन्हारी प्रभृति ।
**सागमान**–वृक्षविशेष ।
**साग-मसाला**–क्षुपविशेष ।
**साँगह**–गृहादिनिर्माणसामग्री ।
**साँगि**–संग्रह, सञ्चय ।
**साँगि**–शक्ति, अस्त्रविशेष ।
**साँगी**–केश कटबाक तरेँ नापितकेँ देल भूमि ।
**साङह**–गृहादिनिर्माण सामग्री ।
**साङरह**–संग्रह, सञ्चय ।
**साङि**–शक्ति, अस्त्रविशेष ।
**साङी**–साँगी ।
**साँच**–चित्रविशेष वा आकृतिविशेषसँ युक्त से आधार जाहि पर दबने बा गलल धातु आदि ढारने निर्मित वस्तुमे आधारा नुरूप चित्र वा आकृति बनि जाइछ ।
**साँची**–पानक प्रभेद १ । पहिरल धोतीक आगाँमे खोँसल अंश २ ।
**साज**–भाँड़ रखबाक माटिक पैघ आधार-पात्र ।
**साजब**–क्रि० सज्+अब–सज्जित करब ।
**साजी**–फुलतोड़ा, वंशपात्रविशेष ।
**साजीखार**–स्वर्जिका सं० ।
**साँझ**–सन्ध्या ।
**साँझ खन**–अ० सन्ध्याकालमे ।
**साँझ पड़ब**–क्रि० सन्ध्याक सम्प्राप्ति ।
**साझिल**–उ० चारिमे तृतीय (पुत्रादि) । स्त्री० साझिलि ।
**साझी**–अविभक्त, अनेकस्वामिक ।
**साँझुक**–सन्ध्याकालिक ।
**साट**–मेल, सङ्ग ।
**साटब**–क्रि० लस्सा आदिसँ कागत आदि संसक्त करब ।
**साटि**–गुप्त सङ्ग ।
**सा( साँ )ठब**–क्रि० स(सँ)ठ्+अब–पात्रादिमे वस्तुक स्थापन ।
**साठा**–साठि हाथक पाग १ । साठिवर्षक (मनुष्य) २ ।
**साठि**–षष्टिसंख्यक ।

**साठिम**–षष्टितम ।
**साड़ब**–सड्+अब–विकृत वा निःसार करब ।
**साड़ू**–साढू, पत्नीक बहिनिक पति ।
**साड़ी**–शाटी, स्त्रीक परिधानवस्त्र ।
**साँढ़**–श्राद्धमे उत्सृष्ट वृषभ ।
**साँढ़नी**–स्त्री० ऊँटक स्त्री ।
**साढू**–पत्नीक बहिनिक पति ।
**साढ़े**–सार्ध ।
**सात**–सप्त ।
**सातम**–सप्तम ।
**सातु**–सक्तु ।
**सातोकरमा**–धान्यविशेष ।
**साधब**–क्रि० साध्+अब–दबाएब, शासन करब ।
**साधु**–सं० बैरागी, योगी, बाबाजी ।
**साधुबान्ह**–बन्धन-विशेष ।
**सान**–शाण १ । सीटब २ ।
**सानदार**–सीटल, सुसज्जित, उत्तम ।
**सानदारी**–सिटनाइ, केवल उत्तम वस्तुमात्रसँ व्यवहार, उत्तमता ।
**साना**–श्राणा, चोखा ।
**सानी**–पानिमे सानल गूड़ाप्रभृति मालक खाद्य ।
**साप**–उ० सर्प । स्त्री० सापिनि ।
**साफ**–वि० स्वच्छ, स्पष्ट ।
**साफल**–सफल ।
**साबए( य )**–वल्वज, जौर बँटबाक तृणविशेष ।
**सावधान**–सं० सतर्क, दत्तचित्त ।
**साबा**–सपाद (संख्या वा परिमाण) ।
**साबिक**–वि० पूर्वकालिक ।
**साबुजदाना**–साबूदाना, अन्न वा फलक प्रभेद ।
**साबुन**–तैलादिमे पिण्डाकार बनाओल साफ करबाक क्षारवस्तु ।
**साबूदाना**–साबुजदाना ।
**साम**–श्यामाक, अन्नविशेष ।
**सामग्री**–सं० सकल साधक वस्तुक समुदाय ।
**सामरथ**–सामर्थ्य ।
**सामरि नोन**–लवणविशेष ।
**सामा**–शास्त्रोदित पक्षिणीविशेष जनिक पूजा कार्तिकपूर्णिमामे होइछ ।
**सामान्योत्सर्ग**–एकादशाह श्राद्ध दिनक काम्यदान ।
**सामिल** / **सामिलात** }–वि० अविभक्त, साझी ।
**सामी**–तृणविशेष १ । मूसर आदिक मुहमे देबाक लौहवलय २ ।
**साम्याना**–वि० पटगृहविशेष ।
**साम्हर**–मृगविशेष ।
**साम्हरि**–लवणक प्रभेद ।
**साँय**–साँए, स्वामी, पति ।
**सार**–पुं० श्याल, स्त्रीभ्राता ।
**सारङ्गी**–वाद्यविशेष ।
**सारदा**–फलविशेष ।
**सारभाजा**–मिष्टान्नविशेष ।
**सारा**–मृत्तिकाबद्ध मृतकदाहस्थान ।
**सारि**–पत्नीक छोटि बहिनि ।
**सारिल**–काष्ठक सारभाग ।
**सारुक**–जलीय खाद्य कन्दविशेष ।
**साल**–माटिमे गाड़ल जीर्ण स्तम्भादिक भाग १ । वि० वर्ष २ ।



**साँस**–श्वास ।
**सासु**–स्त्री० श्वश्रू ।
**सासुर**–श्वशुरालय ।
**साहखर्ची**–अधिक व्यय कएनिहार ।
**साहब**–वि० श्रेष्ठ ।
**साहबुलबुल**–बुलबुलक प्रभेद ।
**साहरोँच**–सारस पक्षी ।
**साहस**–सं० सहसा (हठात्) प्रवृत्ति, अति कठिन यत्न ।
**साहसी**–साहसस्वभावक ।
**साहित्य**–साहाय्य, सहायता ।
**सहिबा**–वि० स्त्री० श्रेष्ठा ।
**साहि लागब**–क्रि० एक क्रियामे वारंवार प्रवृति ।
**साही**–शल्लकी, कण्टकमय जन्तुविशेष ।
**साहु**–बनिआक उपाधि ।
**साहेब**–वि० श्रेष्ठ ।
**साहोड़**–शाखोटवृक्ष ।
**सिअनि**–सीअब, स्यूत ताग ।
**सिअ( आ )**–सीता ।
**सिआइ**–सूचीक्रिया १। तकर वेतन २ ।
**सिआर**–शृगाल, गीदड़ ।
**सिअब**–क्रि० सिब्+अब–सिआइ, सूचीकर्म ।
**सिकठि**–क्षुपविशेष ।
**सिकड़ी**–भूषणविशेष १ । नेनाक सरीक विचलन रोग २ ।
**सिकड़ी लागब**–क्रि० सिकड़ी रोग सम्प्राप्त होएब ।
**सिकमी**–वि० से खेत जाहिमे आधा मालिकक ओ आधा कर्षकक अंश हो ।
**सिकस्त**–वि० संकीर्ण (स्थल) १ । वि० दरिद्र २ । कृपण ३ ।
**सिकस्ती**–संकीर्णता १ । दारिद्र्य २ । कार्पण्य ३ ।
**सिकहर**–अधिक सीकबाला घर ।
**सिकार**–वि० मृगया ।
**सिकारी**–वि० मृगयापटु ।
**सिक्का**–राजमुद्रा ।
**सिखब**–क्रि० शिक्षण ।
**सिखाबुद्धी**–गुप्त शिक्षित मन्त्रणा ।
**सिँगरबात**–शृङ्गाकार बाती, टाट ओ ठाठक उपर भागक तिर्यक् बाती ।
**सिँगरहार**–शृङ्गारहार, पुष्पविशेष ।
**सिँगार**–शृङ्गार, शोभार्थ रचना ।
**सिँगारी**–शोभार्थरचनाक साधन ।
**सिँगिआ**–विषविशेष ।
**सिँघटुट्टा**–उ० भग्नशृङ्गक । स्त्री० सिँघटुट्टी ।
**सिँघबास**–मालक सिंहमे बान्हल डोरी ।
**सिँघौटी**–मालक सिंहक आकार ।
**सिङरबात**–सिँगरबात ।
**सिङरहार**–शृङ्गारहार ।
**सिङार**–शृङ्गार, शोभार्थ रचना ।
**सिङारी**–शोमार्थ रचनाक साधन ।
**सिङिआ**–विषविशेष ।
**सिङ्गा**–वाद्यविशेष ।
**सिङ्गाट**–मत्स्यविशेष ।
**सिङ्गार**–शृङ्गार ।
**सिङ्गारहार**–शृङ्गारहारपुष्प ।
**सिङ्गी**–शृङ्गी, मत्स्यविशेष ।
**सिच्चा**–छिच्चा, सेक ।
**सिड़ही**–सीढ़ी, सोपान ।

**सिढ़ी**–सीढ़ी, सोपान ।
**सितलचीनी**–पानक एक मसाला ।
**सितलपाटी**–पटिआक प्रभेद ।
**सिताएब**–ना० सीत+अब–सीतसँ युक्त होएब ।
**सितार**–तन्त्री, वाद्यविशेष ।
**सितारा**–वाद्यविशेष ।
**सिताहल**–सीतसँ भीजल ।
**सितुआ**–शुक्ति ।
**सिद्ध**–स० सीझल, पक्व १। सम्पन्न २।
**सिद्धान्त**–पञ्जीकारक द्वारा विवाहक निश्चय १। सं० निर्णय, निष्कर्ष २ ।
**सिधा**–दैनिक भोजनार्थ परिमित अपक्व अन्न ।
**सिधाइ**–सिद्धिरस्तुपूर्वक स्वरवर्णमाला ।
**सिनुआरि**–सिन्दुवार वृक्ष ।
**सिनुरिआ**–पकलापर रक्त वर्ण (आम)।
**सिनूर**–सिन्दूर ।
**सिन्दूर**–सं० कपारक अलङ्करणसाधक रङ्ग ।
**सिन्धुक**–पैघ काष्ठमञ्जूषा ।
**सिन्धुकचा**–छोट सिन्धुक ।
**सिन्ह**–सन्धि, चोरकृत घर पैसबाक सोन्हि ।
**सिपहिगिरी**–वि० सिपाहीक क्रिया ।
**सिपाही**–वि० पदाति ।
**सिप्फी**–ददरी, दग्ध शुक्त्यादि ।
**सिबराति**–शिवरात्रि ।
**सिमकाछु**–काछुक प्रभेद ।
**सिमरिफ**–हिङ्गुल, धातुविशेष ।
**सिमसिम**–किञ्चित् आर्द्र ।
**सिमसिमाह**–अत्यल्प आर्द्र ।

**सिमिरताइ**–सौन्दर्य ।
**सिर**–मुण्ड ।
**सिरउपाड़**–सीर-सहित उपाड़ल ।
**सिरक**–तुराइ ।
**सिरका**–बरकाओल चीनी वा मिसरी ।
**सिरचढ़**–ऊर्ध्वमुख प्रवृत्त ।
**सिरजब**–क्रि० सृष्टि करब, उत्पादन ।
**सिरमा**–गरदनिक तरका स्थान ।
**सिरमानी**–अङ्गाक प्रभेद ।
**सिरसंकोच**–शिर:संचालनमे व्यथाजनक सिराक रोग ।
**सिरहना( नी )**–गेरुआ, उपधान ।
**सिरहर**–मङ्गलार्थ शिर:स्थापित सजलघट।
**सिरा**–धमनी, नस हि० ।
**सिराएब**–क्रि० सिर्+अब–दाँतसँ शोणित खसबाक रोग होएब ।
**सिराउर** / **सिरारु** } –हर चललासँ उत्पन्न नलाकार खाधि ।
**सिराह**–शोणितस्रावजनक सिरासँ युक्त (दाँत) ।
**सिरिस्ता**–वि० मुहकमा ।
**सिरीस**–शिरीष, पुष्पवृक्षविशेष ।
**सिरोदय**–जन्मकालमे नेनाक माथक प्रथम ठद्गमन ।
**सिलपट( ट्ट )**–निरक्षर मूर्ख ।
**सिलबर**–वि० रजतसदृश धातुविशेष ।
**सिलसिला**–वि० क्रम ।
**सिलसिलेबार**–वि० क्रमबद्ध ।
**सिलहटिआ**–हाथीक प्रभेद ।
**सिला**–शिला, प्रस्तर ।
**सिलाजित**–शिलाजतु ।
**सिलेब**–करोँछ शुक्लवर्णक (गाए बड़द)।



**सिलोन**–मत्स्यविशेष ।
**सिलौट**–पिसबाक आधार शिलापट्ट ।
**सिल्ली**–जलचर पक्षिविशेष १। ओसाओल धानक श्रेणी २ ।
**सिसकन्दली**–क्षुपविशेष ।
**सिसपिञ्च**–वि० निगृहीत, सावधि वेतनक प्रतिबन्ध ।
**सिसबनी**–सीसोक वन ।
**सिसबाड़ि**–सीसोक वन ।
**सिसिआएब**–क्रि० सिसि+अब–सीत्कार।
**सिसोहब**–क्रि० अङ्गुलाग्र वा दन्तादिसँ रसादिक आकर्षण ।
**सिहकब**–क्रि० अङ्गक किञ्चित् शैत्ययुक्त होएब १। वातक अतिमन्द गमन २।
**सिहन्ता**–इच्छा, मनोरथ ।
**सिहरब**–क्रि० देहक किञ्चित् जाड्य युक्त होएब ।
**सिंह**–उ० मालक शृङ्ग १ । सं० मृगेन्द्र २ । स्त्री० सिंहिनि ।
**सिंहराशि**–विजयी ।
**सिंहाचोर**–सन्धिच्छेदक घरपैसा चोर ।
**सिंहासन**–सं० राजाक उच्चासन ।
**सिहुलिआ**–मध्यमे रक्तवर्णक(लताम) ।
**सिहुली**–देहपर उजर-उजर बिन्दु, चर्मरोगविशेष ।
**सीअनि**–सीअब, स्यूत ताग ।
**सीअब**–क्रि० सिब्+अब–सूचीक्रिया ।
**सीउब**–क्रि० सिब्+अब–सूचीक्रिया ।
**सीक**–शिक्य ।
**सीकी**–इषीका, तृणविशेष ।
**सीखब**–क्रि० सिख्+अब–शिक्षण ।
**सीङ**–मालक शृङ्ग ।

**सीचब**–क्रि० सिच्+अब–सेचन ।
**सीचा**–छिच्चा, सेचन ।
**सीझब**–क्रि० सिझ्+अब–भात आदि पक्व होएब, सर्वथा विल्किति ।
**सीटब**–क्रि० सिट्+अब–सौन्दर्यार्थ यथावद् विन्यास ।
**सीढ़ी**–सोपान ।
**सीतलगढ़**–छाता मोरम्मति कएनिहार ।
**सीताभोग**–भेँड़बा मालदह राजाम्रविशेष।
**सीना**–वि० वक्ष:स्थल ।
**सीप**–हि० शुक्ति ।
**सीम**–लताशिम्बी, तरकारीक फलविशेष।
**सीमर**–शाल्मली वृक्ष ।
**सीमा**–सं० क्षेत्रादिक अवधिचिह्न ।
**सीर**–मस्तक १। गोसाउनिक उच्च स्थान २। गाछक मूल ३। भोजनादिक प्रधान स्थान ४। नदीक से स्थान जेमहरसँ जल आएब ५ ।
**सीरक**–दोहरि, तूरबाला मोट ओढ़ना ।
**सीरपञ्चमी**–वसन्तपञ्चमी ।
**सीस**–कणिश, धान्यादिक गुच्छ ।
**सीसा**–सीसक धातु १ । काच २ ।
**सीसी**–सीसाक छोट पात्र ।
**सीसो**–शिंशपावृक्ष ।
**सुअन्न**–सदन्न ।
**सुआसिनि**–स्त्री० यामि, सुवासिनी, पितृगृहस्थ विवाहिता कन्या ।
**सुइ** / **सुइआ** } –सूची, सीबाक साधन ।
**सुइकतार**–क्रीडाविशेष ।
**सुकठी**–सुखाएकेँ चोकटल ।
**सुकरब**–क्रि० नाकसँ कफक नि:सारण ।

**सुकरम**–नीक कर्म ।
**सुकराती( ति )**–सुखरात्रि, कार्तिकक अमावास्या ।
**सुकुमार**–सं० कोमलाङ्ग ।
**सुकुमालकी**–अक्लेशेँ सम्पादन ।
**सुकुर**–सुकर, अनायाससाध्य ।
**सुक्खी**–बिना घृतेँ पकाओल (सोहारी)।
**सुख**–सं० आनन्द ।
**सुखठी**–सुकठी ।
**सुखराति**–सुखरात्रि ।
**सुखाएब**–क्रि० सुख्+अब–शुष्क होएब ।
**सुखाओन**–सुखएलासँ तौलमे कमी ।
**सुखित**–सं० सुखसँ युक्त ।
**सुखी**–सं० सुखसँ युक्त ।
**सुखोँत**–सुखाओल शाकादि ।
**सुखौँती**–आतपशुष्क ।
**सुगन्धबाला**–बालक, ओषधिविशेष ।
**सुगन्धि**–सं० सौरभयुत १ । सौरभ २ ।
**सुगन्धि-खेसारी**–खेसारीक प्रभेद ।
**सुगन्धित**–सुरभीकृत (तैलादि) ।
**सुगबा**–सापक ओ बेँगक प्रभेद ।
**सुगरकोन( ना, नी )**–नैर्ऋत कोण ।
**सुगरजङ्घ**–सुगरक जाँघक बराबरि (धान्यादि) ।
**सुँघब**–क्रि० आघ्राण ।
**सुँघनी**–सुँघब ।
**सुङ्ग**–शूक, सूङ ।
**सुच्चा**–शुद्ध अमिश्रित (तैलादि) ।
**सुजनी**–दुहू दिससँ लग-लग स्यूत (तुरदार अङ्गप्रभृति) ।
**सुजाक( ख )**–वि० उपदंश रोग ।
**सुझब**–दृष्टिगोचर होएब ।
**सुञ्झाएब**–क्रि० सुञ्झब्+अब–लेल वस्तुक प्रत्यर्पण ।
**सुटकब**–क्रि० सङ्कुचिताङ्गक होएब ।
**सुटपु( सु )ट करब**–क्रि० लोभभयादिवश इतस्ततः करब ।
**सुटिआएब**–क्रि० सुटि+अब–सुट सुट करब ।
**सुठाम**–नीक स्थान ।
**सुठिआएब**–ना० सूठिसन शुष्क होएब।
**सुठौड़ा**–प्रसूताक शुण्ठीप्रधानक औषध ।
**सुड़रब**–क्रि० तोनी (अङ्गुष्ठाग्र)सँ आकर्षण ।
**सुड़रा**–लगातार ।
**सुँड़ाह**–सूँड़ासँ युक्त ।
**सुड्डाह**–सर्वथा दग्ध ।
**सुँढ़िआएब**–क्रि० सुँढ़ि+अब–सिद्धयुन्मुख होएब ।
**सुतना**–अधिक शयनशील ।
**सुतब**–क्रि० सूतब, शयन ।
**सुतरब**–क्रि० सफलीभवन ।
**सुतरी**–शणरज्जु ।
**सुतार**–आयाससाफल्य ।
**सुतारब**–क्रि० सुतार्+अब–सफल करब।
**सुतारी**–जूता सीबाक टाकु ।
**सुतिआएब**–ना० कोड़ोकेँ सूतिसँ युक्त करब १। सूतसन पातर होएब २।
**सुतुरमुर्ग**–पक्षिविशेष ।
**सुथनी**–खाद्यकन्दविशेष ।
**सुदि**–शुक्लपक्ष ।
**सुदिन**–सं० शुभाधायक दिन ।
**सुदिनि**–स्त्री० क्रीतदासी ।
**सुधरब**–क्रि० दोषत्यागपूर्वक नीक दिस प्रवृत्ति होएब ।



**सुधारब**–क्रि० सुधार्+अब–दोषत्यागपूर्वक नीक दिस प्रवृत्ति कराबए ।
**सुधि**–स्मरण ।
**सुधि-बुधि**–स्मरण ओ विवेक ।
**सुनगब**–क्रि० आगिक मन्द-मन्द पजरब।
**सुनझाएब**–क्रि० सुनझब्+अब–प्रत्यर्पण।
**सुनता**–श्रुत ।
**सुनब**–क्रि० श्रवण ।
**सुनबाहि**–श्रुत वचनपर आस्था ।
**सुनहट( टि,ट्टी )**–जनशून्यता ।
**सुनहेर**–तृणविशेष ।
**सुन्दर**–सं० रमणीय ।
**सुन्न**–शून्य ।
**सून्ना**–अक्षरक समीप बिन्दु ।
**सुपती**–बाँसक शूर्पाकार बल्कल ।
**सुपहा**–सूपसँ पाथल (चिपड़ी) ।
**सुपारी**–पूगीफल, गूआ ।
**सुफल**–नीक फल १। गयादिक कर्मान्तिमे पण्डाक आशीर्वाद २ ।
**सुफाँटि**–पचेसी खेड़िमे निर्भयस्थानमे प्राप्त (गोटी) ।
**सुबरना**–द्विमुख पानपात्रविशेष ।
**सुबरनी**–छोट सुबरना ।
**सुबानि**–ठाठ आदिक अदुष्ट बन्धन वा वयन ।
**सुविधा**–सं० सौकर्य ।
**सुबुक**–कोमल ।
**सुभा**–वि० सन्देह ।
**सभीता**–सुविधा, सौकर्य ।
**सुमरन**–स्मरण ।
**समिरता**–स्मरण ।
**सुर**–स्वर ।
**सुरकब**–क्रि० नासादिवायुद्वारा द्रववस्तुक अन्तःप्रवेशन ।
**सुरखी**–पक्वेष्टकाचूर्ण ।
**सुरङ( ङ्ग )**–तरहरा ।
**सुरड़ब**–क्रि० अङ्गुष्ठतर्जनीक अग्रसँ आकर्षण ।
**सुरतरङ्ग**–वाद्यविशेष ।
**सुरता**–स्मरण ।
**सुरति**–समाचार, वृत्तान्त ।
**सुरफुर**–चरफर, सचढ़, कार्यदक्ष ।
**सुरफुराएब**–क्रि० सुरफुर्+अब–लोभवश अनुचितरूपेँ प्राप्त्यर्थ उन्मुख होएब ।
**सुरमा**–सौवीराञ्जन ।
**सुरसा**–जिञ्जीर लगएबाक सच्छिद्र लौहशङ्कु ।
**सुरसुर**–द्रव वस्तु खएबाक मुखध्वनि ।
**सुरसुरी**–छिक्का ओ उकासीक उत्पादक तीव्र गन्धविशेष ।
**सुराक**–वि० परकीय वस्तुक स्थिति-स्थानादिक ककरहु द्वारा गुप्त रूपेँ ज्ञान ।
**सुराह**–एकस्वरक, जाहि विषयमे लगलहुँ ताहीमे अति तत्पर ।
**सुराही**–वि० माटिक जलपात्रविशेष ।
**सुरुकब**–क्रि० सुरकब ।
**सुरुङ्ग**–सोझ ऊर्ध्वमुख (वृक्षादि)।
**सुरेब**–सुन्दर आकारक ।
**सुलक्षण**–सं० शुभ लक्षण ।
**सुलच्छन**–सुलक्षण ।
**सुलफा**–तीक्ष्णाग्र वंशशङ्कु ।
**सुलबाहि**–अमांसए, शूलपूर्वक वारंवार मलत्याग ।

**सुसिद्ध**–सं० नीकजेकाँ सीझल (भात आदि)।
**सुसुआएब**–क्रि० सुसु+अब–सूसू शब्द करब, मुहु:सूत्करण।
**सुसुक**–सरल, अकठिन।
**सुसुम**–ईषदुष्ण।
**सुस्त**–सुस्थ, धनपूर्णतया सुखित १। स्वस्थ २। मन्द ३।
**सुस्ताएब**–क्रि० सुस्त्+अब–श्रमापनोदनार्थ क्रियाविराम।
**सुस्तेँ**–अ० शनैःशनैः।
**सुहबा**–स्त्री० सधवा।
**सुहिआ**–संकुचितमुख ओ चओड़ा।
**सूआ**–पैघ सुइआ जाहिसँ बोरा आदि सिअल जाइछ।
**सूआगरए**–ठाठक उचितसँ अधिक उच्चता, अतिप्लवता।
**सूगर**–शूकर।
**सूगा**–उ० शुक। स्त्री० सूगी।
**सूगाठोर**–चारूकात लाल सूगापङ्खी (साड़ी)।
**सूगापङ्खी**–कातमे आन रङ्गक (साड़ी)।
**सूँध**–शूक।
**सूँघब**–क्रि० सुँघ+अब–आघ्राण।
**सूङ**–शूक।
**सूझब**–क्रि० सुझ्+अब–दृष्टिगोचर होएब।
**सूझि**–विचार-शक्ति।
**सूझि पड़ब**–क्रि० विचारस्थ होएब।
**सूँठि**–शुण्ठी।
**सूँड़ि**–शौण्डिक, जातिविशेष।
**सूँढ़**–शुण्डा।
**सूढ़ि**–एकक्रियामे साग्रह पुनःपुनः प्रवृत्ति।
**सूत**–सूत्र, ताग, तन्तु।
**सूत काटब**–क्रि० तन्तुनिर्माण।
**सूति**–स्वस्तिक, ग्रीवाक भूषणविशेष।
**सूती**–कार्पाससूत्रनिर्मित (वस्त्र)।
**सूदि**–ऋणवृद्धि १। शुक्लपक्ष २।
**सूधि**–ज्ञान, संज्ञा, होस।
**सून**–शून्य।
**सूनमसान**–श्मशानसदृश जनशून्य (स्थान)।
**सूप**–शूर्प।
**सूर**–शूर, वीर १। स्वर, लय २।
**सूरी**–दण्डशूल, मृत्युदण्डविशेष।
**सूर्य**–सं० दिनकर।
**सूर्यमुखी**–पुष्पविशेष।
**सूर्यास्त**–सूर्यक अस्तगमन।
**सूर्योदय**–सं० दिनकरक उदय।
**सूहा**–मत्स्यविशेष।
**सूही**–छोट सूहा।
**सृष्टि**–सं० निर्माण।
**से**–सः, सा, तत् सं०।
**सेआख**–नेमटेम, नियम-निष्ठा (निन्दा मे)।
**सेआखी**–सेआखबाला।
**सेआह**–हि० स्याह, कारी।
**सेउती**–शतपत्री, गुलाबक प्रभेद।
**सेओ**–स्यो, फलविशेष।
**सेखी**–वि० जात्यभिमान।
**सेज**–शय्या।
**सेजपाट**–पटिआ गेडुआ प्रभृति सर्वाङ्गपूर्ण शय्या।
**सेजबन्द**–शय्या बन्हबाक डोरी।
**सेठ**–उ० धनाढ्य शौण्डिक, सूँड़िक उपाधि। स्त्री० सेठिनि।



**सेड़र**–किण, घर्षणजन्य दृढ़ मांस।
**सेँतालिस**–सप्तचत्वारिंशत्।
**सेँतालिसम**–सप्तचत्वारिंशत्तम।
**सेद**–सेदब।
**सेदब**–क्रि० अग्रिंक समीप राखि तप्त करब।
**सेब**–टेढ़ कएल (कोदारि)।
**सेबब**–क्रि० सेवन।
**सेबा**–सं० सेवन, दास्य, परिचर्या।
**सेमार**–शैवाल।
**सेर**–सेटक, परिमाणविशेष।
**सेरपहुँ**–अ० सत्य, सरिपहुँ।
**सेरही**–एक सेर परिमाणक (तामा प्रभृति)।
**सेराएब**–क्रि० सेर्+अब–उष्णतासँ हीन होएब।
**सेरी**–प्रति मनमे आदेय एक सेर।
**सेहन्ता**–सिहन्ता, मनोरथ।
**सेहबाना**–धान्यविशेष।
**सेहला**–सेआहा, स्मारक लेख।
**सै**–सइ, स्वरस, आन्तरिक अभिप्राय।
**सैँतब**–ओरिआए केँ राखब।
**सैन**–शमीवृक्ष १। व्रणविशेष २।
**सैन्धव**–सं० लवणविशेष।
**सैला**–सएला, व्याघ्रविशेष।
**स्रो**–सोह, पृथ्वीक अभ्यन्तरसँ जलागम।
**सोअदगर**–अधिक स्वादु।
**सोआ**–शाकविशेष।
**सोआइत**–आल्पमूल्यलभ्य, सस्त १। अ० अकारण नहि २।
**सोआद**–स्वाद, स्वादुत्व, रस।
**सोएम**–दोएमसँ अपकृष्ट, तृतीय कक्षाक (दही प्रभृति)।
**सोख**–शुष्कता १। ढीठ २।
**सोग**–शोक।
**सोँगर** / **सोङर** } –कान्हबाला वंशखण्ड।
**सोच**–शोक।
**सोचब**–क्रि० शोक करब १। विचार करब २।
**सोचरि नोन**–लवणविशेष।
**सोझ**–सरल।
**सोझका**–सरलप्रभेदक।
**सोझबारा**–सरल प्रकारक।
**सोझराएब**–क्रि० सोझर्+अब–जटिलता वा ग्रन्थिसँहीन होएब, लटपटीक त्याग।
**सोझाँ**–अ० सम्मुख।
**सोझाँ-सोझी**–अ० परस्पर साम्मुख्यमे।
**सोट**–अति स्थूल बिना मकोआक यष्टि।
**सोटब**– चिक्कणताजनक घर्षण।
**सोटा**–स्थूल छोट यष्टि।
**सोटा चन्द**–अतिमूर्ख।
**सोड़ह**–षोड़श, सोलह।
**सोड़हम**–सोलह संख्याक पूरक।
**सोड़हा**–सोलह सोड़हि।
**सोड़हि**–षोड़शसंख्यापरिमित (बोझ इत्यादि)।
**सोतपन**–सद्द, सौम्य (माल)।
**सोति**–उ० श्रोत्रिय, ब्राह्मणविशेष। स्त्री० सोतिआइनि।
**सोतिआइ**–श्रोत्रियक व्यवहार।
**सोतिआएब**–ना० सोति+अब–श्रोत्रियत्वप्रदर्शन।
**सोतिपुरा**–श्रोत्रियगणक बासस्थान।
**सोधब**–क्रि० संशोधन।

**सोन**–स्वर्ण ।
**सोनपत**–त्योनाक वृक्ष ।
**सोनही**–कन्दविशेष ।
**सोनहुल**–पुष्पविशेष ।
**सोनहुला**–रङ्कक प्रभेद ।
**सोनाडुब्बी**–जलक्रीड़ाविशेष ।
**सोनामाखी**–स्वर्णमाक्षिक ।
**सोनामूँग( मूङ )**–मुद्गविशेष ।
**सोनार**–उ० स्वर्णकार जातिविशेष । स्त्री० सोनारनी ।
**सोनारी**–सोनारक कर्म १। ओकर वेतन २।
**सोनित**–शोणित, रुधिर ।
**सोनी**–तृणविशेष ।
**सोन्ह**–सुगन्धविशेषसँ युक्त १ । अड़ाँची-लवङ्गादि मसाला २ ।
**सोन्हाइ**–गन्धविशेष ।
**सोन्हान**–मालक औषध ।
**सोन्हि**–भूविवर ।
**सो( सोँ )पब**–क्रि० भार देब १। समर्पण करब २। रविव्रतादिक निस्तार ३ ।
**सोपाएब**–क्रि० सोप्+अब–भाँटाप्रभृतिक पाकवैगुण्यप्रयुक्त कठोरता ।
**सोँफ**–शतपुष्पा ।
**सोबर्ना**–जलपानपात्रविशेष ।
**सोबर्नी**–छोट सोबर्ना ।
**सोम**–वि० कृपण १। सं० चन्द्रदिवस २ ।
**सोमबारी**–सोमवती अमावास्याक व्रत ।
**सोर**–आह्वान ।
**सरठ( ठा )**–छन्दविशेष ।
**सोर पारब**–क्रि० आह्वान ।
**सोर-पोर**–अ० समस्त सीर सहित (उखड़ब) ।

**सोर-सरबा**–आह्वानादि ।
**सोरा**–सौवर्चल, लवणविशेष ।
**सोरि**–प्रसवगृह ।
**सोलकन्ह**–सोढ़स्कन्ध, शूद्र ।
**सोलह**–षोड़श १। वि० सन्धि, मैत्री २।
**सोलहनामा**–वि० सन्धिपत्र ।
**सोलहम**–षोड़शसंख्याक पूरक ।
**सोल्ह**–शोधित, मोजर कएल (ऋणादि)।
**सोँस**–नक्र ।
**सोसनी**–रङ्गविशेष ।
**सोँसिआएब**–ना० सोँसि+अब–सोँ सोँ शब्द करब ।
**सोह**–पृथ्वीक अभ्यन्तर देने जलक आगमन ।
**सोहगैली**–काठक सिन्दूरपात्रविशेष ।
**सोहदा**–वि० दुराचारी, बूड़ि ।
**सोहन**–शोभमान ।
**सोहनि**–धान आदि कमाएब ।
**सोहब**–क्रि० फलादिकेँ त्वचासँ मुक्त करब ।
**सोहर**–जन्मसम्बन्धी गीतविशेष ।
**सोहरब**–क्रि० बहुत कीटादिक समन्तात् सम्प्राप्ति ।
**सोहाएब**–क्रि० सोह्+अब–नीक लागब।
**सोहाओन**–शोभमान, सुन्दर ।
**सौहाग**–सौभाग्य ।
**सोहागा**–टङ्कण ।
**सोहागिनि**–स्त्री० सौभाग्यवती, सधवा ।
**सोहागी**–चारू कात अन्य रङ्गमे रँगल (साड़ी) १ । सौभाग्याशीर्वादीमे देय २ ।
**सोहागीबङ्का**–भूषणविशेष ।



**सोहारी**–शष्कुली ।
**सोहाँस**–त्रपुस, खँरा ।
**सौख**–सौख्य ।
**सौजन**–सौजन्य, परस्पर भात खएबाक व्यवहार ।
**सौजनिआ**–परस्पर भात खएनिहार ।
**सौतिनि**–स्त्री० सपत्नी ।
**सौतिनिआ डाह**–सपत्नीक अन्योन्य असूया ।
**सौँथि**–सीमन्तप्रदेश ।
**सौर**–दू ओढ़नाक समग्र संयोजन ।
**सौरबचबा**–सौरा माछक बच्चा ।
**सौरा**–मत्स्यविशेष ।
**सौराठी**–छोट सौरा ।
**सौँस**–समग्र, अखण्ड ।
**स्तुम्बुल**–गुलाबक प्रभेद ।
**स्थिति**–सं० रहब १। परिस्थिति, थिति २ । विशेष धन ३ ।
**स्थान**–सं० जगह ।
**स्याख**–सेआख ।
**स्याह**–वि० कारी ।
**स्यो**–सेओ फलविशेष ।
**स्योँती**–शतपत्र, गुलाबक प्रभेद ।
**स्वदेश**–सं० अपन देश ।
**स्वदेशी**–स्वदेशभव ।
**स्वभाव**–सं० अपन संस्कार ।
**स्वरस**–अभिप्राय ।
**स्वरूप**–सं० आकार ।
**स्वाद**–सोआद, रस ।
**स्वादब**–क्रि० स्वाद्+अब–स्वाद बुझब, चीखब ।
**स्वादिष्ट**–सं० अति स्वादु ।
**स्वामी**–सं० पति ।

## ह

**हँ**–अ० स्वीकार ।
**ह**–अ० खेद ।
**हइ**–अ० वारण ।
**हउआ**–बाल-बिभीषिका ।
**हए**–अ० स्त्रीकर्तृक अनतिनीच सम्बोधन १ । पुरुषकर्तृक अनतिनीच स्त्रीसम्बोधन २ ।
**हओ**–अ० पुरुषकर्तक अनतिनीच पुरुष-सम्बोधन ।
**हक**–वि० अंश, अधिकार ।
**हकन्न कानब**–क्रि० जोरसँ कानब ।
**हकबाहिलागब**–क्रि० एके बाक्य बजबा मे वारंवार प्रवृत्ति होएब ।
**हक लागब**–अत्यन्त प्रत्याशा जागब ।
**हँकरब**–क्रि० अतिक्रन्दन, रोग प्रभृतिसँ कनबाक असामर्थ्योत्तर क्लेशसूचक शब्द करब ।
**हँकरा पथिया**–भारक पनपथिआ ।
**हक-हक करब**–क्रि० श्रमसँ अधिक हकमब ।
**हकहकाएब**–क्रि० हकहक्+अब–हकमलजेकाँ होएब।
**हकहकी**–किञ्चिन्मात्र श्वासप्रश्वास ।
**हकार**–पूजादि देखबाक आकरण ।
**हकारब**–क्रि० हकार देब ।
**हकासल पिआसल**–अत्यन्त श्रम ओ पिपासासँ युक्त ।
**हकुलाह**–उ० असन्तोषी । स्त्री० हकुलाहि ।
**हक्क**–वि० हक, अंश ।
**हगब**–क्रि० पुरीषोत्सर्ग ।

**हगामा**–सकल-साधारण, अनेक गामक लोक ।
**हजरा**–दुसाधक उपाधि ।
**हजाम**–नापित, नौआ ।
**हजार**–सहस्र ।
**हजारीगेना**–सबसँ बड़का गेनाक फूल ।
**हटब**–क्रि० पृथक् होएब, स्थानत्याग ।
**हँटब**–क्रि० भर्त्सन, वारण ।
**हट्ठा**–हर बहबाक स्थान ।
**हठ**–सं० आग्रह ।
**हड़कम्प**–हाड़क कपनी ।
**हड़कम्प कापब**–क्रि० हाड़पर्यन्त मे कम्पयुक्त होएब ।
**हड़काछु**–काछुक प्रभेद ।
**हड़कौड़ी**–कौड़ीक प्रभेद ।
**हड़गर**–उ० मोट हाड़बाला । स्त्री० हड़गरि ।
**हड़गोरब**–क्रि० मालकेँ पाएर लगाए गरदनिमे बान्हब ।
**हड़जोड़बा**–तृणविशेष, अस्थिसंहारी ।
**हड़जोड़ा**–हड़जोड़बा ।
**हड़बड़**–कार्यमे शीघ्रता ।
**हड़बड़ाएब**–क्रि० हड़बड़+अब–हड़बड़ करब ।
**हड़बड़ी**–कार्यमे शीघ्रता ।
**हड़मुड़हा**–उ० अलच्छ । स्त्री० हड़मुड़ही ।
**हड़मुड़ाह**–उ० अलच्छ । स्त्री० हड़मुड़ाहि ।
**हड़रो-बिड़रो लागब**–क्रि० नाना उपद्रव संप्राप्त होएब ।
**हड़रोगा**–हाड़क रोगवत् अनिवार्य स्वभाव।
**हड़ा दरिद्र**–नितान्त दरिद्र ।
**हड़ासङ्ख**–अलच्छ ।
**हँड़िआ**–हण्डी, पाकपात्रविशेष ।
**हड़िरा**–पहिरल धोतीक डाँड़मे भिँड़िआओल प्रान्त ।
**हड़ुबी**–तरक भूमि ।
**हड़ोखरि**–हाड़ फेकबाक स्थान ।
**हड़ोरब**–क्रि० दुहू बाँहिसँ एकत्रित करब।
**हड्डी**–हि० हाड़, अस्थि ।
**हतब**–क्रि० हत्या करब ।
**हताश**–सं० आशाहीन ।
**हत्था**–केराक हस्ताकार गुच्छ ।
**हत्थाबाँही**–परस्पर हाथ-बाहिँ पकड़ि मारि ।
**हत्था-हत्थी**–परस्पर हाथ पकड़ब ।
**हथकट**–थोड़ देनिहार, कृपण ।
**हथकड़ी**–हाथमे बद्ध शृङ्खला ।
**हथगर**–उ० अधिक परसनिहार, अधिक देनिहार, उदार ।
**हथछुट्टू**–अल्पापराधहुमे हाथसँ मारि देबाक स्वभावबाला ।
**हथजौर**–हाथसँ बाँटल रज्जु ।
**हथधरी**–विवाहस्वीकारार्थ परस्पर हस्तग्रहण।
**हथना**–नेनाक हाथक भूषणविशेष ।
**हथन्नो( न्यो )त**–साक्षात् निमन्त्रण, हाथ पसारि नोत देब ।
**हथपैँच**–बिना लेखक ओ बिना सूदिक ऋण ।
**हथपेरर( री )**–एकसँ लए दोसराक ऋणशोधन ।
**हथरस**–पसएबामे उपकारक पात ।



**हथरा**–जाँत चकरीक उपरका हस्ताकार काष्ठ ।
**हथलग्गू**–अधिक काल हाथमे व्यवहार्य (छड़ीआदि) ।
**हथलपक**–हाथसँ लपकि लेबाक स्वभाव बाला ।
**हथसङ्कड़**–हाथक भूषणविशेष ।
**हथहड़**–भृङ्गार, द्विमुख जलपात्र-विशेष ।
**हथहड़ी( री )**–छोट हथहड़ ।
**हथिआ**–हस्तनक्षत्र ।
**हथिआएब**–ना० खानगी रुपैया आदि जमा करब, हस्तगत करब ।
**हथिआर**–अस्त्र, उपकरण ।
**हथिगन**–क्षुपविशेष ।
**हथिनी**–स्त्री० हस्तिनी ।
**हथोरब**–क्रि० हाथसँ समटब १ । हाथक स्पर्शसँ अन्वेषण करब २ ।
**हथोरा( ड़ा )**–मड़ेआ ।
**हथोरिआ**–अन्हार वा जलमे हस्तचालन।
**हथोरिआ देब**–क्रि० अन्हार वा जलमे हस्तचालन ।
**हथौटी**–हाथसँ कार्याभ्यास ।
**हथौड़ी( री )**–चोट देबाक लौह यन्त्रविशेष, मड़ेआ ।
**हद**–वि० अन्त, अवधि, सीमा ।
**हदमदाएब**–क्रि० हदमद्+अब–वमनोपस्थितिशङ्कासँ युक्त होएब ।
**हदमदी**–वमनोपस्थितिशङ्का ।
**हदिआएब**–ना० 'हाधिक्' बाजब, दैन्ययुक्त होएब ।
**हद्द**–हद ।
**हनब**–क्रि० मारब १ । डोलाएब २ ।
**हनहन-पटपट करब**–क्रि० मालक मारबाक चेष्टा करब ।
**हनहनाएब**–ना० हनहन शब्द करब ।
**ह( हँ )पसब**–क्रि० घास-भुस्सा आदि अधिक-अधिक लएकेँ खाएब।
**हफब**–क्रि० बड़दक मारबाक चेष्टा मात्र करब ।
**हफाह**–उ० मारबाक चेष्टा मात्र कएनिहार (बड़द आदि)। स्त्री० हफाहि ।
**हफिआएब**–ना० जृम्भण, हाफी करब ।
**हफिमची**–नित्य हफीम खएनिहार ।
**हफीम**–अहिफेन, मादक वस्तु विशेष ।
**हबक**–दाँतसँ काटब ।
**हबकब**–क्रि० दाँतसँ दबाएब ।
**हबकाह**–दँतकट्टा, दाँतसँ कटबाक स्वभावबाला (कुकुरप्रभृति) ।
**हबर-हबर**–अ० झट-झट ।
**हबेली**–अन्दर, अन्तःपुर ।
**हबोडकार**–अ० अश्रुधाराप्रवाहपूर्वक ।
**हम**–अहम् सं० ।
**हमाम**–वि० स्नानक जलपात्र विशेष ।
**हर**–हल १ । शिव २ ।
**हरकठ**–हरक ओ काठ जाहिमे फार ठोकल जाइछ ।
**हरकब**–क्रि० मालक संघ-बद्ध भए हँटब ।
**हरकारब**–क्रि० हरकार्+अब–मालक समूहकेँ एक दिस हटाएब ।
**हरकारा**–मार्गमे आगाँ-आगाँ लोककेँ हटओनिहार भृत्य ।
**हरक्कति**–वि० हर्ज, क्षति ।
**हरखरा**–वृषभरहित हर ।

**हरजाइ**–स्त्री० निर्लज्जा स्त्री ।
**हरदम**–वि० अ० सतत ।
**हरदा**–पक्षिविशेष ।
**हरदाहरदी**–क्रीड़ाविशेष ।
**हरदि**–हरिद्रा ।
**हरदिआह**–हरिद्राभागयुक्त ।
**हरफा**–लवली फल ।
**हरफोड़**–अ० हलकर्षणपूर्वक ।
**हरब**–क्रि० हरण ।
**हरबाह**–हलवाहक ।
**हरबाहि**–हरबाहक क्रिया, कर्षण १ । ओकर वेतन २ ।
**हरमजदगी**–वि० बदमासी, दुष्टता ।
**हरमजादा**–वि० बदमास ।
**हरमाद**–वि० बाधा, अपकार ।
**हरमोट( ठ )**–स्थूलकाय मूर्ख ।
**हरलधा**–हर लधबाक डोरी ।
**हरहरा**–सर्पविशेष १। कटिभूषणविशेष २।
**हरही-सुरही**–अगण्य, तुच्छ, (लोक) ।
**हरान**–वि० परिश्रान्त ।
**हरानी**–वि० श्रम ।
**हरारति**–वि० थाकनि ।
**हराह**–उ० अधिक काल पलायनशील (बड़द प्रभृति) । स्त्री० हराहि ।
**हराहरी**–अ० औसतन हि० ।
**हरिअर**–हरित ।
**हरिअर-कचोर**–अत्यन्त हरित ।
**हरिअरका**–उ० हरितप्रभेदक । स्त्री० हरिअरकी ।
**हरिअरी**–हरितता ।
**हरिताल**–सं० धातुविशेष ।
**हरिताली**–सं० व्रतविशेष ।
**हरिन**–हरिण ।
**हरिनकेलि**–धान्यविशेष ।
**हरिना**–हरिणक नर ।
**हरिना-खुरी**–हरिणक खुरक समानाकार बन्धनविशेष १ । मालक तादृश खुर २ ।
**हरिना निन्द**–हरिणवत् निद्रा, आधा आँखि मूनि सूतब ।
**हरिफ**–वि० बद्द ।
**हरिबेचनी**–स्त्री० हारी बेचनिहारि ।
**हरिस**–हरक ओ अङ्ग जाहिमे पालो बान्हल जाइछ, हलीषा ।
**हरिसेँ**–ह्रस्व मात्रा ।
**हरिसो**–एक पाबनि ।
**हरी**–बेड़ी, निगड़ ।
**हरीक हर**–वर्षमे बिना मूल्य मालिककेँ दातव्य हर ।
**हरीड़**–हरीतकी ।
**हरीस**–हरिस, हलीषा ।
**हरुबी**–पृथ्वीक अधिक तरक भूमि ।
**हरुसा**–फलविशेष ।
**हरोत**–बाँसक प्रभेद ।
**हर्ज( र्जा )**–वि० क्षति ।
**हर्जाइ**–स्त्री० निर्लज्जि, बद्द ।
**हर्ष**–सं० आनन्द ।
**हलकारब**–क्रि० हलकार्+अब–पशुक संघकेँ प्रेरित करब ।
**हलगर**–पूर्ण हालसँ युक्त (भूमि) ।
**हलचल**–कार्यार्थ चलप्रचल ।
**हलचली**–चलप्रचलता, सम्भ्रम ।
**हलतलबी**–शीघ्रकर्तव्यता ।
**हलदिली**–वि० उन्माद ।



**हलबलिआ**–अलि० हड़बड़ाएल कार्यकर्ता ।
**हलबली**–चाञ्चल्यपूर्वक कार्यकरण ।
**हलसब**–क्रि० हर्षयुक्त होएब ।
**हलार( ल )खोर**–उ० पएखाना साफ कएनिहार जातिविशेष । स्त्री० हलार(ल)खोरनी ।
**हलुआ**–मोहनभोग, कृतान्नविशेष ।
**हलुआइ**–उ० मिष्टान्नादि बनओनिहार जातिविशेष । स्त्री० हलुआइनि ।
**हलुक**–हल्लुक, लघु, जे भारी नहि हो ।
**हलुकधना**–शीघ्र पकनिहार धान (राँगी प्रभृति) ।
**हलुमानी**–मधुरक अगाँओ ।
**हल्ला**–हि० घोल ।
**हल्लुक**–लघु, भारीसँ भिन्न ।
**हंस**–सं० पक्षिविशेष ।
**हसनमुह**–उ० प्रसन्नमुखाकृतिबाला । स्त्री० हसनमुहि ।
**ह( हँ )सब**–क्रि० हसन ।
**हँसमुह**–उ० हसनमुह । स्त्री० हँसमुहि ।
**हँसारति**–जनतोपहास, लोकनिन्दा ।
**हँसी**–हास्य ।
**हँसी-ठट्ठा**–हास्यादि विनोद ।
**हँसुली**–भूषणविशेष ।
**हँसेरिआ**–हँसेरीक लोक ।
**हँसेरी**–लोक-संघ ।
**हँसोथब**–क्रि० हाथसँ समटब ।
**हस्तगत्ता**–सम्बद्ध मोड़ल पुस्तक रखबाक गत्ता ।
**हस्ताक्षर**–सं० हस्तलेख, दस्तखत ।
**हहरब**–क्रि० ह्रास हेएब ।
**हा**–अ० शोक ।
**हाँ**–अ० वारण ।
**हाँ-हाँ**–अ० सम्भ्रमपूर्वक वारण ।
**हाँइ-हाँइ**–अ० शीघ्रतापूर्वक ।
**हाए**–अ० हा, शोक ।
**हाए-हाए करब**–धन बढ़बाक अधिक चेष्टा करब ।
**हाक**–उच्चैः सम्बोधन ।
**हाँकब**–क्रि० हँक्+अब–पशुक प्रेरण, गाड़ीक चालन ।
**हाकिम**–वि० न्यायाधिकृत ।
**हाँज**–पक्षीक संघ ।
**हाजिर**–वि० उपस्थित ।
**हाजिरी**–वि० उपस्थिति ।
**हाट**–हट्ट, अस्थायी आपणविशेष ।
**हाड़**–अस्थि ।
**हाँड़ी**–हण्डी, पात्रविशेष ।
**हाता**–खेतक सीमापर लम्बाकार उच्च कएल माटि ।
**हाथ**–हस्त, कर ।
**हाथर**–जाँतक उपरबका हस्ताकार काष्ठ।
**हाथा**–हत्था, हस्ताकार कदलीफलगुच्छ।
**हाथा-बाँही**–झगड़ामे परस्पर हाथ बाँहि पकड़ब ।
**हाथाहाथी**–परस्पर जोरसँ हाथ पकड़ब ।
**हाथी**–उ० हस्ती, गज । स्त्री० हथिनी ।
**हानब**–क्रि० हन्+अब–दृढ़ करब ।
**हानि**–सं० क्षति ।
**हापुस**–तृणविशेष ।
**हाफी**–मुखजृम्भा ।
**हाबर**–मशकाकार कीटविशेष ।
**हाबा**–वि० बसात, वायु ।
**हाबादार**–वि० जाहिठाम बसात आबए ।

**हाबुस**–तृणविशेष ।
**हार**–हारि १ । मण्यादिमाला २ ।
**हारब**–क्रि० हार्+अब–पराजित होएब ।
**हारा**–हारा ममरखा, तृणविशेष ।
**हाराहरी**–अ० औसतन हि०, मध्यम मानक अनुसारेँ, अवयवगत विषम मान सभसँ समुदायक मान बहार कए पुनः प्रति अवयवपर ओहि मानकेँ समान रूपेँ बँटलापर ।
**हारि**–पराजय ।
**हारी**–हार बनएबाक काचक छिद्रयुक्त गुलिका ।
**हाल**–खेतक अभ्यन्तरसँ आर्द्रताक सम्बन्ध १ । वि० स्थिति २ ।
**हाँस**–पक्षिविशेष ।
**हास**–सं० हँसी ।
**हासा**–शुद्ध, एकवर्ण ।
**हाँसिनी**–स्त्री० सुन्दरी ।
**हासिल**–वि० अर्जित ।
**हासिल-कर्दगी**–वि० स्वोपार्जित भूमि ।
**हाँसू**–काता ।
**हास्य**–सं० हँसी ।
**हाह-फूह**–मेघक जलबिन्दु ।
**हा-हा**–अ० खेद ।
**हाहाकार**–सं० हाहा शब्दक उच्चारण ।
**हाहाकार मचब**–क्रि० समन्तात् 'हा' 'हा' शब्द होएब ।
**हाहि बहब**–क्रि० बसातक जोरसँ बहब।
**हाहूति( ती )**–असन्तोष, गृन्ध्रुता ।
**हाहेबेरबा**–आपद्, उपद्रव ।
**हिआएब**–क्रि० खूब अवधानसँ देखब ।
**हिआ हारब**–क्रि० नाभरोस होएब ।
**हिकमति**–वि० भेद, कौशल, भङ ।
**हिकमती**–वि० हिकमतिक वेत्ता ।
**हिकाहु**–अक्लेश जएबा योग्य स्थान ।
**हिक्का**–सं० अन्तिम समयक हिचकी ।
**हिँगु( हिङु )राएब**–क्रि० हिँगुरब्+अब–चपरासँ रङ्ग करब ।
**हिङ्ग**–सं० हीँगु ।
**हिचकब**–क्रि० हिचकिचाएब ।
**हिचकिचाएब**–क्रि० हिचकिच्+अब–असामर्थ्यादिवश अप्रवृत्तिक अभिप्राय प्रकट करब ।
**हिचकी**–उदरस्थ वायुक साघात निर्गम, हिक्का सं० ।
**हिँछब**–क्रि० हिचकब ।
**हिडु( ड़ो )ला**–दोला, मछकी, पालना ।
**हित**–सं० गुणद १ । मित्र २ ।
**हितकर**–वि० उपकारक ।
**हिफाजति**–वि० सुरक्षा ।
**हिरामन**–सूगाक प्रभेद ।
**हिलकोर**–तरङ्ग ।
**हिलकोरब**–क्रि० तरङ्गित करब ।
**हिलब**–क्रि० डोलब, कम्पन ।
**हिलस**–मनोरथ, आबेस ।
**हिलस लागब**–क्रि० मनोरथ होएब ।
**हिलसा**–मत्स्यविशेष ।
**हिलि-मिलि**–अ० परस्पर मेल कए ।
**हिलोर**–तरङ्ग ।
**हिलोरब**–क्रि० अन्नादिकेँ सूपमे लए चक्राकार तरङ्गित करब ।
**हिसख**–अभ्यास ।
**हिसाब**–वि० गणना, लेखा ।
**हिसाबी**–वि० लेखापटु १। मितव्ययी २ ।
**हिस्सा**–अंश ।
**हिहिँआएब**–ना० घोड़ाक 'हीँ हीँ' शब्द करब ।
**हीँगु**–हिङ्गु ।



**हीँछब**–हिँछ+अब–हिचकब ।
**हीड़**–प्रधानतम ।
**हीत**–हित ।
**हीर**–हीड़, प्रधानतम ।
**हीरा**–हीरक ।
**हीराकाट**–अंलङ्करणक आकार-..... विशेष।
**हीलब**–क्रि० हिल्+अब–डोलब ।
**हुकब**–क्रि० हुसब, लक्ष्यच्युति ।
**हुकबुक**–हुकहुक, अन्तकालक मन्द-मन्द श्वास ।
**हुकरब**–क्रि० अतिक्लेश जन्य ध्वनि-विशेष ।
**हुकहुक**–हुकबुक ।
**हुकहुकाएब**–क्रि० हृदयमात्रमे वायुक सञ्चार करब ।
**हुकहुकी**–हृदयमात्रमे वायुक सञ्चार ।
**हुकारी**–श्रमजन्य हु हु शब्द ।
**हुकुम**–वि० आज्ञा ।
**हुकुम्मति**–वि० आज्ञा ।
**हुक्क**–वातरोगविशेष, चोरा ।
**हुक्का**–धूमपानयन्त्रविशेष ।
**हुच्ची**–टहल, लगक सुकर अनेककार्य।
**हुट्ठा**–साढ़े तीन गुणाक पाठ ।
**हुड़काह**–सनकाह ।
**हुड़ार**–वृक, हिंस्रपशुविशेष ।
**हुड्ड**–कर्तत्याकर्तव्यविचारशून्य । उच्छृङ्खल ।
**हुण्ड**–हुड्ड ।
**हुज्जति**–वि० झमेल, विवाद (निन्दामे)।
**हुदुक्का मारब**–क्रि० ऊर्ध्वमुख आघात ।
**हुमड़ब**–क्रि० गम्भीर घोष ।
**हुमाहुमी**–मारिक उपक्रमसम्भार ।
**हुड़दुङ्ग**–उद्धत क्रीड़ा ।
**हुड़दुङ्गी**–उद्धत क्रीड़ा कएनिहार ।
**हुरपेटब**–क्रि० बजारिकेँ सिंहसँ मारब ।
**हुरमारि**–स्त्री० हूरा लेनिहारि (गाए-महिंसि) ।
**हुरहुर**–क्षुपविशेष ।
**हुरहुरी**–आतङ्क ।
**हुराठ**–यष्टिक मोट अग्रभाग ।
**हुराठी**–घूर लारबाक काठी ।
**हुराड़**–वृक, वन्य जन्तुविशेष ।
**हुलकब**–क्रि० कुकुरक आक्रमणार्थ दौड़ब ।
**हुलकी**–प्रच्छन्न रहि मुह नमराए देखब ।
**हुलकी देब**–क्रि० पूर्वोक्त क्रिया करब ।
**हुलहुल करब**–क्रि० वृथा इतस्ततः करब ।
**हुलहुलाएब**–क्रि० हुलहुल+अब–हुलहुल करब ।
**हुलसब**–क्रि० आनन्दित होएब ।
**हुलास**–आनन्द, उल्लास ।
**हुल्लड़( र )**–हूलि, अनेक व्यक्तिक संकुल क्रिया ।
**हुल्लुक**–पक्षिविशेष ।
**हुहुआएब**–ना० बसातक हू हू शब्द करब।
**हूँ**–अ० स्वीकार १ । (ध्वनिविशेष) निषेध २ ।
**हूथब**–क्रि० हुथ्+अब–भर्त्सना ।
**हूबहू**–वि० अनुरूप ।
**हूर**–लाठी आदिक अन्त भाग ।
**हूरब**–क्रि० मुसलाग्रादिक आघातसँ माटि बैसाएब ।
**हूरा, हूराहूरी**–गोक्रीड़ा, एक पाबनि जाहिमे सूगरक सङ्ग गाए-महिसि खेलाइत अछि ।
**हूलब**–क्रि० हुल्+अब–बलात् प्रवेश ।

**हूलि**–बलात् प्रवेश १ । अनेक क्रियाक युगपत् सम्पात २ ।
**हूसब**–क्रि० हुस्+अब–लक्ष्यच्युति ।
**हे**–सं० अ० सम्बोधन ।
**हे अए**–अ० स्त्रीक प्रति सम्बोधन ।
**हे अओ**–अ० पुरुषक प्रति सम्बोधन ।
**हेँक**–अधिक किचार ।
**हेँकब**–क्रि० गर्दभक भाषण ।
**हेकल**–भूषणविशेष ।
**हेँगा**–चौकी, हलि ।
**हेँगा देब**–क्रि० चौकीसँ समीकरण ।
**हेजा**–महामारी, ओबा, विसूचिका ।
**हेठ**–उतरल, अवतीर्ण ।
**हेड़**–झुण्ड, मण्डली ।
**हेड़गर**–उपयुक्त जनसमुदायसँ युक्त ।
**हेतु**–सं० कारण ।
**हेबनि**–अ० किछु वर्ष पूर्व ।
**हेबेली**–हबेली, अङ्गण ।
**हेमती**–कार्पासक प्रभेद ।
**हेमनजिस्ता**–औषधादि चुरबाक धातुक पात्रविशेष ।
**हेमाल**–सरि १ । अत्यन्त ठण्ढा २ ।
**हेयबुद्धि**–सं० तुच्छ बुझब ।
**हेर-फेर**–हेरी-फेरी, बदलाबदली, व्यत्यास।
**हेरब**–क्रि० प्रेक्षण ।
**हेराएब**–क्रि० हेर्+अब–अधः पतन १ । अदृश्य होएब, भेटबाक अयोग्य होएब २ ।
**हेलब**–क्रि० तरण ।
**हेल-मेल**–ऐकमत्य ।
**हेला**–उ० हलारखोर, पएखाना साफ कएनिहार जातिविशेष ।
**हेली**–हेलिनि १ । हेलाओ २ । हेलिकेँ जएबाक योग्यता,
**हेलाओ**–जल प्लावन ।
**हेहर**–उ० कतिधा बुझओलहु उत्तर दुर्वृत्ति नहि छोड़निहार । स्त्री० हेहरी ।
**हेहरू**–पुं० आदरणीय हेहर ।
**है**–अ० निषेध ।
**हैँठा**–वृक्षविशेष १ । ओकर पैघ फल २ ।
**हैँठी**–हैँठा गाछक छोट फल ।
**होएनिहार**–सम्भावित ।
**होँकब**–क्रि० उद्वीजन ।
**होनिहार**–होएनिहार, संभावित ।
**होनी**–भवितव्यता ।
**होम**–सं० हवन ।
**होरी**–होलिकोत्सवक समय १ । ओहि समयमे गएबाक गीत २ ।
**होस**–वि० चैतन्य ।
**होसगर**–वि० चैतन्ययुक्त, सचेत ।
**होसिआर**–उ० वि० निपुण १ । सावधान २ । स्त्री० होसिआरि ।
**होसिआरी**–नैपुण्य १ । सतर्कता २ ।
**होहकार**–हो हो शब्द ।
**होहकारब**–क्रि० होहो शब्द करब ।
**होहकारा**–हो हो शब्द ।
**हौआएब**–क्रि० हौ+अब–कण्डूति, कुड़िआएब ।
**हौँकब**–क्रि० उद्वीजन ।
**हौँड़ब**–क्रि० आलोड़न ।
**हौदा**–हाथीक पीठपर बैसबाक हेतु निर्मित पात्राकार आसनविशेष ।
**हौहटि( ठि )**–पामा ।





प्रकाशक : शेखर प्रकाशन, पटना-24

रु. 500/-